Machine Translated by Google

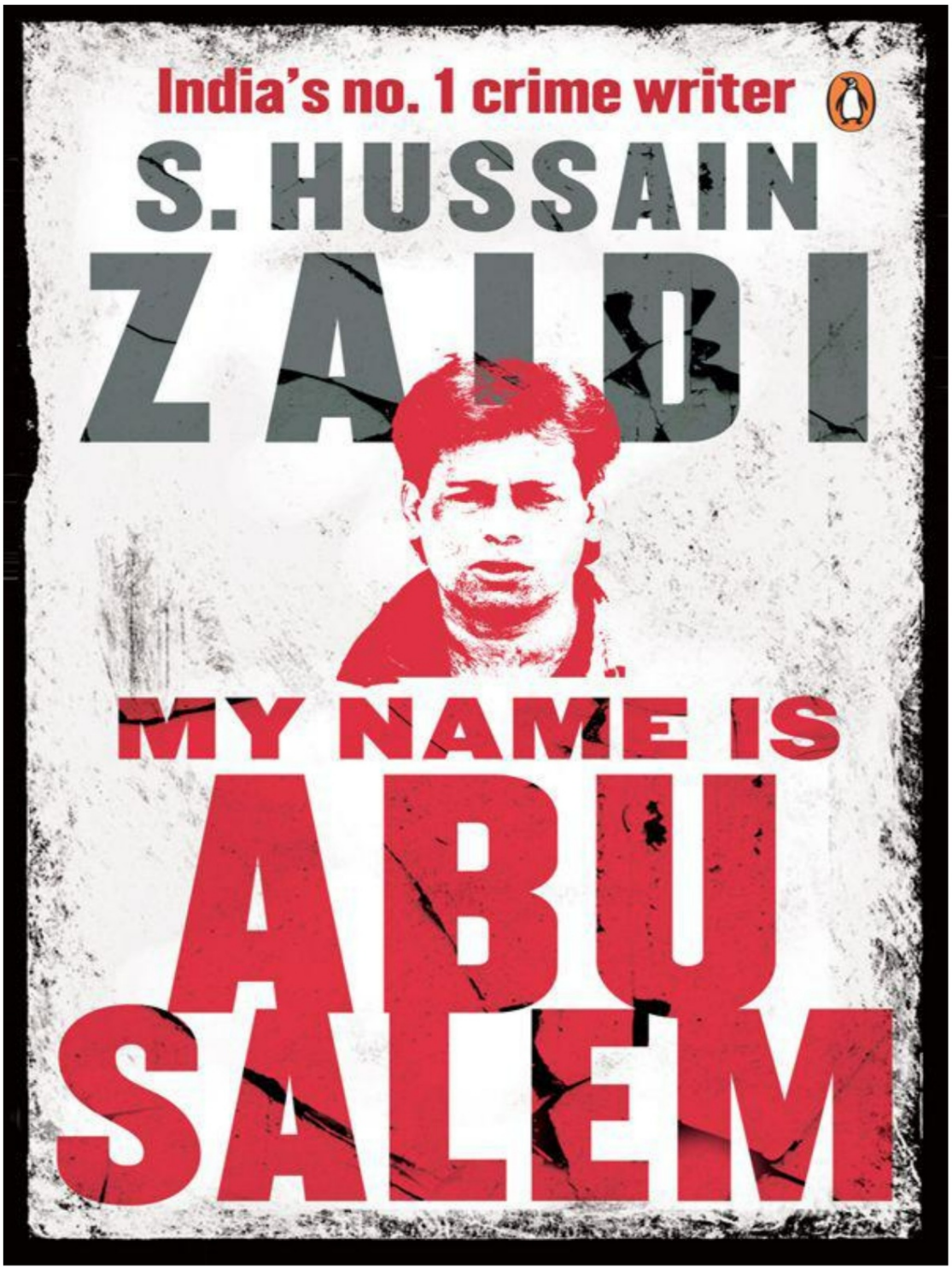

Machine Translated by Google

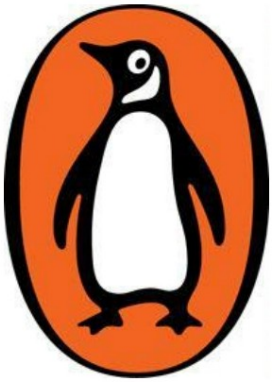

Machine Translated by Google

एस. हुसैन जैदी

मेरा नाम अबू सलेम है

Machine Translated by Google

अंतर्वस्तु

लेखक के बारे में

इसी लेखक द्वारा

समर्पण

परिचय और आभार

प्रस्तावना

1. बैरिस्टर का लड़का

2. सलेम और समीरा

3. पहला ब्रश

4. सलेम और संजय

5. द बिग डी

6. छिपने के लिए भागना

7. दुबई में निराशा

8. पहला खून

9. सलेम की हत्या मशीनें

10. सलेम इम्पोर्ट्स रेंट-ए-किलर

11. बॉलीवुड पर नियंत्रण

12. दुबई में षड्यंत्र

13. एक फाँसी, एक चेतावनी

14. प्रत्यर्पण शर्मिंदगी

15. द फॉलआउट

16. दुग्गल की गुड़िया

17. द डॉन्स डार्लिंग

18. एक स्टारलेट का उदय

19. दक्षिण अफ्रीका में सलेम

20. समीरा की सौतन

Machine Translated by Google

21. सलेम निगरानी में

22. लिस्बन में फंस गए

23. लिस्बन कारावास

24. लिस्बन में प्यार और लालसा

25. वापसी की यात्रा

26. न्यू जर्सी कनेक्शन

27. समीरा भड़क उठीं

28. मोनिका द टर्नकोट

29. सलेम का सराय मीर तक प्रवास

30. सलेम की एक-महिला सेना

31. प्रतिशोध से बचे रहना

उपसंहार: एक प्रतीक्षारत डॉन

स्रोतों पर एक नोट

पेंगुइन का अनुसरण करें

कॉपीराइट

Machine Translated by Google

एस. हुसैन ज़ैदी मुंबई स्थित पत्रकार हैं और खोजी, अपराध और आतंकवाद संबंधी रिपोर्टिंग के क्षेत्र में अनुभवी हैं। उन्होंने एशियन एज, मुंबई मिरर, मिड-डे और इंडियन एक्सप्रेस के लिए काम किया है। उनकी पिछली किताबों में "ब्लैक फ्राइडे", "डोंगरी टू दुबई", "माफिया क्वींस ऑफ़ मुंबई" और "बाइकुला टू बैंकॉक" जैसी बेस्टसेलर किताबें शामिल हैं । "ब्लैक फ्राइडे" और "डोंगरी टू दुबई" पर आधारित बॉलीवुड फ़िल्में क्रमशः "ब्लैक फ्राइडे" और "शूटआउट एट वडाला" बन चुकी हैं। वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहते हैं।

Machine Translated by Google

इसी लेखक द्वारा

मुंबई की माफिया क्वींस: गैंगलैंड्स की महिलाओं की कहानियां (जेन के साथ)
बोर्जेस)

डोंगरी से दुबई: मुंबई माफिया के छह दशक

हेडली और मैं

बायकुला से बैंकॉक

Machine Translated by Google

के लिए

विक्रम महान चंद्र,

मेरे मार्गदर्शक, कहानी कहने और लिखने का मेरा स्कूल, मेरे गुरु, मेरे दोस्त

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

परिचय और आभार

"डोंगरी टू दुबई" और "बाइकला टू बैंकॉक" के बाद , "माई नेम इज़ अबू सलेम" मेरी माफिया त्रयी की तीसरी किताब है । हालाँकि इस पर शोध करने में चार साल लगे, लेकिन यह 5 अगस्त 1997 से ही प्रगति पर है—जिस दिन मैंने पहली बार अबू सलेम से बात की थी। वह उस समय दुबई में छिपा हुआ था; ठीक उसी दिन उसके चार गुर्गों को बांद्रा में तत्कालीन फिल्म सम्राट सुभाष घई पर हमले की योजना बनाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। यह संगीत जगत के दिग्गज गुलशन कुमार की नृशंस हत्या से ठीक एक हफ़्ते पहले की बात है।

सत्रह साल से ज़्यादा हो गए हैं, और उसके बाद से मैं सलेम से कई बार मिल चुका हूँ। हमारे बीच गहरी नफ़रत है। वह समझ नहीं पाता कि मैं उससे इतना प्रभावित क्यों नहीं होता और उसके बारे में लिखते हुए अपनी तीखी कलम क्यों नहीं चलाता। माफिया के सदस्य अक्सर इस भ्रम में रहते हैं कि उन्हें बहुत ग़लत समझा जाता है और वे आलोचना के तीखे हमले के बिल्कुल भी हक़दार नहीं हैं। मिसाल के तौर पर, सलेम को लगता है कि वह बहुत सुंदर है और एक अच्छा इंसान है।

मेरे लिए, सलेम माफिया की सारी क्रूरता का प्रतीक है—अनियंत्रित शक्ति और बेतरतीब हत्याएँ। लेकिन गैंगस्टर और डॉन भी, अपनी क्रूर प्रवृत्ति के बावजूद, एक अलिखित नियम का पालन करते हैं। सलेम ने उन सभी नियमों का उल्लंघन किया। उदाहरण के लिए, बिल्डर प्रदीप जैन की हत्या के बाद, उसने अपने मृतक पति के तेरहवें दिन उसकी विधवा से उसके बारे में खूब बातें कीं। उस महिला को नर्वस ब्रेकडाउन हो गया था।

उन्नीस साल के अपने रिपोर्टिंग करियर में, मुझे हर तरह के सनकी लोग मिले, लेकिन सलेम जैसा कोई नहीं मिला। संयोग से, वह एक सम्मानित परिवार से ताल्लुक रखता है, जिसके माता-पिता बहुत ही सिद्धांतों पर चलने वाले हैं।

एक पत्रकार और लेखक होने के नाते, मुझे अपने विषय को पसंद या नापसंद करने की ज़रूरत नहीं है। ऐसे लोगों के बारे में लिखते समय वस्तुनिष्ठ होना एक सर्जन के उस कोड जैसा है जिसमें वह सर्जरी करते समय उस व्यक्ति के पक्ष या विपक्ष में अपनी भावनाओं को आड़े नहीं आने देता। इस लिहाज से, सलेम एक जटिल, पेचीदा और मुश्किल विषय था।

हालाँकि, चार साल से ज़्यादा समय तक लगातार शोध करने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मुझे अपनी जाँच पूरी करने के लिए और समय चाहिए होगा क्योंकि सलेम के कई मुकदमे अपने अंतिम चरण में थे। लेकिन समय मेरे पास एक ऐसी विलासिता थी जिसकी मुझे कमी थी।

मैं अपने प्रकाशक पेंगुइन और मुख्य संपादक चिकी सरकार का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। उनके धैर्य और शांत प्रयास ने मुझे यह सुनिश्चित किया कि मैं अपनी संतुष्टि के मानकों के अनुसार किताब पूरी कर सकूँ। चिकी ने मुझे अपनी इच्छानुसार किताब को पूरा करने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता और आज़ादी दी। मैं अपने कॉपी एडिटर शानुज और कवर डिज़ाइनर आशिम राज का भी शुक्रिया अदा करना चाहूँगा।

मुंबई के अपराधियों और उनके वैश्विक कारनामों से वाकिफ़, नई दिल्ली के पूर्व पुलिस कमिश्नर नीरज कुमार, एक अधिकारी ने बार-बार मेरी मदद की। जब सलेम अमेरिका में था, तब श्री कुमार सीबीआई के संयुक्त निदेशक थे। उन्होंने ही घमंडी एफबीआई को सलेम के पीछे पड़ने के लिए उकसाया था। वे बेहद मददगार थे और अपना समय उदारता से देते थे, अपने कद का कोई घमंड नहीं करते थे और हमेशा मेरी मदद के लिए तत्पर रहते थे। शुक्रिया, करम, मेहरबानी, श्री कुमार, मैं आपको अपना दोस्त पाकर बहुत आभारी हूँ।

एनकाउंटर स्पेशलिस्ट और क्राइम ब्रांच के पुलिस अधिकारी प्रदीप शर्मा की कुशलता और ज़मीनी स्तर की ख़ुफ़िया जानकारी ने इस किताब को ज़रूरी बढ़ावा दिया। शर्मा ने मुझे फ़िल्म उद्योग में छिपे सबसे चालाक मुखबिरों और अंडरवर्ल्ड के सबसे मज़बूत संपर्कों से परिचित कराया। जब भी मैं अपनी रिसर्च में किसी अधूरे पड़ाव पर पहुँचता,

Machine Translated by Google

शर्मा जी ने मेरे लिए पहुँच के द्वार खोले और यह सुनिश्चित किया कि मैं अपनी जाँच पूरी कर सकूँ। जनाब शर्मा साहब, मैं आपका बहुत आभारी हूँ और आपका बहुत आभारी हूँ।

बॉलीवुड चुप्पी की साज़िश पर फलता-फूलता है। लेकिन फ़िल्म निर्माता संजय गुप्ता, जो ख़ुद सलेम के नापाक इरादों के शिकार रहे, ने फ़िल्म जगत पर सलेम की नृशंस पकड़ का उदारतापूर्वक वर्णन करते हुए घंटों बिताए। यह संजय की बहुमूल्य अंतर्दृष्टि ही थी जिसने उस समय फ़िल्म उद्योग की दुर्दशा पर प्रकाश डाला जब अबू सलेम का बोलबाला था।

मेरी पूर्व सहकर्मी जिग्ना वोरा, जो इस परियोजना से शुरुआत से ही जुड़ी थीं, लेकिन कानूनी पचड़ों के कारण इसे जारी नहीं रख सकीं, ने सलेम के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए अनुकरणीय खोजी कौशल और रिपोर्टिंग की चतुराई का परिचय दिया। जिग्ना ने पुस्तक के लिए कई दस्तावेज़ और कानूनी कागजात भी जुटाए। धन्यवाद, जिग्ना।

पुलिस और पत्रकारों के बाद, इस परियोजना को पूरा करने में वकीलों ने मेरी मदद की। और उनमें से सबसे बड़ी मदद मुझे एक बेहद मेहनती और धैर्यवान वकील, सबा कुरैशी से मिली। मैं उनसे कुछ महीने पहले ही मिला था जब मैं अपनी किताब पूरी करने वाला था और उन्होंने मुझे सलेम के प्रत्यर्पण और उसके बाद पुर्तगाली सुप्रीम कोर्ट द्वारा उसके रद्द होने की जटिलताओं को समझने में मदद की। सबा ने धैर्य और लगन से मामले के कानूनी पहलुओं को समझाया। अगर उनका योगदान न होता, तो मुझ पर कई ग़लतियों का आरोप लगाया जाता। धन्यवाद, सबा कुरैशी।

दूसरे वकील जिन्होंने मेरी मदद की, वे थे सुदीप पासबोला, जिन्होंने लंच ब्रेक के दौरान सेशन कोर्ट में सलेम से मेरी मुलाकात का रास्ता तैयार किया।

पत्रकारिता के तीन छात्रों ने अपनी लगन और मेहनत से मेरा साथ दिया। येशा कोटक, आकाश जैन और बिलाल सिद्दीकी ने मेरे काम को आसान बनाने के लिए बड़े-बड़े दस्तावेज़ों का लिप्यंतरण किया। येशा ने कठिन अदालती दस्तावेज़ों का हिंदी और मराठी से अंग्रेज़ी में अनुवाद भी किया। मेरे ये युवा दोस्त वाकई मेहनती, कुशल और बेहद मेहनती हैं। मैं उनकी निस्वार्थ सेवा और मेहनत से बहुत प्रेरित हूँ। शुक्रिया, येशा, आकाश और बिलाल, आप तीनों के बिना काम करना अकल्पनीय है।

इस किताब को लिखते समय मैंने जानबूझकर किसी भी पत्रकार मित्र से मदद न लेने का फैसला किया था। हालाँकि, मुझे शीला रावल से मार्गदर्शन लेने के लिए यह व्रत तोड़ना पड़ा। शीला स्टार न्यूज़ में इन्वेस्टिगेशन एडिटर हैं और देश की सबसे निडर खोजी पत्रकारों में से एक हैं। वह अकेली हैं जिन्होंने अमेरिका में सलेम की पत्नी समीरा जुमानी का पता लगाया और उनसे छह घंटे तक बात की। चूँकि यह उपलब्धि दोहराई नहीं जा सकती थी, इसलिए मैंने समीरा के साक्षात्कार और अन्य पृष्ठभूमि विवरणों का उपयोग करने में शीला की मदद ली। शीला ने बहुत उदारता और निःसंकोच मुझे जानकारी प्रदान की, जो भारतीय पत्रकारों में एक दुर्लभ गुण है। शीला, मैं तहे दिल से आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरा आभार तब तक अधूरा रहेगा जब तक मैं उन दोस्तों और संपर्कों का ज़िक्र न करूँ जिन्होंने दुबई में मेरे शोध, मेहनत और जाँच-पड़ताल के दौरान मुझे अपना बहुमूल्य समय दिया। खाड़ी की यह राजधानी अभी भी अंडरवर्ल्ड का अड्डा है जहाँ गैंगस्टर अपनी ज़िंदगी एक पतली सी इज़्ज़त के पीछे बिताते हैं, लेकिन अपने काले अतीत से पूरी तरह से मुकर नहीं पाए हैं।

सलेम के बारे में बात करते हुए वे काफ़ी मददगार और खुले थे। उसे सबसे अच्छी तरह जानने वाला और सबसे ज़्यादा ठगा हुआ महसूस करने वाला व्यक्ति मलिक है। उसने मुझे सलेम के चरित्र के बारे में गहरी जानकारी दी। दूसरे लोग मुझसे तभी बात करते थे जब वे गोपनीयता की शपथ लेते थे।

मेरे शिष्य और शिष्य रेयान रिज़वी, जिन्होंने मेरे साथ ही पत्रकारिता छोड़ दी और दुबई चले गए, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। रेयान ने दुबई में शोध में मदद की। पूरे एक हफ़्ते तक, उन्होंने अपने सारे काम छोड़कर मेरे ड्राइवर, गाइड, शोधकर्ता, साक्षात्कारकर्ता और मेरे लिए काम किया। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, रेयान। तुम कमाल के हो।

Machine Translated by Google

लखनऊ के अंगूरी बाग़ निवासी प्रिंस रज़ा इक़बाल मिर्ज़ा, जो लखनऊ के शाही परिवार के वंशज हैं और अब दुबई में बस गए हैं, ने इस किताब में अपने योगदान के साथ उद्यमशीलता और उदारता का परिचय दिया। प्रिंस रज़ा मेरे दो बजे वाले दोस्त थे और मेरे साथ दुबई के अनजान इलाकों में घूमते थे। प्रिंस ने प्रशासनिक और कागजी कार्रवाई के लिए अपने पूरे कार्यालय स्टाफ को मेरे पास रख दिया, और ट्रांसक्रिप्शन के लिए अपने वरिष्ठ सहायकों को भी मुझे दे दिया।

ज़हूर हैदर मिर्ज़ा नोट्स तैयार करने में बहुत सावधानी बरतते थे और दुबई में सलेम के कई सहयोगियों के साथ मेरे द्वारा किए गए कई साक्षात्कारों की प्रतिलिपि बनाने में भी उन्होंने बहुत मेहनत की। हर रोज़ रात 9 बजे सोने की अपनी एकांतप्रिय दिनचर्या के बावजूद, वे मेरे लिए रात-रात भर जागते रहे, और धुंधली आँखों से तड़के अपने लैपटॉप पर ध्यान लगाए रहे। ज़हूर के सटीक और समय पर लिखे गए नोट्स बहुत मददगार साबित हुए।

शारजाह के ज़िया रिज़वी और उनकी पत्नी फ़हमीदा ने भी मेरी खोज में बहुत मदद की
तथ्यों को सही ढंग से प्रस्तुत करने के लिए। धन्यवाद, ज़िया भाई और फ़हमीदा आपा।

अंत में, मैं यह बताना चाहूँगा कि एशियन एज में मेरे समय से ही मेरे युवा सहयोगी रहे करण प्रधान के बिना यह पुस्तक अधूरी रह जाती। करण इस पुस्तक के लिखे जाने के शुरुआती दौर से ही इससे जुड़े रहे और इसे एक मनोरंजक पुस्तक बनाने के लिए उन्होंने कई दिन-रात एक कर दिए। एक शोधकर्ता, विश्लेषक और तथ्यों के संकलनकर्ता के रूप में वे अद्भुत थे। अगर वे न होते, तो यह कहानी उस रूप और कथानक में नहीं कही जा सकती थी जिस रूप में यह आपके हाथों में है। करण ने इस पुस्तक को प्रथम-पुरुष से तृतीय-पुरुष और फिर अन्य कथात्मक शैलियों में, जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ी, विभिन्न स्वरूपों में रूपांतरित करने में अथक परिश्रम किया।

मैं इंडियन एक्सप्रेस में अपनी पूर्व सहयोगी कविता अय्यर का भी तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ , जिन्होंने अपनी पूर्व व्यस्तताओं के बावजूद अंतिम मसौदे को ध्यान से पढ़ा और हर अध्याय के बारे में अपनी बेबाक सलाह दी। यह उनकी बेहतरीन एडिटिंग ही थी जिसने किताब को पढ़ने के आनंद को और बढ़ा दिया।

मेरे पाठकों के प्रति मेरी सर्वोच्च और गहन कृतज्ञता है। दूसरी ओर, मैं आपका जितना भी आभार व्यक्त करूँ, कम है, कम है, मेरे पाठकों, जिन्होंने मुझे सबसे कठिन समय में भी लिखते रहने के लिए प्रेरित किया, तब भी जब मैं थका हुआ, हतोत्साहित और निराश महसूस कर रहा था। आपकी प्रेरणा और सराहना ने ही मुझे सक्रिय रखा। आपके प्रोत्साहन से मैं अभिभूत हूँ।

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

प्रस्तावना

"मैं तुम्हें अबू सलेम की पूरी कहानी बता सकता हूँ, जो कोई और नहीं बता सकता। वह बचपन से ही मेरा भाई और अपराध में मेरा साथी रहा है," फ़ोन पर एक मध्यम आवाज़ ने अनिच्छा से कहा।

अबू सलेम पर महीनों की मेरी खोज अब बंद हो चुकी थी। मुंबई के सबसे खूँखार गैंगस्टर के बारे में ढेरों दस्तावेज़ों और हर उपलब्ध जानकारी को खंगालने के बावजूद, मैं उस आदमी के रहस्य को सुलझाने के करीब नहीं पहुँच पाया था। मुझे उसके किसी करीबी की ज़रूरत थी।

फ़ोन पर उस आदमी ने कहा कि अगर मैं उससे मिलना चाहता हूँ तो मुझे दुबई आना होगा। दुबई, क्रिसमस के दौरान? अपनी बेचैनी में, मैं मंगल ग्रह पर जाने के लिए भी तैयार हो सकता था। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि किसी अजनबी से अकेले और किसी अनजान देश में मिलना समझदारी या सुरक्षा होगी भी या नहीं।

केंद्रीय जाँच ब्यूरो (सीबीआई) और मुंबई पुलिस ने मुझे सलेम के बारे में ढेर सारी जानकारियाँ दी थीं, लेकिन उस आदमी की जानकारी से बढ़कर कुछ नहीं था जो सलेम के साथ तब से पला-बढ़ा था जब वह चलने लायक भी नहीं था, बंदूक चलाना तो दूर की बात थी। यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी। इसलिए मैं दुबई जाने वाली एमिरेट्स की फ्लाइट में सवार हो गया।

सलेम का जीवन विरोधाभासों का एक अध्ययन है। वह मुंबई के माफियाओं में कई मायनों में अनोखा था। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ गाँव में जन्मे सलेम ने अकेले ही बॉलीवुड के दिग्गजों और निर्माण क्षेत्र के दिग्गजों को अपना दुश्मन बना लिया।

किसी अन्य डॉन के नाम ने फिल्म बिरादरी के दिलों में इतना भय नहीं पैदा किया जितना कि उनके नाम ने।
वह न सिर्फ़ फ़िल्मी हस्तियों को आतंकित करता था; उनसे जबरन वसूली करता था, कुछ को मरवा भी देता था, और इस तरह कुछ स्ट्रगलर्स को सुपरस्टार बनने में भी मदद करता था। आप उसे बॉलीवुड का डॉन कह सकते हैं।

मिडिल स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाला सलेम अपनी तस्करी के धंधे को अद्भुत कुशलता से चलाता था और करोड़ों कमाता था। एक आवारा गुंडा होने के बावजूद, उसका दिल एक कैसानोवा जैसा था और उसने कई शादियाँ कीं, जिनमें एक फिल्म अभिनेत्री के साथ उसका रोमांस और शादी भी शामिल थी। वह शख्स जो मुश्किल से 100 रुपये लेकर मुंबई आया था, अब मुंबई और उसके आसपास 5000 करोड़ रुपये से ज़्यादा की संपत्ति रखता था। वह शख्स जो अपने गाँव में फिल्मी अभिनेत्रियों की तस्वीरों को घूरता रहता था, अब फिल्म इंडस्ट्री की कुछ सबसे खूबसूरत महिलाओं के साथ सो पाया था।

एक ऐसी दुनिया में काम करते हुए जहाँ बदला लेना नौकरी का एक हिस्सा था, सलेम ने अपने पुराने बॉस अनीस इब्राहिम के खिलाफ कभी कुछ नहीं कहा और न ही कोई साजिश रची, यहाँ तक कि डी-कंपनी से कड़वाहट से अलग होने के बाद भी। इतना ही नहीं, इतना खौफनाक आतंकी होने के बावजूद, सलेम एक मृदुभाषी और शिष्ट व्यक्ति भी था। विरोधाभासों का यही ताना-बाना मुझे उसकी कहानी की ओर खींच लाया।

दुबई की चमकदार अमीरात दुनिया की सबसे ऊंची इमारत (बुर्ज खलीफा), सबसे ऊंचे होटल (जेडब्ल्यू मैरियट मार्क्विस) और सबसे बड़े मानव निर्मित द्वीप (पाम जुमेराह) के घर के रूप में जानी जाती है, लेकिन मेरे लिए यह मुंबई माफिया के लिए एक सुरक्षित आश्रय होने के लिए सबसे प्रसिद्ध (या कुख्यात) है। अस्सी के दशक की शुरुआत में, दुबई भारतीयों के लिए पहुंचने के लिए सबसे आसान विदेशी स्थान था। कोई भी ढाई घंटे में वहां पहुंच सकता था, 5000 रुपये के आगमन पर वीजा के साथ। जब भी मुंबई पुलिस ने गैंगस्टरों पर दबाव डाला, वे अरब की राजधानी भाग गए। 20,000 रुपये से कम के लिए, जिसमें हवाई किराया और वीजा शामिल है, वे मुंबई की जेलों से बच सकते थे और अमीरात में काम करने वाले कई दक्षिण एशियाई लोगों के साथ घुलमिल सकते थे। अस्सी के दशक की शुरुआत में दाऊद और उसके गुर्गों द्वारा शुरू किया गया यह चलन 1980 के दशक तक जारी रहा।

Machine Translated by Google

नब्बे के दशक के अंत में.

1993 के मुंबई सीरियल बम धमाकों और अन्य बड़े अपराधों के कई आरोपी अब भी वहीं रह रहे हैं और द्वीप की राजधानी में उनकी कई संपत्तियाँ भी हैं। दाऊद इब्राहिम के पाकिस्तान चले जाने, अबू सलेम के भारत प्रत्यर्पण और छोटा राजन के गायब होने के बावजूद, शहर में अभी भी माफिया कनेक्शन और ठिकानों की बदबू आ रही है।

इकबाल मिर्ची के इंपीरियल सुइट्स और शरद शेट्टी के रमी गेस्टलाइन होटल अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। मिर्ची और शेट्टी, दाऊद के ज़िंदा रहते हुए उसके विश्वासपात्र थे।

दुबई पहुँचते ही मुझे एहसास हुआ कि यह घूमने के लिए सबसे खराब मौसमों में से एक है। यूएई सरकार दुनिया के सबसे बड़े आतिशबाज़ी प्रदर्शन की योजना बना रही थी, जो 4,00,000 से ज़्यादा आतिशबाज़ियों के साथ पिछले रिकॉर्ड को तोड़ देगा। पर्यटक भारी संख्या में देश में आ रहे थे। एक असंबंधित घटनाक्रम में, मेरी क्रिसमस मीटिंग नए साल की पूर्व संध्या पर स्थानांतरित कर दी गई थी। बस मेरी किस्मत अच्छी थी। 31 दिसंबर को पूरा शहर बेकाबू हो गया।

डिनर का आयोजन डेरा मार्केट मेट्रो स्टेशन के पास स्थित एक पाकिस्तानी रेस्टोरेंट, अल इब्राहिमी में होना था। अल इब्राहिमी का बुफ़े दुबई के सर्वश्रेष्ठ बुफ़े में से एक माना जाता था।
स्वादिष्ट तंदूरी मछली, दही और लहसुन में मैरीनेट किए हुए चिकन के रसीले नगेट्स, लाजवाब मटन रोगन जोश, कई अन्य पाकिस्तानी व्यंजन और उम्म-ए-अली की लाजवाब मिठाई, ये बुफ़े में परोसे जाने वाले कुछ लज़ीज़ व्यंजन थे। जब मैं इंतज़ार कर रहा था, मनमोहक खुशबू चारों ओर फैल रही थी, तभी मुझे एक फ़ोन आया और मुझे जुमेरा बीच आने के लिए कहा गया। मैंने विरोध किया कि ट्रैफ़िक बहुत ज़्यादा है और मेरे लिए वहाँ पहुँचना नामुमकिन होगा, लेकिन वह आदमी ज़िद पर अड़ा रहा। उसे डर था कि उसे कोई देख लेगा, इसलिए वह अल इब्राहिमी के आस-पास भी नहीं जा सकता था।

जाम से भरी सड़कों पर कुछ देर गाड़ी चलाने के बाद, मेरे ड्राइवर ने जुमेराह की ओर जाने की कोशिश छोड़ दी। उसने झुंझलाहट में कहा, "दुबई सरकार पिछले साल कुवैत के आतिशबाज़ी प्रदर्शन का रिकॉर्ड तोड़ना चाहती है।" दुबई के आतिशबाज़ी प्रदर्शन का विशाल पैमाना अद्भुत था—यह फिजूलखर्ची और विलासिता का एक अविश्वसनीय प्रदर्शन था। छह मिनट में, दुबई के आसमान में पाँच लाख से ज़्यादा आतिशबाज़ी फूटेंगी, फ़िज़ाएँ फूटेंगी, टिमटिमाएँगी और चीखें निकलेंगी।

पाम जुमेराह के विभिन्न पाँच सितारा होटलों के साथ-साथ दुबई के प्रसिद्ध बुर्ज अल-अरब होटल और बुर्ज खलीफा द्वारा आयोजित, मध्यरात्रि की आतिशबाजी को दो भागों में विभाजित किया जाना था। सबसे पहले, पाम जुमेराह और 2717 फुट ऊँचे बुर्ज खलीफा पर छह मिनट का एक ज़बरदस्त प्रदर्शन, जिससे विश्व रिकॉर्ड बनाने की उम्मीद थी। इसके बाद जुमेराह बीच के एक किलोमीटर लंबे हिस्से पर पंद्रह मिनट का प्रदर्शन होना था। वर्तमान रिकॉर्ड धारक, कुवैत, ने 2012 में एक घंटे के दौरान आश्चर्यजनक रूप से 77,282 आतिशबाजी की थी।

ड्राइवर ने मेरी किराए की कार सड़क किनारे खड़ी कर दी और मैं जुमेराह की ओर चल पड़ा। सुरक्षा घेरे, ट्रैफ़िक और लोगों की भीड़ के कारण यह काम काफ़ी मुश्किल लग रहा था। जैसे ही मैं चलने लगा, मुझे फिर से फ़ोन आया और हमारी मुलाक़ात की नई जगह के बारे में बताया गया। मुझे बुर्ज खलीफ़ा के ठीक सामने हाईवे पर इंतज़ार करना था और वह वहीं मुझसे मिलेंगे।

मैं वापस मुड़ा और कार में वापस बैठ गया और हम हाईवे की ओर चल पड़े। यहाँ भीड़ अपेक्षाकृत कम और उन्मादी थी, लेकिन जश्न उतना ही शानदार था। उसने मुझसे मिलने और सलेम की कहानी सुनाने के लिए ऐसा दिन और समय क्यों चुना? मैं थका हुआ, नींद से भरा और निराश महसूस करने लगा था।

जब मैं मिलन स्थल पर इंतज़ार कर रहा था, तभी मेरे कंधे पर किसी ने थपथपाया। मैंने मुड़कर देखा तो एक साधारण कद-काठी का, बिना बालों वाला और अच्छे कपड़े पहने आदमी खड़ा था। हाईवे पर, जहाँ अँधेरे आसमान में मुझे बस पटाखे ही दिखाई दे रहे थे, उसने अपना चेहरा छिपाने के लिए धूप का चश्मा पहना हुआ था। वह नहीं चाहता था कि मैं उसका चेहरा देखूँ या उसकी आँखों में देखूँ।

Machine Translated by Google

"सलाम अलैकुम, मेरा नाम मलिक है, और मैं सलीम का बचपन का दोस्त हूँ। मैं तुमसे इसलिए नहीं मिल रहा हूँ क्योंकि मैं मिलना चाहता था, बल्कि मुझे बुलाया गया था और मैं मना नहीं कर सका," उसने रूखेपन से कहा। मैं अपनी डायरी और कलम लेकर बैठ गया, और उसे आश्वस्त किया कि मुझे बस उसके कुछ घंटे चाहिए। लेकिन वह आदमी अभी भी हिचकिचा रहा था। उसने आतिशबाजी से जगमगाते आसमान की ओर देखा और पूछा, "क्या तुम जानते हो कि मैं इस शो के आयोजकों की टीम का हिस्सा हूँ?"

इसी कवर की बदौलत उनकी दुबई यात्रा और गुप्त रूप से घूमने-फिरने में मदद मिली। उन्होंने शेखी बघारी और कहा, "हमने इस पूरे तमाशे को सिंक्रोनाइज़ और कोरियोग्राफ करने के लिए सौ से ज़्यादा कंप्यूटरों का इस्तेमाल किया है।" इस शो में काम करने के लिए अमेरिका स्थित फायरवर्क्स बाय ग्रुची के दो सौ से ज़्यादा विशेषज्ञ तकनीशियनों को बुलाया गया था। यूएई सरकार ने इस रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन पर 60 लाख डॉलर से ज़्यादा खर्च किए थे।

'मुझसे एक वादा करो,' उसने कुछ नाटकीय ढंग से कहा, 'किसी को कभी पता नहीं चलना चाहिए कि मैंने तुमसे बात की है और तुम्हें यह कहानी सुनाई है।' 'मैं वादा करता हूँ,' मैंने कहा और पूछा, 'लेकिन फिर मुझे बताओ कि दुबई ही क्यों? खासकर साल के इस समय में।' वह मुस्कुराया। 'मैं आतिशबाज़ी की आड़ में भाग सकता हूँ और गायब हो सकता हूँ। किसी को कभी पता नहीं चलेगा कि हम यहाँ मिले थे।' मैंने सिर हिलाया।

मलिक ने सलेम की कहानी शुरू की। मैंने अपने नोटपैड पर तेज़ी से लिखना शुरू किया और बाद में लैपटॉप पर काम करना शुरू कर दिया। मलिक लगातार सिगरेट पीता था और हमारे चारों ओर लगातार धूसर-नीले धुएँ के गुबार के बीच बोलता रहा। समय तेज़ी से बीतता गया और मुझे पता ही नहीं चला कि वह घंटों से बोल रहा था।

भोर होने वाली थी और मलिक ने सलेम के विभिन्न राजनेताओं से संबंधों के बारे में बड़बड़ाना शुरू कर दिया था। आतिशबाजी की अंतिम बौछार ने समुद्र तट पर एक कृत्रिम 'सूर्योदय' का रूप ले लिया, जो बड़े सपनों और अदम्य महत्वाकांक्षाओं वाले इस शहर के लिए एक नई सुबह का संकेत था। 828 मीटर ऊँचे टॉवर से नीचे गिरती लाल और चाँदी की आतिशबाजी के साथ हज़ारों नीलम के फूलों ने रात के आकाश को जगमगा दिया। हालाँकि, इस साल का सबसे बड़ा आकर्षण हाइमेनोकैलिस रेगिस्तानी फूल की पंखुड़ियों जैसा आकार का आतिशबाजी प्रदर्शन था—जिस पर बुर्ज खलीफा का डिज़ाइन आधारित है। पंखुड़ियों ने टॉवर को ढकने का भ्रम पैदा किया। फूलों की पंखुड़ियों से आच्छादित विशाल इमारत एक लुभावना भ्रम था।

पाम जुमेराह के सुदूर छोर पर स्थित अटलांटिस द पाम ने नासिमी बीच पर अपने बेहद लोकप्रिय मासिक उत्सव, सैंडांस का आयोजन किया था, जिसमें नए साल की पूर्व संध्या पर डीजे पॉल ओकेनफोल्ड और पीट टोंग जैसे कलाकार शामिल थे। दूसरी ओर, पाम जुमेराह के पश्चिमी अर्धचंद्राकार क्षेत्र में स्थित जुमेराह ज़बील सराय, जिसका इस्तेमाल टॉम क्रूज़ की " मिशन इम्पॉसिबल: घोस्ट प्रोटोकॉल" में एथन हंट के रूप में चौथी बार मंच पर किया गया था और जो अक्सर मध्य पूर्व की यात्रा पर आने वाले हॉलीवुड के शीर्ष कलाकारों की मेज़बानी करता है, ने अपनी एक शानदार पार्टी आयोजित की थी।

दुबई के इसी हिस्से में सलेम की संपत्तियाँ थीं। मलिक ने बताया कि जुमेरा बीच पर सलेम के पाँच बंगले थे। वह एक में रहता था, दूसरे को दफ़्तर की तरह इस्तेमाल करता था, जबकि बाकी तीन किराए पर दिए हुए थे। मलिक ने कहा, "इससे आपको उसकी अमीरी का अंदाज़ा हो जाएगा।" मलिक द्वारा सुनाई गई पूरी कहानी मुंबई के अंडरवर्ल्ड में सलेम के उत्थान और विकास, बॉलीवुड और राजनीति में उसके संबंधों का एक ज़बरदस्त ब्यौरा थी। इस समय तक, मुअज़्ज़िन ने अज़ान देना शुरू कर दिया था।

मलिक ने मेरी ओर देखा और कहा, 'केवल एक ही आदमी है जो तुम्हें इससे बेहतर बता सकता है।'
'इससे भी ज़्यादा अच्छी कहानी
है।' मैंने उत्सुकता से उसकी ओर देखा।
उन्होंने कहा, 'सलेम स्वयं।'
मुझे अलविदा कहने के बाद, उसने कहा, "खुदा हाफ़िज़", और अपनी कार में बैठकर चला गया, मुझे हाईवे पर अकेला छोड़कर। मुझे एहसास हुआ कि सलेम से मिलने तक मेरी कहानी अधूरी रहेगी। लेकिन सलेम अब आज़ाद नहीं था। वह अब तलोजा सेंट्रल जेल के कड़ी सुरक्षा वाले घेरे में बंद था।

Machine Translated by Google

मुंबई के कोलाहल से लगभग पचास किलोमीटर दूर एक छोटी सी शांत बस्ती तलोजा अपनी असाधारण स्वादिष्ट बिरयानी के लिए प्रसिद्ध हुई थी। हालांकि, समय के साथ, प्रसिद्ध तलोजा बिरयानी ने अपना स्वाद खो दिया और इसका व्यंजन इतिहास का विषय बन गया। बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद हुए दंगों में, सरकार ने फैसला किया कि किसी भी दंगे जैसी स्थिति का जवाब देने के लिए अर्धसैनिक इकाई, रैपिड एक्शन फोर्स (आरएएफ) की एक कंपनी को शहर के करीब तैनात किया जाना चाहिए। और इस तरह तलोजा अगली बार सुर्खियों में आया। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में, यह शांत बस्ती एक बार फिर सुर्खियों में आ गई जब मुंबई के सबसे कुख्यात विचाराधीन कैदी अबू सलेम को मुंबई सेंट्रल जेल, जिसे आर्थर रोड जेल के नाम से जाना जाता है, से तलोजा सेंट्रल जेल में स्थानांतरित कर दिया गया।

तलोजा जेल अपने आस-पास के माहौल से बिल्कुल अलग लग रही थी। जेल तीन तरफ से खारघर के आलीशान मोहल्ले से घिरी हुई थी। मैं सोच रहा था कि बिल्डर इन ऊँची इमारतों में फ्लैट कैसे बेचेंगे। क्या वे अपने फ्लैटों को जेल व्यू, जेल के मुख्य द्वार का दृश्य, कैदी परिसर का दृश्य, वगैरह के रूप में दिखाएंगे? बॉम्बे हाईकोर्ट ने हाल ही में निर्माण कार्यों पर रोक लगाते हुए निर्देश जारी किए थे कि जेल से 500 मीटर से कम दूरी पर कोई नई इमारत नहीं बनाई जानी चाहिए।

ऐसा लगता है कि जेल को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करने के लिए जानबूझकर पहाड़ियों की तलहटी में बनाया गया था। यह सुरक्षा बाहरी है—ताकि कोई भाग न सके। लेकिन अगर कोई कैदी जेल के अंदर किसी साथी कैदी की हत्या करना चाहे तो क्या होगा? आंतरिक सुरक्षा कैसे पुख्ता की जा सकती है? पिछले साल, सलेम पर एक जानलेवा हमला हुआ था, जिसमें गैंगस्टर देवेंद्र जगताप ने जेल की बैरक में उस पर गोली चलाई थी, जिससे वह बाल-बाल बच गया था।

लोहे के विशाल गेट पर, जब एक हट्टे-कट्टे पुलिसवाले ने मुझसे मेरे आने का मकसद पूछा, तो मैंने उसे बताया कि मैं सलेम से मिलना चाहता हूँ। उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। मेरी काली पतलून और कलफ लगी सफ़ेद कमीज़ देखकर लगा कि मैं शायद सलेम का वकील हूँ। इसलिए उसने बिना मेरी तलाशी लिए मुझे अंदर जाने दिया।

जेल के अंदर पहुँचकर, मुलाक़ात कक्ष तक 200 मीटर और चलना पड़ा। मैंने देखा कि बंदियों के बच्चे परिसर में खेल रहे थे। जब उनके पिता गिरफ्तार हुए थे, तब ये बच्चे बड़े होकर पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाले स्कूली बच्चे बन गए थे। आगे बढ़ने पर मुझे एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया जिसके सफ़ेद बाल और सफ़ेद दाढ़ी मेंहदी से चमकदार लाल रंग में रंगी हुई थी। वह आदमी 'टिफिन पहुँचाने वाले चाचा' थे, जिनका काम उन कई कैदियों को खाना पहुँचाना था जिन्हें अदालत ने घर का बना खाना खाने की इजाज़त दी थी।

फिर मैंने मीटिंग रूम में जाने का फैसला किया और सलेम से मिलने का अनुरोध किया। मीटिंग रूम में दस स्टॉल थे, हर एक का अपना काँच का विभाजन था। फिल्मों की तरह, विचाराधीन कैदी अंदर बैठते हैं और उनके वकील या रिश्तेदार बाहर बैठकर इंटरकॉम पर एक-दूसरे से बात करते हैं। मैं सोच रहा था कि क्या मुझे मीटिंग रूम में आसानी से पहुँचने के लिए सलेम का वकील या रिश्तेदार बनकर पेश आना चाहिए।

कमरे में बैठे एक वकील ने मेरे विचारों को अस्त-व्यस्त कर दिया। उसे एहसास हो गया था कि मैं जेल में आने वाले किसी भी वास्तविक मुलाकाती समूह के साथ नहीं हूँ, और उसने सहानुभूतिपूर्वक सुझाव दिया कि मुझे अपनी किस्मत को और ज़्यादा नहीं आज़माना चाहिए। उसने कहा, "मेरे लिए बेहतर यही होगा कि मैं सत्र न्यायालय में सलेम से मिलने की कोशिश करूँ, जहाँ वह अपने मामले की सुनवाई के लिए रोज़ाना आता है।"

सिटी, सिविल एवं सेशंस कोर्ट की नई बिल्डिंग की चौथी मंज़िल पर कोर्ट रूम नंबर 54 के बाहर सलेम से मिलना उम्मीद से ज़्यादा आसान रहा। अदालतों में दोपहर के भोजन का समय हो रहा था और आमतौर पर दोपहर 2 से 2.45 बजे तक छुट्टी होती है। मैंने उसे गलियारे के एक कोने में, अपने जेल गार्डों से घिरा हुआ देखा।

अच्छी तरह से इस्त्री की हुई पतलून और चेकदार आधी बाँहों वाली कमीज़ पहने, वह बटर चिकन और नान का अपना दोपहर का खाना बड़े चाव से खा रहा था, जो उसके एक नौकर ने उसके लिए लाया था। यह सलीम से मेरी पहली मुलाक़ात नहीं थी। वह मुझे जानता था। वह मेरे पिछले काम के बारे में भी जानता था और

Machine Translated by Google

उन्होंने माफिया क्वींस ऑफ़ मुंबई में उनकी प्रेम कहानी के मेरे चित्रण पर अपनी असहमति जताई । उन्हें माफ़ी की उम्मीद थी। मैंने कोई माफ़ी नहीं मांगी।

मैंने उसे याद दिलाया कि मैं उसके बारे में एक किताब लिखने की तैयारी में हूँ। उसने सवालिया लहजे में पूछा, "किताब क्यों? मुझ पर एक फ़िल्म की पटकथा लिखो। मुझे किताबों जैसी छोटी-मोटी चीज़ें पसंद नहीं। वैसे भी उन्हें पढ़ता कौन है? मैं बड़े पैमाने पर काम करना चाहता हूँ।"

'खैर, मैं एक पत्रकार और लेखक हूँ; मैं लिख सकता हूँ। मैं कोई स्क्रिप्ट नहीं लिख सकता या कोई फिल्म नहीं बना सकता।

'फिल्म,' मैंने समझाने की कोशिश की।

"मैं फिल्म बनाने में आपकी मदद करूँगा। यह एक बड़े बजट की फिल्म होगी। मेरी कहानी इतनी दिलचस्प है कि लोग इसे सिगरेट पीने या शौचालय जाने के लिए अपनी सीट से उठे बिना ही देख लेंगे," उन्होंने ज़िद की।

'मैं किसी भी काम में आपकी मदद नहीं ले सकता। मैं अपनी सीमित क्षमता में ही काम करना चाहता हूँ।'
और इसी बात को ध्यान में रखते हुए, मैं चाहता था कि तुम मुझे अपनी कहानी बताओ।' मैंने अपनी बात पर अड़ा रहा, क्योंकि मुझे एक लंबी बहस की उम्मीद थी।

लेकिन उन्होंने मुझे चौंका दिया: 'मैंने अपनी जीवन कहानी के लगभग 100 पृष्ठ लिखे हैं। मैं
यदि आप न्यायालय की अनुमति लें तो मैं इसे आपको देने के लिए तैयार हूं।'

ज़ाहिर है, सलेम ने यह सर्पिल-बाउंड किताब कई लोगों को फ़िल्म की पटकथा तैयार करने के लिए दी थी। इस बीच, सलेम का सुरक्षा दल अधीर होने लगा था।
उन्हें एहसास हुआ कि मैं न तो वकील हूँ, न रिश्तेदार, यहाँ तक कि सलेम का गुर्गा भी नहीं। इसलिए मुझे उससे इतनी देर तक बात करने का कोई हक़ नहीं था।

उस दिन मैं अदालत से खाली हाथ लौटा, लेकिन सलेम की हस्तलिखित आत्मकथा हासिल करने में मुझे बस कुछ हफ़्ते लगे। जब सलेम आर्थर रोड जेल में बंद था, तब यह लघु-आत्मकथा उसके एक अंग्रेज़ी-भाषी साथी ने लिखी थी, जिसे वह लिखवाता था। इस 12,000 शब्दों की कहानी में, सलेम ने खुद को एक परोपकारी, एक उदार मित्र, एक रक्षक देवदूत और दीन-दुखियों के मसीहा के रूप में चित्रित किया था। वह खुद को एक ऐसे नायक के रूप में देखता था जिसके साथ अन्याय हुआ था, लेकिन वह अन्याय के खिलाफ खड़ा हुआ और अदम्य साहस और बहादुरी का परिचय दिया। अपराध और हिंसा से भरे जीवन की कैसी व्याख्या!

Machine Translated by Google

एक

Machine Translated by Google

बैरिस्टर का लड़का

यह हमारे समय की सबसे बड़ी विडंबनाओं में से एक है कि भारत के दो सबसे खूंखार अपराधी कानून-व्यवस्था के रखवालों के घर पैदा हुए। दाऊद इब्राहिम के पिता एक कांस्टेबल थे, जबकि सलेम के पिता आजमगढ़ के कानूनी हलकों में एक जाने-माने क्रिमिनल वकील थे। फिर भी, उनका परिवार गुज़ारा मुश्किल से कर रहा था।

सरायमीर में रहने वाले वकील अब्दुल कय्यूम अंसारी, आज़मगढ़ कचहरी में प्रैक्टिस करते थे। वे रोज़ाना अपने घर से कचहरी तक पंद्रह किलोमीटर का सफ़र राजदूत मोटरसाइकिल से तय करते थे। शहर के अर्ध-शहरी, धूल भरे इलाके में लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। आख़िरकार, मोटरसाइकिल एक स्थिर और संपन्न घर की निशानी थी।

अब्दुल कय्यूम और उनकी पत्नी जन्नतुनिस्सा के चार बेटे थे। अबू हकीम सबसे बड़े थे, फिर अबू सलेम, और उसके बाद दो और बेटे, अबू लईस उर्फ़ एजाज और अबू जैश। सबसे छोटी संतान एक लड़की थी जिसका नाम अंजुम रखा गया। यह आश्चर्यजनक है कि सभी लड़कों के नाम में 'अबू' उपसर्ग था—यह मुख्यतः एक अरब मुस्लिम प्रथा है। पहला नाम आमतौर पर 'मोहम्मद' जैसा कुछ होता है, जिसके बाद 'अबू हकीम' जैसा कोई विशेषण होता है, जिसका अर्थ है हकीम का पिता। आमतौर पर लोगों को उनके नाम के पहले नाम के बजाय इसी विशेषण से पुकारना शिष्टाचार माना जाता है।

नाम।

घर के पास ही एक आटा चक्की थी, जो परिवार की आय का एक बड़ा स्रोत थी। वे आइसक्रीम और बर्फ भी बेचते थे। लेकिन जब सलेम सिर्फ़ पाँच साल का था, तो उसके पिता का आजमगढ़ कचहरी जाते समय एक एक्सीडेंट हो गया। उनकी मोटरसाइकिल एक बस से बुरी तरह टकरा गई और वे घंटों खून से लथपथ सड़क किनारे पड़े रहे। आखिरकार जब उन्हें अस्पताल ले जाया गया, तो कय्यूम को मृत घोषित कर दिया गया।

कय्यूम जिस अंसारी समुदाय से ताल्लुक रखते हैं, उसे आम तौर पर बहुत ज़्यादा पढ़ा-लिखा नहीं माना जाता। लेकिन वकील और उनके भाई अपवाद थे, और उन्होंने कॉलेज तक पढ़ाई की थी। सलेम और उनके भाई इस रूढ़िवादिता में ज़्यादा फिट बैठते हैं, क्योंकि उन सभी ने उर्दू माध्यम के स्कूल में सिर्फ़ छठी या सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी और फिर स्कूल छोड़ दिया। सलेम ख़ुद भी सिर्फ़ छठी कक्षा तक ही पहुँच पाए थे।

हालाँकि, शिक्षा में जो कमी थी, वह शिष्टाचार से पूरी हो गई। सलेम की माँ बहुत सख्त थीं और हालाँकि वह उसे गणित या विज्ञान बहुत कम पढ़ा पाती थीं, फिर भी वह शिष्टाचार का बहुत ध्यान रखती थीं और उसने उसमें सामाजिक मर्यादा का भाव भर दिया था। नतीजतन, सलेम बहुत ही शिष्ट और अपने बड़ों का बहुत सम्मान करने वाला था। वह कभी गाली-गलौज या झगड़ा नहीं करता था; इसके बजाय, वह हमेशा मुस्कुराता और सम्मान से बात करता था।

कय्यूम की मौत के बाद, सलेम की माँ ने जीविका चलाने के लिए बीड़ी बनाने और बेचने का काम शुरू कर दिया। धीरे-धीरे, सलेम ने ऑटोमोबाइल और मोटरसाइकिल मरम्मत में रुचि दिखानी शुरू कर दी। पंद्रह साल की उम्र तक, वह इतना कुशल हो गया था कि सरायमीर में एक बेहतरीन मैकेनिक के रूप में जाना जाने लगा। तभी सलेम की मानसिकता का अभिन्न अंग रही महत्वाकांक्षा ने उसे जगाया। उसने सोचा कि अब किसी बड़े शहर में जाने का समय आ गया है जहाँ उसकी प्रतिभा को पहचान मिलेगी। वह अंततः अपनी खुद की कार और मोटरसाइकिल मरम्मत की दुकान खोलना चाहता था। इसलिए पंद्रह साल की उम्र में, उसने सब कुछ छोड़ दिया, अपना थोड़ा-बहुत सामान समेटा और दिल्ली के लिए रवाना हो गया। उसने दिल्ली में मोटरसाइकिलों की मरम्मत करते हुए कुछ साल संघर्ष किया; लेकिन धीरे-धीरे उसे समझ आ गया कि वह कहीं नहीं पहुँच रहा था।

Machine Translated by Google

दो साल बाद, सलेम को एहसास हुआ कि अब आगे बढ़ने का समय आ गया है। उसे नहीं पता था कि वह क्या करेगा, लेकिन वह यह भी जानता था कि वह घर वापस नहीं जा सकता। आज़मगढ़ वापस जाने का विचार असफलता को स्वीकार करने के समान था। इसलिए, उसके भाइयों अबू हकीम और अबू लईस द्वारा उसे घर वापस बुलाए जाने के बावजूद, उसने मना कर दिया। इसके बजाय, वह मुंबई चला गया।

उनके चचेरे भाई अख्तर अंसारी ने उन्हें बताया था कि जोगेश्वरी के अरासा शॉपिंग सेंटर में उनकी एक दुकान है, जहां वह बेल्ट, परफ्यूम और अन्य मिश्रित सामान बेचते हैं।
अख्तर की दुकान सैकड़ों दुकानों के बीच एक छोटी सी दुकान थी, जो एक-दूसरे से सटी हुई थीं और कई दुकानें एक जैसी चीज़ें बेच रही थीं। स्वाभाविक रूप से, प्रतिस्पर्धा गलाकाट थी और दुकान मालिक थोड़ा-बहुत फ़ायदा उठाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाते थे, जिसमें सुरक्षा के लिए अंडरवर्ल्ड के लोगों को नियुक्त करना भी शामिल था। माफिया के साथ यह सलेम का पहला सामना था।

अरासा शॉपिंग सेंटर में कई दुकानें थीं जिनके मालिक गैंगस्टर थे। यह उनकी अवैध गतिविधियों का एक वैध ठिकाना था। इसलिए दुकानदारों और मालिकों का साथ में शराब पीना और खाना खाना आम बात थी। सलीम जैसे प्रभावशाली और अनपढ़ मुस्लिम युवक ऐसे गिरोह प्रबंधकों को अपना आदर्श मानते थे और उनका अनुकरण करना चाहते थे।

सलेम ने तीन साल तक उस दुकान पर काम किया और इस दौरान उसकी जान-पहचान वहाँ सैय्यद लियाकत नाम के एक आदमी से हुई, जो टोपी पहनने की आदत के कारण सैय्यद टोपी के नाम से भी जाना जाता था। सैय्यद टोपी, दाऊद इब्राहिम के भाई अनीस इब्राहिम का अरसा में मुख्य व्यक्ति था। वह बांद्रा और बोरीवली के बीच अनीस की जबरन वसूली की गतिविधियों को संभालता था और 1985 से इस तरह के मामलों को संभाल रहा था।

इस दौर में मुंबई के नंबर एक डॉन दाऊद के गिरोह में उसके दो भाई थे—अनीस इब्राहिम और नूरुल हक उर्फ नूरा। अनीस की भूमिका ज़्यादा अहम थी और सत्तर और अस्सी के दशक में जैसे-जैसे दाऊद की ताकत बढ़ती गई, उसके भाई अनीस ने भी शहर भर में तस्करी और ज़मीन हड़पने के अपने जाल फैलाने शुरू कर दिए। 1986 में, दाऊद और उसके भाई, जिनमें अनीस भी शामिल था, दुबई के सुरक्षित इलाकों में चले गए। मुंबई छोड़ने से पहले, अनीस ने मुंबई के विभिन्न इलाकों में अपने लिए काम करने वाले कई लोगों को नियुक्त किया था, जिनमें से एक सैयद टोपी भी था।

सलेम टोपी को बहुत मानता था और उसके लिए काम करना चाहता था। दुर्भाग्य से, टोपी ने उसके सामने खुलकर बात नहीं की। उसे आभास था कि सलेम एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति है और समय के साथ उसे गिरा सकता है। इससे विचलित हुए बिना, सलेम उससे अपनी कृपा पाने की कोशिश करता रहा।

एक दिन, अज़ीज़ बिलाखिया—जिसे अंडरवर्ल्ड में उसके छोटे कद के कारण अज़ीज़ टिंगू के नाम से जाना जाता था—टोपी से मिलने अरासा आया। इसी दौरान उसकी मुलाक़ात अख्तर और फिर सलेम से हुई। अज़ीज़ और सलेम की दोस्ती गहरी हो गई और वे पक्के दोस्त बन गए। जल्द ही यह दोस्ती परवान चढ़ी और सलेम का परिचय डी-कंपनी के दो अन्य साथियों, बाबा मूसा चौहान और रियाज़ सिद्दीकी से हुआ। इस तरह सलेम के संपर्कों का दायरा बढ़ने लगा और अनीस के लिए काम करने वाले कई लोग उसके संपर्क में आने लगे।

सलेम जल्द ही एक मेहनती सिपाही बन गया। डॉन के लिए उसके काम में मनी लॉन्ड्रिंग, जबरन वसूली, गोपनीय जानकारी पहुँचाना और कभी-कभी लोगों को पीटना शामिल था। अनीस को सलेम एक भरोसेमंद सिपाही लगा।

दाऊद ने भी उसके बारे में सुना था और वह उसके काम से काफी खुश था।
जैसे-जैसे अंडरवर्ल्ड में उसकी हैसियत धीरे-धीरे बढ़ने लगी, सलेम ने लोगों की भर्ती शुरू कर दी। उसने पंद्रह-बीस लड़के जुटा लिए जो उसके इशारे पर लोगों पर हमला करने, हड्डियाँ तोड़ने और फर्नीचर तोड़ने को तैयार थे। अब वह अज़ीज़ के ज़रिए अनीस से नियमित रूप से बात भी करने लगा था और मुंबई में अपने गुर्गों से सलाह-मशविरा भी करने लगा था।

जल्द ही, सलेम को लगने लगा कि वह अरासा शॉपिंग सेंटर के स्टॉल पर ही अटका हुआ है। 1987 में, उसने कामकाज को और आगे बढ़ाने का फैसला किया और सिद्दीकी, बाबा मूसा चौहान और अज़ीज़ के साथ मिलकर गुलमोहर के पास हसनाबाद लेन में एक दफ़्तर खोला।

Machine Translated by Google

रोड, सांता क्रूज़ में लुत्फ़ी एंटरप्राइजेज नाम से एक दुकान थी। यह एक मानवशक्ति भर्ती और निर्यात कार्यालय था जहाँ भारतीयों को सऊदी अरब और अन्य मध्य पूर्वी देशों में नौकरियों के लिए भेजा जाता था—अरबी में लुत्फ़ी का अर्थ है दयालु, जो इस व्यवसाय के लिए एक उपयुक्त नाम था। लुत्फ़ी वह पहला कार्यालय भी था—लेकिन निश्चित रूप से आखिरी नहीं—जहाँ सलेम ने दीवार पर अनीस का एक विशाल चित्र लगाया था। यह स्पष्ट नहीं है कि यह उसकी चापलूसी का संकेत था या उस व्यक्ति के प्रति समर्पण का।

सलेम के लिए, लुत्फ़ी तस्करी का एक मुखौटा भी था—जिसमें सोने और अन्य प्रतिबंधित वस्तुओं की तस्करी के लिए लोगों को वाहक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। भर्ती का अपना नया धंधा शुरू करने के बाद, सलेम बैंकॉक, सिंगापुर और मलेशिया की लगातार यात्राएँ करने लगा। दूसरे सोने के तस्करों के विपरीत, जो अपने शहरों तक ही सीमित रहते थे और अपने प्रतिबंधित माल के शहर के तटों तक पहुँचने का इंतज़ार करते थे, वह एक विश्वभ्रमण करने वाला और लगातार यात्रा करने वाला बन गया। यह एक ऐसी रणनीति थी जो कारगर साबित हुई।

जब डॉ. मनमोहन सिंह ने पीवी नरसिम्हा राव सरकार में वित्त मंत्री का पदभार संभाला, तो उन्होंने कहा कि, "यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।"
नरसिम्हा राव सरकार के दौरान, उन्होंने जो सबसे बड़ा कदम उठाया, वह था भारतीय अर्थव्यवस्था का उदारीकरण और स्वर्ण नियंत्रण अधिनियम में ढील। इससे भारत का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा और मुंबई में सोने की तस्करी की कमर टूट गई। लेकिन अपराधी हमेशा अपने फायदे के लिए कानून को चकमा देने में कामयाब रहे हैं। वे इसे 'क़ाइदे का फ़ायदा' कहते हैं।

तस्करी के नियम लिखने वाले हाजी मस्तान, सुकुर बखिया और यूसुफ पटेल जैसे पूर्वजों ने 1970 और 1980 के दशकों में सोने की तस्करी से खूब कमाई की। लेकिन 1992 में सोने के आयात के उदारीकरण के बाद, शुल्क में कटौती की गई और अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) को 220 रुपये प्रति दस ग्राम का शुल्क देकर अपने सामान के साथ पाँच किलोग्राम सोना लाने की अनुमति दे दी गई।

हार न मानने वाले सलेम ने कस्टम अधिकारियों की जेबें भरने का काम शुरू कर दिया। यह दाऊद का पुराना तरीका था। एक धूर्त और भ्रष्ट कस्टम अधिकारी सोने की तस्करी में बड़ी मदद कर सकता था। सलेम ने उन अनिवासी भारतीयों को अपने जाल में फंसाना शुरू कर दिया जो विदेश में काम कर रहे थे और/या जिन्हें विदेश में 180 दिन रहने की निर्धारित अवधि पूरी करने के कारण अनिवासी भारतीय का दर्जा प्राप्त था।

उसने उन्हें अपने सोने के माल के वाहक के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। अनिवासी भारतीयों को अनुमत मात्रा से दोगुना सोना ले जाने की अनुमति थी और उन्हें अपने साथ लाए गए सोने का केवल आधा ही घोषित करना होता था। उनसे प्रति किलोग्राम सोने के लिए 22,000 रुपये लिए जाते थे। कभी-कभी, अनिवासी भारतीय अपने पूरे परिवार के साथ घर लौटते थे और पाँच किलोग्राम सोना भी ले आते थे। चूँकि उनके पत्नियाँ और बच्चे भी यात्रा कर रहे होते थे, इसलिए उन्हें संदेह का लाभ मिल जाता था। और इस तरह, तस्करों के सिंडिकेट ने कानूनी रास्ते से सोने की तस्करी से अच्छी-खासी कमाई की। सलेम ने भारत के सबसे नज़दीकी सभी पर्यटन स्थलों में सोने की तस्करी के लिए इस तरह का नेटवर्क स्थापित किया था। इनमें थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर और खाड़ी देश शामिल थे।

1989 तक, सलेम मुंबई में अनीस के सबसे बड़े गुर्गों में से एक बन चुका था। तस्करी का धंधा भी काफी फायदेमंद साबित हुआ और उसका बॉस खुश था। लोग सलेम को जानने लगे थे और कुछ लोग उसके नाम और उसके बढ़ते प्रभाव से डरने भी लगे थे। सलेम को अपनी ताकत और खौफ का एहसास होने लगा था। अब तक, उसने अपने गाँव के कई संघर्षरत चचेरे भाइयों को मुंबई में अपने साथ आने और अपना गुर्गा बनने के लिए आमंत्रित कर लिया था। जल्द ही, सलेम को आजमगढ़ में एक तरह के हीरो के रूप में देखा जाने लगा। गाँव वाले उसका नाम आदर से लेने लगे। अब उसे सलेम से सलेम भाई कहा जाने लगा।

Machine Translated by Google

दो

Machine Translated by Google

सलेम और समीरा

सलेम एक औरतबाज़ औरतबाज़ था । उसे औरतों की संगति की चाहत थी और वह ज़्यादा देर तक बिना औरतों के नहीं रह सकता था। उसके दोस्त अक्सर उसे एक यौन शिकारी कहते थे।

मुंबई आते ही उसने शहर के तौर-तरीके और लड़कियों के पीछे भागने की बारीकियाँ सीख लीं। पहले से ही एक आकर्षक व्यक्ति के रूप में जाना जाने वाला, सलेम ने अपने इस हुनर को और निखारा जब उसे एहसास हुआ कि लड़कियाँ मीठी-मीठी बातें करने वाले मर्दों की ओर आकर्षित होती हैं। सलेम ने फिल्मों से सीखा था कि मुंबई की लड़कियाँ काफी स्टाइलिश और आकर्षक होती हैं। आखिरकार, वह मुंबई की किसी ऐसी खूबसूरत लड़की से शादी करना चाहता था जो किसी रुपहले पर्दे की हीरोइन जैसी भी दिखे। उसने ढेरों फिल्में देखी थीं और जानता था कि एक स्वाभिमानी हीरो की एक गर्लफ्रेंड ज़रूर होनी चाहिए। उसके मन में, वह किसी भी बॉलीवुड हीरो जितना ही खूबसूरत है, तो उसकी एक आकर्षक गर्लफ्रेंड क्यों नहीं होनी चाहिए?

उस समय मुश्किल से बीस साल का, सलेम अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने में मुश्किल महसूस करता था और अक्सर विचलित रहता था। उसके चचेरे भाई अख्तर और दूसरे रिश्तेदारों ने उसे डाँटा और ज़िंदगी में कुछ रास्ता ढूँढ़ने के लिए कहा, लेकिन सलेम ने लड़की ढूँढ़ने की अपनी चाहत नहीं छोड़ी। अरासा शॉपिंग सेंटर में अपना काम खत्म करने के बाद, वह अक्सर जुहू बीच पर जाता और वहाँ की औरतों को घूरता रहता।

अंततः उसके रिश्तेदारों ने उसकी मां जन्नतुनिस्सा को उसे गांव बुलाकर उसकी शादी कराने के लिए राजी कर लिया, क्योंकि बड़े शहर में उसके भटक जाने का खतरा था।
जब सलेम अपने गाँव पहुँचा, तो उसकी होने वाली शादी की खबर उसके लिए किसी सदमे से कम नहीं थी। वह इतनी जल्दी शादी नहीं करना चाहता था, लेकिन उसके बड़ों ने उस पर दबाव डाला और उसे मजबूरन शादी करनी पड़ी।

सलेम की शादी उसके अपने गाँव सरायमीर से छह किलोमीटर दूर खुदकपुर गाँव की एक लड़की से हुई थी। शादी समारोह एक छोटा-सा आयोजन था और कुछ ही मेहमानों को आमंत्रित किया गया था। सलेम अनिच्छा से अपनी नई दुल्हन को मुंबई ले आया और अपनी दिनचर्या में लग गया। यह शादी शुरू से ही टूटने वाली थी—क्योंकि दोनों में स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के लिए सामंजस्य नहीं था, और अक्सर झगड़े होते रहते थे—और ज़्यादा समय तक नहीं टिकी।

अपने बड़ों से सलाह लेने के बाद, सलेम अपनी पत्नी को अपने गाँव वापस ले गया और तलाक की अर्ज़ी दी। बाद के सालों में, उसने यह मानने से इनकार कर दिया कि उसने अपने गाँव में कभी किसी से शादी की थी। हालाँकि, अबू कलाम ने दावा किया कि मुंबई में लड़कियों का पीछा करने से पहले सलेम ने कुछ समय के लिए शादी की थी।

सलेम ने अंधेरी के डीएन नगर में एक नया फ्लैट किराए पर लिया था, और संयोग से उसकी नज़र अपने फ्लैट के ठीक सामने रहने वाली एक युवती पर पड़ी। उसका नाम समीरा जुमानी था और वह अंधेरी के भवन्स कॉलेज में जूनियर साइंस स्ट्रीम में पढ़ रही थी। सलेम समीरा के आकर्षक रूप-रंग पर तुरंत मोहित हो गया और रोज़ कॉलेज में उसका पीछा करने लगा। जल्द ही, समीरा भी, कई दूसरी भोली-भाली लड़कियों की तरह, उसके तीखे नैन-नक्श की ओर आकर्षित हो गई और उस पर मोहित होने लगी। दोनों की उम्र में पाँच साल का अंतर था, लेकिन समीरा ने इसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उसे यकीन था कि सलेम ही उसका दीवाना है।

सलेम मोटरसाइकिल पर सवार होकर उसके कॉलेज जाता और उसे रिझाता। बाद में, जब उसके पास कार आ गई, तो वह नियमित रूप से उस खूबसूरत युवती को साथ लेकर अंधेरी में घूमता था। सलेम समीरा की कम उम्र और उसके प्रति उसके अटूट प्रेम से वाकिफ था। प्रेम के प्रतीक के रूप में, सलेम कभी-कभी कमल हासन और रति अग्निहोत्री अभिनीत हिट बॉलीवुड फिल्म "एक दूजे के लिए" का एक गाना गाता था।

सलेम के एक करीबी सहयोगी याद करते हैं , "सोलह बरस की बाली उमर को सलाम, ऐ प्यार तेरी पहली नजर को सलाम" (सोलह साल की कोमल उम्र को सलाम और मेरी प्यारी, तुम्हारी पहली नजर को सलाम), वह हमेशा गाते थे।

Machine Translated by Google

उसके पिता एक व्यापारी थे और जैसे ही उन्हें पता चला कि उनकी बेटी सलेम में दिलचस्पी रखती है, उन्होंने मना कर दिया। समीरा एक रूढ़िवादी इस्माइली खोजा परिवार से थी और उसे अपनी जमात से बाहर शादी करने की मनाही थी।

सलीम भी एक कट्टर मुसलमान था, जिसने इस्माइली धर्म अपनाने से इनकार कर दिया था, जबकि उसके परिवार को उससे यही अपेक्षा थी।

समीरा के माता-पिता भी कॉलेज में रहते हुए उसके इस रिश्ते के सख्त खिलाफ थे और उन्होंने सलेम के रिश्तेदारों को समझाने की कोशिश की, लेकिन वह समझ से परे था। फिर उन्होंने समीरा को सलेम से मिलना बंद करने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वह तो प्यार में पागल थी। उसने अपने परिवार और सलेम के बीच आर्थिक असमानता पर गौर करने से भी इनकार कर दिया।

दो साल के प्रेम-प्रसंग में, सलेम अंधेरी के एक मामूली दुकानदार से एक उभरता हुआ तस्कर बन गया था, जबकि समीरा ने अपना जूनियर कॉलेज पूरा कर लिया था और स्नातक कार्यक्रम में दाखिला ले लिया था। फिर एक दिन, समीरा के माता-पिता ने सोचा कि अब बहुत हो गया और उसकी सगाई इस्माइली समुदाय के एक लड़के से करने की योजना बनाई। फिर सलेम ने उसके साथ भाग जाने का फैसला किया।

इस बीच, कलाम, जो सलेम के करीबी लोगों में से एकमात्र था और बचपन से उसे जानता था, उसे बार-बार समझाने की कोशिश करता रहा कि समीरा एक छोटी लड़की है और उसे उसकी ज़िंदगी बर्बाद नहीं करनी चाहिए—और यह भी कि वे दोनों अलग-अलग संप्रदायों से थे। लेकिन सलेम ने अपना मन बना लिया था और दो साल की प्रेम-प्रसंग के बाद, 4 जनवरी 1991 को उन्होंने शादी कर ली। उस समय, समीरा सत्रह साल की थी और भारतीय कानून के अनुसार नाबालिग थी।

जुमानी परिवार ने सलेम के खिलाफ डीएन नगर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज कराई और उस पर अपहरण का आरोप लगाया गया। लेकिन समीरा ने आत्महत्या की धमकी दी और सलेम के परिवार के हस्तक्षेप के बाद ही जुमानी परिवार ने नरमी दिखाई और मामला वापस ले लिया।
सलेम को रिहा कर दिया गया और वे दोनों एक नए घर में स्थानांतरित हो गए।

शादी के कुछ ही महीनों बाद, समीरा को सलेम की अवैध गतिविधियों और उसके अंडरवर्ल्ड संबंधों के बारे में पता चला। वह चौंक गई। लेकिन पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। उसकी शादी पहले ही सलेम से हो चुकी थी और वह अपने धंधे में पूरी तरह डूबा हुआ था। न तो उससे यह उम्मीद की जा सकती थी कि वह अपना धंधा छोड़ देगा, जिसने अभी-अभी उसे वह आरामदायक ज़िंदगी देना शुरू किया था जिसकी उसे इतनी चाहत थी, और न ही समीरा उसे छोड़ सकती थी क्योंकि वह उसकी संगति में बहुत ज़्यादा सहज थी।

लेकिन मार्च 1993, जिसने मुंबई में कई भाग्य बदल दिए, जिनमें शामिल हैं
सलेम का घर ज्यादा दूर नहीं था।

Machine Translated by Google

तीन

Machine Translated by Google

पहला ब्रश

सलीम के बचपन के दोस्त और चचेरे भाई, अबू कलाम ने कभी किसी कोठरी के अंदर का नज़ारा नहीं देखा था। फिर भी, वह वहाँ था, सिर्फ़ अंडरवियर तक नंगा, उसके हाथ दीवार से बंधे हुए और कमर में एक कार का टायर। उसकी दर्द भरी चीखों के अलावा, उसे बस पुलिस की मोटी बेल्टों की तेज़ आवाज़ सुनाई दे रही थी जो उसकी पीठ पर मारी जा रही थीं।

दर्द से चमकती आँखों से, वह चार हट्टे-कट्टे पुलिसवालों को बारी-बारी से उसे पीटते हुए देख सकता था, उसकी चीखों और दया की याचनाओं से बेखबर। जब वे उसे लाठियों से पीट-पीटकर थक गए, तो उन्होंने उसके घुटनों, पीठ, नितंबों और कंधों पर लात-घूँसे बरसाना शुरू कर दिया। एक पुलिसवाले को उसके चेहरे पर थप्पड़ मारने में खास मज़ा आ रहा था। सलीम की तरह कलाम भी थोड़ा घमंडी था। वह खुद को बेहद खूबसूरत समझता था और यह बात उसके पहनावे में भी झलकती थी। पुलिसवाले को यह बात समझने में ज़्यादा देर नहीं लगी, इसलिए उसने कलाम के चेहरे पर तब तक थप्पड़ मारे जब तक वह सूज न गया या उसका कोई दांत टूट न गया। यह यातना पूरे दिन चलती रही।

दूसरे दिन, कलाम को यकीन था कि दर्द सहना थोड़ा आसान होगा, लेकिन ये पुलिसवाले अनुभवी थे। कलाम जितनी देर तक सलेम के ठिकाने का पता लगाने में नाकाम रहे, उनकी पिटाई उतनी ही ज़्यादा होती गई। लेकिन उन्होंने दर्द को अपनी वफ़ादारी पर हावी नहीं होने दिया और इस भरोसे के साथ कि सलेम उन्हें छुड़ाने के लिए किसी को भेज देगा, कलाम चुप रहे। पिटाई के दूसरे दिन के आखिर में कलाम को सलेम पर गुस्सा आने लगा। हर बार जब उन्हें थप्पड़, कोड़े, लात या घूँसे मारे जाते, तो पुलिसवाले पूछते, 'सलेम किधर है?' और हर बार कलाम जवाब देते, ' मालूम नहीं साहब।' सलेम के प्रति उनकी वफ़ादारी अटूट थी।

अब, दो दिनों तक लगातार पिटाई और बहुत कम खाना, पानी और नींद के बाद, कलाम पूरी तरह से टूट चुका था। तीसरे दिन, वह इस नतीजे पर पहुँचा कि सलेम ने कलाम द्वारा उसे दिए गए अड़तालीस घंटों का पूरा इस्तेमाल कर लिया होगा, किसी सुरक्षित जगह पर छिपने के लिए। अब उसे बचाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। कलाम सलेम पर और खुद पर भी बहुत गुस्से में था। वह उस दिन की घटनाओं के बारे में सोचने लगा जिसकी वजह से उसे जेल जाना पड़ा था।

एक दुर्भाग्यपूर्ण शाम, सलेम ने कलाम को बताया कि वे बांद्रा में एक व्यापारी से मिलने जा रहे हैं और वह उन्हें कुछ लाख रुपये देगा। इस बारे में न तो कोई स्पष्टीकरण दिया गया और न ही कलाम ने कोई स्पष्टीकरण माँगा।

कलाम ने मन ही मन सोचा, शायद सलेम को उस व्यापारी से कुछ काम था, और यह पैसे देने का मामला था। वे मोटरसाइकिल पर सवार होकर टर्नर रोड की ओर चल पड़े।

उस जगह पहुँचकर, सलेम शक की निगाहों से इधर-उधर देखने लगा। उसने अपने भरोसेमंद साथी से कहा कि वह गाड़ी से उतरकर उस आदमी से मिलने जाए। सलेम थोड़ी देर में उनके पास आ जाएगा। बिना किसी शक के, कलाम बाइक से उतरा और उस व्यापारी के दफ्तर में चला गया।

"सलेम और उसका दोस्त यहाँ हैं," उसने घोषणा की, "अपने बॉस को बता दो!" कलाम को

उस आदमी के दफ़्तर में ले जाया गया और वह ऐसे अकड़कर अंदर आया जैसे वह उस जगह का मालिक हो। वह बैठ गया और बड़े घमंड से बोला कि सलेम ने उसे पैसे लेने भेजा है।

व्यापारी ने सिर हिलाया, धीरे से उठा और अपने दफ़्तर से बाहर चला गया। कलाम दफ़्तर की कुर्सी के मुलायम गद्दे पर पीठ टिकाए इंतज़ार कर रहे थे, इस उम्मीद में कि वह आदमी पैसों से भरा बैग लेकर लौटेगा। उन्होंने सोचा, "क्या यह बैग काले ब्रीफ़केस में होगा?" इस सवाल का जवाब जानने से पहले ही, सादे कपड़ों में दो हट्टे-कट्टे आदमियों ने उनके चेहरे पर थप्पड़ जड़ दिए और उन्हें घसीटते हुए इमारत के नीचे खड़ी एक जीप में ले गए।

Machine Translated by Google

कलाम सीधे जाल में फंस गए थे।

सलेम को शायद कुछ गड़बड़ होने का शक था और इसीलिए उसने खुद पकड़े जाने का जोखिम उठाने के बजाय कलाम को पकड़वाने का फैसला किया। "वह आसपास ही होगा, मुझे नहीं पता," कलाम ने पुलिस को जवाब दिया जब उसे पकड़ा गया। वह झूठ नहीं बोल रहा था—सच में उसे कुछ पता ही नहीं था। पुलिस उसे बांद्रा पुलिस स्टेशन ले आई और पिछले कुछ दिनों से उसे बोलने के लिए मनाने की पूरी कोशिश कर रही थी।

तीन दिन की पिटाई के बाद, कलाम का चेहरा सूज गया था, उसके दाँत टूट गए थे, आँखें काली पड़ गई थीं, और शरीर पर ज़ख्मों और चोटों के निशान थे। उसने सोचा, बस, बहुत हो गया। अगर कोई पुलिसवाला फिर कभी उस पर हाथ भी उठाएगा, तो वह उसे सीधे सलेम के दरवाज़े पर भेज देगा। कुछ ही देर में एक पुलिसवाला वहाँ आया।

कलाम ने प्रभाव के लिए तैयारी की।

उसे हैरानी हुई जब खाकी वर्दी वाले ने उसके टखनों और कलाइयों में बंधी रस्सियाँ खोलनी शुरू कर दीं। फिर उसे कपड़े वापस पहनाए गए। उसने सोचा, कुछ तो ज़रूर हुआ है, क्योंकि वह लड़खड़ाते हुए लड़खड़ा रहा था। जब उसने वकील और सलेम के दोस्त रियाज़ सिद्दीकी को पुलिस के साथ बैठे देखा, तभी उसे समझ आया।

तीन दिन की मशक्कत के बाद, सलेम आखिरकार बच निकला। कलाम को रिहा कर दिया गया और सिद्दीकी उसे टैक्सी तक ले गया। सफ़र खामोश रहा। कलाम अपनी सारी बातें सलेम के लिए रखना चाहता था, और सिद्दीकी भी ज़्यादा बातूनी मूड में नहीं था।

जब वे सलेम के घर पहुँचे, तो वह बिल्कुल बेपरवाह लग रहा था। अपनी नादानी में, कलाम ने सलेम से और भी ज़्यादा की उम्मीद की थी। बहुत ज़्यादा। कलाम ने सोचा, कम से कम वह तो उसकी वफ़ादारी और सलेम की मुखबिरी न करने के लिए उसे गले लगा सकता था। उसकी चोटों के बारे में थोड़ी चिंता या सहानुभूति भी सराहनीय होती। और हालाँकि कलाम किसी भौतिक पुरस्कार की उम्मीद नहीं कर रहा था, फिर भी वह कृतज्ञतापूर्वक उसे स्वीकार कर लेता। लेकिन सलेम अपने पुराने दोस्त के पिछले तीन दिनों के आघात के प्रति बिल्कुल भी उदासीन था।

तभी कलाम अपना आपा खो बैठे। उन्होंने सलेम पर गालियों की बौछार कर दी और पूछा कि वह उनकी मदद के लिए क्यों नहीं आया। आख़िरकार, वे दोस्त थे, साथ मुंबई आए थे और अब साथ मिलकर व्यापार कर रहे थे।

आखिरकार, सलेम ने अपनी चुप्पी तोड़ी। उसने शांति से कहा, "अरे, कलाम भाई, ये तो धंधा ही ऐसा है। इन बातों को इतनी गंभीरता से मत लो। ये तो होती ही रहती हैं।" कलाम समझ नहीं पा रहा था कि सलेम इतना बेरुखा कैसे हो सकता है और उसकी हालत देखकर भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन

उसे यह भी एहसास था कि वह कुछ नहीं कर सकता।

सलेम नहीं बदलेगा। उसकी प्राथमिकता हमेशा अपनी सुरक्षा और भलाई रही है।

किसी भी चीज या किसी अन्य व्यक्ति का कोई महत्व नहीं था।

लेकिन सलेम को जल्द ही मुंबई पुलिस के एक सबसे खूँखार अधिकारी के हाथों अपनी गर्दन कसती हुई महसूस हुई। अस्सी के दशक के अंत और नब्बे के दशक की शुरुआत में, मुंबई एक ऐसे निर्णायक दौर से गुज़र रही थी जब माफिया अपनी जड़ें जमा रहा था। दाऊद इब्राहिम और मिल मजदूर से गैंगस्टर बने और दाऊद के पूर्व साथी अरुण गवली के बीच गैंगवार शहर पर अपना असर दिखाने लगे थे। इसी बीच, खालिस्तानी आतंकवादी पंजाब से मुंबई (भांडुप, मुलुंड और सायन जैसे सिख बहुल इलाकों में) आ रहे थे। वहाँ के सिख हथियार जमा करते थे, भागते हुए आतंकवादियों को शरण देते थे और आतंकवादी हमलों की साज़िश रचते थे। मुंबई की सड़कें खून से लाल हो जाती थीं।

इस स्थिति से निपटने के लिए ही मुंबई पुलिस ने आतंकवाद-रोधी दस्ते (एटीएस) का गठन किया था। इसका नेतृत्व आफ़ताब अहमद खान नामक एक अधिकारी कर रहा था, जो 2007 की फ़िल्म शूटआउट एट लोखंडवाला में बड़े पर्दे पर नज़र आया था। एटीएस का कार्यालय बांद्रा में था, लेकिन इसका कार्यक्षेत्र पूरा मुंबई शहर था। यह बात तब और भी आश्चर्यजनक लगती है जब आप जानते हैं कि यह सिर्फ़ 22 लोगों की एक इकाई थी जो पूरे शहर में बढ़ती हिंसा को संभाल रही थी। खान कई हिंसक झड़पों में शामिल था।

Machine Translated by Google

भांडुप और मुलुंड में खालिस्तानी आतंकवादियों के साथ सक्रिय रहने के अलावा, वह उपनगरों में अंडरवर्ल्ड के बढ़ते प्रभाव पर भी पैनी नजर रख रहे थे।

उसने अज़ीज़, चौहान और सलेम के बारे में सुना था, जो माहिम और अंधेरी के बीच काम कर रहे थे। उसने उन्हें एक संदेश भेजकर मिलने के लिए आमंत्रित किया। अज़ीज़ और चौहान तुरंत मिले और उसे आश्वासन दिया कि वे किसी भी गैरकानूनी गतिविधि से दूर रहेंगे। सलेम को इस पुलिसवाले से मिलने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। इससे खान चिढ़ गया। इस गुंडे की इतनी हिम्मत कैसे हुई कि बुलाए जाने पर भी न आए?

खान उस नए व्यक्ति को सबक सिखाना चाहता था।

एक दिन खान एक ग़लत सूचना के बाद ख़राब मूड में अपने मुख्यालय लौट रहे थे, तभी उन्होंने और उनके साथियों ने सलेम को अरासा शॉपिंग सेंटर के बाहर अपने कुछ साथियों के साथ देखा। सलेम अपनी भड़ास निकालने के लिए एकदम सही निशाना था। खान ने अपने आदमियों को सलेम को वहीं उठा लेने का आदेश दिया। पुलिसवाले अपनी गाड़ी से बाहर निकले और हॉकी स्टिक से उस पर टूट पड़े। उन दिनों एटीएस के पास कोई भी स्मार्ट हथियार नहीं था, इसलिए उन्हें ऐसे अपरंपरागत विकल्पों से काम चलाना पड़ा। उन्होंने सलेम को पकड़ लिया और शॉपिंग सेंटर के गेट पर उसकी जमकर पिटाई की। यह सलेम का मुंबई पुलिस के तौर-तरीकों से पहला परिचय था।

बेरहमी से की गई पिटाई के बाद, खान ने सलेम को एक उदाहरण के रूप में पेश करने की ठानी और अपने आदमियों को उसे कलाईयों से पकड़कर जीप के पीछे बाँधने का निर्देश दिया, ताकि वह गाड़ी के पिछले हिस्से में लगभग सूली पर चढ़ा हुआ दिखाई दे। और फिर, इस अनोखे कार 'आभूषण' के साथ, खान ने अपने आदमियों को पास के डीएन नगर पुलिस स्टेशन चलने को कहा। लोगों ने देखा कि कैसे चोटिल और घायल सलेम को पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहाँ उसे तुरंत प्रभारी अधिकारियों के हवाले कर दिया गया।

इसके बाद उसे दो दिन तक हिरासत में रखा गया और मुंबई पुलिस की अपनी तरह की विशेष व्यवस्था का भरपूर लाभ दिया गया। जब सलेम सलाखों के पीछे था और उसे बेरहमी से पीटा जा रहा था, तब उसके दोस्त टोपी पर येलोगेट पुलिस स्टेशन के पास इंस्पेक्टर इमैनुएल अमोलिक ने घात लगाकर हमला कर दिया और उसकी हत्या कर दी। अचानक, मुंबई में अनीस इब्राहिम के सबसे बड़े आदमी की जगह खुल गई।

किसी तरह, सलेम के दोस्तों ने 25,000 रुपये (1991 में एक बड़ी रकम) इकट्ठा किए और उसे ज़मानत पर रिहा करवाने का इंतज़ाम किया। वह अज़ीज़ और चौहान के साथ चुपचाप पुलिस स्टेशन से बाहर निकला, जिन्होंने उसे एक कार में बिठाया। जब वह अपने चचेरे भाई अख्तर से मिलने के लिए अरासा शॉपिंग सेंटर लौटा, तो सलेम को मिले स्वागत से वह हैरान रह गया। मालाओं और तालियों की गड़गड़ाहट से ऐसा लग रहा था जैसे कोई नायक युद्ध से घर लौट आया हो। नायक की तरह देखे जाने के अलावा, पुलिस की बर्बरता को सहने का एक और फ़ायदा यह था कि अनीस ने उस पर ध्यान दिया। अब वह सीधे सलेम से बात कर रहा था, जो अज़ीज़ और चौहान से आगे निकल गया था।

जहां तक एटीएस का सवाल है, 1993 के दंगों के बाद खान कथित तौर पर बहुत बड़ा हो गया था
और अपने लिए एक कानून बनाया, जिसके कारण दस्ते को अनौपचारिक रूप से भंग कर दिया गया।

Machine Translated by Google

चार

Machine Translated by Google

सलेम और संजय

एक पैर पर खड़े, दूसरे घुटने को वृक्षासन की मुद्रा में मोड़े , संजय दत्त फिल्म की प्रचार सामग्री और पोस्टरों में बिल्कुल गॉडज़िला जैसे लग रहे हैं। वे सह-कलाकारों माधुरी दीक्षित और जैकी श्रॉफ की अपेक्षाकृत छोटी तस्वीरों के बीच खड़े हैं, जिनके नीचे फिल्म का शीर्षक लिखा है —खलनायक, द विलेन।

उनके कपड़े देखने में बहुत ही खराब लग रहे हैं—एक अर्ध-चेकरबोर्ड, अर्ध-धारीदार सूट, जिसके साथ एक सफ़ेद पोल्का डॉट वाली काली टाई और उससे मेल खाती टोपी है। वह काले दस्ताने पहने हुए, अपनी टोपी को शान से हिला रहे हैं। लेकिन इस लुक का सबसे हड्डियाँ कंपा देने वाला हिस्सा संजय के चेहरे पर पागलपन भरी मुस्कान है—उनकी आँखों के भाव शुद्ध, शुद्ध, दुष्ट पागलपन को चीख़-चीख कर बयां कर रहे हैं।

जैसा कि वे फिल्म में कहते हैं, "जी हाँ, मैं हूँ खलनायक!" घई ने अपनी फिल्म 6 अगस्त 1993
को रिलीज़ की, संजय दत्त की सख्त आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम, या टाडा के तहत गिरफ्तारी के चार महीने बाद। यह एक साधारण फिल्म थी जो पूरी तरह से असफल हो सकती थी अगर निर्देशक सुभाष घई ने इसे मुख्य अभिनेता संजय दत्त के जेल में रहने के दौरान रिलीज़ करने का मास्टरस्ट्रोक न किया होता। इसने बॉक्स ऑफिस पर खूब कमाई की। सिनेमा प्रेमियों के लिए, फिल्म और असल ज़िंदगी एक हो गई थी। संजय सचमुच अपनी यादगार घोषणा - खलनायक - के साकार रूप थे।

29 जुलाई 1959 को सुपरस्टार माता-पिता, अभिनेता सुनील और नरगिस दत्त के घर जन्मे संजय को जीवन में हमेशा सर्वश्रेष्ठ ही मिला। तीन भाई-बहनों (प्रिया और नम्रता के बाद) में सबसे छोटे, संजय ने अपनी अधिकांश शिक्षा हिमाचल प्रदेश के सनावर स्थित लॉरेंस स्कूल में प्राप्त की। ऐसा माना जाता है कि युवावस्था में वे परेशानियों से घिरे रहे और बाद में कठिन समय का सामना करना पड़ा, और किशोरावस्था में वे नशे की लत में पड़ गए।

संजय के बॉलीवुड में आने की उम्मीदें तब और बढ़ गईं जब उनकी दोनों बहनों ने सिनेमा जगत में कदम न रखने का फैसला किया। हालाँकि संजय ने 1981 में प्रतिशोध की कहानी वाली फिल्म रॉकी से बॉलीवुड में अपनी आधिकारिक शुरुआत की, लेकिन सिल्वर स्क्रीन पर उनकी पहली उपस्थिति वास्तव में 1971 की फिल्म रेशमा और शेरा में एक जूनियर अभिनेता के रूप में एक छोटी सी भूमिका के साथ थी। धीरे-धीरे, उन्हें और फिल्मों के प्रस्ताव मिलने लगे और 1980 के दशक में, संजय ने खुद को एक विश्वसनीय एक्शन हीरो के रूप में स्थापित करना शुरू कर दिया। अपने सुडौल शरीर और राजसी बालों के साथ, सिनेमा प्रेमियों को यह एहसास होने लगा कि केवल उनका उपनाम ही उन्हें सफलता नहीं दिला रहा था।

विधाता, ताकतवर, हथियार जैसी कई बड़ी बैनर की फिल्मों ने उन्हें एक सच्चे स्टार के रूप में स्थापित किया, जबकि उनके निजी जीवन में चारों ओर दीवारें खड़ी हो रही थीं। जैसे-जैसे उनकी नशीली दवाओं की समस्या बढ़ती गई, उन्हें एक पुनर्वास केंद्र में भर्ती होना पड़ा, जहाँ उनकी मुलाकात अभिनेत्री ऋचा शर्मा से हुई। संजय जिस स्टार बन चुके थे, उसके विपरीत, ऋचा बॉलीवुड में अपेक्षाकृत नई थीं, जिन्होंने कुछ ही फिल्में की थीं—उन्होंने 1985 की फिल्म नौजवान से अपनी शुरुआत की थी, जिसमें उन्हें देव आनंद की खोज बताया गया था। दोनों की दोस्ती लगभग तुरंत हो गई और 1987 में उन्होंने शादी कर ली। दो साल बाद उनकी एक बेटी, त्रिशाला, हुई।

इस बीच, संजय की फ़िल्में बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ कमाई कर रही थीं और उन्हें एक कल्ट फ़िल्म बना दिया था, यह चलन उनकी 1990 की फ़िल्म थानेदार के बाद सबसे ज़्यादा देखने को मिला। जीतेंद्र, माधुरी दीक्षित, जया प्रदा और संजय अभिनीत यह फ़िल्म प्रतिशोध—जो उनकी फ़िल्मों का एक आम विषय है—और मुक्ति की एक और कहानी है। इसने लाखों लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा।

Machine Translated by Google

वो डिजिटल पोस्टर के ज़माने से पहले की बात है और बॉलीवुड पोस्टर कला युवाओं और फिल्म प्रेमियों के बीच काफ़ी लोकप्रिय थी। रेलवे स्टेशनों, फुटपाथों और यहाँ तक कि उपहार की दुकानों पर बिकने वाले इन प्रिंटों में से एक सबसे लोकप्रिय था, थानेदार का एक चित्र। इसमें मूंछों वाले संजय दत्त को पुलिस की वर्दी में दिखाया गया था, जिसकी खाकी कमीज़ के बटन लापरवाही से खुले थे और पुलिस की टोपी भी लापरवाही से पहनी हुई थी। हालाँकि उस शख्स का बेजोड़ और अनोखा मर्दानापन अभी भी उसकी छवि का एक बड़ा हिस्सा था, लेकिन अब उसमें एक नया अनादर और सत्ता-विरोधी भावना भी थी।

'अपने व्यवहार में सुधार' और नशे की लत से छुटकारा पाने के बाद (कम से कम उस समय तो ऐसा ही लग रहा था), संजय की ज़िंदगी ने इस मोड़ पर एक नया मोड़ लिया और उसने नई रुचियाँ और शौक पालने शुरू कर दिए—महँगी व्हिस्की और तेज़ गाड़ियाँ (जिनमें से सभी का रजिस्ट्रेशन नंबर 4545 है), खासकर मोटरसाइकिलें। लेकिन उसका सबसे दिलचस्प नया शौक था आग्नेयास्त्रों का अधिग्रहण। वह एक शौकीन शिकारी था और बताया जाता है कि वह अपनी कार के ग्लव कंपार्टमेंट में भरी हुई पिस्तौल रखे बिना कभी घर से बाहर नहीं निकलता था।

एक बार तो संजय को लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर एक बंदूक ले जाने के कारण रोक लिया गया था, जबकि वह एक लाइसेंसी हथियार था। ज़ाहिर है, एक सम्मानित सांसद और उनकी दिवंगत अभिनेत्री पत्नी, जो स्वयं एक समर्पित मानवतावादी थीं, के परेशान बेटे, अपनी वास्तविक और परदे की ज़िंदगी के बीच की रेखाएँ धुंधली कर रहे थे। उनकी एक्शन हीरो वाली छवि उन पर हावी होने लगी थी और ऐसा लग रहा था कि उन्हें उस छवि के अनुरूप जीने की एक निरंतर इच्छा, जिसे केवल 'बचकाना' ही कहा जा सकता है, महसूस हो रही थी।

1991 और 1992 के साल संजय के लिए बेहद फलदायी साबित हुए। इसी दौरान फ़िरोज़ खान निर्देशित "यलगार" रिलीज़ हुई , जो अबू सलेम की निजी पसंदीदा फ़िल्म बन गई। दरअसल, निर्देशक फ़िरोज़ खान ही थे जिन्होंने संजय को अंडरवर्ल्ड से रूबरू कराया था, और सबसे पहले अनीस भाई को संजय से एक अच्छे दोस्त के रूप में मिलवाया था। इसके तुरंत बाद, अनीस भाई ने फ़िल्म की शूटिंग के दौरान दुबई में अपने घर पर संजय की मेज़बानी की थी। दुबई में "यलगार" की शूटिंग के दौरान ही संजय की मुलाक़ात दाऊद, कय्यूम और अन्य लोगों से हुई थी। और अनीस ने संजय से वादा किया था कि अगर उन्हें मुंबई में किसी भी तरह की मदद की ज़रूरत पड़े, तो वे उन्हें फ़ोन करने में कभी संकोच न करें।

1992 के अंत में, देश में सुलगता सांप्रदायिक उन्माद अपने चरम पर पहुँच गया जब भाजपा के नेतृत्व वाली भीड़ ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में 465 साल पुरानी बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर दिया। मुंबई देश के कुछ सबसे खूनी दंगों का गवाह बना। वरिष्ठ दत्त ने घायलों के लिए, चाहे उनका धर्म, मूल या निर्वाचन क्षेत्र कुछ भी हो, मदद और चिकित्सा सहायता का प्रबंध किया, जबकि कनिष्ठ दत्त ने भी इसमें योगदान दिया।

लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि सांप्रदायिक झड़पों के मुस्लिम पीड़ितों की मदद करने वाले इस हिंदू परिवार को हर कोई पसंद नहीं करता था। उग्र हिंदू समूहों—जिनमें शिवसेना के सदस्य भी शामिल थे—ने परिवार को गालियाँ दीं, धमकियाँ दीं और हमले किए। अन्यथा सम्मानित सांसद पर कई बार हमला किया गया, जिसमें एक बार तो गुस्साई भीड़ ने उनकी कार पर भी हमला कर दिया।

बिना विचलित हुए, उन्होंने अपना मानवीय कार्य जारी रखा।

हालाँकि, उनके बेटे को धमकियों और हमलों से तंग आ गया था। यह महसूस करते हुए कि पुलिस घिनौने फ़ोन कॉल्स (जिनमें एक कॉलर ने कथित तौर पर संजय की बहनों के साथ बलात्कार करने, उनके पिता को मारने और घर जलाने की धमकी दी थी) के बाद भी विशेष सुरक्षा नहीं देगी, उन्होंने मामले को अपने हाथों में लेने का फैसला किया। आखिरकार, उन्होंने तर्क दिया, सिर्फ़ एक फ़िल्मी हीरो होने से क्या फ़ायदा? मुक्ति और न्याय पर आधारित अनगिनत फ़िल्मों में सालों तक किरदार निभाने के बाद, अब एक असली हीरो बनने और अपने परिवार की रक्षा के लिए खड़े होने का समय आ गया था।

हनीफ कड़ावाला और समीर हिंगोरा की बारी। मुंबई पुलिस की निष्क्रियता से निराश संजय ने अपनी परेशानी इस फिल्म निर्माता जोड़ी को बताई। वह बस अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा का कोई रास्ता चाहता था। इसके लिए उसे अपने पुराने हथियारों के जखीरे को और बढ़ाना होगा। अनीस इब्राहिम से उसकी पहले ही जान-पहचान हो चुकी थी।

Machine Translated by Google

और दुबई में गैंगस्टर के घर पर मेहमान बनकर, संजय जानता था कि हथियारों के लिए किससे संपर्क करना है। आखिरकार, यह तय हुआ कि सलेम, कड़ावाला और हिंगोरा के साथ, बंदूकों और हथगोले लेकर संजय के घर जाएगा।

बाबरी विध्वंस के बाद मुंबई की सड़कों के लाल रंग में रंग जाने की खबरों ने सलेम को बहुत परेशान किया था। उसकी समझ के अनुसार, जो खून बहा, वह सिर्फ़ मुसलमानों का था। अपने साथी मुसलमानों की दुर्दशा के प्रति उसके दुःख ने बाद में हिंदुओं के प्रति आक्रोश और अंततः, प्रतिशोध की तीव्र लालसा को जन्म दिया। यह सलेम के गृहनगर आज़मगढ़ की स्थिति से बिल्कुल अलग था। उसका मानना था कि अंतर यह था कि वहाँ मुसलमानों के खून की एक बूँद भी नहीं बहाई जा सकती थी, क्योंकि आज़मगढ़ में कोई भी मुसलमानों से पंगा लेने की हिम्मत नहीं करता था।

दंगों के बाद, सलेम ने चुप रहने का फैसला किया। कुछ हफ़्तों तक, वह किसी भी तरह की परेशानी से दूर रहा और अपना नाम सुर्खियों से दूर रखा। फिर एक दिन, अनीस का फ़ोन आया और उसने पूछा कि उसका हालचाल क्या है। अनीस ने एक बड़ा धमाका किया। सलेम को एक बहुत ही खास सामान पहुँचाना था। उसका काम बांद्रा में अपने एक दोस्त को कुछ सामान पहुँचाना था (अंडरवर्ल्ड की भाषा में, सामान का मतलब आमतौर पर 'गोला-बारूद' होता है)। यह सुनने में तो आसान लग रहा था, क्योंकि सलेम पहले भी कई बार ऐसे काम कर चुका था। लेकिन जब अनीस ने सामान पहुँचाने वाले का नाम बताया—संजय दत्त—तो उसके होश उड़ गए।

यह सलेम को बहुत समय बाद मिली सबसे दिलचस्प खबर थी। युवा सलेम संजय दत्त का बहुत सम्मान करता था और उन्हें अपना आदर्श मानता था। सामान छोड़ने से पहले के दिनों में, अनीस ने सारी जानकारी और विवरण उपलब्ध कराए। योजना के अनुसार, पहले भिवंडी से सामान उठाना था, उसे शहर के पार बांद्रा ले जाकर सौंपना था। पैकेज को सीधे संजय दत्त के पाली हिल स्थित निवास, अजंता, पर पहुँचाना था। यह सब काफी आसान लग रहा था।

अज़ीज़ और सलेम माहिम से एक सफ़ेद मारुति कार में निकले, जिसे एक गुजराती लड़का चला रहा था, जिसका नाम गैंगस्टर को याद नहीं है। सीबीआई के सामने अपने कबूलनामे में, उसने बताया कि वह अपने हीरो से मिलने के उत्साह में इतना डूबा हुआ था कि उसने कार के रजिस्ट्रेशन या उसके मालिक के नाम पर ध्यान ही नहीं दिया। उस समय ये जानकारियाँ ज़रूरी नहीं लगीं।

लगभग ढाई घंटे बाद, वे भिवंडी के पास एक जगह पहुँचे और सड़क किनारे एक छोटे से होटल के बाहर इंतज़ार करने लगे। अज़ीज़ और वह गुजराती लड़का होटल में दाखिल हुए और रजिस्टर में एंट्री करवाई। पैसे का लेन-देन हुआ। कुछ ही देर में, तीनों होटल के एक कमरे में आराम करते हुए आगे के निर्देशों का इंतज़ार करने लगे। लगभग दो घंटे की अटकलों और बेकार की गपशप के बाद, वे आगे बढ़ने के लिए तैयार थे।

तीनों एक मारुति ओमनी वैन में चढ़ गए जो उनका इंतज़ार कर रही थी; सामान डिक्की में एक ख़ास तौर पर खोखली जगह में रखा गया था। इस जगह का इस्तेमाल आमतौर पर चाँदी जैसी प्रतिबंधित चीज़ें रखने के लिए किया जाता है; सलेम ने अपने कबूलनामे में कहा कि उसने स्वाभाविक रूप से मान लिया था कि कुछ ऐसा ही सामान पहुँचाया जाएगा। बांद्रा में, उनकी मुलाक़ात फ़िल्म निर्माता हनीफ़ कड़ावाला और मैग्नम वीडियो से मशहूर समीर हिंगोरा, और बाबा मूसा चौहान से हुई।

एक बार, समीर और हनीफ़ मोबाइल से कॉल करने के लिए वैन से बाहर निकले। बाद में सलेम को पता चला कि समीर और हनीफ़ ने दुबई में अनीस को जो कॉल की थी, उस पर उन्हें 1300 रुपये का भारी-भरकम चार्ज देना पड़ा था। यह खबर निराशाजनक थी—बॉलीवुड सुपरस्टार से मुलाक़ात एक पूरे दिन के लिए टाल दी गई थी।

अगले दिन वे पाली नाका की ओर चल पड़े और दत्त के घर पहुँच गए। संजय ने गेट पर पार्टी का स्वागत किया। समीर, हनीफ और बाबा बाहर आए और संजय से बातचीत की। घबराकर सलेम ने अपनी गीली हथेली पोंछी।

Machine Translated by Google

सलेम ने अपनी पतलून की टांगें खींचीं और संजय के पास पहुँचे, जिन्होंने आगे बढ़कर सलेम को गर्मजोशी से गले लगा लिया। सलेम इस स्टार के स्नेही और विनम्र अभिवादन को सुनकर अवाक रह गए।

संजय के गेट पर एक वर्दीधारी पुलिसकर्मी पहरा दे रहा था और स्टार ने उसे अपनी चौकी छोड़कर थोड़ी देर में वापस आने को कहा। फिर संजय ने सामान देखने को कहा। डिक्की के अंदर की जगह को खोला गया और उसका सामान बाहर निकालकर उसे दिखाने के लिए रख दिया गया। सीबीआई के सामने अपने इकबालिया बयान में, सलेम ने कहा कि वह यह देखकर सचमुच हैरान रह गया कि सामान में एके-56 समेत लगभग नौ-दस असॉल्ट राइफलें और अस्सी से नब्बे हथगोले थे। सलेम, जिसका आपराधिक काम इस समय एक छोटे से गिरोह के ज़रिए पीड़ितों को पीट-पीटकर मार डालने से ज़्यादा कुछ नहीं था, ने ऐसे अत्याधुनिक हथियार सिर्फ़ फ़िल्मों में ही देखे थे।

संजय ने हथियारों की जाँच की और बंदूकों के साथ पूरी तरह सहज लग रहा था। वह सारे हथियार अपने पास नहीं रखना चाहता था, इसलिए उसने तीन एके-56 राइफलें और कुछ ग्रेनेड चुन लिए। बाहर निकलते समय, संजय ने सलेम को फिर से गले लगाया और आने के लिए शुक्रिया अदा किया।

सलेम को तब और भी खुशी हुई जब उसने उसे कुछ दिनों में वापस आने के लिए कहा।

अगली मुलाक़ात तक संजय को हथियारों से अभ्यस्त होने का काफ़ी समय मिल चुका था और उन्होंने बताया कि वे इतने सारे हथियार घर पर नहीं रखना चाहते। उन्होंने आगे कहा कि एक एके-56 ही काफ़ी होगी और फिर सलेम को एक और गर्मजोशी से गले लगाकर विदा किया। संजय दत्त से तीन बार गले मिलने के बाद, सलेम कई दिनों तक अपने दोस्तों और साथियों के सामने शेखी बघारता रहा।

इसके बाद, वह बचे हुए हथियारों से भरे बैग ज़ैबुन्निसा काज़ी नाम की एक महिला के घर ले गया। 1993 के बम धमाकों के बाद, पुलिस लोगों को सलाखों के पीछे डालने की हर संभव कोशिश कर रही थी। हनीफ और समीर को क्राइम ब्रांच ने हिरासत में लिया था और बाबा चौहान को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। जाँच में संजय का नाम सामने आया और उस पर टाडा के तहत आरोप लगाए गए।

संजय दत्त को तीन महीने की छोटी सी अवधि में एक हीरो से 'आतंकवादी' करार दे दिया गया। एक छापे के दौरान, पुलिस को उनके घर से एके-56 के अलावा पाँच और हथियार मिले थे। इस स्टार की प्रतिष्ठा तार-तार हो गई और उनके पिता की बेदाग छवि भी दागदार हो गई। संजय दत्त के नकारात्मक प्रचार का फायदा उठाकर और हंसते-हंसते बैंक की ओर जाने वाला शख्स, बेशक, सुभाष घई ही थे।

संजय दत्त के घर हथियार और ग्रेनेड पहुंचाने में शामिल सभी लोगों पर टाडा के तहत मामला दर्ज किया गया, जिसमें स्वयं संजय दत्त भी शामिल थे, और उन्हें जेल की सजा भुगतनी पड़ी, लेकिन सलेम कानून के लंबे हाथों से बच निकलने में कामयाब रहा।

Machine Translated by Google

पाँच

Machine Translated by Google

द बिग डी

एक साधारण इलाके में एक साधारण परिवार का एक साधारण आदमी, जिसके पड़ोसी भी उतने ही साधारण थे—ऐसा था दाऊद इब्राहिम कासकर। लेकिन अपनी साधारण जड़ों के साथ उसने जो किया, उसी ने उसे मुंबई अंडरवर्ल्ड का एक असाधारण सरगना बना दिया। किवदंती है कि अपने चरम पर, उसके नाम का ज़रा सा ज़िक्र ही बहादुर आदमियों को काँपने के लिए काफ़ी था, यही वह आभा थी जिसने सलेम को उसकी ओर खींचा। मुंबई के सैकड़ों गुमराह मुस्लिम युवाओं की तरह, सलेम भी डी-गैंग के सरगना को अपना आदर्श मानता था। उनके लिए, दाऊद एक ऐसा शख्स था जिसने मुश्किलों के बावजूद तरक्की की, एक भारी पक्षपातपूर्ण व्यवस्था को चुनौती दी और कामयाबी हासिल की। सलेम उस शख्स का बहुत सम्मान करता था।

रत्नागिरी में जन्मे दाऊद, मुंबई क्राइम ब्रांच में हेड कांस्टेबल इब्राहिम हसन कासकर के बारह बच्चों में से एक थे। दाऊद ने अपना ज़्यादातर बचपन आवारा बच्चों की संगति में बिताया और अपने बड़े परिवार के लिए थोड़े-बहुत पैसे कमाने के लिए छोटे-मोटे काम करके संगठित अपराध की दुनिया में कदम रखा। यहीं पर उसकी मुलाक़ात स्थानीय गिरोहों से हुई। समय के साथ, उसकी मुलाक़ात तस्करी उद्योग के प्रमुख लोगों—हाजी मस्तान और करीम लाला—से हुई और उसने अपने भाई साबिर के साथ मिलकर अपना छोटा-मोटा तस्करी का धंधा शुरू कर दिया। दाऊद के पिता ने पुलिस बल में अपनी सेवा के दौरान मस्तान और लाला से दोस्ती की थी और सेवानिवृत्ति के बाद भी उनके साथ उनकी दोस्ती बनी रही।

दाऊद की बड़ी महत्वाकांक्षा ने उसे मनीष मार्केट में एक इलेक्ट्रॉनिक्स सामान की दुकान खोलने के लिए प्रेरित किया, जिसे आज भी कभी-कभी मुंबई का ग्रे गुड्स सुपरमार्केट कहा जाता है।
तस्करी के इलेक्ट्रॉनिक सामान बेचने के धंधे के साथ-साथ, दाऊद जबरन वसूली के धंधे में भी शामिल था। अपने भाई साबिर के साथ, वह मनीष मार्केट और दूसरी जगहों पर तस्करी के सामान का कारोबार करने वाले दूसरे व्यापारियों से रंगदारी की मांग करता या उनकी दुकानों में तोड़फोड़ करता फिरता था।

युवावस्था में भी दाऊद को कारोबार के विस्तार में विश्वास था, इसलिए उसने लोगों को ठगने में भी अपना हाथ आजमाया, अक्सर वह उन्हें घड़ी या कोई महंगा आभूषण बेच देता था और सौदे के अंतिम क्षणों में उसे पत्थर या चट्टान से बदल देता था।

साबिर उस समूह का अनौपचारिक पहला सदस्य था जो आगे चलकर डी-कंपनी (और कुछ समय के लिए यंग पार्टी) बना। इस समूह को पहली बड़ी सफलता 1974 में मिली जब दाऊद के दिमाग में एक निजी कूरियर, या अंगड़िया, जैसा कि मुंबई में उन्हें कहा जाता है, को हाईजैक करने का विचार आया। उस समय, अगर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को बड़ी रकम भेजनी होती थी, तो उसे तुरंत पहुँचाने के लिए एक वाहक को काम पर रखा जाता था। अंगड़िया अपनी यात्राएँ बिना किसी सुरक्षा के करते थे, और दाऊद को एहसास हुआ कि वे अपेक्षाकृत आसान लक्ष्य होंगे और उनसे अधिकतम लाभ होगा।

और इसलिए, उसी साल दिसंबर में, दाऊद और उसके सात वफादार साथियों के गिरोह ने एक अंगड़िया के रास्ते की गुप्त सूचना मिलने पर उस पर हमला करने का फैसला किया। इस बेढंगे तरीके से अंजाम दिए जाने के बावजूद, आठ लोग बड़ी रकम लेकर भागने में कामयाब रहे, जो बाद में उन्हें पता चला कि लगभग 4.75 लाख रुपये थी, जो कॉर्पोरेशन बैंक की थी। पाइधोनी पुलिस ने इस मामले को अब तक की सबसे बड़ी बैंक डकैती के रूप में दर्ज किया। कुछ समय तक छिपे रहने के बाद, दाऊद और साबिर बदले हुए व्यक्तित्व के साथ बाहर आए। अब वे ताकतवर हो चुके थे। माना जाता है कि यही वह क्षण था जिसने दाऊद को ठग दाऊद से डॉन दाऊद में बदल दिया।

दुर्भाग्य से, साबिर के सुनहरे दिन धीरे-धीरे खत्म होने वाले थे, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि दाऊद और उसने बहुत सारे दुश्मन बना लिए थे और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उन्होंने

Machine Translated by Google

बहुत ही ख़तरनाक ज़िंदगी जी रहे थे। पठान बंधुओं — अमीरज़ादा और आलमज़ेब — के साथ झगड़ा शुरू करने के बाद, दोनों ने 1981 में बदला लेने के लिए गैंगस्टर मान्या सुर्वे की मदद ली। लेकिन जैसा कि हुआ, साबिर की कार का पीछा एक पेट्रोल पंप तक किया गया जहाँ उसने गाड़ी रोकी थी। पठान बंधुओं ने मौके का पूरा फ़ायदा उठाया और अपने साथियों के साथ मिलकर साबिर पर घात लगाकर उसे गोलियों से छलनी कर दिया।

इस हत्या ने मुंबई के नागरिकों और पुलिसकर्मियों को समान रूप से झकझोर दिया और अंडरवर्ल्ड में हलचल मचा दी। साबिर के कब्र में समा जाने के बाद, दाऊद ने यंग पार्टी/डी-कंपनी और उसके बाद पूरे गिरोह की बागडोर संभाली। कुछ सालों बाद, दाऊद ने एक गुस्सैल और हिंसक युवक के रूप में अपनी अच्छी-खासी ख्याति बना ली थी, जिसने कई असहयोगी दुकानदारों और अन्य व्यापारियों के व्यापारिक हितों को बर्बाद कर दिया था।

इसका नकारात्मक पहलू यह था कि दाऊद और उसके परिचितों का छोटा-सा समूह पुलिस का ध्यान अपनी ओर खींचने लगा था। उसके जबरन वसूली के तरीकों और उसके द्वारा मचाए जा सकने वाले उत्पात की कहानियाँ पुलिस को परेशान कर रही थीं। कुछ हलकों में यह माना जाता है कि एक कांस्टेबल का बेटा होने के कारण पुलिस उसे न्याय के कटघरे में लाने के लिए और भी ज़्यादा दृढ़ थी।

यहीं पर उस समय की नवोदित डी-कंपनी का मुंबई चैप्टर अचानक और अचानक बंद हो गया, और युवा दाऊद जल्दी-जल्दी अपने हरे-भरे मैदान, दुबई, की ओर निकल पड़ा। दुबई पहुँचकर, डॉन ने अपने घर को व्यवस्थित करना शुरू कर दिया। उसने अपने सिपहसालारों, कॉर्पोरल और पहरेदारों को एक ही आदेश दिया—अपने सारे काम-धंधे समेटो और दुबई के लिए निकल जाओ।

दाऊद के संदेश की तात्कालिकता उसके गुर्गों पर हावी नहीं हुई और वे खाड़ी देशों की ओर कूच करने लगे। एक समय दाऊद के दो सबसे करीबी और ताकतवर सहयोगी राजेंद्र सदाशिव निखलजे और शकील बाबूमिया शेख थे, जिन्हें क्रमशः छोटा राजन और छोटा शकील के नाम से जाना जाता था। राजन, शकील से लगभग एक साल पहले दुबई पहुँचा था, जिससे उसे दाऊद के साथ घुलने-मिलने के लिए और भी ज़्यादा समय मिल गया। शकील ने 1988 में किसी समय डी-कंपनी के मुखिया के बुलावे का जवाब दिया और दुबई पहुँचकर देखा कि राजन दाऊद का दाहिना हाथ होने के साथ आने वाली शक्ति, ज़िम्मेदारी और विशेषाधिकार का आनंद ले रहा है। डी-कंपनी के सरगना को खुश करने की अपनी कड़ी मेहनत और प्रयासों के बावजूद, शकील को कुछ साल टुकड़ों में ही काम चलाना पड़ा।

धीरे-धीरे, दाऊद का छोटा-सा समूह एक विशाल साम्राज्य में बदल गया, जिसके हाथ हर तरह के गंदे धंधों में थे, जबरन वसूली से लेकर तस्करी तक, और यहाँ तक कि हिंदी फिल्म उद्योग में भी। एक समय तो यह कहना उचित ही था कि दाऊद का साम्राज्य अंबानी, टाटा और बिड़ला जैसे बड़े कारोबारियों के अंडरवर्ल्ड के बराबर था।

डॉन ने दुबई में अपने लिए एक विशाल हवेली खरीदी और उसका नाम व्हाइट हाउस रख दिया। दशकों बाद, फोर्ब्स पत्रिका ने दाऊद के बारे में अपनी धारणा की पुष्टि करते हुए उसे दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों में से एक घोषित किया—लगभग अमेरिका के राष्ट्रपति के बराबर। अपनी कड़ी सुरक्षा वाली हवेली में आराम से बैठकर, दाऊद ज़मीन पर मौजूद कुछ लोगों के साथ भारत में होने वाली कार्यवाही को रिमोट कंट्रोल से चलाता था।

इस बीच, अनीस अपने भाई दाऊद की बदनामी और खौफ का फायदा उठा रहा था। वह गिरोह का हिस्सा तो था, लेकिन अपने लोगों और गुर्गों को अपने लिए काम पर रखना पसंद करता था। उसका ध्यान ज़मीन-जायदाद पर कब्ज़ा करने और बिल्डरों व फ़िल्म निर्माताओं से जबरन वसूली करने पर था—ऐसे धंधे जिनसे वह बहुत अमीर बना। सलेम का तस्करी का धंधा भी अनीस के पोर्टफोलियो का एक आकर्षक हिस्सा बन गया।

1990 का दशक आते-आते, डी-कंपनी की मुंबई पर पकड़ धीरे-धीरे मज़बूत होती जा रही थी और दाऊद और उसके गुर्गों के लिए सब कुछ ठीक चल रहा था—बाबरी मस्जिद और उसके बाद हुए सांप्रदायिक दंगों तक। मुंबई में मुसलमानों की प्रतिक्रिया एक तमाचे जैसी थी।

Machine Translated by Google

दाऊद के चेहरे पर। बताया जाता है कि एक मुस्लिम महिला ने दाऊद को टूटी चूड़ियों से भरा एक डिब्बा भेजा था, जो एक पुरुष के लिए सबसे बड़ा अपमान था, क्योंकि यह एक पुरुष के रूप में साथी मुसलमानों की रक्षा करने में उसकी अक्षमता का उपहास था। यही वह तिनका था जिसने ऊँट की कमर तोड़ दी और डी-कंपनी को दोराहे पर ला खड़ा किया। गिरोह का अगला कदम ही उसके भविष्य की दिशा तय करने वाला था।

पाकिस्तान की प्रमुख ख़ुफ़िया एजेंसी, इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (ISI), अब सचमुच लार टपका रही थी। उसे ऐसे ही एक मौके का इंतज़ार था और अब वह चाँदी की थाली में सजा हुआ था। सालों से, कश्मीर में अपने अभियानों में ISI की नीति 'चुभोकर खून बहाने' की रही थी। अब, योजना देश की मानसिकता में एक 'गहरा घाव' करने की थी। लेकिन इस योजना को अंजाम देने के लिए, ISI को ज़मीनी स्तर पर जल्लाद के तौर पर कुछ लोगों की ज़रूरत होगी।

फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन और अफगान मुजाहिद्दीन जैसे समूहों के अलावा, आईएसआई ने दुबई के विभिन्न धनी व्यापारियों, साथ ही दाऊद, अनीस, मोहम्मद दोसा, टाइगर मेमन, ताहिर मर्चेंट और कई अन्य भारतीय डॉनों से संपर्क किया, तथा उन्हें अपने नवीनतम ऑपरेशन: तहरीक-ए-इंतेकाम (बदला लेने की पहल) के बारे में जानकारी दी।

अब तक, कंपनी एक खतरनाक गिरोह थी, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे उन पर 'आतंकवादी' का ठप्पा लग जाए। यह सब बदलने ही वाला था कि दाऊद ने अपनी योजना को अमली जामा पहनाने के लिए व्हाइट हाउस में एक बैठक बुलाई। उन्होंने तर्क दिया कि खून से खून और हिंसा से हिंसा ही पैदा होती है। और बदला लेने की योजना बनाने लगे।

भारतीय मुस्लिम युवकों को पाकिस्तान ले जाया गया जहाँ उन्हें विध्वंस और गोला-बारूद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। फिर उन्हें दुबई ले जाया गया और जिहाद के लिए दिमाग़ी तौर पर तैयार किया गया, जहाँ मस्जिद विध्वंस के बाद 1992 के गुजरात दंगों में मुस्लिम महिलाओं के साथ बलात्कार के घंटों के वीडियो फुटेज दिखाए गए। ये युवा, गर्मी तलाशने वाली मिसाइलें अब प्रक्षेपण के लिए तैयार थीं।

यह निर्णय लिया गया कि माहिम निवासी दाऊद का सहयोगी टाइगर मेमन, जो आंतरिक गिरोह का हिस्सा था - तथा सोने और चांदी का शीर्ष तस्कर था - इसका सरगना होगा।
मेमन और दोसा को इस ऑपरेशन का नेतृत्व करना था। दाऊद मेमन को 'कच्चा माल' भारतीय तटों तक पहुँचाने के लिए रसद सहायता प्रदान करेगा। मेमन फरवरी 1993 में महाराष्ट्र के रायगढ़ तट पर आठ टन से ज़्यादा आरडीएक्स, हज़ारों ग्रेनेड और कई कलाश्निकोव राइफलें लेकर आया था। मंच तैयार था और कलाकार भव्य समापन के लिए लगभग तैयार थे। मेमन ने भारत में बम हमलों की सबसे विनाशकारी श्रृंखला को अंजाम देने के लिए उन्नीस लोगों की एक टीम तैयार की थी।

12 मार्च 1993 को, दो घंटे से भी कम समय में, पूरे मुंबई में दस बम विस्फोट हुए, जिससे शहर की सूरत ही बदल गई। दोपहर लगभग 1.28 बजे बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज की इमारत से शुरू होकर, एयर इंडिया टावर, मस्जिद बंदर की अनाज मंडी, प्लाज़ा सिनेमा हॉल, दादर के सेना भवन, वर्ली के पासपोर्ट कार्यालय और बांद्रा व सांता क्रूज़ के पाँच सितारा होटलों में विस्फोट हुए। इतना ही नहीं, हवाई अड्डे और माहिम मछुआरा कॉलोनी पर भी ग्रेनेड फेंके गए।

लगभग 257 लोग मारे गए और 700 घायल हुए, जिनमें से कुछ गंभीर रूप से घायल हुए। सूक्ष्म विश्लेषण और अच्छी किस्मत की बदौलत, मुंबई पुलिस को ज़्यादातर बड़ी सफलताएँ विस्फोटों के बाद पहले ही घंटे में मिल गईं। अपने पास मौजूद कुछ सुरागों के साथ कड़ी मेहनत करने के बाद, शहर के पुलिस बल की विभिन्न शाखाओं ने ब्लैक फ्राइडे की साजिश और योजना को उजागर करना शुरू कर दिया। पुलिस ने एक सौ उनतीस आरोपियों की पहचान कर ली थी, लेकिन मुख्य साजिशकर्ता—मेमन और दाऊद—का कहीं पता नहीं चला।

इस सिलसिलेवार बम हमले के बाद के नतीजे कई तरह के थे। भारतीय मीडिया ने हमलों में डी-कंपनी की संलिप्तता के स्तर को उजागर किया और इस तथाकथित प्रतिशोधात्मक कार्रवाई में हिंदू और मुसलमान, दोनों ही मारे गए। जनता की धारणा

Machine Translated by Google

अब ध्रुवीकरण हो चुका था और लोग दाऊद और उसके साथियों के खून के प्यासे थे। कंपनी के भीतर ही अव्यवस्था फैली हुई थी, दाऊद का दाहिना हाथ राजन मोहभंग की टीस महसूस कर रहा था, जो धीरे-धीरे गिरोह के हाल के कारनामों से तीखी असहमति में बदल गई।

इस बीच, दुबई में, व्हाइट हाउस में हालात थोड़े पेचीदा होते जा रहे थे, क्योंकि भारत सरकार संयुक्त अरब अमीरात सरकार के साथ प्रत्यर्पण संधि पर बातचीत करने की कोशिश कर रही थी। खाड़ी देश, जो अब तक भगोड़े प्रवासियों के लिए एक शरणस्थली बना हुआ था, अब समझौता करने को तैयार लग रहा था। कई भगोड़े प्रवासी घबराने लगे और असुरक्षित महसूस करने लगे। हालाँकि, दाऊद की नज़र एक नए रास्ते पर थी।

शुरू करना।

कई ठिकानों पर विचार करने के बाद, दाऊद को एहसास हुआ कि आईएसआई उसे और उसके लोगों को सुरक्षित रखेगी। इसलिए, 1994 के अंत में, दाऊद ने एक बार फिर अपने साम्राज्य को एक नए मुल्क में स्थापित करना शुरू कर दिया। कराची डी-कंपनी का नया ठिकाना बन गया। यह बंदरगाह शहर मुंबई से कुछ-कुछ मिलता-जुलता था, और दाऊद और उसकी कंपनी आसानी से पाकिस्तान में बस गए।

Machine Translated by Google

छह

Machine Translated by Google

कवर के लिए भागना

1993 के धमाकों से शहर और उसकी पुलिस पूरी तरह से अचंभित रह गई थी। सलेम शुक्रवार की नमाज़ अदा करने गया था और वहाँ से अपने सांता क्रूज़ स्थित दफ़्तर गया।

काम पर एक सामान्य दिन बिताने के बाद, वह लगभग 3 बजे जोगेश्वरी स्थित अपने घर के लिए निकले और उन्होंने शहर में फैली उथल-पुथल को प्रत्यक्ष देखा।

जब तक सलेम घर पहुँचा, तब तक यह साफ़ हो चुका था कि ये धमाके किसी आतंकवादी संगठन का काम थे। सलेम को उन हथियारों और गोला-बारूद की याद आ गई जो उसने बमुश्किल एक महीने पहले संजय दत्त के घर पहुँचाए थे। उसे मामले की कड़ियों को जोड़ने में ज़्यादा देर नहीं लगी।

जल्द ही, पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई शुरू कर दी। शहर भर से अपराधियों को पकड़ा जा रहा था। यहाँ तक कि अमीर और नामी लोगों को भी नहीं बख्शा गया। हनीफ कड़ावाला, समीर हिंगोरा, बाबा मूसा चौहान, मंज़ूर अहमद और अन्य की गिरफ़्तारियों ने सलेम को यह विश्वास दिला दिया कि अगला अपराधी वही हो सकता है। उसने मुंबई पुलिस के चंगुल में फँसने से पहले ही किसी सुरक्षित जगह भाग जाने का फैसला कर लिया।

सलेम को लगने लगा था कि अब उसकी ज़िंदगी में कोई ठहराव आ गया है। उसे मुंबई में आए हुए मुश्किल से सात-आठ साल ही हुए थे और उसने अंडरवर्ल्ड में अपनी एक अलग पहचान बना ली थी। उसकी तस्करी और भाईगिरी का धंधा फल-फूल रहा था—मुंबई में एक दफ़्तर, एक कार, बीस से ज़्यादा हमशक्ल लड़कों का एक गिरोह, गाँववालों से भरपूर इज़्ज़त और सबसे बढ़कर, पैसा अब कोई समस्या नहीं रहा। उसकी शादी को कुछ साल हो चुके थे। समीरा ने उसे अंग्रेज़ी और सभ्य दुनिया के तौर-तरीके और रीति-रिवाज़ सिखाना शुरू कर दिया था। लेकिन सिलसिलेवार धमाकों और उसके दोस्तों की गिरफ़्तारियों ने उसकी कामयाबी की नई छवि को चकनाचूर कर दिया था।

समीरा को अपने साथ ले जाना चाहिए या नहीं, इस बारे में दुविधा और बढ़ गई। उसने अपने दोस्तों, खासकर कलाम से सलाह ली, और सबने उसे सलाह दी कि उसके साथ जाना समझदारी नहीं होगी। अगर पुलिस उन्हें हिरासत में ले लेती, तो बेचारी समीरा बेवजह असहज स्थिति में पड़ जाती। इसलिए सलेम ने अकेले दिल्ली और फिर लखनऊ जाने का फैसला किया ताकि वह अपने नाम से एक नकली पासपोर्ट बनवा सके। उसने दुबई जाने और बाद में समीरा को अपने साथ ले जाने की योजना बनाई।

Machine Translated by Google

सात

Machine Translated by Google

दुबई में निराशा

दुबई हवाई अड्डे पर कदम रखते ही अबू सलेम को पता था कि वह जल्द ही मुंबई नहीं लौटेगा। वह अब तक दुबई हवाई अड्डे से वाकिफ हो चुका था क्योंकि 1987 में तस्करी का अपना करियर शुरू करने के बाद से वह चार बार वहाँ जा चुका था। लेकिन उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वह वहाँ लंबे समय तक रुकने की योजना बना रहा होगा।

दुबई को शायद एक ऐसे शहर के रूप में वर्णित किया जाता होगा जिसके फुटपाथ सोने की टाइलों से जड़े हों, लेकिन सलेम को संयुक्त अरब अमीरात में कहीं भी ऐसा कुछ नहीं मिला। अपनी पिछली यात्राओं में, उसने पाया था कि यह भारतीयों, पाकिस्तानियों, बांग्लादेशियों और यहाँ तक कि फिलिपिनो से भी आबाद था। मुंबई के दक्षिण में नरीमन पॉइंट और कफ परेड में पूरे दुबई से ज़्यादा ऊँची इमारतें थीं। 1991 तक, दुबई में सिर्फ़ एक गगनचुंबी इमारत थी। चमचमाती, साफ़ सड़कों पर रेगिस्तान का लंबा फैलाव सा लगता था। उसे हैरानी होती थी कि सारे भाई दुबई क्यों बस गए और इतने सारे फ़िल्मी सितारों को यह जगह क्यों पसंद आई। उसने दुबई से लोगों को अपनी जेबों में पैसे भरकर लौटते देखा था, लेकिन सच कहूँ तो, अपनी सारी गंदगी और गंदगी के साथ यह जगह भिंडी बाज़ार से बेहतर नहीं लगती थी।

अज़ीज़ ने उसे यकीन दिला दिया था कि दुबई जाना दाऊद और अनीस के साथ मिलकर काम करने और उनके कामकाज के केंद्र के और क़रीब पहुँचने का सबसे अच्छा तरीक़ा होगा। इस नए गैंगस्टर की नज़र में, अगर अनीस दाऊद का दाहिना हाथ है, तो सलेम को खुद को अनीस का दाहिना हाथ बनाने की कोशिश करनी होगी, और इस तरह वह दाऊद का 'बायाँ हाथ' बन जाएगा। सलेम के महत्वाकांक्षी दिमाग़ को यह तर्क बेदाग़ लगा।

युवक ने दुबई के एक उपनगर में यूसुफ़ बकर रोड पर अपने लिए एक छोटी सी जगह हासिल कर ली, जिसे वह अनीस इब्राहिम के तीन सहयोगियों के साथ साझा करता था। यह ऊँट बाज़ार (ऊँट बाज़ार) इलाके में स्थित था और दुबई से एक नाले द्वारा अलग था। ऊँट बाज़ार 1970 के दशक की शुरुआत में मवेशियों की बिक्री के लिए एक बाज़ार के रूप में स्थापित किया गया था। चूँकि ऊँट दुनिया के इस हिस्से में मवेशियों का सबसे लोकप्रिय रूप था, इसलिए यह बाज़ार मानो उनकी जागीर बन गया था।

दुबई शहर से ऊँट बाज़ार तक और वापस आने के लिए आमतौर पर अबरा (स्थानीय नौका) नाम की एक नौका का इस्तेमाल किया जाता था, जिसका किराया लगभग 25 अरब अमीरात दिरहम था। सलेम को बताया गया था कि यह वहाँ परिवहन का सबसे तेज़ और सस्ता साधन है। ऊँट बाज़ार न केवल दूर स्थित था, बल्कि उसकी संकरी, गंदी गलियों में एक तीखी, बासी गंध भी थी। यह मैल, पसीने की बदबू और ऊँटों व मवेशियों की गंदी बदबू का एक घिनौना मिश्रण था। सलेम अक्सर सोचता था कि स्थानीय लोग इसे कैसे बर्दाश्त कर पाते हैं।

बदकिस्मती से, उसके पास अपनी जगह चुनने का कोई विकल्प नहीं था। इंटरपोल, क्राइम ब्रांच, इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) और हर कोई उसकी जान के लिए तरस रहा था और यही एकमात्र जगह थी जहाँ वह चुपचाप रह सकता था। लेकिन, जैसा कि कहते हैं, हर मुश्किल में एक उम्मीद की किरण भी होती है और यह झोपड़ी सलेम के लिए एक बड़ा आकर्षण बन गई। उसे एहसास हुआ कि यह भारत से भागकर सुरक्षित ठिकाने की तलाश कर रहे लोगों के लिए एक शानदार ठिकाना बन सकता है। सबसे पहली बात, यह सस्ता और गुप्त था, इसलिए वहाँ छिपे लोग रडार से बचकर निकल जाएँगे।

दूसरी बात, ऊंट बाज़ार एक जाना-पहचाना शौक़ था और इस बात की कोई संभावना नहीं थी कि अधिकारी उस भयानक बदबू को इतनी देर तक झेल पाएँ कि पूरे होटल की तलाशी ले सकें। यह एक बेहतरीन ठिकाने का नुस्खा लग रहा था।

हालाँकि, उसे इस बात की चिंता बढ़ती जा रही थी कि वह समीरा को वहाँ कैसे लाएगा। उसके जाने के बाद, उसे पता था कि भारतीय अधिकारी उसे परेशान करेंगे। बेशक, उसे ऊँट बाज़ार में रहने के लिए लाना कोई विकल्प नहीं था, खासकर उस झोपड़ी में जिसे वह वहाँ अपने शुरुआती दिनों में अपना घर कहता था। आखिरकार, अस्थायी

Machine Translated by Google

आजमगढ़ के इस लड़के के लिए बार दुबई में रहने की व्यवस्था की गई थी, जो उस इमारत की पहली मंज़िल पर था जहाँ अनीस की वीडियो कंपनी किंग्स वीडियो चलती थी। वहाँ वीडियो टेप का कारोबार बहुत बड़ा था। लोग फ़िल्मों और सितारों के दीवाने थे। सिर्फ़ भारतीय ही नहीं, बल्कि पाकिस्तानी और बांग्लादेशी भी बॉलीवुड सितारों की ओर बेतहाशा आकर्षित थे। कोई आश्चर्य नहीं कि बॉलीवुड के बेहतरीन कलाकार वहाँ परफॉर्म करने या बस आराम करने के लिए इतनी नियमित रूप से आते थे।

अपने सिर पर एक सम्मानजनक छत के साथ, सलेम जानता था कि अब दुबई में अपनी ज़िंदगी फिर से शुरू करने का समय आ गया है, ठीक उसी तरह जैसे उसने मुंबई आकर अपनी ज़िंदगी बदली थी। बस कुछ ही साल लगे थे। उस समय, उसके पास अपने दृढ़ संकल्प और कभी हार न मानने वाले जज्बे के अलावा कुछ नहीं था। आज, वह अंडरवर्ल्ड को संभालने और लोगों के डर और असुरक्षा को ठोस, ठोस नकदी में बदलने की कला की सहज समझ से लैस था।

सलेम दुबई में अकील अहमद आज़मी के नाम और फर्जी पहचान के साथ उतरा था। उसने लखनऊ में अपने और समीरा के लिए अकील अहमद आज़मी और सबीना आज़मी के नाम से फर्जी पासपोर्ट बनवाए थे। इसी मास्टरस्ट्रोक की बदौलत भारत सरकार के लगातार दबाव के बावजूद, सलेम को दुबई से भारत प्रत्यर्पित होने से बचाया जा सका। अरब नौकरशाही का कहना था कि संयुक्त अरब अमीरात में अबू सलेम नाम का कोई व्यक्ति नहीं है।

बाद में पाकिस्तान ने भी इस चाल को अंजाम दिया। जब भारत सरकार ने दाऊद इब्राहिम की निजी जानकारी और यहाँ तक कि उसके पाकिस्तानी पते सहित पूरे दस्तावेज़ भेजे, तो पाकिस्तान सरकार ने दावा किया कि पाकिस्तान की धरती पर कोई दाऊद इब्राहिम कासकर नहीं है। भारतीयों ने शेख दाऊद को अपना सबसे वांछित अभियुक्त समझ लिया होगा, उन्होंने भारतीय नौकरशाहों का मज़ाक उड़ाया।

मुंबई से निकलने के बाद, सलेम को औपचारिक रूप से अबू सलेम अब्दुल कय्यूम अंसारी के नाम से कभी नहीं जाना जाएगा। वह रहने, व्यापार और यात्रा के लिए अपनी विभिन्न नकली पहचानों का इस्तेमाल करता रहा। लेकिन जब भी उसे आतंक फैलाना, लोगों को डराना और पैसे की माँग करनी होती, तो वह हमेशा अपने पुराने अभिवादन 'अबू सलेम बोल रहा हूँ' पर लौट आता।

Machine Translated by Google

आठ

Machine Translated by Google

फर्स्ट ब्लड

17 फरवरी 1995 का दिन ज्योति प्रदीप जैन की स्मृति में सदैव अंकित रहेगा।

जब वह और उनके पति प्रदीप जैन अंधेरी स्थित अपने घर में चुपचाप खाना खा रहे थे, तभी टेलीफोन की घंटी बजने लगी। वह मेज़ से उठीं और फ़ोन के पास गईं। यह कॉल उनकी किस्मत बदलने वाली थी।

फ़ोन पर एक आदमी था जिसने खुद को दुबई से अबू सलेम बताया और ज्योति के जीजा अशोक जैन से बात करने को कहा। जब ज्योति ने कहा कि अशोक घर पर नहीं है, तो उस आदमी ने पूछा कि कौन उपलब्ध है। ज्योति ने ईमानदारी से जवाब दिया। फिर सलेम ने प्रदीप जैन से बात करने को कहा।

ज्योति ने देखा कि उसके पति ने फ़ोन उठाया और धीरे-धीरे चिड़चिड़ाने लगा। उसने अपने पति को इतना गुस्सा कभी नहीं देखा था। उसने परेशान और बेचैन होकर फ़ोन रख दिया। जब ज्योति ने उससे पूछा कि क्या हुआ, तो उसने बताया कि अबू सलेम नाम का एक गैंगस्टर प्रदीप पर दबाव बना रहा है कि वह कोलडोंगरी की अपनी संपत्ति छोड़ दे, वरना अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकाने को तैयार रहे। घबराई हुई ज्योति ने उसे पुलिस में शिकायत करने को कहा, लेकिन प्रदीप ने मना कर दिया।

दुबई में बसा सलेम अपने काम का विस्तार करने और शहर में खुद को एक शक्तिशाली डॉन के रूप में स्थापित करने की योजना बना रहा था। अनीस ने सलेम को पूरी छूट दे दी थी और उसे बॉलीवुड और बिल्डरों का कारोबार संभालने को कहा था। सलेम का एकमात्र काम था 'किसी भी तरह से पैसा कमाना'। इन निर्देशों का पालन करते हुए, सलेम ने हर जगह अपने जासूसों और विश्वासपात्रों को तैनात कर दिया था ताकि वे आकर्षक व्यापारिक सौदों और चुपचाप करोड़ों कमा रहे धनी व्यापारियों की तलाश कर सकें, जो सभी संभावित लक्ष्य थे। सलेम के प्रमुख जासूसी एजेंटों में से एक रियाज़ सिद्दीकी था। उसका एकमात्र काम व्यापारियों के बारे में सटीक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करना था। उसने सलेम को लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने और बड़ी जबरन वसूली की रकम तय करने में मदद की।

रियाज़ ने अब तक जो सबसे बड़ा निशाना बनाया था, वह अशोक जैन नाम का एक बिल्डर था। जैन परिवार गुलमोहर जेवीपीडी स्थित दो मंजिला बृजकमल बंगले में रहता था। वे पाँच भाई थे—सुरेश, अशोक, राकेश, प्रदीप और सुनील। उनका कमला कंस्ट्रक्शन्स नाम का एक कंस्ट्रक्शन व्यवसाय था, जिसका कार्यालय उनके बंगले के भूतल पर था।

जब सलेम ने अशोक जैन को फ़ोन करके धमकाया, तो वह दबाव में आ गया। सलेम ने उसे विनम्रता से बताया कि अशोक काफ़ी अमीर है और उसे हर महीने 10 लाख रुपये देने के लिए कहना बिलकुल वाजिब लगता है। उसने पहले महीने तो सलेम के गिरोह की मदद की। लेकिन दूसरे महीने के अंत में, मासिक किश्त गायब थी। ज़ाहिर है, उसके भाई प्रदीप ने अशोक को किश्तें बंद करने के लिए मना लिया था।

प्रदीप उन लोगों में से था जिन्हें अंडरवर्ल्ड से कोई डर नहीं था। चाहे वो अपनी बेबाकी की वजह से हो या माफिया के झांसे में आने का अंदेशा, उसने एक पैसा भी देने से इनकार कर दिया। सलेम ने रियाज़ को बुलाया और कहा कि वो जाकर अशोक को समझाए और प्रदीप को धमकाए। रियाज़ ने अशोक को समझाया कि सलेम जैसा आदमी खतरनाक होता है और उसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। उसने आगे कहा कि वो अनीस इब्राहिम कासकर और डी-कंपनी के लिए काम कर रहा था, इसलिए उसे बहुत गंभीरता से लेना चाहिए। डी-कंपनी की माँगों को कोई नहीं ठुकराता था, जब तक कि वो बेसब्री से अपने अंतिम संस्कार का इंतज़ार न कर रहा हो। लेकिन रियाज़ की सारी दलीलें बेकार गईं। जैन बंधुओं ने टस से मस होने से इनकार कर दिया।

इससे सलेम और उसके लड़कों के लिए मुश्किल खड़ी हो गई। अगर एक भी बिल्डर बिना पैसे दिए बच निकलता, तो बाकी बिल्डर ज़रूर घमंडी हो जाते। कोई और बिल्डर

Machine Translated by Google

सलेम की धोखाधड़ी को नकारें और पैसे न देने का फैसला करें। फिर तीसरा भी आएगा, और इसी तरह। जल्द ही, कोई भी अंडरवर्ल्ड को गंभीरता से नहीं लेगा। डी-कंपनी के पास अब कोई पैसा नहीं होगा, सिर्फ़ मज़ाक होगा।

इसलिए सलेम ने सोचा कि खून-खराबा तो होना ही चाहिए। अगर पाँच जैन भाइयों में से सिर्फ़ एक को भी मार दिया गया, तो मुंबई के व्यापारिक समुदाय में दहशत फैल जाएगी। अशोक को आखिरी बार, आखिरी चेतावनी के लिए बुलाया गया।

फ़ोन की घंटी बजी और अशोक ने तुरंत जवाब दिया। प्रदीप को अपने भाई से फ़ोन छीनते और उस पर गालियाँ देते हुए सुनकर सलेम स्तब्ध रह गया। कंपनी में आने के बाद से सलेम से इतनी बेरुखी से बहुत कम लोगों ने बात की थी।

जब अनीस ने बातचीत शुरू की, तो प्रदीप ने उसे भी गालियों की बौछार कर दी और बार-बार कहा कि वे पैसे नहीं देंगे। फ़ोन पर बातचीत खत्म होने के बाद, सलेम ने निराश अनीस की तरफ़ देखा और उस बातचीत में अपने और अपने गुरु, दोनों के खोए हुए सम्मान को बचाने की ज़रूरत महसूस की। सलेम के मन में अब यह बात बिल्कुल साफ़ हो गई थी—प्रदीप ही वह जैन भाई था जिसे मरना ही था।

अब बात पैसों की नहीं थी। अब मुंबई में कंपनी के दबदबे और इज़्ज़त की थी। कोल्हापुर में सलेम के ड्राइवर मोहम्मद मेहंदी हसन (उर्फ सनी) को तुरंत एक संदेश भेजा गया। उसे बताया गया कि सलीम हड्डी को प्रदीप जैन के दफ़्तर ले जाकर उसे मौत के घाट उतार दिया जाएगा। यह काम पूरा करने के लिए, सलेम ने अपने आदमियों के लिए सौदा आसान कर दिया। उसने सनी से कहा कि अगर प्रदीप मारा गया, तो वह उन्हें एक-एक लाख रुपये का इनाम देगा। भिंडी बाज़ार के एक होटल के पास हथियार पहुँचा दिए गए। सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं।

सिर्फ़ फ़िल्मों में ही माफिया के हत्यारे अपनी पीठ के निचले हिस्से में हथियार छिपाकर घूमते हैं। असल ज़िंदगी के हत्यारों को, असल हत्या से ठीक पहले, एक नौकरानी द्वारा बंदूकें दी जाती हैं। इस कूरियर बॉय को मैनेजर से बंदूक लेकर शूटर को सौंपने का काम सौंपा गया था। चूँकि हर ऑटोमैटिक स्टार पिस्तौल की कीमत लगभग एक लाख रुपये थी, इसलिए माफिया सरगना इन्हें अपने बंदूकधारियों के पास रखना नहीं चाहते थे, क्योंकि वे इन्हें खो सकते थे या गिरफ़्तार हो सकते थे। हथियारों की तस्करी और ख़रीद-फ़रोख़्त एक मुश्किल काम था, इसलिए हथियारों को इधर-उधर घूमते रखना ही समझदारी थी।

हद्दी को हथियार मिलने के बाद, सलेम को बस आराम से बैठकर फ़ोन बजने का इंतज़ार करना था। हद्दी ने रेकी की और प्रदीप जैन की गतिविधियों का अध्ययन किया। हद्दी को हमला करने का सबसे उपयुक्त क्षण तय करने में दो हफ़्ते लग गए। 7 मार्च 1995 को, सलेम को वह फ़ोन आया जिसका वह बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। हद्दी ने फ़ोन करके बताया कि वह अपने साथियों के साथ प्रदीप के दफ़्तर में घुस गया था, उसकी आँखों में सीधे देखकर उसे गोली मार दी। प्रदीप का छोटा भाई सुनील, जो दफ़्तर में मौजूद था, उसे भी चोटें आई थीं। सलेम ने हद्दी से पूछा, क्या वह अब भी ज़िद्दी था, जबकि मौत उसकी आँखों में देख रही थी? इस कुशल निशानेबाज़ ने हाँ में जवाब दिया। फ़ोन क्लिक हुआ और सलेम ने फ़ोन रख दिया।

सलेम के लिए, प्रदीप की हत्या उस गुस्ताखी की सज़ा थी जो उसने सलेम और अपने बॉस के सामने दिखाई थी। दूसरी ओर, ज्योति की पूरी दुनिया उजड़ गई थी। उसने 1982 में प्रदीप से शादी की थी और तेरह साल का उसका वैवाहिक जीवन सुखमय रहा था। सलेम ने सब कुछ तबाह कर दिया था।

20 मार्च 1995 को, जब ज्योति अपने पति के तेरहवें दिन की प्रार्थना सभा में बैठी थीं , उन्हें एक फ़ोन आया। फ़ोन करने वाले ने उनका नाम पूछा, उन्होंने खुद को प्रदीप की पत्नी ज्योति बताया। उन्होंने अनुमान लगाया कि यह प्रदीप का कोई व्यावसायिक सहयोगी या शायद कोई दूर का रिश्तेदार या दोस्त होगा जो अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाया था और संवेदना व्यक्त करने के लिए फ़ोन कर रहा था।

फ़ोन करने वाले ने कहा, "अबू सलेम बोल रहा हूँ" और फिर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। जब वह रुका, तो उसने पूछा कि क्या वह अपनी विधवा होने का आनंद ले रही है। उसने बताया कि अगर प्रदीप ने पैसे दे दिए होते, तो आज वह ज़िंदा होता।

Machine Translated by Google

ज्योति गुस्से से आगबबूला हो गई और उसने पूछा कि वह क्या चाहता है। सलेम ने कहा, "अब अपने साले से कहो कि पैसे दे दें, वरना मैं सबको एक-एक करके मार डालूँगा।" गुस्से और डर से ज्योति ने फोन पटक दिया। जब उसके साले सुनील ने फोन करने वाले के बारे में पूछा, तो उसने बस "अबू सलेम" कहा और फूट-फूट कर रोने लगी।

प्रदीप जैन की हत्या से उसके भाई डर गए थे। सुनील पहले तो पुलिस के पास जाने पर अड़ा था, लेकिन जब उसे इसके अंजाम का एहसास हुआ तो उसने यह इरादा छोड़ दिया। वे इस बात पर सहमत हुए कि वे भुगतान फिर से शुरू करेंगे, लेकिन इसमें एक अड़चन थी।
उनके पास नकदी की समस्या थी और वे नकद भुगतान करने में असमर्थ थे। उस समय सलेम ने इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और इसके बजाय उनसे कहा कि वे जिस इमारत का निर्माण कर रहे थे, उसमें कुछ फ्लैट उन्हें दे दें। आखिरकार, संपत्ति की कीमत लगभग हमेशा बढ़ती ही रहती है, खासकर मुंबई जैसे शहर में और बाद में आसानी से नकद में बेची जा सकती है। यही वह समय था जब उन्हें यह अद्भुत विचार सूझा कि अगर नकदी उपलब्ध न हो, तो भुगतान के रूप में फ्लैट स्वीकार कर लिए जाएँ।

2006 में, भारत सरकार पुर्तगाल से सलेम का आठ मामलों में प्रत्यर्पण करवाने में कामयाब रही, जिनमें से दो मुंबई पुलिस के अधीन थे। प्रदीप जैन हत्याकांड उसके खिलाफ सबसे मज़बूत मामलों में से एक था। 2008 में मुंबई में हुए मुकदमे में, ज्योति की विस्तृत गवाही ही सलेम के खिलाफ सबसे अहम गवाही साबित हुई।

Machine Translated by Google

नौ

Machine Translated by Google

सलेम की हत्या मशीनें

1980 के दशक से लेकर 1990 के दशक के अंत तक, मुंबई माफिया में कॉन्ट्रैक्ट किलिंग या सुपारी लेना एक सम्मानजनक पेशा माना जाता था। ये पेशेवर लोग मुंबई में किसी खास व्यक्ति को मारने के लिए मोटी रकम मांगते थे; यह वाकई एक अच्छा-खासा मुनाफा कमाने वाला धंधा था। सुपारी के दो प्रकार होते थे। पहला, सीधा काम, जिसमें कोई व्यापारिक प्रतिद्वंदी या रिश्तेदार किसी की हत्या करवाना चाहता था और बिल चुकाने को तैयार रहता था।

दूसरा था दंडात्मक हत्या, जो आमतौर पर किसी गुंडे के इशारे पर की जाती थी।
परंपरागत रूप से, यह सज़ा बड़े-बड़े व्यापारियों, धनकुबेरों या दुश्मनों के दोस्तों, या किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ दी जाती थी जो गैंगस्टर की शर्तों को पूरा करने से इनकार करता था। उनकी अवज्ञा का परिणाम यह होता था कि उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ता था। किसी भी स्थिति में, हत्या के पीछे का मकसद बस अपनी क्रूर शक्ति का प्रदर्शन करना होता था।

1980 के दशक में सबसे चर्चित सुपारी हत्याओं में से एक दाऊद इब्राहिम के कट्टर दुश्मन और पठान सिंडिकेट के सरगना अमीरज़ादा की हत्या थी। अमीरज़ादा ने दाऊद के भाई साबिर कासकर की हत्या में अपनी संलिप्तता के कारण दाऊद की दुश्मनी मोल ले ली थी। चूँकि अमीरज़ादा पहले ही गिरफ्तार हो चुका था और उस पर मुकदमे और अदालती सुनवाइयाँ चल रही थीं, इसलिए दाऊद ने अदालत परिसर में ही उसे नाटकीय ढंग से मरवाने का फैसला किया। दाऊद ने परदेसी को इस काम के लिए चुना और उसे 50,000 रुपये की रिश्वत की पेशकश की। उन दिनों यह रकम इतनी ज़्यादा थी कि पुलिस और अंडरवर्ल्ड के गलियारों में सालों तक इस पर चर्चा होती रही।

बहुत बाद में दाऊद ने पुलिस का इस्तेमाल करके अपने प्रतिद्वंद्वियों को फर्जी मुठभेड़ों में खत्म करना शुरू किया। बदला लेने का यह तरीका डॉन के लिए यकीनन ज़्यादा किफ़ायती और कारगर था। तब तक, दाऊद के गिरोह में शूटरों की दो जोड़ी काफ़ी मशहूर हो चुकी थी—बी2 और एस2। बाबा गेब्रियल और बच्ची पांडे को टू बी या बी स्क्वायर या बी2 कहा जाता था।

इन खूँखार शूटरों ने 1980 के दशक के अंत और 1990 के दशक की शुरुआत में दाऊद के लिए कई कामों को अंजाम दिया था। उनके निशाने पर सिर्फ़ मुंबई के लोग ही नहीं थे, बल्कि दिल्ली, उत्तर प्रदेश और गुजरात में भी फैले लोग थे। पूर्व मुंबई पुलिस कमिश्नर अमरजीत सिंह सामरा ने तब तक चैन की साँस नहीं ली जब तक उन्होंने उन्हें मुंबई-ठाणे क्षेत्र से खदेड़ नहीं दिया, और इस तरह मुंबई अंडरवर्ल्ड में बी2 के दौर का अंत हो गया।

इसके बाद दाऊद के गिरोह में S2 नाम के दो और ख़तरनाक हत्यारे उभरे—सुनील सावंत उर्फ़ सौत्या और सुभाष सिंह ठाकुर। इन्हें हत्या की मशीन माना जाता था और कभी-कभी इन्हें 'अंडरटेकर' भी कहा जाता था। 1990 के दशक में जब से मुंबई माफिया ने कलाश्निकोव राइफलों सहित अत्याधुनिक हथियारों का इस्तेमाल शुरू किया था, सौत्या और ठाकुर दोनों ने अपने शिकारों को खत्म करने के लिए AK-47 का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था।

निशानेबाज़ को बहुत सम्मान और रसूख मिलता था। बॉस इन हत्यारों के दस्तों को सीधे काम सौंपता था और अक्सर उन्हें अच्छा इनाम भी देता था। उन दिनों, हर बड़ी हत्या की योजना दो जोड़ी निशानेबाज़ बनाते थे। ए टीम और बी टीम में एक मुख्य निशानेबाज़ और एक सहायक निशानेबाज़ होता था। मकसद यह था कि निशानेबाज़ों की दो टीमें हों ताकि अगर मुख्य टीम नाकाम हो जाए तो बैकअप के तौर पर कोई हो और कोई मुख्य निशानेबाज़ की निगरानी कर सके।

जैसे-जैसे वे अनुभव प्राप्त करते और बॉस का विश्वास जीतते, बी टीम को ए टीम का दर्जा मिल जाता। हर कोई गिरोह में शार्पशूटर के पद पर पदोन्नत होना चाहता था। कुछ जन्मजात हत्यारे थे, निडर होकर गोली चलाते और आसानी से बच निकलने में माहिर थे, जबकि कुछ जन्मजात अपराधी थे।

Machine Translated by Google

दाऊद के सबसे बड़े शूटरों में से एक, अनिल परब उर्फ़ वांग्या, उन लोगों में से एक था जो हिटमैन बनना चाहता था, लेकिन उसका पहला काम बुरी तरह नाकाम रहा। उसे विक्रोली कोर्ट में एक गवाह, हंसराज शाह, को चुप कराने का काम सौंपा गया था और वह पूरी तरह से नाकाम रहा। वह हिटमैन के रूप में तब तक अपनी पहचान नहीं बना पाया जब तक उसने सौत्या के साथ मिलकर काम नहीं किया। हालाँकि, यह साझेदारी भी कामयाब नहीं रही और सुभाष सिंह ठाकुर के साथ मिलकर ही सौत्या ने शीर्ष स्तर पर अपनी जगह बनाई।

दुबई जाने के बाद, सलेम को पता था कि उसे ऐसे कुशल निशानेबाज़ों की ज़रूरत है जो उसके लिए ठीक वैसे ही काम कर सकें जैसे दाऊद ने कभी रखे थे। एक दर्जन लड़कों से काम करवाना तो आसान था, लेकिन रेकी करना, लक्ष्य की पहचान करना, शिकार पर नज़र रखना और फिर अंततः हत्या के लिए आगे बढ़ना, यह बिल्कुल अलग बात थी। दस गली के गुंडे वह सब नहीं कर सकते जो एक प्रशिक्षित हत्यारा कर सकता है। और एक गिरोह की प्रतिष्ठा उसके निशानेबाज़ों की क्रूरता पर ही टिकी होती है।

सलेम के गिरोह में शामिल होने वाला पहला ख़तरनाक शूटर सलीम शेख उर्फ़ सलीम हड्डी था। सलीम एक आम मुस्लिम नाम है और अंडरवर्ल्ड में सलीमों की अच्छी-खासी संख्या थी। इसलिए उन्हें अलग पहचान दिलाने के लिए उन्हें एक अतिरिक्त उपाधि दी जाती थी। उदाहरण के लिए, अगर कोई सलीम गिरोह में शामिल होने से पहले टेम्पो चलाता था, तो उसका नाम सलीम टेम्पो रखा जाता था। एक और सलीम जो फ़र्ज़ी पासपोर्ट के धंधे में माहिर था, उसे सलीम पासपोर्ट कहा जाता था। कुर्ला में रहने वाला सलीम बिस्मिल्लाह खान, जो सीरियल बम धमाकों का भी आरोपी था, सलीम कुर्ला के नाम से जाना जाने लगा। दक्षिण मुंबई में एक कांग्रेस उम्मीदवार के लिए बूथ कैप्चरिंग में तलवार चलाने वाले एक सलीम को सलीम तलवार की उपाधि मिली। ऐसे ही आधा दर्जन और सलीम थे जो अंडरवर्ल्ड में कार्यरत थे और जिनके भी इसी तरह के अजीबोगरीब खिताब थे।

सलीम शेख, उर्फ़ सलीम हड्डी, एक बेरोज़गार और हताश युवक था। वह घोर गरीबी में जी रहा था और उसका परिवार भुखमरी के कगार पर था। स्कूल छोड़ने वाला सलीम एक दुबला-पतला युवक था, जिसके चेहरे पर एक उभरी हुई हड्डी थी जो घबराहट या तनाव में होने पर और भी उभर आती थी। उसे हर जगह अपमान सहना पड़ा, जब तक कि सलीम ने उसे एक हत्यारे की नौकरी नहीं दे दी।

उसका नाम सलीम हड्डी इसलिए रखा गया क्योंकि हड्डी का हिंदी में मतलब हड्डी होता है। यह विशेषण इससे ज़्यादा सटीक नहीं हो सकता था। सलीम के शरीर पर मानो मांस ही नहीं था, बस हड्डियाँ थीं। यह युवक अंडरवर्ल्ड के सबसे खूंखार निशानेबाजों में से एक बन गया और इस तरह अपने नाम के सभी साथियों से ज़्यादा कुख्यात हो गया।

हालाँकि, चूँकि सलेम ने खुद को दाऊद जैसा बनाया था, इसलिए वह हड्डी के लिए एक हत्यारा साथी ढूँढने को उत्सुक था। लेकिन कोई भी उसके लिए सही नहीं था। यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहा, आखिरकार मुंबई पुलिस ने सलेम को एक अनोखा मौका दिया। नायगांव स्थित लोकल आर्म्स (एलए) डिवीजन-II के कांस्टेबल राजेश इग्वे को कर्तव्य में लापरवाही के कारण सेवा से निलंबित कर दिया गया था। इग्वे शराब पीने का आदी था और कमांडो प्रशिक्षण प्राप्त करने के बावजूद, हमेशा ड्यूटी पर देर से पहुँचता था।

बहुत कम पुलिसकर्मियों को अत्याधुनिक हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था, और इग्वे उन गिने-चुने कमांडो पुलिसकर्मियों में से एक था जो किसी भी क्षमता की बंदूक चलाने में सहज था। हालाँकि, उसके गैर-पेशेवर व्यवहार और अनुशासनहीनता ने उसे अपने वरिष्ठों का कोपभाजन बना दिया था। आमतौर पर, ड्यूटी से अस्थायी निलंबन ज़्यादातर पुलिसकर्मियों के लिए एक निवारक के रूप में काम करता था क्योंकि इसका मतलब न केवल सहकर्मियों के बीच उनकी प्रतिष्ठा का हनन होता था, बल्कि लगभग 25 प्रतिशत वेतन का नुकसान भी होता था। लेकिन इग्वे अड़ियल था। उसे कुछ भी नियंत्रित या सुधार नहीं सकता था, और यह सिर्फ़ एक निलंबन था।

चूँकि एलए-II विंग के पुलिस कांस्टेबल आमतौर पर अपराधियों को जेल से अदालतों तक लाने-ले जाने के लिए एस्कॉर्ट ड्यूटी पर तैनात रहते थे, इसलिए वे कई गिरोहों के अपराधियों के लगातार संपर्क में रहते थे। सलेम के गिरोह के एक सदस्य के लिए एस्कॉर्ट ड्यूटी के दौरान ही इग्वे को पता चला कि गिरोह का सरगना एक शार्पशूटर की तलाश में है।

Machine Translated by Google

निलंबन के तुरंत बाद, इग्वे को पैसों की सख्त ज़रूरत महसूस होने लगी और उसने दुबई में सलेम से संपर्क करके अपनी सेवाएँ देने का फैसला किया। सलेम इस मौके की तलाश में था और उसने तुरंत इग्वे को अपने गिरोह में शामिल कर लिया। इस तरह वह पहला माफिया डॉन बन गया जिसने एक सेवारत पुलिसकर्मी को अपने लिए शार्पशूटर के तौर पर काम पर रखा। इस चलन को बहुत बाद में अमर नाइक ने भी अपनाया और निलंबित या बर्खास्त पुलिसकर्मियों को गिरोह के सदस्य के रूप में नियुक्त करना शुरू कर दिया।

इस प्रकार, हद्दी-इग्वे की जोड़ी ने शहर में आतंक फैला दिया। इग्वे की पुलिसकर्मी के रूप में पृष्ठभूमि, टोही अभियानों को अंजाम देने और पुलिस के जाल से बचने में बेहद मददगार साबित हुई। और उन्होंने कई नामी-गिरामी लोगों की हत्या कर दी, जिससे शहर की पुलिस उनकी दुस्साहस पर हैरान रह गई। इस जोड़ी की सफलता ने अंडरवर्ल्ड में सलेम की साख को कई पायदान ऊपर उठा दिया। उसके आका उसके काम से खुश थे और उसके साथी शहर में उसकी बढ़ती बदनामी और बढ़ते खतरे से ईर्ष्या करने लगे थे। बाद में, सलेम ने निशानेबाजों की एक बड़ी सेना की भर्ती की, लेकिन इग्वे उसके मुकुट का रत्न बना रहा और माफिया में उसकी भर्ती एक वास्तविक तख्तापलट थी—एक पुलिस अधिकारी अचानक नौकरी छोड़कर अंडरवर्ल्ड के लिए काम करने लगता है; आप चाहें तो इससे ज़्यादा अविश्वसनीय कहानी नहीं बना सकते।

Machine Translated by Google

दस

Machine Translated by Google

सलेम इम्पोर्ट्स रेंट-ए-किलर

प्रदीप जैन की हत्या ने अंडरवर्ल्ड के परिदृश्य में सलेम के आगमन की घोषणा कर दी थी। सलेम जब भी किसी को फ़ोन करता, तो सहजता से कहता कि जैन को उसकी गुस्ताखी की सज़ा मिल गई है और अगर वे नहीं माने तो उनका भी यही हश्र हो सकता है। संबंधित बिल्डर तुरंत पैसे चुका देते थे।

बहुत जल्द, बिल्डर समुदाय ने बिना किसी बातचीत या औपचारिक संघर्ष के ही भुगतान करना शुरू कर दिया। सलेम ने अनीस इब्राहिम के खाली होते खजाने को भरना शुरू कर दिया। दाऊद और अनीस, दोनों ही सलेम की तरक्की से बेहद खुश थे। एक साल के भीतर ही, सलेम ने न सिर्फ़ अंडरवर्ल्ड में अपनी गहरी पैठ बना ली, बल्कि डी-कंपनी की आय में भी भारी वृद्धि कर दी।

पर्ल टावर में बारहवीं मंज़िल पर स्थित दफ़्तर के बाद, सलेम को जल्द ही दुबई के डेरा में नाइफ रोड के पास एक दफ़्तर मिल गया। अनीस के पास दुबई में पहले से ही किंग्स वीडियो था। सलेम ने आगे बढ़कर करमाह में एक कार शोरूम खोला और उसका नाम रखा "किंग ऑफ़ कार्स"। सलेम को जुमेराह बीच के आलीशान इलाके में पाँच बंगले मिले। उसने एक को अपने घर के रूप में, दूसरे को दफ़्तर के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया, और बाकी तीन को किराए पर दे दिया।

जल्द ही, वह खुद का कानून बन गया। उसे अपनी मर्ज़ी से काम करने की पूरी आज़ादी थी। वह किसी भी शिकार को चुन सकता था; वह किसी भी व्यापारी को दुबई बुलाकर पैसे ऐंठ सकता था या उसे परेशान कर सकता था। हालाँकि, सलेम की सफलता असल में एक बड़ा संयोग थी। उसके पागलपन में कोई तरकीब या उसकी सफलता के पीछे कोई सोची-समझी रणनीति नहीं थी।

यह आंशिक रूप से हताशा और आंशिक रूप से अनीस को प्रभावित करने की अंतहीन चाहत थी, जिसके कारण सलेम ने मुंबई में अमीर लोगों को फोन करना और उन्हें धमकाना शुरू कर दिया।
अपनी शुरुआती कुछ धमकियों के सफल होने से उत्साहित सलेम ने नेपाल से मुंबई में हथियार मंगवाना शुरू कर दिया। ये हथियार उन विविध शूटरों के लिए थे जिन्हें वह धीरे-धीरे इकट्ठा कर रहा था।

इन हमलों का तरीका सलीम हद्दी तक संदेश पहुँचाना था, जो इस काम के लिए सलीम का सबसे बड़ा आदमी बन गया था। सलीम हद्दी तुरंत चेंबूर के एक फ़ोन बूथ पर पहुँचता और सलेम को हमले या डराने की घटना की जानकारी देता। जब सलेम बिल्डरों, फ़िल्म निर्माताओं, उद्योगपतियों आदि को अपने बॉस की 'ज़रूरतें' बताने में व्यस्त होता, तब सलीम हद्दी इस काम के लिए शूटरों को इकट्ठा करता। अगर टारगेट—जैसा कि बिल्डरों, फ़िल्म निर्माताओं और उद्योगपतियों को कहा जाता था—नहीं मानते, तो शूटरों को उनके दफ़्तर भेज दिया जाता। अक्सर, टारगेट झुक जाते और हवाला के ज़रिए पैसे देने को राज़ी हो जाते। अगर टारगेट नहीं मानते, तो उन्हें मार दिया जाता। यह काफ़ी आसान था।

आखिरकार, सलेम को उसके बॉस अनीस से वह सम्मान मिलने लगा जिसका वह हक़दार था। अनीस, सलेम द्वारा कमाए जा रहे पैसों और उसके नाम पर फैलाए जा रहे आतंक से इतना खुश था कि अंडरवर्ल्ड में तरक्की करने वाला यह नया गैंगस्टर धीरे-धीरे अनीस इब्राहिम का चहेता बन गया। हालाँकि, सब कुछ नहीं बदला। अनीस, दूसरे मेहमानों के सामने भी, सलेम को कोई ड्रिंक बनाने या चाय लाने का हुक्म देता रहा। लेकिन सलेम ने अपने अहंकार को त्याग दिया और अपने मालिक के प्रति वफ़ादार बना रहा।

प्रदीप जैन के बाद सलेम को मिली अगली बड़ी कामयाबी चेंबूर के बिल्डर ओम प्रकाश कुकरेजा की हत्या थी। कुकरेजा की 18 सितंबर 1995 को मुंबई के उत्तर-पूर्वी उपनगर स्थित उनके कार्यालय में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद, कुकरेजा के एक रिश्तेदार ने दुबई जाकर सलेम को माफी दिलाने के लिए 1 करोड़ रुपये दिए।

Machine Translated by Google

कुकरेजा परिवार के अन्य सदस्यों के लिए। कुकरेजा की हत्या ने मुंबई के बिल्डर समुदाय को सचमुच हिलाकर रख दिया।

अब, तत्कालीन संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) रणजीत सिंह शर्मा और पुलिस उपायुक्त राकेश मारिया ने सलेम गिरोह के बढ़ते आतंक से निपटने का फैसला किया। गिरोह के शूटरों को पुलिस मुठभेड़ों में चिन्हित कर मार गिराया गया। कुकरेजा की हत्या के कुछ हफ़्तों के भीतर ही, दोनों प्रमुख शूटर, हड्डी और इग्वे, मारे गए। मकसद न केवल सलेम गिरोह के बढ़ते आतंक को रोकना था, बल्कि दूसरों को भी उसके साथ न जुड़ने का संदेश देना था। कुछ समय के लिए, कई शूटर घबराए हुए और घबराए हुए महसूस कर रहे थे।

सलेम जानता था कि हड्डी और इग्वे जैसे शूटरों की एक और जोड़ी को तैयार करना मुश्किल होगा। इसके अलावा, शूटर काफी महंगे थे और उनका रखरखाव गिरोह के वित्त और संसाधनों पर भारी बोझ डालता था। अगर ये शूटर गिरफ्तार हो जाते, तो सलेम को उनके कानूनी बचाव और उनके परिवारों के भरण-पोषण पर पैसा खर्च करना पड़ता। सलेम के लिए, एक बार जब शूटर पुलिस द्वारा पकड़ लिया जाता, तो वह एक गैर-निष्पादित संपत्ति बन जाता और उस पर किसी भी तरह का अतिरिक्त खर्च निवेश पर शून्य रिटर्न के रूप में देखा जाता।

तस्कर के तौर पर अपने दिनों से ही, सलेम ऐसे धंधों को प्राथमिकता देता था जिनमें कम निवेश और शून्य रखरखाव की ज़रूरत होती थी। अब वह एक ऐसा अपरंपरागत विचार लेकर आया जिसने न सिर्फ़ शहर में कॉन्ट्रैक्ट किलिंग के धंधे में क्रांति ला दी, बल्कि मुंबई पुलिस के लिए भी एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी।

सलेम ने सरायमीर में अपने चचेरे भाइयों और रिश्तेदारों से संपर्क किया और उन्हें ऐसे लड़कों की तलाश करने को कहा जो बेरोज़गार हों, मुंबई जाने के लिए उत्सुक हों, बिना ज़्यादा मेहनत किए अच्छी कमाई करने के लिए तरस रहे हों और जो भी करने को कहा जाए, उसे करने का साहस रखते हों। सलेम गाँवों की गरीबी और बदहाली से अच्छी तरह वाकिफ था, जहाँ रोज़ाना 100 रुपये की कमाई भी अच्छी खासी कमाई मानी जाती थी। इसके अलावा, ये गाँव के लड़के बहादुरी से भरे हुए थे और ज़रा सी भी उकसावे पर हिंसक होने को तैयार रहते थे। उनमें से ज़्यादातर ने झड़पों में देसी रिवॉल्वर या पिस्तौल भी लहराई थी।

सलेम ने इन बदमाशों को मुंबई लाने का फैसला किया। उनका काम किसी को बिल्कुल पास से गोली मारना और उसके तुरंत बाद भाग जाना था। फिर उसे बंदूक उस व्यक्ति को लौटानी थी जिसने उसे दी थी और अगले दिन गोरखपुर एक्सप्रेस में सवार होना था। सलेम ने ऐसे कामों के लिए वापसी का रेलवे टिकट और 5000 रुपये का नकद इनाम देने का वादा किया था। अगर ये युवक गिरफ्तार भी हो जाते, तो भी सलेम को न तो उनके कानूनी खर्च उठाने पड़ते और न ही परिवार की आर्थिक मदद करनी पड़ती। 'मैं सिर्फ़ 5000 रुपये के पारिश्रमिक पर मुंबई में किसी की भी हत्या करवा सकता हूँ।'

सलेम ने दुबई में अपने लोगों से कहा, "अगर वे असफल होते हैं, तो मुझे कुछ नहीं खोना पड़ेगा। अगर वे सफल होते हैं, तो मैं थोड़े से पैसे में काम पूरा कर लेता हूँ।"

सलेम के लिए 5000 रुपये भले ही मामूली रकम रहे हों, लेकिन उस गाँव वाले के लिए किसी की हत्या करने के लिए ये काफी थे। अचानक, सलेम के पास ऐसे लड़कों की बाढ़ आ गई जो उसके इशारे पर गोली चलाने को तैयार थे। पुलिस हत्या के धंधे में नए-नए शामिल हुए इन युवकों को देखकर हैरान रह गई। इन युवकों का कोई पिछला रिकॉर्ड नहीं था, मुंबई में इनकी कोई जड़ें नहीं थीं, ये कहीं से आए थे और हत्या के बाद गायब हो गए। शूटरों की तो बात ही छोड़िए, पुलिस बिचौलियों या हत्या से जुड़े किसी और सूत्र का भी पता नहीं लगा पाई। कई महीनों तक, मुंबई पुलिस अंधेरे में हाथ-पाँव मारती रही, जब तक कि वे एक बड़े फिल्म निर्देशक की हत्या करने आए शूटरों में से एक को पकड़ने में कामयाब नहीं हो गए, और इस तरह सारा राज़ खुल गया।

इस खेल में एक और नया मोड़ आ गया। पहले, अनुभवी नौकरों या अनुभवी कूरियर वालों को शूटरों तक हथियार पहुँचाने का काम सौंपा जाता था। लेकिन अब सलेम ने गिरोह के लिए कूरियर के तौर पर गरीब मुस्लिम महिलाओं का इस्तेमाल करने का फैसला किया। ये महिलाएं या तो उसके आदमियों (जिन्हें पुलिस ने मार डाला था) की विधवाएँ थीं या उसके लोगों की रिश्तेदार। सलेम के डर से, उन्होंने ऐसा ही किया।

Machine Translated by Google

नौकरी भी मिली और पैसे भी मिले। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि सलेम उन्हें अनुभवी डिलीवरी करने वालों की तुलना में बहुत कम पैसे दे रहा था।

यह एक शानदार विचार था जिसने फल दिया, और सलेम इसे तब तक लागू करने में कामयाब रहा जब तक उसके गाँव में इच्छुक युवाओं की कमी नहीं रही। एक अनपढ़ व्यक्ति के रूप में, सलेम ने अंडरवर्ल्ड को 'डिस्पोजेबल' हत्यारों की अवधारणा से परिचित कराया था। यह 'एकल-उपयोग' हत्यारों का एक आदर्श उदाहरण था। इससे उसे अपने आकाओं के बीच और भी ज़्यादा लोकप्रियता मिली।

Machine Translated by Google

ग्यारह

Machine Translated by Google

बॉलीवुड पर नियंत्रण

1990 के दशक में, बॉलीवुड आज जैसा साफ़-सुथरा, स्टूडियो-नियंत्रित, कॉर्पोरेट-वित्तपोषित उद्योग बिल्कुल नहीं था। चमक-दमक की नगरी में अपने मुग़ल और दिग्गज थे, जो मुंबई के रियल्टी खिलाड़ियों के साथ मिलकर अथाह काले धन पर कब्ज़ा जमाए हुए थे। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि जब सलेम ने निर्माण व्यवसाय से आगे बढ़ने का फैसला किया, तो वह बॉलीवुड की असली सोने की खान की ओर रुख़ करेगा।

पहला निशाना सुपरस्टारडम के बेताज बादशाहों में से एक, सुभाष घई होंगे। 1993 में आई उनकी सुपरहिट फिल्म खलनायक के बाद से ही घई की झोली भर रही थी, जिसमें सलेम के कभी बने, कभी बिछड़े दोस्त संजय दत्त भी थे। इस निर्देशक की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई थी कि वह शाहरुख खान को भी अपनी फिल्म के लिए साइन कर सकते थे।

सलेम का मानना था कि बॉलीवुड को संदेश भेजने का यही सही समय था। और निशाना घई ही थे। सलेम ने इस 'हत्या' को अंजाम देने के लिए आजमगढ़ के पाँच युवकों को तैनात किया। लेकिन जोन VII के पुलिस उपायुक्त सत्यपाल सिंह को इस 'हत्यारे' दस्ते के बारे में खुफिया जानकारी मिल गई। उन्होंने तुरंत सहायक निरीक्षक प्रदीप शर्मा के नेतृत्व में अपने विशेष दस्ते को हमले को नाकाम करने का काम सौंपा। पुलिस टीम ने जाल बिछाया और पाँचों संभावित हत्यारों को गिरफ्तार कर लिया।

सलेम, अपनी ओर से, लगातार यही कहता रहा है कि उसका निर्देशक को मारने का कभी इरादा नहीं था। वह बस उसे एक संदेश देना चाहता था। और वह संदेश था: "अभी भुगतान करो, वरना गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।" बाद में, घई ने एक साक्षात्कार में कहा कि सलेम ने उन्हें फ़ोन किया और काफ़ी विनम्रता से बात की। सलेम अपनी फ़िल्म परदेस के विदेशी अधिकार चाहता था और जब घई ने उसे बताया कि यह पहले ही साइन हो चुकी है, तो सलेम ने फ़िल्म का एक प्रिंट माँगा ताकि वह पायरेटेड कॉपी बनाकर बेच सके। कथित तौर पर सलेम ने घई से यह भी कहा कि वह उनके काम का बहुत बड़ा प्रशंसक है।

बॉलीवुड में सलेम का दूसरा निशाना निर्देशक राजीव राय थे, जिन्होंने त्रिदेव (नसीरुद्दीन शाह और सनी देओल अभिनीत), मोहरा (अक्षय कुमार और रवीना टंडन अभिनीत) और गुप्त (बॉबी देओल और काजोल अभिनीत) जैसी फिल्मों से बड़ी व्यावसायिक सफलता हासिल की थी। जैसा कि पता चला, राय को मनाना घई से कहीं ज़्यादा आसान था।

एक दिन, सलेम को इंडियन एक्सप्रेस के एक पत्रकार का परेशान करने वाला फ़ोन आया । पत्रकार ने बड़ी बेशर्मी से सलेम से पूछा कि क्या उसके आदमी इतने नाकाबिल हैं कि एक भी जान से मारने की धमकी नहीं दे सकते। गैंगस्टर ने साफ़-साफ़ कहा कि घई या राय को मारने का उसका कभी इरादा नहीं था। उसने आगे कहा कि अगले हफ़्ते किसी की हत्या हो जाएगी।

अगला सप्ताह आया और निश्चित रूप से गैंगस्टर ने अपनी बात पूरी कर दी।
गुलशन कुमार की सरेआम बेरहमी से हत्या कर दी गई। यह हत्या सलेम के लिए बॉलीवुड के दिल में जगह बनाने का बड़ा टिकट भी बन गई। गुलशन कुमार की हत्या के बाद, इंडियन एक्सप्रेस के रिपोर्टर ने सलेम को फिर से फ़ोन किया। 'क्या यही वो हत्या थी जिसके बारे में तुम बात कर रहे थे?' लेकिन इस बार, दूसरी तरफ़ से कोई ढिंढोरा नहीं पीटा गया। भारत सरकार इस हाई-प्रोफाइल
हत्या से गुस्से में थी और माफिया घबरा रहे थे। पूरा दाऊद गिरोह डर के मारे दुम दबाकर भाग रहा था।

सलेम एक पल के लिए झिझका और जब बोला, तो बस इतना कहा, 'यह हत्या लाल कृष्ण आडवाणी ने करवाई है, उनसे फोन करके क्यों नहीं पूछ लेते?' यानी, सलेम ने गुलशन कुमार की हत्या की बात तो नहीं मानी; फिर भी, वह फिल्म उद्योग में एक गहरी दहशत पैदा करने में कामयाब रहा। फिल्मवालों के पास एक साधारण सा डर था।

Machine Translated by Google

तर्क: अगर यह आदमी घई जैसे व्यक्ति को डरा सकता है और गुलशन कुमार जैसे बड़े आदमी को मार गिरा सकता है, तो कोई भी सुरक्षित नहीं था।

सलेम ने फिल्मी हस्तियों को बुलाते समय एक कोड नाम का प्रयोग करना शुरू कर दिया था: कैप्टन।
मुंबई पुलिस ने फ़ोन टैप करना शुरू कर दिया था, और चूँकि इन बातचीत को दोषसिद्ध सबूत माना जा रहा था, इसलिए सलेम ने कोड नाम इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया। जल्द ही फ़िल्म उद्योग में कैप्टन के फ़ोन कॉल्स की चर्चा शुरू हो गई।

सलेम ने इंडस्ट्री में जासूसों और स्काउट्स की एक छोटी सी फौज भी नियुक्त की, जो इंडस्ट्री के अंदरूनी सूत्रों पर नज़र रखते थे। इनमें सबसे मशहूर बॉबी नाम का एक निर्माता था। यह आदमी बॉलीवुड के किसी भी ऑफिस में जा सकता था, किसी भी स्टार से मिल सकता था और वादा मांग सकता था। एक बड़े फिल्म निर्देशक याद करते हैं, "एक समय में, लगभग तीस बड़े फिल्मी सितारों ने बॉबी के साथ कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था। उन्होंने बॉबी को ढेर सारी डेट्स देने का वादा किया था और पारिश्रमिक को लेकर कोई झंझट नहीं थी।" यहाँ तक कि कुछ बड़े सितारे, जो अक्सर नामी बैनरों के साथ डेट्स मिलने के बाद छुट्टी ले लेते थे और साइनिंग अमाउंट और फीस पर अंतहीन मोलभाव करते थे, कैप्टन के एक फोन और कभी-कभी बॉबी की विनम्र धमकी पर झट से ध्यान देते थे। अचानक, वे सभी उपलब्ध हो जाते थे, आमतौर पर मुफ्त में।

जल्द ही, बॉलीवुड के सभी बड़े नाम सलेम के मोबाइल फ़ोन बुक में दर्ज हो गए। और जब भी वे किसी सीन या गाने की शूटिंग के लिए यूरोप जाते, तो बिना किसी अपवाद के, दुबई जाकर सलेम को श्रद्धांजलि देते। लेकिन उनमें से किसी ने भी सलेम नाम के किसी व्यक्ति से मुलाक़ात नहीं की।

माफिया सरगना का काम करने का तरीका बॉलीवुड के जाने-माने लोगों से अरसलान (अबू सलेम का एक काल्पनिक सहायक) बनकर मिलना था। यह शख्स एक शालीन, शिष्ट और सभ्य इंसान था, जिसका व्यवहार बेहद शालीन और सभ्य था, जबकि अबू सलेम की छवि एक खूँखार, खून के प्यासे डॉन की थी, जिसकी भाषा में मुंबई की सड़कों के गड्ढों से भी ज़्यादा गालियाँ भरी थीं।

क्योंकि, सलेम का बॉलीवुड से रिश्ता कोई एकतरफ़ा नहीं था। अपने प्रभाव का एहसास दिलाने के अलावा, वह बॉलीवुड, उसके अहंकार, उसकी असाधारण कहानियों और उसके नाटकीयता से भी गहराई से प्रभावित था। वह दोहरी पहचान के विचार से मोहित था।

उसे अर्सलान बनकर रहना बहुत पसंद था और वह तो उसके सेल को भी देखने जाता था।
वह बीच-बीच में फ़ोन करके दावा करता था कि उसे सलेम भाई का मिस्ड कॉल आया था। वह कभी-कभी इस कॉलर से काल्पनिक बातें करता था, जबकि जिन तारों के साथ वह समय बिता रहा था, वे भी डर के मारे काँप रहे थे।

लगभग इसी समय, सलेम बॉलीवुड की एक आकर्षक अभिनेत्री के साथ रिश्ते में आ गया था। कुछ समय तक उसने उसके साथ अपनी दूसरी पहचान भी बनाई, और अंततः खुद को खूंखार अबू सलेम के रूप में पेश किया।

उसकी भोली-भाली प्रकृति का फायदा उठाकर, गैंगस्टर ने अपनी प्रेमिका का 'बेहतर इस्तेमाल' करने का फैसला किया। सलेम के अनुभव ने उसे बताया कि निर्माताओं, निर्देशकों और अभिनेताओं में एक बात आम है कि वे सब झूठे होते हैं। सलेम ने उसे इन लोगों की ज़िंदगी, उनकी आर्थिक स्थिति और उनके आने वाले प्रोजेक्ट्स वगैरह से जुड़े रहने में मदद की।

कैप्टन का ख़ौफ़नाक फ़ोन जल्द ही एक तयशुदा पैटर्न पर आ गया। एक आम परिदृश्य में निर्माता या निर्देशक को कैप्टन का फ़ोन आता था। निर्माता की तरफ़ से उस दृश्य की कल्पना करना मुश्किल नहीं है, फ़ोन पर उलझते हुए, सलेम को मात देने के लिए नए-नए आइडिया ढूँढ़ते हुए।

'ह-ह-हेलो भाई,' पीड़ित बुदबुदाने में कामयाब हो जाता।
सलीम बस बर्फ़ तोड़ने के लिए थोड़ी-बहुत बातें करता। फिर पूछता कि सब ठीक तो है।

'सब आपकी कृपा से, भाई,' बेचारा निर्माता या निर्देशक जवाब देता, किसी हताश चापलूस के लिए यही शब्द सबसे उपयुक्त होते। और फिर, उसकी व्यथा-कथा शुरू हो जाती।

Machine Translated by Google

शुरू करना।

'परिवार में मौत हुई थी. तो पिछले चार-पांच हफ्तों से कोई काम नहीं किया। 'पैसा भी कम है।'

कॉल खत्म होने के बाद, सलेम अपनी महिला मित्र से कहता कि वह प्रोड्यूसर को फ़ोन करे और पता लगाए कि उसके यहाँ क्या हो रहा है। सलेम का जासूस और प्रेमिका अक्सर उलटी रिपोर्ट लेकर लौटते। हालाँकि प्रोड्यूसर सलेम के सामने गिड़गिड़ाता था, लेकिन कॉल खत्म होते ही वह फिर से बड़ा दांव खेलने लगता था।

ऐसे कई लोगों के बारे में अंदरूनी जानकारी हासिल करने के बाद, सलेम फिर से धमकी भरे फ़ोन कॉल्स भेजता और अपने शिकार को चेतावनी देता कि उसके झांसे में न आए। आखिरकार, वे मजबूर होकर पैसे दे देते।

सलेम ने अपनी महिला मित्र के ज़रिए बॉलीवुड नेटवर्क में घुसपैठ करवाई, यहाँ तक कि आमिर खान, जेपी दत्ता और राकेश रोशन जैसे लोगों तक भी अपनी पहुँच बना ली। जब भी सलेम को खबर मिलती कि ये लोग उसकी बात नहीं मानने वाले हैं या उसकी बात मानने को तैयार नहीं हैं, तो वह घई और राय को भेजे गए संदेशों जैसा एक सूक्ष्म संदेश भेजता, और वे तुरंत अपनी बात पर अड़ जाते। संक्षेप में, अब पूरा बॉलीवुड सलेम की जेब में था।

या ऐसा सलेम ने सोचा।

Machine Translated by Google

बारह

Machine Translated by Google

दुबई में षड्यंत्र

12 जून 1997

इसे दुबई की अब तक की सबसे शानदार पार्टी माना जा रहा था। हर कोई, जो कोई भी हो, वहाँ आने वाला था। पूरी बॉलीवुड इंडस्ट्री और साथ ही मुंबई और दुबई के सभी बड़े-बड़े लोग। अनीस इब्राहिम ने अबू सलेम को खुद निर्देश दिए थे कि वह बॉलीवुड के बड़े सितारों को पार्टी में बुलाए। आखिरकार, यह विक्की गोस्वामी की एम्पायर होटल श्रृंखला का लॉन्च था।

दक्षिण अफ्रीका में स्थित एक कुख्यात ड्रग माफिया, गोस्वामी, जिसके दोस्तों और साथियों में शेख, उद्योगपति और कई धनकुबेर शामिल थे, दुनिया भर में होटलों की एक श्रृंखला शुरू कर रहा था, जिसका स्पष्ट उद्देश्य भारी मात्रा में धन शोधन करना था। उसके दो सबसे प्रभावशाली दोस्त दाऊद और अनीस इब्राहिम थे।

जब सलेम पहली बार मुंबई आया था, तो फ़िल्मी सितारे उस दुनिया से बिल्कुल अलग दुनिया के नागरिक थे जिसमें वह रहता था। कुछ ही सालों में चीज़ें कितनी बदल गईं—अब सितारों की यह जगमगाती आकाशगंगा हमेशा उसके इशारे पर रहती थी।

जिस तरह से उन्हें स्क्रीन पर लोगों के साथ बातचीत करते हुए दिखाया गया था और जिस तरह से उन्होंने सलेम के साथ व्यवहार किया था, वह उनके लिए मनोरंजन का एक अंतहीन स्रोत था।

वह सोचता था कि क्या लाइन के दूसरी तरफ गिड़गिड़ाता, रोता हुआ वह व्यक्ति सचमुच वही है जिसे उसने अकेले ही तीस लोगों को पीटते या बच्चों से भरी स्कूल बस को बचाते और यहाँ तक कि स्क्रीन पर नंगे हाथों गोली पकड़ते देखा था, और जिसके पास किसी खूबसूरत महिला के साथ रोमांस करने के लिए पर्याप्त समय था। कभी-कभी तो दो।

अनीस ने सलेम को इस बड़ी पार्टी के बारे में पूरी जानकारी दी। अनीस ने साफ़-साफ़ बताया कि यह बहुत बड़ी पार्टी थी और सलेम से कहा कि वह सुनिश्चित करे कि चंकी पांडे, जैकी श्रॉफ, सलमान खान, शाहरुख खान और फिल्म जगत के जाने-माने नामचीन लोग मौजूद रहें। बेशक, इस तरह की सितारों से सजी कोई भी पार्टी बॉलीवुड की महिलाओं के बिना पूरी नहीं मानी जा सकती।

गोस्वामी की पार्टियाँ, दरअसल, न सिर्फ़ हमेशा बेहद आलीशान होती थीं, बल्कि उनमें बेहद आकर्षक औरतें भी शामिल होती थीं। ये दिखावटी गतिविधियाँ कभी आज़मगढ़ के सरायमीर गाँव के पठान टोला से निकले किसी भी बच्चे के होश उड़ा देतीं। लेकिन सलेम काफ़ी समय से इस इलाके में था और उसने ये सब देखा था। उसके लिए ये कोई नई बात नहीं थी। कोको के नशे में धुत, बेसुध और नशे में धुत स्टारलेट, जिन्होंने पहले कभी बीयर का एक घूँट भी नहीं चखा था, लेकिन 'सही' पार्टियों में नज़र आने की तीव्र इच्छा रखती थीं, इन पार्टियों में आम थीं।

कहने की जरूरत नहीं कि ये युवा महिलाएं हमेशा ऐसे कपड़े पहनने को तैयार रहती थीं, जो डी-कप के फायदे को दर्शाते हों, और एक या दो फिल्मों में भूमिका पाने के लिए खुशी-खुशी 'अतिरिक्त प्रयास' करने को तैयार रहती थीं।

सलेम शुरू में तो इन औरतों को घूरता रहता था, जिन्हें उसने पहले बड़े पर्दे पर शान से नाचते या आदर्श गृहिणी का किरदार निभाते देखा था; अब वे नशे में लड़खड़ाती हुई इधर-उधर घूम रही थीं, और 'ज़्यादा' करने को तैयार थीं। लेकिन जल्द ही उसे इसकी आदत हो गई।

सलेम ने अपनी सूची में शामिल सभी लोगों से संपर्क करना शुरू कर दिया। उसका इरादा उन्हें सिर्फ़ पार्टी में आमंत्रित करना नहीं था, बल्कि उन्हें यह बताना था कि अगर उनकी निजी सेहत और सुरक्षा उनके लिए ज़रा भी मायने रखती है, तो उन्हें पार्टी में ज़रूर आना चाहिए।

Machine Translated by Google

क्या इससे कोई इनकार कर सकता है? और इस तरह, अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की भीड़ दुबई में उमड़ पड़ी। टिकट पहले ही भेज दिए गए थे। अब बस हर एक को उठाकर रॉयल एम्पायर होटल पहुँचाना बाकी था।

जैसी कि उम्मीद थी, किसी भी स्टार ने पार्टी छोड़ने की गुस्ताखी नहीं की। यह एक भव्य आयोजन था, जहाँ बड़े-बड़े सितारे खूब मस्ती कर रहे थे। या कम से कम ऐसा लग रहा था कि वे खूब मज़े कर रहे हैं। संगीत ज़ोरदार था, शराब बह रही थी और खाना भरपूर था। चिकनी त्वचा के कई हिस्से दिखाई दे रहे थे, और उभरे हुए क्लीवेज और पतली कमर शेखों और सितारों पर जादू कर रही थी। जब अत्याधुनिक साउंड सिस्टम से एक ऐसे गाने की शुरुआती धुनें बजीं जो हफ़्तों से हिंदी संगीत चार्ट में शीर्ष पर था, तो ज़ोरदार और मादक जयकार गूंज उठी।

बदकिस्मती से उस रात सलीम ड्यूटी पर था। जब वह पार्टी की देखरेख कर रहा था, एक उदास सा आदमी उसके पास आया। वह संगीतकार नदीम था, जो नदीम-श्रवण की सफल जोड़ी का हिस्सा था। नदीम सीधे मुद्दे पर आ गया—यानी गुलशन का मामला निपटाना था। संगीत जगत के दिग्गज गुलशन कुमार के साथ नदीम की समस्याएँ कोई छुपी नहीं थीं। मामले को जितना हो सके गुप्त रखने के लिए, सलीम नदीम को एक कोने में ले गया और उसे आराम से बैठाया और उससे पूछा कि क्या वह कुछ खाना-पीना चाहता है। उसके सिर हिलाने और हाथ हिलाने से वेटर चला गया और नदीम ने अपनी सारी समस्याएँ बतानी शुरू कर दीं।

उसने अपनी कहानी सुनाई कि कैसे गुलशन ने उसकी ज़िंदगी पूरी तरह से दूभर कर दी थी और सलेम से उसकी समस्या का हल ढूँढ़ने की विनती की। वह जितना ज़्यादा बोलता गया, उतना ही ज़्यादा परेशान होता गया। सलेम ने उसे समझाने की कोशिश की कि हालात उतने बुरे नहीं हैं, जितना वह दिखा रहा है। आख़िरकार, गुलशन ने ही तो उसे और उसके साथी श्रवण राठौड़ को 1990 में आई राहुल रॉय-अनु अग्रवाल अभिनीत फ़िल्म आशिकी का संगीत देकर पहला बड़ा ब्रेक दिया था। लेकिन नदीम की समझ से परे था। एक समय तो वह गुस्से से उठ खड़ा हुआ और उसे हाथ पकड़कर धीरे से अपनी सीट पर वापस बिठाना पड़ा।

सलेम ने उससे कहा कि शायद वह मदद कर सके। नदीम की ओर से 25 लाख रुपये की सांकेतिक रकम गुलशन की 'देखभाल' सुनिश्चित कर देगी। नदीम निश्चिंत लग रहा था और पार्टी से संतुष्ट होकर घर चला गया। सलेम को एहसास हुआ कि भले ही नदीम ने शुरुआत की हो, लेकिन इससे सबसे ज़्यादा फ़ायदा उसे ही होगा। अगर वह संगीत जगत के सबसे चमकते सितारों में से एक की मौत का कारण बनता है, तो वह अंडरवर्ल्ड के सबसे खूंखार सदस्यों में से एक बन जाएगा।

अगले कुछ दिनों तक, सलेम गुलशन कुमार की ज़िंदगी के आखिरी अध्याय की योजना बनाने में लगा रहा। शूटर, जगह, दिन का समय, भागने के रास्ते और ऐसी ही दूसरी बातों को पूरी सटीकता से तय करना था। जब वह योजना से पूरी तरह संतुष्ट हो जाता, तो वह तय करता कि गुलशन को उसके आने वाले विनाश का संकेत दिया जाए या नहीं। अगर वह खेलना चाहता, तो सलेम उसे पैसे देने की इजाज़त देता, लेकिन अगर वह सलेम के हुक्म को नहीं मानता, तो सब कुछ पहले से ही तय हो चुका होता।

इस बीच, नदीम का धैर्य जवाब देने लगा और वह और भी हताश हो गया। उसे पहले ही बता दिया गया था कि गुलशन से 'निपटने' की कीमत 25 लाख रुपये है। 28 जुलाई 1997 को, जुहू स्थित नेचुरल आइसक्रीम स्टोर पर, नदीम के गुर्गों ने गैंगस्टर द्वारा भेजे गए तीन आदमियों को नकदी के रूप में यह रकम सौंप दी। नदीम ने उसी शाम सलेम को फोन किया और पूछा कि क्या उसे पैसे मिल गए हैं। पुलिस ने बाद में दावा किया कि संगीत निर्देशक ने डॉन से फिर से मिन्नतें कीं।

सलेम ने अपनी तरफ से कहा कि वह अपने वादे पर खरा उतरेगा, और फिर उसने इस बड़ी योजना को और भी बेहतर बनाने का फैसला किया। उसने गुलशन की दिनचर्या के बारे में जितनी भी जानकारी जुटाई जा सकती थी, जुटाई। 9 अगस्त को, जब सब कुछ तय हो गया, तो सलेम ने टी-सीरीज़ के प्रमुख को फोन किया और उन्हें विनम्रता से बताया कि वह नदीम की तरफ से काम कर रहा है और उसे उसके हितों की रक्षा करनी है। और अगर उसे उसकी सुरक्षा की कोई चिंता है, तो

Machine Translated by Google

सलीम ने गुलशन को धीरे से समझाया कि उसे पैसे देने होंगे।

सलेम को उम्मीद थी कि टी-सीरीज़ वाला कुछ समय तक अपनी बात पर अड़ा रहेगा और फिर बॉलीवुड के दूसरे दिग्गजों, सुभाष घई और राजीव राय की तरह उसकी माँगों के आगे झुक जाएगा। उसने एक बार भी नहीं सोचा था कि गुलशन खुलकर विरोध करेगा। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि कोई उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ सोच भी सकता है। गैंगस्टर ने गुलशन से कहा कि उसे उसे मरवाना पड़ेगा। गुलशन को इसकी कोई परवाह नहीं थी। सलेम को इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। उसने पहले ही तय कर लिया था कि गुलशन के दिन अब गिने-चुने रह गए हैं।

Machine Translated by Google

तेरह

Machine Translated by Google

एक फांसी, एक चेतावनी

12 अगस्त 1997

वह दिन जो शहर की सामूहिक चेतना में हमेशा के लिए अंकित हो गया, जिस दिन संगीत जगत के दिग्गज गुलशन कुमार ने अंतिम सांस ली।

गुलशन कुमार ने दिल्ली के दरियागंज में फलों के जूस बेचने वाले के रूप में अपना करियर शुरू किया। नोएडा में अपनी सुपर कैसेट्स कंपनी की अपार सफलता के बाद, उन्होंने बॉलीवुड साउंडट्रैक और हिंदू भक्ति गीतों के लिए एक लेबल, टी-सीरीज़, शुरू किया।

सलेम ने टी-सीरीज़ के मुखिया को हर महीने 5 लाख रुपए देने के लिए मनाने में कई महीने बिता दिए थे। आखिरकार, वह व्यक्ति वैष्णो देवी मंदिर और अन्य धार्मिक संस्थानों को सालाना करोड़ों रुपए दान करता रहा था।

सलेम ने अपने मातहतों को गुलशन के दैनिक और साप्ताहिक कार्यक्रम पर नज़र रखने का निर्देश दिया, ताकि वह उनका अध्ययन कर सके। वह जानना चाहता था कि गुलशन दिन के किसी भी समय कहाँ रहता है—खाना कब खाता है, कब उठता है और यहाँ तक कि शौचालय भी कब जाता है। उसे संगीत जगत के सुपरस्टार पर एक अचूक प्रहार की योजना बनानी थी।

अपने कार्यक्रम पर गहन विचार करने के बाद, सलेम को गुलशन के काम पर जाने से पहले एक मौका मिल गया—जब वह अंधेरी के जीतेश्वर महादेव मंदिर में सुबह की प्रार्थना करने जाता था। यही वह समय था जब वे हमला करते। मंदिर का स्थान और उसके आसपास की राहत सलेम के हमलावरों को भागने के लिए पर्याप्त समय देती। लेकिन बस इतना ही नहीं था। सलेम की एक और ज़रूरत थी—गुलशन को दर्द से चीखते और अपनी जान की भीख मांगते हुए सुनने की एक विकृत इच्छा, जब उसे उससे छीना जा रहा हो।

और जब वह दिन आया, तो सलेम की टीम मंदिर के पास अपनी पोज़िशन ले चुकी थी। सलेम को यकीन था कि गुलशन को पता था कि वे उसे पकड़ने आ रहे हैं।
शायद गुलशन की अटूट आस्था ही थी जिसने उसे यकीन दिलाया था कि ईश्वर उसके किसी बच्चे को सलेम जैसे किसी के हाथों मरने नहीं देगा। खैर, उसने तय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह पुलिस के पास नहीं जाएगा।

गुलशन ने एकमात्र एहतियात यह बरती थी कि उन्होंने एक निजी सुरक्षा गार्ड रख लिया था।
सुरक्षा गार्ड को अनियमित माना जाता था और उसने लगातार दूसरे दिन भी मंदिर न आने का फैसला किया था। जोखिम उठाने और मंदिर न जाने देने के लिए दृढ़ निश्चयी व्यक्ति की ही ज़रूरत होती है। गुलशन की एकनिष्ठ निष्ठा ही सलेम की योजना का एक अहम हिस्सा थी। सुरक्षा गार्ड के हट जाने के बाद, सलेम के मन में तो कोई शक ही नहीं रहा कि उसके शूटर कामयाब होंगे।

निडर होकर, गुलशन अकेले मंदिर गया, और सुबह 10 बजे के कुछ मिनट बाद, सलेम का फ़ोन बजने लगा। उसका एक हत्यारा, राजा नाम का आदमी, अपने बॉस को हत्या का 'रिंगसाइड व्यू' दिखाने के लिए फ़ोन कर रहा था। फ़ोन करने वाले ने कहा , "भाई, वो मंदिर से निकल गया," और कॉल चालू छोड़ दी ताकि सलेम उसकी हर बात सुन सके।

चीखना।

अपने फ़ोन से चिपका, सलीम ध्यान से अपने किराए के बन्दूक के कदमों की आहट सुन रहा था, संगीत निर्माता के पीछे-पीछे। गुलशन के अपेक्षाकृत धीमे और धीमे कदमों के पीछे-पीछे चलते हुए उसके कदमों से पक्की सड़क पर एक विशिष्ट खट-खट की आवाज़ आ रही थी। सलीम मोबाइल फ़ोन के ज़रिए हल्की हवा की आहट, ऊपर कुछ चिड़ियों की चहचहाहट और लोगों की धीमी आवाज़ें सुन सकता था। फिर पहली आवाज़

Machine Translated by Google

गोली चली, जिससे उस क्षण की शांति भंग हो गई।

राजा पूरी तरह चुप रहा। शायद, वह अपने बॉस को नाराज़ नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसकी आवाज़ एक भी डेसिबल तक नहीं चूकी। सलीम यह तो नहीं बता सका कि गुलशन को कहाँ मारा गया था, लेकिन वह उसकी दबी हुई दर्द भरी चीखें सुन सकता था। लगभग तुरंत ही, सलीम को दूर से डामर पर चप्पलों की सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी, ज़मीन पर भारी पैरों के घिसटने की आवाज़ें पहले से थोड़ी तेज़। गुलशन भाग रहा था।

राजा के आश्वस्त और शांत कदमों की लय ने सलेम को यह बता दिया कि वह गुलशन के पीछे नहीं भागा था। बल्कि, वह एक सच्चे शिकारी की तरह था—अपने शिकार का पीछा करते हुए, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हुए, उसका जायज़ा लेते हुए और शिकार करने से पहले के पलों का आनंद लेते हुए।

ऐसा माना जाता है कि इस दौरान गुलशन ने एक सार्वजनिक शौचालय में छिपने की कोशिश की। दुर्भाग्य से, वह अंदर जाते हुए फिसल गया, जिससे राजा को खबर हो गई। जैसे ही हत्यारा उसके पीछे अंदर गया, पैरों की आहट गूंजने लगी और सलेम समझ गया कि हत्यारा और उसका शिकार घर के अंदर हैं। हैरानी की बात नहीं कि आसपास खड़े लोगों ने दखल देने के बजाय चुपचाप खड़े रहना ही बेहतर समझा। गुलशन के सारे परोपकारी कार्य उसी क्षण भुला दिए गए।

बस कुछ ही सेकंड की बात थी कि राजा ने फिर से ट्रिगर दबा दिया और एक और गोली चली, जिससे गुलशन की चीख निकल गई। यह भयावह और नाटकीय फांसी धीरे-धीरे खत्म हो रही थी और अपने खूनी अंत की ओर बढ़ रही थी।

गुलशन को गोली लगी थी और वह गिर पड़ा था। वह दर्द से कराह रहा था, लेकिन अपनी अदम्य हिम्मत के साथ वह मुश्किलों से जूझता रहा और रेंगकर निकलने की कोशिश करता रहा। राजा शांति से गुलशन की ओर बढ़ा और एक और गोली दाग दी।

राजा ने बाद में सलेम को बताया कि जब गुलशन उसका पीछा कर रहा था, तो उसने उसकी आँखों में गहरा डर देखा था। गुलशन की तारीफ़ तो यह हुई कि वह किसी तरह खुद को शौचालय से बाहर खींचकर बगल की झुग्गी बस्ती की तरफ़ भाग गया। राजा धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चला।

टी-सीरीज़ के मुखिया लोगों से विनती कर रहे थे कि उन्हें शरण दी जाए या कम से कम कुछ समय के लिए छुपा दिया जाए। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। यह एक ऐसे व्यक्ति का दुखद अंत था जो एक महान परोपकारी व्यक्ति था।

तभी सलेम ने गुलशन को एक बुढ़िया से अपनी झोपड़ी में आने की गुहार लगाते सुना। उसे एहसास हुआ कि फाँसी शुरू हुए लगभग दस-पंद्रह मिनट हो चुके थे। उसने राजा को आदेश दिया कि वह अपना सामान समेटे और वहाँ से निकल जाए। राजा गुलशन के पास गया, जिसने राजा से उसे छोड़ देने की विनती की। और सलेम को आखिरकार वह सुनने को मिला जिसे सुनने के लिए वह इतने लंबे समय से तरस रहा था—एक समय के विद्रोही संगीत सम्राट की दया की भीख माँगने की आवाज़। राजा ने गुलशन पर छह गोलियाँ दागीं और उसे मरा हुआ समझकर अपनी बाइक पर सवार होकर भाग गया।

पूरा भारत स्तब्ध रह गया। मुंबई ने कई माफिया हत्याकांड देखे थे, लेकिन यह तो सब से बढ़कर था। सलेम की बर्बरता की चर्चा संसद से लेकर पब तक हुई। गठबंधन सरकार के प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने इस हत्या पर तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त की: "यह आपराधिक कृत्य एक सभ्य समाज में, खासकर अपने अनुशासन और नागरिक चेतना के लिए जाने जाने वाले शहर में, बिल्कुल अनुचित है। गुजराल ने कहा, गुलशन कुमार ने फिल्म संगीत की दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। उनके निधन पर सभी संगीत प्रेमी शोक मनाएँगे।" सुर्खियों में सलेम का नाम ज़ोर-ज़ोर से उछला और न्याय की माँग की गई। यह हंगामा सलेम के लिए प्रशंसा जैसा लगा। उन्हें इस बात की खुशी थी कि टाइम्स ऑफ इंडिया और इंडियन एक्सप्रेस ने उन्हें अंडरवर्ल्ड का 'ल'एनफैंट टेरिबल' करार दिया था।

इस हत्या से फिल्म जगत दहशत में है। निर्देशक महेश भट्ट, जिन्होंने टी-सीरीज़ द्वारा निर्मित हिट फिल्म आशिकी का निर्देशन किया था, ने इसे बिल्कुल सही कहा, "जब आप गुलशन कुमार को मारते हैं, तो आप मनोरंजन उद्योग के सबसे बड़े लोगों में से एक को मारते हैं। गुलशन कुमार को मारकर वे कह रहे हैं, "सब कुछ हमारा है," और उन्होंने यह साबित कर दिया है... पूरी फिल्म बिरादरी दहशत में है।"

Machine Translated by Google

चौदह

Machine Translated by Google

प्रत्यर्पण शर्मिंदगी

गुलशन कुमार की हत्या के एक हफ़्ते के भीतर ही सलेम को अल अवीर रोड स्थित दुबई सेंट्रल जेल में नज़रबंद कर दिया गया। एक महीने से भी कम समय बाद, एक रणनीतिक रूप से आयोजित पुलिस सम्मेलन में, नए पुलिस आयुक्त आरएच मेंडोंका ने संगीतकार नदीम सैफी को हत्या का मुख्य संदिग्ध बताया।

खचाखच भरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में नदीम का नाम आते ही पूरे देश में हड़कंप मच गया। यह लगभग उतना ही चौंकाने वाला था जितना कि मुंबई सीरियल ब्लास्ट के दौरान फिल्म स्टार संजय दत्त द्वारा हथियार खरीदने का खुलासा। बॉलीवुड की बंद अलमारी से कंकाल बाहर आने लगे थे।

संजय की तरह, नदीम भी एक बेहद प्रतिष्ठित परिवार से ताल्लुक रखते थे। उनके पिता यूनुस सैफी देश में पवित्र कुरान के सबसे बड़े प्रकाशक और वितरक थे। दक्षिण मुंबई के मुस्लिम इलाके में मोहम्मद अली रोड पर, मुंबई की प्रसिद्ध मीनारा मस्जिद के ठीक सामने स्थित ताज बुक हाउस, पूरे भारतीय प्रायद्वीप में इस्लामी पुस्तक प्रेमियों का केंद्र माना जाता है।

एक कट्टर मुसलमान, सीनियर सैफी, इन आरोपों से स्तब्ध थे। "हम एक ईमानदार परिवार से हैं। मेरे बेटे का पालन-पोषण कुरान के उच्च आदर्शों पर हुआ है।"
"वह कभी किसी की हत्या नहीं करेगा या किसी हत्या में शामिल नहीं होगा," उसने आँसू बहाते हुए कहा। लंदन में रहने वाले नदीम भी मुंबई के घटनाक्रम से स्तब्ध थे। उन्होंने तुरंत मेंडोंका को फोन किया और उन्हें आश्वस्त किया कि कोई न कोई चूक हुई है। उन्होंने मुंबई आने वाली पहली उड़ान से जाँच में सहयोग करने का वादा किया। कथित तौर पर नदीम ने पुलिस अधिकारी से फोन पर कहा, "गुलशनजी मेरे पिता समान थे। मैं उनकी हत्या के बारे में सोच भी नहीं सकता।"

हालाँकि, सरकार नदीम के स्पष्टीकरण को मानने के मूड में नहीं थी। अब वह नदीम पर अभियोग लगाने और उसके सहयोग के बिना, उसे भारत लाने की हड़बड़ी में थी। 4 सितंबर को, मुंबई पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी के लिए इंटरपोल से औपचारिक रूप से संपर्क किया और 17 सितंबर को, नदीम को मेट्रोपॉलिटन पुलिस का फ़ोन आया जिसमें उसे चारिंग क्रॉस पुलिस स्टेशन में पेश होने के लिए कहा गया।

नदीम ने अपने वकील हेनरी ब्रैडमैन के साथ थाने में आत्मसमर्पण कर दिया। उस पर हत्या की साज़िश रचने का आरोप लगाया गया। इसके बाद, न्यू स्कॉटलैंड यार्ड के प्रत्यर्पण विभाग ने मामला संभाला और उसे कोवेंट गार्डन स्थित बो स्ट्रीट मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेश किया गया। मजिस्ट्रेट रोनाल्ड बार्टल ने नदीम की ज़मानत 200,000 पाउंड की वित्तीय गारंटी के रूप में तय की और देश से भागने से रोकने के लिए उसका पासपोर्ट ज़ब्त कर लिया गया।

नदीम को यह भी निर्देश दिया गया था कि वह 24 सितंबर को होने वाली अगली अदालती सुनवाई तक किंग्सबरी स्थित अपने पते से बाहर न जाए। मिडलसेक्स का एक पॉश उपनगर, किंग्सबरी, कई कॉर्पोरेट अधिकारियों, बैंकरों और मध्यम स्तर के व्यापारियों का घर है। पिछले कुछ वर्षों में, यह एशियाई प्रवासियों, खासकर गुजरातियों और अन्य नवधनाढ्य भारतीयों से आबाद एक इलाका बन गया था। पड़ोसी हैरो की तरह, किंग्सबरी भी लंदन और उसके आसपास के प्रवासी भारतीयों की समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता था। नदीम की पत्नी सुल्ताना का पाँच महीने की गर्भावस्था के बाद गर्भपात हो गया था, जिसके कारण नदीम ने भारत वापस न लौटने का फैसला किया। मुंबई पुलिस उसे तभी पकड़ सकती थी जब वे उसे ब्रिटेन से प्रत्यर्पित कर सकें।

अब संगीतकार और मुंबई पुलिस के बीच एक लंबी कानूनी लड़ाई होने वाली थी। राज्य अभियोजन सेवा मुंबई पुलिस से नदीम के खिलाफ सबूत पेश करने को कहेगी, जिसके आधार पर प्रत्यर्पण पर फैसला होगा।

Machine Translated by Google

लिया जाएगा। जब पत्रकारों ने यह पता लगाना शुरू किया कि सरकार ने नदीम पर अभियोग लगाने और उसके खिलाफ इंटरपोल नोटिस जारी करने में इतनी जल्दी क्यों दिखाई, तो महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री गोपीनाथ मुंडे ने बताया, "हम उसे प्रत्यर्पित करना चाहते थे क्योंकि दुबई की तुलना में उसे लंदन से लाना आसान है। अगर वह दुबई चला जाता, तो उसे वापस लाना नामुमकिन होता।"

मुंडे शायद भूल गए होंगे कि भारत अपने आरोपियों को ब्रिटेन से वापस लाने में लगातार नाकाम रहा है। इसका एक प्रमुख उदाहरण इकबाल मोहम्मद मेमन (उर्फ इकबाल मिर्ची) का मामला है। महाराष्ट्र सरकार, जिसने दोनों मामलों में अदालती कार्यवाही में बेतहाशा पैसा खर्च किया, न केवल बुरी तरह विफल रही, बल्कि दोनों आरोपियों को विदेशी मुद्रा में खर्च और हर्जाना भी चुकाना पड़ा।

1990 के दशक की शुरुआत में भारत से भागने के बाद से ही फरार चल रहे मिर्ची को अप्रैल 1995 में स्कॉटलैंड यार्ड ने इंग्लैंड स्थित उसके घर से गिरफ्तार किया और उस पर ड्रग्स रखने का आरोप लगाया। मुंबई की अदालतों में मिर्ची के खिलाफ दो ड्रग्स मामले (1986 और 1994 में) लंबित होने के कारण, कानूनी टीम उसे प्रत्यर्पित करके उसके जन्मस्थान शहर वापस लाने की कोशिश कर रही थी, जहाँ उस पर मुकदमा चलाया जाना था। सब कुछ ठीक लग रहा था और प्रत्यर्पण लगभग तय लग रहा था। बस एक छोटी सी गड़बड़ी थी। भारत और यूनाइटेड किंगडम के बीच हुई प्रत्यर्पण संधि के अनुसार, जिन दस्तावेजों पर यह मामला आधारित था, उन्हें विदेश राज्य मंत्री द्वारा प्रमाणित किया जाना था।

जैसा कि बाद में पता चला, एक बड़ी चूक हुई, जिसकी कोई व्याख्या नहीं कर सका, मिर्ची के खिलाफ पूरी चार्जशीट विदेश राज्य मंत्री द्वारा नहीं, बल्कि किसी अन्य अधिकारी द्वारा प्रमाणित की गई थी। नतीजतन, ब्रिटिश अधिकारियों के सामने कोई भी सामग्री प्रस्तुत नहीं की जा सकी। और बो स्ट्रीट मजिस्ट्रेटों ने प्रत्यर्पण अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। भारत ने इस फैसले के खिलाफ अपील भी नहीं की।

मिर्ची का मामला सिर्फ़ चार महीने ही चला था। सीबीआई या किसी अन्य जाँच एजेंसी, सरकारी कार्यालय या भारतीय पुलिस का कोई भी व्यक्ति इसके लिए लंदन नहीं गया था। भारतीय उच्चायोग का एक अधिकारी ही सुनवाई में भारत सरकार का एकमात्र प्रतिनिधि था। वकील राम जेठमलानी, जो मिर्ची के खिलाफ मुकदमा लड़ने लंदन गए थे, बताते हैं कि ब्रिटिश वकील द्वारा उठाया गया मुख्य मुद्दा था: 'भारत सरकार की ओर से प्रमाणीकरण कहाँ है?' ज़ाहिर है, इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

नदीम मामले में भी भारत ने बेवजह यही गलती की। भारत सरकार ने नदीम के प्रत्यर्पण की मांग की थी। इस बार सरकारी वकील उज्ज्वल निकम और वकील मजीद मेमन लंदन गए। लेकिन उन्हें इसकी ज़हमत नहीं उठानी पड़ी। मामला तीन-चार महीने तक चला और फिर खारिज कर दिया गया। वजह? विदेश राज्य मंत्री की ओर से पुष्टि न होना!

पीछे मुड़कर देखें तो, और जेठमलानी के अनुसार, ऐसा कभी नहीं लगा कि भारत सरकार दोनों में से किसी के भी प्रत्यर्पण के लिए उत्सुक थी। उन्होंने कहा, "भारत सरकार की अपनी प्राथमिकताएँ हैं जिनमें विदेशों में गिरफ़्तार किए गए अभियुक्तों को वापस लाना शामिल नहीं है। इस मामले में बिल्कुल भी दिमाग़ नहीं लगाया गया है और किसी न किसी वजह से सरकार दोनों को भारत वापस लाने में रुचि नहीं रखती।"

पुलिस का दावा था कि उनके पास नदीम के खिलाफ सबूत हैं। जब उसका गैर-फिल्मी एल्बम "हाय अजनबी" असफल हुआ, तो उसने सीधे तौर पर गुलशन कुमार को दोषी ठहराया था। कथित तौर पर नदीम ने गुलशन को धमकी दी थी, "क्या तुम्हें मेरे दोस्तों के फोन आए हैं? तुम मुझे नहीं जानते।" गुलशन कुमार और नदीम के बीच बढ़ती कड़वाहट के बारे में पारिवारिक बयानों और अन्य संकेतों के अलावा, पुलिस को सबसे बड़ा सबूत कई फिल्मी सितारों के बयान मिले, जो 12 जून को रॉयल एम्पायर होटल के उद्घाटन समारोह में मौजूद थे, जहाँ नदीम-श्रवण की जोड़ी ने कथित तौर पर सलेम के कहने पर मुफ्त में परफॉर्म किया था।

Machine Translated by Google

शाहरुख खान, सलमान खान, जैकी श्रॉफ, आदित्य पंचोली, अतुल अग्निहोत्री, चंकी पांडे और पूजा भट्ट जैसे फिल्मी सितारों को उनके बयान दर्ज कराने के लिए क्राइम ब्रांच में बुलाया गया था। पुलिस ने दावा किया कि उन्होंने उनके बयानों से सबूत इकट्ठा करने में कामयाबी हासिल की है और इस बात की पुष्टि की है कि कैसे नदीम, सलेम के साथ घंटों बैठकर गुलशन को खत्म करने की योजना बना रहा था, अगर वह नदीम की शर्तें मानने से इनकार कर देता।

संजय दत्त की गिरफ़्तारी के समय जिस तरह फ़िल्म जगत के लोग और दूसरे लोग—जिनमें उनके पिता के राजनीतिक आलोचक शत्रुघ्न सिन्हा और बाल ठाकरे भी शामिल थे—उनके पीछे एकजुट हो गए थे, उसके उलट नदीम का कोई समर्थक नहीं था। ठाकरे, जिन्हें वह 'ठाकरे अंकल' कहते रहे, से हस्तक्षेप की उनकी बार-बार की गई गुहार भी उनके पक्ष में नहीं रही। मिर्ची की तरह, जो कभी भारत नहीं लौटा, नदीम को भी लंदन में ही रहना पड़ा।

Machine Translated by Google

पंद्रह

Machine Translated by Google

नतीजा

जब से सलेम दुबई आया था, वह अनीस के घटते खजाने को भर रहा था। दरअसल, सलेम अनीस का सबसे वफ़ादार सिपाही था, लेकिन अनीस ने उसके साथ वैसा ही व्यवहार नहीं किया।
जब सलेम के गले में फंदा कस गया तो उसका बॉस उसके लिए खड़ा नहीं हुआ।
गुलशन कुमार की हत्या से भारत सरकार स्तब्ध थी और उसने सलेम को सौंपने के लिए संयुक्त अरब अमीरात सरकार पर दबाव बनाने के लिए राजनयिक माध्यमों का इस्तेमाल किया था।

1996 में संयुक्त अरब अमीरात और भारत सरकार के बीच प्रत्यर्पण संधि पर हस्ताक्षर एक ऐतिहासिक घटना थी। इस संधि ने संगठित अपराध के खिलाफ अभियान चलाने में मुंबई पुलिस के प्रयासों को बल दिया। सीरियल बम धमाकों के बाद वे दाऊद का प्रत्यर्पण करने में असफल रहे थे, क्योंकि 1994 में ऐसी कोई संधि नहीं थी। लेकिन इस बार उन्हें पूरा भरोसा था कि वे सलेम को अपने हाथ से नहीं जाने देंगे।

दुबई सरकार ने आवासीय वीज़ा कार्यक्रम के तहत रह रहे भारतीयों के रिकॉर्ड की जाँच की, तो दुबई में अबू सलेम अंसारी नाम का कोई व्यक्ति नहीं मिला। दुबई सरकार की इस प्रतिक्रिया से भारतीय नौकरशाह और पुलिस बेचैन हो गए। हालाँकि, विदेशी पुलिस और सरकारों से निपटने के लिए मुंबई पुलिस की नोडल एजेंसी, सीबीआई, ने आसानी से हार मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने नए जोश के साथ कार्रवाई शुरू की और कई एजेंसियों को एक साथ काम करने के लिए प्रेरित किया।

इस बार वे डीएन नगर पुलिस स्टेशन से सलेम के बारे में जानकारी जुटाने में कामयाब रहे, जिसमें उसका आपराधिक प्रोफ़ाइल, उसकी तस्वीरें और उसके फिंगरप्रिंट शामिल थे, और दुबई सरकार को एक विस्तृत दस्तावेज़ भेजा। दुबई सुरक्षा एजेंसी यानी सीआईडी को पता चला कि ये जानकारियाँ डेरा निवासी अकील अहमद आज़मी से मेल खाती हैं, जिसका पासपोर्ट लखनऊ से जारी किया गया था।

जैसे ही यह मामला सामने आया, आज़मी (यानी सलेम) को दुबई में हिरासत में ले लिया गया और आम अपराधियों के साथ सलाखों के पीछे डाल दिया गया। सलेम अपने साथ हुए इस व्यवहार से स्तब्ध रह गया। उसके साथ एक आम अपराधी जैसा व्यवहार किया जा रहा था, ऐसा व्यवहार उसके साथ आजमगढ़ या मुंबई में भी नहीं हुआ था, सिवाय डीएन नगर पुलिस स्टेशन में कुछ दिनों के लिए।

सलेम पहले भी दाऊद के रिश्तों की ताकत देख चुका था। वह अपनी मर्ज़ी से किसी को भी रिहा करवा सकता था या हमेशा के लिए जेल में बंद करवा सकता था। सलेम की शिकायत थी कि अगर अनीस चाहता, तो उसे पुलिस हिरासत से पल भर में रिहा करवा सकता था।

उदाहरण के लिए, 1995 में, जब दाऊद के एक शार्पशूटर सुनील सावंत की दुबई में छोटा राजन के सुपारी किलरों ने हत्या कर दी थी, तो स्थानीय पुलिस ने क्रिकेट सट्टेबाजी रैकेट के सरगना शरद शेट्टी और दाऊद के एक समय के शार्पशूटर अनिल परब उर्फ वांग्या को हिरासत में ले लिया था। शेट्टी दाऊद को यह यकीन दिलाने में कामयाब रहा कि वह निर्दोष है, जबकि वांग्या ऐसा नहीं कर सका। दाऊद ने यह सुनिश्चित किया कि शेट्टी को हिरासत में लेने के कुछ ही घंटों के भीतर रिहा कर दिया जाए, जबकि वांग्या को कंपनी की ओर से बिना किसी मदद के तीन महीने तक जेल में रहना पड़ा।

दिन बीतते गए और सलेम अपने अधिकारियों से मदद की उम्मीद करता रहा, लेकिन मदद कभी नहीं मिली।
दिन हफ़्तों में बदलते गए और हफ़्ते महीनों में, लेकिन सलेम को कोई राहत नहीं मिली। वह आम जेबकतरों और छोटे-मोटे चोरों के साथ जेल में सड़ रहा था, और किसी ने उसे बाहर निकालने की कोशिश नहीं की। इससे भी बुरी बात यह थी कि सलेम को पता चला कि उसकी पत्नी समीरा को खुद के हाल पर छोड़ दिया गया था, कोई भी उसे आर्थिक मदद देने या उससे मिलने तक नहीं आया। समीरा ने सलेम से शादी करने के लिए अपना परिवार छोड़ दिया था और अब वह एक अनजान शहर में अकेली थी, जिसका कोई सहारा नहीं था। उसके पास भी

Machine Translated by Google

वकीलों के साथ समन्वय करना, जेल में सलेम से मिलना, तथा वित्त के संग्रह और वितरण के बारे में उसके निर्देशों का पालन करना।

कंपनी की ओर से ज़रा सी भी मदद समीरा का मनोबल बढ़ा देती। सलेम ने सोचा था कि कंपनी के लिए उसने जो खून-पसीना और आँसू बहाए हैं, उससे उसे और उसकी पत्नी को मुश्किल घड़ी में मदद मिलेगी। लेकिन अनीस एक मुश्किल घड़ी का दोस्त निकला। उसने एक बार भी सलेम से मिलने या उसकी रिहाई में तेज़ी लाने का आश्वासन नहीं दिया। कभी मुंबई का ख़तरनाक अभिशाप अकेला और परित्यक्त था।

इस बीच, सलेम के प्रत्यर्पण के भारत सरकार के प्रयास कमज़ोर पड़ने लगे थे। दुबई की अदालतों ने लखनऊ के अकील अहमद आज़मी के प्रत्यर्पण के ख़िलाफ़ फ़ैसला सुनाया। भारत सरकार स्तब्ध रह गई।

सलेम दुबई में अपने घर एक बदला हुआ इंसान लौटा। उसने अपने साम्राज्य पर नज़र डाली। गरीबी की ज़िंदगी से उसने अकूत दौलत बनाई थी और इस प्रक्रिया में अनीस की जेबें भी भर दी थीं। अनीस सलेम की मेहनत का फल पाकर खुश था, लेकिन जब बदले में कुछ देने और एक अच्छा बॉस बनने की बात आई, तो उसने सलेम को नज़रअंदाज़ कर दिया। सलेम को सबसे ज़्यादा इस बात से चिढ़ थी कि अनीस उसे एक शान से काम करने वाले लड़के से ज़्यादा कुछ नहीं समझता था।

कंपनी के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में उनके साथ कभी भी शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार नहीं किया गया।
कभी-कभी, अनीस जानबूझकर उसे सबके सामने बेवजह डाँटकर अपमानित करता या कोई छोटा-मोटा काम उससे करवा लेता, जबकि वह अपने नौकरों में से किसी से भी करवा सकता था। लेकिन सलेम चुपचाप अपने अहंकार को निगलकर अनीस के अधीन रहा। लेकिन जेल की सजा ने उसे एक बात सिखा दी थी—अनीस ऐसा इंसान नहीं था जिस पर संकट के समय भरोसा किया जा सके।

उसकी हताशा बढ़ने लगी, और अब वह अपने दोस्तों और नौकरों के साथ ज़्यादा समय बिताने लगा; दुबई में उससे मिलने आने वाली अभिनेत्रियों के साथ भी वह व्यभिचार में लग गया। उसकी शादी, जो दुबई के बाद से कभी खुशहाल नहीं रही थी, अब टूटने लगी थी। समीरा एक मुखर महिला थी, और गुस्से में उसकी ज़ुबान कड़वी और तीखी हो जाती थी। सलेम को उसका गुस्सा और तीखी बातें बर्दाश्त नहीं होती थीं, और वह उसे नियमित रूप से पीटने लगा। एक बार उसने उसे इतनी ज़ोर से मारा कि उसके माथे पर गहरा घाव हो गया। उसे बहुत ज़्यादा खून बह रहा था और उसे अस्पताल ले जाया गया और बारह टांके लगाकर घर भेज दिया गया।

सलेम की भी अपने काम में रुचि खत्म हो गई। वह अनीस के लिए और पैसा कमाने में दिलचस्पी नहीं रखता था, इसलिए उसने भारत में फ़ोन करना बंद कर दिया। जबरन वसूली का धंधा ठप्प पड़ गया। उसने अचानक अपने दफ़्तर जाना बंद कर दिया। भारतीय कारोबारी समुदाय और बॉलीवुड ने राहत की साँस ली।

आखिरकार, सलीम ने अपनी राह पर चलने का फैसला किया, यह जानते हुए कि उसे अनीस की उतनी ज़रूरत नहीं थी जितनी अनीस को उसकी। सबसे पहले, उसने अपने दफ्तर की दीवार पर लगी अनीस की विशाल तस्वीर को गिरा दिया। फिर, गुस्से में आकर, उसने फ्रेम तोड़ दिया और तस्वीर फाड़ दी।

सलेम के इरादों की खबर अनीस से छिपाई नहीं जा सकती थी। बिना समय गंवाए, अनीस जुमेराह स्थित सलेम के घर पहुँच गया। जब उसे सलेम नहीं मिला, तो वह समीरा पर चिल्लाया और उससे बहुत रूखेपन से बात की, जिससे वह घबरा गई। वह शायद पूरी बिरादरी में अकेली पढ़ी-लिखी महिला थी और उसने छोटा शकील की पत्नी के ज़रिए दाऊद तक अपनी नाराज़गी पहुँचाने में ज़रा भी संकोच नहीं किया। दाऊद ने उसे फ़ोन करके हालचाल पूछा। जब समीरा ने उससे अपने छोटे भाई के व्यवहार की शिकायत की, तो दाऊद ने माफ़ी मांगते हुए उसे भरोसा दिलाया कि अब उसे परेशान नहीं किया जाएगा।

दाऊद तब तक कराची जा चुका था, लेकिन अनीस और सलेम के बीच सुलह कराने के लिए वह दुबई गया ताकि वे फिर से दोस्त बन सकें। अनीस और सलेम, दोनों ही दाऊद का बहुत सम्मान करते थे और उनमें से कोई भी उसे मना नहीं कर सकता था। वे एक समझौते पर सहमत हो गए, लेकिन अब उनके बीच एक तनाव था।

Machine Translated by Google

दोस्ती। अनीस को सलेम नापसंद होने लगा था, वहीं सलेम ने अपने एक समय के बॉस और गुरु के लिए सारा सम्मान खो दिया था।

सलेम को भी पता था कि भारत सरकार के शिकारी कुत्ते उसके पीछे पड़े हैं, इसलिए वह फिर से मुसीबत में पड़ सकता है। उसे अपनी और समीरा की सुरक्षा करनी थी। यह लगभग 1998 की बात है और वह धीरे-धीरे दुबई छोड़कर कहीं और बसने की योजना बनाने लगा। यह रातोंरात नहीं होने वाला था। इसके लिए बहुत सारी योजनाएँ बनानी होंगी, पैसे ट्रांसफर करने होंगे, कहीं और घर लेना होगा और विदेश में कुछ संपत्तियाँ खरीदनी होंगी।

सलेम ने पहले समीरा को शिफ्ट करने का फैसला किया ताकि अनीस उसे और परेशान न कर सके। वह बाद में उसके साथ आ जाएगा। उसने अपने विकल्पों पर विचार करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान, जो पहले से ही सीरियल ब्लास्ट के तैंतीस आरोपियों और दूसरे गैंगस्टरों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह था, अब वहाँ जाने की संभावना नहीं थी। दाऊद उसे वहाँ पाकर खुश होता और सलेम एक बार दाऊद के भाई मुस्तकीम की शादी के दौरान कराची गया था; लेकिन अनीस उसे वहाँ चैन से नहीं रहने देता। खाड़ी का कोई भी देश उसके लिए सुरक्षित नहीं होता।

काफी सोच-विचार के बाद, सलेम ने फैसला किया कि अमेरिका ही सबसे अच्छा विकल्प होगा। वहाँ अनीस उसे छू भी नहीं पाएगा। उसने अटलांटा, जॉर्जिया पर ध्यान केंद्रित किया। लेकिन समीरा को वहाँ जाने से पहले एक नई पहचान की ज़रूरत थी। सलेम को दोनों के लिए नए पासपोर्ट बनवाने थे। सलेम ने नई पहचान और पासपोर्ट के लिए हैदराबाद में अपने परिचितों से संपर्क किया।

Machine Translated by Google

सोलह

Machine Translated by Google

दुग्गल की गुड़िया

मोनिका बेदी का जन्म 18 जनवरी 1975 को पंजाब के होशियारपुर शहर से पंद्रह किलोमीटर दूर, चब्बेवाल के एक छोटे से गाँव में एक मध्यमवर्गीय सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता प्रेम बेदी एक डॉक्टर थे, जबकि माँ शकुंतला एक गृहिणी थीं। यह वह दौर था जब ज़्यादातर पंजाबी परिवार अपनी किस्मत आजमाने के लिए पश्चिम की ओर पलायन करने की ख्वाहिश रखते थे। मोनिका के पहले जन्मदिन से पहले ही, डॉ. बेदी ने अपने परिवार को नॉर्वे ले जाने का फैसला कर लिया था।

1970 के दशक में, नॉर्वे में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग सौ थी और वे एक घनिष्ठ समुदाय की तरह रहते थे। अपने नए देश में पहुँचने पर, डॉ. बेदी ने अपनी चिकित्सा पद्धति छोड़ दी और नॉर्वे की राजधानी ओस्लो से पैंतालीस किलोमीटर दूर, ड्रामेन शहर में अपना खुद का परिधान व्यवसाय शुरू किया। डॉ. बेदी ने अपनी बेटी मोनिका और बेटे बॉबी को बहुत लाड़-प्यार से पाला। दोनों भाई-बहन हिंदी फिल्मों के वीडियो कैसेट के ज़रिए बॉलीवुड की गहरी खुराक के बीच पले-बढ़े—शायद यही उनके अपने देश और लोगों से जुड़ाव का एकमात्र ज़रिया था।

1992 में, सत्रह साल की उम्र में, मोनिका ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी साहित्य की पढ़ाई करने के लिए ब्रिटेन चली गईं। शुरुआत में, उनके माता-पिता ने विरोध किया क्योंकि उन्होंने उन्हें एक सुरक्षित परवरिश दी थी। लेकिन वह अपनी शर्तों पर ज़िंदगी जीना चाहती थीं। लंदन खूबसूरत था। उन सालों में मोनिका एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाली महिला बनीं। लेकिन जल्द ही वह अपनी पढ़ाई से ऊब गईं और पढ़ाई छोड़ने का मन करने लगीं। पढ़ाई छोड़ने का मतलब था आज़ादी का अपना टिकट खोना। लेकिन मुंबई की एक छुट्टी ने उनकी ज़िंदगी बदल दी।

मुंबई में, मोनिका ने कथक सीखने के लिए गोपी किशन डांस क्लासेस में दाखिला लिया। एक दिन, फिल्म स्टार मनोज कुमार किसी निजी काम से उनके घर आए। बचपन में, मोनिका ने मनोज कुमार की फ़िल्में रोटी कपड़ा और मकान और उपकार देखी थीं।

उनकी उम्र तो बढ़ गई थी, लेकिन उनका आकर्षण और स्टार वाली गुणवत्ता अब भी बरकरार थी। मनोज कुमार ने कथित तौर पर मोनिका से कहा था कि उनका चेहरा 1950 और 1960 के दशक की अभिनेत्रियों का एकदम सही मिश्रण है और आज के भारतीय सिनेमा के लिए ज़रूरी नवीनता भी।

इससे उस युवती की महत्वाकांक्षाएँ जाग उठीं। वह अठारह साल की हो रही थी, उसका रंग बेदाग था, आकर्षक फिगर था, उसकी मुस्कान मनमोहक थी और पाँच फुट पाँच इंच की ऊँचाई के साथ, उसमें एक स्टार बनने के सभी गुण मौजूद थे। मोनिका ने बाद में यह भी दावा किया कि मनोज कुमार उसे अपने बेटे कुणाल के साथ एक फिल्म में लॉन्च करना चाहते थे।

उसने तुरंत अपने माता-पिता को फोन किया और बताया कि वह फिल्म इंडस्ट्री में अपनी किस्मत आजमाना चाहती है। उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की और कहा कि बॉलीवुड महिलाओं के शोषण के लिए बदनाम है और उसके जैसी संस्कारी युवती के लिए यहाँ कोई जगह नहीं है।
लेकिन मोनिका को अब फिल्मों में अपना भविष्य दिख रहा था और कोई भी उसे इसमें हाथ आजमाने से नहीं रोक सकता था।

जब माता-पिता को एहसास हुआ कि वे अपनी ज़िद्दी बेटी को मना नहीं पाएँगे, तो शकुंतला ने मुंबई जाने का फ़ैसला किया। मोनिका ने अपना पोर्टफोलियो बनवाया और आगे बढ़ गईं। उन्होंने सुना था कि सिनेमा की दुनिया में कामयाबी पाने के दो तरीके हैं—या तो उन्हें बड़े कॉन्ट्रैक्ट पाने के लिए सोते रहना होगा या फिर ढेर सारे फ़िल्मी कार्यक्रमों में जाकर फ़िल्मी दिग्गजों का ध्यान अपनी ओर खींचना होगा। मोनिका ने बाद में अपने इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने ध्यान आकर्षित करने के लिए बॉलीवुड पार्टियों और कार्यक्रमों में जाने का फ़ैसला किया।

वह जिन पार्टियों में जाती थीं, उनमें से एक सुभाष घई की मशहूर होली पार्टी थी। मोनिका ने बाद में बताया कि वह खुशकिस्मत थीं क्योंकि उस दौरान उनकी मुलाक़ात राकेश रोशन से हुई। उन्होंने बचपन में उनकी कुछ फ़िल्में देखी थीं और यह सुनकर हैरान रह गईं कि वह एक फ़िल्म—करण अर्जुन—लॉन्च कर रहे हैं और उन्हें इसकी ज़रूरत है।

Machine Translated by Google

सलमान खान के साथ एक नया चेहरा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि वह उनके सांता क्रूज़ स्थित ऑफिस में आकर मिलें क्योंकि वह उन्हें इस भूमिका के लिए चुनने पर विचार कर रहे थे।

रोशन ने उसे अपने ऑफिस का पता और फ़ोन नंबर भी दिया, लेकिन मोनिका, उसके इरादों पर शक करते हुए, ऑडिशन देने नहीं गई। उसने सोचा कि राकेश रोशन कोई पुराना एक्टर है और सोच रही थी कि वह उसे फिल्मों में कैसे लॉन्च कर सकता है। मोनिका ने बाद में स्वीकार किया कि उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि राकेश रोशन पहले से ही एक सफल फिल्म निर्माता हैं। बहरहाल, उसने फिर कभी राकेश रोशन से संपर्क नहीं किया। आखिरकार यह रोल ममता कुलकर्णी को मिल गया और यह फिल्म 1995 में " दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे" के बाद दूसरी सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई। मोनिका की यह अनदेखी उसके करियर की सबसे बड़ी भूलों में से एक साबित हुई। कई महीने बीत गए और मोनिका को कोई फिल्म ऑफर नहीं हुई।

इसी बीच, चब्बेवाल में डाकुओं ने उसके परिवार पर हमला कर दिया और उसके दादा-दादी की बेरहमी से हत्या कर दी। इससे उसकी माँ बहुत दुखी हुई और उसे नॉर्वे लौटने पर मजबूर होना पड़ा।
मुंबई में अकेली मोनिका अब एक तरह से दरवाज़े पर मरने जैसी स्थिति में थी। अपने स्वाभिमान को दरकिनार करते हुए, उसने काम की तलाश में बाहर निकलने का फैसला किया। इसी दौरान उसकी मुलाक़ात विवादास्पद फ़िल्म निर्माता मुकेश दुग्गल से हुई, जिन्होंने उसे अपनी फ़िल्म सुरक्षा में लॉन्च किया। सैफ अली खान और सुनील शेट्टी जैसे अच्छे कलाकारों के बावजूद, यह फ़िल्म बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुँह गिरी और इसके साथ ही मोनिका के सपने भी।

लेकिन दुग्गल ने मोनिका का साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने उसे ज़ोर-शोर से प्रमोट करने की कोशिश की और अपनी फ़िल्मों में उसे छोटे-मोटे रोल देते रहे। उनके लगातार साथ काम करने से उनके अफेयर की अफवाहें तेज़ हो गईं और मोनिका को 'दुग्गल की लाडली' का तमगा दे दिया गया, एक ऐसा तमगा जिससे दुग्गल नफ़रत करती थीं, लेकिन कुछ कर नहीं पाईं। यह निर्देशक अंडरवर्ल्ड से अपने संबंधों और अबू सलेम के ख़ास तौर पर क़रीबी होने के लिए जाना जाता था। मोनिका के साथ दुबई की अपनी एक यात्रा के दौरान, उन्होंने मोनिका को सलेम से मिलवाया।

मोनिका ने बाद में बताया कि उनका परिचय दुबई में रहने वाले एक पाकिस्तानी इवेंट मैनेजर 'अर्सलान अली' से हुआ था, जो दुनिया भर में बॉलीवुड हस्तियों के लिए शो आयोजित करता था। राकेश रोशन के फिल्म निर्माता होने के बारे में उनकी अनभिज्ञता के कारण, यह संभव है कि उन्हें यह नहीं पता था कि सलेम एक गैंगस्टर था।

मोनिका और 'अर्सलान' के बीच तुरंत दोस्ती हो गई और वे नियमित रूप से बातचीत करने लगे। जल्द ही, मोनिका हर दिन उसके फ़ोन का इंतज़ार करने लगी। उसे एहसास हुआ कि हालाँकि वह उससे अंग्रेज़ी में बात करती थी, लेकिन वह शालीन दिखने वाला आदमी 'हैलो' और 'थैंक यू' के अलावा ज़्यादा कुछ नहीं कह पाता था। अर्सलान से दोस्ती के बाद, मोनिका को कुछ तेलुगु फ़िल्मों में काम मिलने लगे। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इन सबके पीछे सलेम का हाथ है। हालाँकि, उसकी 'मदद' के बावजूद, वह फ़िल्म जगत में अपनी पहचान नहीं बना पाई।

फिर एक और त्रासदी हुई। मार्च 1997 में, मुकेश दुग्गल की अंधेरी स्थित उनके कार्यालय के बाहर दो बंदूकधारियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। दुग्गल की हत्या छोटा शकील के शार्पशूटरों ने इसलिए की क्योंकि शकील का मानना था कि दुग्गल उनके प्रतिद्वंद्वी छोटा राजन का समर्थक था और फ़िल्में बनाकर उसके धन की हेराफेरी कर रहा था। शकील ने हत्या वाली रात इंडियन एक्सप्रेस को दिए एक साक्षात्कार में यह बात कही थी । लेकिन बाद में यह बात सामने आई कि शकील को दुग्गल की हत्या का पछतावा था—उसे दिवंगत निर्देशक की सलेम से दोस्ती के बारे में पता नहीं था। अगर शकील को पता होता कि दुग्गल कंपनी का दोस्त है, तो वह अभी भी ज़िंदा होता।

दुग्गल की मौत के बाद, मोनिका का इंडस्ट्री में कोई गॉडफादर नहीं रहा। अरसलान ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वह फिल्म जगत में अपने संपर्कों का इस्तेमाल करेंगे। मोनिका ने उन्हें गंभीरता से नहीं लिया। लेकिन उन्हें हैरानी हुई जब कई बी-ग्रेड फिल्म निर्माता और कम चर्चित निर्माता मोनिका बेदी को अपनी फिल्मों में लेने के लिए लाइन में लग गए। यह लगभग एक सपना सच होने जैसा था।

इस अवधि में उनकी फिल्मों में एक फूल तीन कांटे, तिरछी टोपीवाले, मेरा देश, कालीचरण, जंजीर, लोह पुरुष और काला साम्राज्य शामिल हैं। हालाँकि, उनमें से किसी ने भी बॉक्स ऑफिस पर धूम नहीं मचाई, जिससे उन्हें दुर्भाग्यपूर्ण वर्णन मिला

Machine Translated by Google

'बी-ग्रेड फिल्मों की हीरोइन'। मोनिका अपनी असफलता से उलझन में थी और इसके लिए मीडिया को दोषी ठहराती थी। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। अरसलान उसे प्रोत्साहित करते रहे, लेकिन उसे एक और ज़ोरदार धक्का, एक बड़ा ब्रेक, ज़्यादा प्रतिष्ठित बैनर और बड़े निर्देशकों या प्रोडक्शन हाउस की दिलचस्पी की ज़रूरत थी। मोनिका सिर्फ़ ज़िंदा रहने से खुश नहीं थी—उसे किसी भी कीमत पर सफलता चाहिए थी।

Machine Translated by Google

सत्रह

Machine Translated by Google

डॉन की डार्लिंग

मोनिका की मासूमियत ने सलेम का दिल जीत लिया था। इससे पहले उसने कभी किसी की मदद करने की इतनी तीव्र इच्छा महसूस नहीं की थी। मोनिका अक्सर दुबई जाने लगी। वह वहाँ हर दिन उससे मिलती और अपना ज़्यादातर समय उसके साथ बिताती। दुबई से बाहर होने पर भी, मोनिका उसे अक्सर फ़ोन करती। सलेम समीरा से दूर होता जा रहा था और मोनिका के आकर्षण की ओर खिंचता जा रहा था। उसने अभी तक मोनिका को अपनी असली पहचान नहीं बताई थी, उसे डर था कि कहीं ऐसा करने से वह उससे दूर न हो जाए।

पुरुष अजीबोगरीब प्राणी होते हैं। वे अपनी बेवफाई की ज़िम्मेदारी कभी नहीं लेते और धोखा देने का कोई न कोई बहाना ढूँढ़ ही लेते हैं। सलेम इसमें ख़ास तौर पर माहिर था। जब उसके कई बार छोटी-मोटी अभिनेत्रियाँ या एक रात के रिश्ते होते थे, तो वह तर्क देता था कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वे इतनी खूबसूरत हैं कि उनका विरोध करना मुश्किल है या उन्होंने उसे बहकाया है। उसने कभी खुद को बहकाने वाला नहीं माना।

जब उसे मोनिका से प्यार हुआ, तो सलेम ने बिल्कुल अलग ही तर्क दिए। उसने खुद से कहा कि समीरा ने उससे दूरी बना ली है। उसे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो उसे समझे और उसका साथ दे, और मोनिका में ही उसे यह सहारा मिला। सलेम के तौर-तरीकों से वाकिफ़ लोग जानते थे कि यह समीरा को बेवकूफ़ बनाने का एक और तरीका था, ताकि वह अपनी अंतरात्मा की आवाज़ में अपने इस नए प्रेम संबंध को सही ठहरा सके। लेकिन यह बात इतनी गंभीर थी कि सलेम तलाक के बारे में सोचने लगा।

समीरा के लिए, मोनिका उन सभी अभिनेत्रियों से अलग नहीं थी जो कुछ हफ़्तों के लिए सलेम के दिल में बस गई थीं। उसने सलेम की बेवफ़ाई के बारे में हमेशा चुप्पी साधे रखी थी, यह समझते हुए कि वफ़ादारी एक ऐसा गुण है जो उसे नहीं पता। इसलिए समीरा को मोनिका या सलेम के उसके प्रति बढ़ते स्नेह से कभी कोई ख़तरा महसूस नहीं हुआ।

हालाँकि, उसने अपनी शादी बचाने के लिए एक आखिरी कोशिश करने का फैसला किया। कोई भी परिवार बच्चे के बिना अधूरा होता है और वह सोच रही थी कि शायद उसके पति के मन में भी एक बच्चे की कोई अनकही चाहत हो। शायद एक बच्चा उनके प्यार को फिर से जगा दे।

अगर हर शादी में औरत ही सबसे ज़्यादा त्याग और जोखिम उठाती है, तो समीरा के मामले में तो ये बात दोगुनी सच थी। उसने अपना धर्म, अपने माता-पिता और अपना शहर छोड़ दिया था एक ऐसे पति के लिए जो बेवफ़ा था और जिसे वफ़ादारी का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था।

समीरा ने एक और त्याग करने और शादी को एक और मौका देने का फैसला किया।
दुर्भाग्य से, समीरा की योजना उल्टी पड़ गई। उसे अपनी गर्भावस्था अकेले ही पूरी करनी पड़ी।
सलेम कभी उसके साथ नहीं रहा और उसकी ज़रूरतों से पूरी तरह बेखबर था। जब समीरा आठ महीने की गर्भवती थी, तो वह अपने बच्चे को जन्म देने के लिए न्यू जर्सी गई, जहाँ उसकी मौसी रहती थी। वह जानती थी कि प्रसव के दौरान भावनात्मक सहारे के लिए वह अपने पति पर निर्भर नहीं रह सकती। मुंबई लौटना उसके लिए नामुमकिन था क्योंकि वह 1993 से पुलिस की वांटेड लिस्ट में थी। अमेरिका सबसे सुरक्षित जगह लग रहा था और यही वह देश भी था जहाँ सलेम समीरा के लिए घर ढूँढने की कोशिश कर रहा था। 30 अगस्त 1997 को समीरा ने एक लड़के को जन्म दिया। उसका नाम आमिर रखा गया।

नई माँ को सबसे ज़्यादा दुख इस बात का था कि सलेम ने अपने बच्चे को देखने के लिए न्यू जर्सी जाने की ज़हमत भी नहीं उठाई। सलेम खुद में और मोनिका के साथ अपने बढ़ते रिश्ते में इतना खोया हुआ था।

सलेम के नए रिश्ते का एक और नतीजा निकला—आत्ममुग्धता। वह हमेशा से घमंडी और शेखी बघारने वाला रहा था। वह खुद को बहुत खूबसूरत समझता था और हर तरह का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहता था। दुबई में उसे मज़ाक में पेपर डॉन भी कहा जाता था क्योंकि वह सुर्खियों में अपना नाम छपने वाले भारतीय अखबारों को हासिल कर लेता था और उनकी कतरनें सहेज कर रखता था। बाद में, सलेम ने जासूसों के सामने अपनी बात कबूल भी की।

Machine Translated by Google

सीबीआई ने बताया कि उसने मुंबई में हुई कई हत्याओं का श्रेय लिया था, जिनमें वह वास्तव में शामिल नहीं था।

अब वह अपने रूप-रंग को लेकर जुनूनी हो गया था, घंटों खुद को निहारने और परखने में बिताता था—अपनी त्वचा, आँखों के नीचे के कालेपन, अपनी नाक वगैरह। उसे हमेशा से लगता था कि उसकी नाक में कोई खामी है, इसलिए उसने सर्जरी करवाई और अपनी नाक को और भी नुकीला बना लिया। सलेम को मैनीक्योर और पेडीक्योर का भी शौक हो गया था, और उसकी ड्रेसिंग टेबल एंटी-एजिंग क्रीम, स्किन लोशन, हर्बल पोशन और दूसरे कॉस्मेटिक्स के बोझ तले कराहने लगी थी। वह घंटों जिम में और उससे भी ज़्यादा आईने के सामने बिताने लगा। यहाँ तक कि जब वह अपने शिकारों को फ़ोन पर धमकाता भी था, तो वह अपना प्रतिबिंब ज़रूर देखता था।

मोनिका ने ब्रांडेड कपड़ों, धूप के चश्मों और जूतों में भी सलेम की रुचि जगाई और उसकी शागिर्दी में सलेम पहले से कहीं ज़्यादा आकर्षक दिखने लगा। जल्द ही, सलेम अपने दोस्तों के सामने शेखी बघारता हुआ सुना गया कि वह सलमान खान से कम खूबसूरत नहीं है। वह दावा करता था कि अगर हालात अलग होते, तो वह बॉलीवुड में सलमान को टक्कर दे रहा होता। लोग उसके इस भ्रमपूर्ण आत्म-मुग्धता पर मुस्कुरा देते थे और शक करते थे कि मोनिका ने ही उसके दिमाग में ये विचार डाले हैं।

बहरहाल, सलेम मोनिका के अपने जीवन में आने से सचमुच खुश था। उसके बॉस और नौकरों ने उसे मोनिका की तरफ़ आकर्षित होते देखा, यहाँ तक कि अनीस भी, जिसका सलेम के प्रति गुस्सा अभी तक शांत नहीं हुआ था। उसने अब हालात परखने का फ़ैसला किया और सलेम को निर्देश दिया कि वह मोनिका को एक रात के लिए उसके पास भेज दे। अनीस जानता था कि मोनिका के साथ सलेम का रिश्ता दूसरी लड़कियों जैसा बिल्कुल नहीं था। वह उसकी ज़िंदगी का प्यार थी।

सलेम उसे दोस्तों के बीच बांटे जाने वाले चिप्स के एक सामान्य पैकेट के रूप में नहीं देखता था।
जब अनीस ने सलेम से कहा, 'क्या आइटम है! आज रात मेरे पास भेज दे,' उसने अपने शिष्य का दिल तोड़ दिया।

बस यही आखिरी क़दम था। सलेम को एहसास हुआ कि अब वह इस आदमी के साथ और काम नहीं कर सकता। अनीस के लिए उसने जो कुछ भी किया था और शकील से कड़ी टक्कर के बावजूद उसे खुश करने की तमाम कोशिशें की थीं, उसके बाद यह बात उसे बहुत चुभ गई। अब पूरी तरह से अलग होने का समय आ गया था। जैसे ही सलेम अपनी भागने की योजना को अंतिम रूप देने लगा, उसने अपनी योजना में एक बदलाव किया। अपने और समीरा के लिए एक नकली पासपोर्ट बनवाने के साथ-साथ, उसने मोनिका के लिए भी एक दूसरा पासपोर्ट बनवाने का इंतज़ाम कर लिया।

योजना यह थी कि पत्नी और बेटे को अपने आगे भेज दिया जाए। सलेम दुबई में अपने बाकी काम निपटाकर उनके साथ आ जाएगा। हैदराबाद से मंगवाए गए समीरा के पासपोर्ट पर नेहा आसिफ जाफरी का नाम लिखा था, जबकि उसके पासपोर्ट पर बिल्कुल अलग नाम रामिल कामिल मलिक लिखा था। और चूँकि वह मोनिका को साथ लेकर यात्रा करना चाहता था, इसलिए उसने मोनिका के पासपोर्ट पर भी मिलता-जुलता नाम लिखवा दिया, सना कामिल मलिक।

यह उचित ही लगा कि पत्नी का नाम उसके पति के नाम के समान हो।
सलेम ने समीरा के लिए कई फ़र्ज़ी पासपोर्ट बनवाए होंगे, लेकिन उसने कभी किसी का इस्तेमाल नहीं किया। वह सबीना आज़मी के उसी भारतीय पासपोर्ट पर अमेरिका गई थी, जो लखनऊ से जारी किया गया था और जिसका इस्तेमाल उसने 1993 में दिल्ली से भागकर दुबई में सलेम से मिलने के लिए किया था। समीरा सितंबर 1999 में जॉर्जिया के ग्विनेट काउंटी पहुँची और सलेम द्वारा उसके लिए खरीदे गए एक घर में रहने लगी। जॉर्जिया में, वह सबीना आज़मी के नाम से जानी जाती थी, अकील आज़मी की पत्नी। उसके बेटे का नाम आमिर आज़मी था। आखिरकार, उसे लगा कि उसे अपनी ज़िंदगी नए सिरे से शुरू करने का मौका मिल गया है।

Machine Translated by Google

अठारह

Machine Translated by Google

एक स्टारलेट का उदय

माफिया डॉन, आमतौर पर, एक रात के रिश्ते और छोटे-मोटे अफेयर्स के ज़्यादा पक्षधर होते हैं, और गंभीर रिश्ते के बारे में शायद ही कभी सोचते हैं। लेकिन सलेम ने मोनिका के साथ वर्जित क्षेत्र में कदम रखा। सलेम के आस-पास के सभी लोग, खासकर खुद सलेम, इस घटनाक्रम से हैरान थे।

उसने फिल्म जगत की कुछ सबसे खूबसूरत अभिनेत्रियों के साथ संबंध बनाए थे, जिनमें एक बड़ी सुंदरी भी शामिल थी। लेकिन मोनिका अलग थी। उसने न तो सौंदर्य प्रतियोगिताओं में कोई ताज जीता था, न ही वह फिल्मों में शीर्ष स्थान की दावेदार थी। लेकिन उसमें कुछ ऐसा था जो उसे लुभाता था। कुछ ऐसा जो उसने फिल्म जगत की 'प्लास्टिक' हसीनाओं में नहीं देखा था।

सलेम उससे शादी करके उसे अपने साथ अमेरिका ले जाना चाहता था। लेकिन उससे पहले, वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मोनिका भारतीय अभिनेत्रियों की शीर्ष श्रेणी में पहुँच जाए। उसे लगता था कि एक बार सफल अभिनेत्री बन जाने के बाद, वह सलेम की आभारी रहेगी और शादी के प्रस्ताव को ठुकराएगी नहीं। यह निश्चित रूप से जानना असंभव है कि कितने लोगों को सलेम के फ़ोन आए और उनमें से कौन उसकी माँगों पर सहमत हुआ, लेकिन मोनिका को उसका पहला बड़ा ब्रेक ज़रूर मिला—जिसका वह जीवन भर इंतज़ार कर रही थी।

राजकुमार संतोषी द्वारा लिखित और अंदलीब सुल्तानपुरी द्वारा निर्देशित यह फिल्म "जानम समझा करो" अप्रैल 1999 में रिलीज़ हुई थी। इसमें सलमान खान और उर्मिला मातोंडकर जैसे बड़े सितारे शामिल थे। हालाँकि मोनिका को फिल्म में दूसरी मुख्य भूमिका के लिए चुना गया था और उन्हें सलमान के साथ जोड़ा गया था, लेकिन उनका किरदार बहुत छोटा था।

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उसे केवल सलेम को खुश करने और उसकी धमकी भरी कॉल से बचने के लिए ही एक पलक झपकते ही भूमिका में रखा गया था।

लेकिन मोनिका को वो मिल गया जो वो चाहती थी—घटिया बैनर और बी-ग्रेड एक्टर्स से उठकर सलमान खान के साथ स्क्रीन शेयर करने तक। उसे यकीन था कि इससे उसके भविष्य की संभावनाएँ बेहतर होंगी। लेकिन सलेम फिल्म और उसमें मोनिका की भूमिका से निराश था। उसे पता था कि मोनिका को स्टार बनाने का काम अभी खत्म नहीं हुआ है।

मोनिका के लिए उन्हें जो अगला बड़ा प्रोजेक्ट मिला वह डेविड धवन द्वारा निर्देशित जोड़ी नंबर 1 थी, जिसमें संजय दत्त, गोविंदा और ट्विंकल खन्ना जैसे शीर्ष कलाकार थे।
विडंबना यह है कि मोनिका को संजय के साथ जोड़ा गया, जिन्हें गोविंदा से ज़्यादा तरजीह दी गई थी। हालाँकि, माना जाता है कि संजय अपनी प्रेमिका की कास्टिंग से बहुत नाराज़ थे। उन्होंने विरोध किया कि अगर गोविंदा को ट्विंकल जैसी टॉप स्टार मिल सकती है, तो उन्हें मोनिका बेदी जैसी बी-ग्रेड स्टार के साथ काम करने के लिए कैसे कहा गया?

उन्होंने फिल्म छोड़ने पर विचार किया, लेकिन एक फोन कॉल ने उनका मन बदल दिया।
संजय को साफ़-साफ़ कह दिया गया था कि उनके पास मोनिका के साथ काम करने के अलावा कोई चारा नहीं है और उनसे मोनिका के प्रति सम्मान की उम्मीद की जाती थी—इतना कि रोमांटिक दृश्यों के दौरान उन्हें मोनिका को ज़्यादा कसकर पकड़ना भी नहीं था। सलेम की यह सिहरन पैदा करने वाली चेतावनी सेट पर मौजूद सभी लोगों को चौकन्ना कर देने के लिए काफ़ी थी। नतीजा यह हुआ कि पूरी फिल्म में संजय और मोनिका एक-दूसरे को प्यार से देखते तक नहीं थे, शारीरिक केमिस्ट्री तो दूर की बात थी। संजय अब अभिनेत्री मोनिका के साथ काम नहीं कर रहे थे; वह अपनी भाभी मोनिका के साथ काम कर रहे थे। संजय-गोविंदा की हास्य जोड़ी और बाज़ार में धवन की पकड़ के दम पर फिल्म ने औसत कारोबार किया।

लेकिन मोनिका के लिए चीज़ें सुधरने लगी थीं। उसके साथ सम्मान से पेश आया जा रहा था और हर कोई उसे खुश रखना चाहता था। वह अपने नए सम्मान का आनंद लेने लगी थी और उसकी चमक में डूबी हुई थी। वह सुपरहिट अभिनेत्री बनने के और भी करीब आ गई थी।

Machine Translated by Google

बनने का हमेशा सपना देखा था।

जल्द ही, सलेम ने इंडस्ट्री के सबसे प्रतिष्ठित निर्देशकों में से एक, राजीव राय से संपर्क साध लिया और उन्हें अपनी अगली फिल्म के लिए मोनिका को साइन करने के लिए मजबूर कर दिया। राय ने सनी देओल, नसीरुद्दीन शाह, माधुरी दीक्षित और जैकी श्रॉफ के साथ त्रिदेव और अक्षय कुमार और सुनील शेट्टी के साथ मोहरा जैसी हिट फ़िल्में बनाई थीं। इंडस्ट्री में एक बड़ा नाम माने जाने वाले राय, कीर्ति रेड्डी, सुनील शेट्टी और अर्जुन रामपाल के साथ प्यार इश्क मोहब्बत बनाने की तैयारी में थे ।

किसी और मुख्य अभिनेत्री के लिए कोई गुंजाइश नहीं थी। लेकिन सलेम ने जुलाई 1997 में एक बार राय को धमकी दी थी और उन्हें पता था कि वह उन्हें डराने में कामयाब हो गए हैं। राय उनके 'विनम्र सुझाव' को ठुकराने वाले नहीं थे। राय दबाव में झुक गए और उन्हें फिल्म में ले आए, लेकिन इस परियोजना में उनकी रुचि पूरी तरह से खत्म हो गई। सितंबर 2001 में रिलीज़ हुई, प्यार इश्क मोहब्बत बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह पिट गई और राय को इस पर काफी नुकसान हुआ। चूँकि मोनिका की फिल्म में कोई खास भूमिका नहीं थी, इसलिए राय को सलेम की प्रतिक्रिया का डर था और उन्होंने शहर छोड़ना ही बेहतर समझा।

इस बीच, मीडिया को मोनिका के अबू सलेम से संबंधों के चलते भूमिकाओं की भनक लग गई। पत्रकारों ने फिल्म निर्माताओं को मिल रही धमकियों की जाँच शुरू कर दी। जोड़ी नंबर 1 के निर्माताओं ने मोनिका को लेने में किसी भी तरह के दबाव से इनकार किया और राय ने भी। लेकिन अखबारों में खबरें छपने लगी थीं। राय ने तुरंत अपना ठिकाना बदल लिया और अमेरिका चले गए।

राय के अमेरिका प्रवास ने उद्योग जगत को हिलाकर रख दिया, और सलेम में बढ़ते खतरे ने अब उन्हें कार्रवाई के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने सरकार से संपर्क करने और अपनी सुरक्षा की गुहार लगाने का फैसला किया। राज्य सरकार के लिए, यह प्रतिष्ठा का प्रश्न भी बन गया था क्योंकि व्यापारी समुदाय सुरक्षा व्यवस्था में अविश्वास दिखाने लगा था और किसी दूसरे शहर में जाना पसंद कर रहा था।

इस बीच, सलेम को हर जगह मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। उसके बनाए दुश्मनों की भीड़ उसका खून चूसने को आतुर थी। अनीस को उसके देश बदलने की धूर्त योजनाओं के बारे में पता चल गया था, इसलिए उसने दुबई सरकार या सीबीआई अधिकारियों को उसकी मुखबिरी करने की योजना बनानी शुरू कर दी थी, जबकि शकील पहले मौके पर उसे मार डालने की ताक में था। कंपनी में उसके दूसरे विरोधियों ने भी उसकी बुराई शुरू कर दी थी। सीबीआई और आईबी ने उसके प्रत्यर्पण के लिए अपनी कोशिशें तेज़ कर दी थीं और उसकी हर हरकत पर नज़र रख रही थी। सलेम को लग रहा था कि उसके दुश्मन उस पर टूट पड़ने वाले हैं।

सलेम ने मोनिका को तुरंत मुंबई छोड़कर दुबई जाने को कहा। वह इस अचानक जाने के लिए तैयार नहीं थी, खासकर जब उसके करियर में अभी-अभी सुधार के संकेत दिखाई दे रहे थे। काफी सोच-विचार के बाद, सलेम ने आखिरकार एक बड़ा धमाका किया: या तो अभी सुरक्षित स्थानों पर चली जाए या फिर जेल में ज़िंदगी गुज़ार दे।

सलेम को पता चल गया था कि मोनिका पुलिस के शक के घेरे में आती जा रही है। वे बस किसी सबूत का इंतज़ार कर रहे थे ताकि उस पर सलेम के साथ मिलीभगत का आरोप लगाकर उस पर शिकंजा कसा जा सके। मोनिका के लिए बस इतना ही काफी था। उसने फैसला किया कि वह भाग जाएगी। भारी मन से, वह उस चमक-दमक वाले शहर से चली गई, उसके स्टार बनने के सपने बेरहमी से चूर हो गए।

Machine Translated by Google

उन्नीस

Machine Translated by Google

दक्षिण अफ्रीका में सलेम

अक्टूबर 1999 में, दोनों हमेशा के लिए दुबई छोड़ गए। सलेम नहीं चाहता था कि अनीस को उसके भागने की योजना की भनक लगे, क्योंकि वह सीबीआई को उसकी पोल खोल सकता था। सलेम एक घोषित अपराधी था और सीरियल ब्लास्ट मामले में आरोपी था, और अगर पता चल जाता तो उसे विदेश में गिरफ्तार कर लिया जाता। उसे दुबई से चुपके से भागने की ज़रूरत थी, मानो कोई चोर किसी अमीर आदमी का लॉकर खाली करके भाग रहा हो।

सिलसिलेवार बम विस्फोटों के बाद के दिनों में मुंबई में अपने अनुभव से सलेम जानता था कि कानून प्रवर्तकों से बच निकलने की अच्छी योजना हमेशा वह होती है जिसमें यह भविष्यवाणी करना पूरी तरह असंभव हो कि उसका रास्ता किस दिशा में मुड़ेगा।

हैदराबाद में जाली पासपोर्ट बनवाने के बाद, सलेम ने भोपाल में भी जाली पासपोर्ट बनवाए। उसके पासपोर्ट पर दानिश बेग का नाम था, जबकि समीरा का नाम रुबीना बेग था। मोनिका फौज़िया उस्मान के नाम से यात्रा करती थी। अलग-अलग पहचानों के ढेर के पीछे मकसद यह सुनिश्चित करना था कि अचानक ज़रूरत पड़ने पर वे हमेशा किसी और के रूप में तैयार रहें।

और इसी तरीके से सलेम और मोनिका ने अपनी दुनिया की सैर शुरू की, कुछ हताशा में, कुछ आनंद के लिए। सलेम एक सुरक्षित जगह की तलाश में था जो उसके नए ठिकाने का भी काम कर सके। साथ ही, वह यह भी सुनिश्चित करना चाहता था कि अनीस इब्राहिम के शिकारी कुत्ते उसे ढूँढ़ न पाएँ। वह एक आलीशान ज़िंदगी भी चाहता था। सलेम के लिए यह हमेशा बहुत ज़रूरी था। वह बेहतरीन कारों में घूमना चाहता था, बेहतरीन रेस्टोरेंट में खाना खाना चाहता था, बेहतरीन घर में रहना चाहता था, बेहतरीन बाथरूम में नहाना चाहता था और पैसों से खरीदे जा सकने वाले बेहतरीन बिस्तर पर प्यार करना चाहता था।

नए ठिकाने की तलाश में, एशिया पूरी तरह से वर्जित क्षेत्र था। मध्य पूर्व और पाकिस्तान डी-कंपनी का इलाका था। इसके अलावा, बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल तो दूर की बात थी। दक्षिण पूर्व एशिया की बात करें तो कंबोडिया छोटा राजन का मुख्यालय था और उसके आस-पास भी जाना बेवकूफी होगी। रेनबो नेशन उनकी पहली पसंद होगा।

सलेम पहले कभी अफ्रीका नहीं गया था, इसलिए इस यात्रा में अनिश्चितता और उत्साह का एक संक्रामक भाव था। मोनिका भी एक नए देश की यात्रा को लेकर उत्साहित लग रही थी। उन्होंने जोहान्सबर्ग और केप टाउन में खूब यात्रा की। सलेम इस बात से रोमांचित था कि ये दोनों शहर एक ओर तो इतने आधुनिक और उन्नत लग रहे थे, वहीं दूसरी ओर इतनी गरीबी थी कि उसे अपने घर की याद आ गई। समय के साथ, इस भगोड़े गैंगस्टर ने अपने पंख फैलाए और पूरे अफ्रीका की यात्रा की, और केन्या की राजधानी नैरोबी में भी कुछ समय बिताया।

लेकिन, छह महीने तक महाद्वीप में इधर-उधर घूमने के बाद, वे बसने के लिए कोई जगह तय नहीं कर पा रहे थे। वे जिन शहरों में गए, उन सभी का अपना आकर्षण था, लेकिन हमेशा कोई न कोई समस्या रहती थी। अगर वे स्थानीय भारतीय लोगों के साथ घुल-मिल नहीं पाते, तो उन्हें सलेम के ऊँचे मानकों के अनुरूप घर नहीं मिल पाता। दूसरी जगहों पर, स्थानीय लोगों ने मोनिका को पहचान लिया और ऐसा करके, उनकी पोल खुल गई। आधे साल बाद, सफारी खत्म हो गई और अब समय आ गया था कि डेरा डालने के लिए एक नए महाद्वीप की तलाश की जाए।

इस बीच, सलेम उन महीनों की गिनती कर रहा था जब से उसने आखिरी बार पैसा कमाया था। उसके आखिरी अच्छे दिन दुबई में बीते थे। वह अपनी घटती आर्थिक स्थिति को लेकर लगातार चिंतित होता जा रहा था, तभी अचानक एक ऐसी अप्रत्याशित धनराशि मिली जिसने न केवल उसकी आर्थिक स्थिति को स्थिर किया, बल्कि उसे ज़िंदगी के कुछ सबक भी सिखाए। अपराध जगत में बिताए डेढ़ दशक में, सलेम को लगा कि उसने सब कुछ देख लिया है। लेकिन यह विश्वासघात अब तक का सबसे घिनौना विश्वासघात था जो उसने कभी देखा था।

Machine Translated by Google

मिल्टन प्लास्टिक्स उपभोक्ता उत्पादों का एक प्रतिष्ठित ब्रांड था, जिसका पारिवारिक व्यवसाय चिरंजीव वघानी चलाते थे। चिरंजीव के बड़े भाई ने अमेरिका से सलेम को फ़ोन किया और उसे चिरंजीव का अपहरण करने के लिए कहा। सलेम को मिल्टन प्लास्टिक्स के निदेशक से कोई ख़ास लगाव नहीं था, न ही वह उनके प्रति कोई वफ़ादारी रखता था, लेकिन अपने गाँव में, सलेम को यही सिखाया गया था कि छोटा भाई हमेशा आँखों का तारा होता है।

और इधर वघानी उसे फ़ोन कर रहा था और उसके छोटे भाई का अपहरण करने के लिए पैसे की पेशकश कर रहा था। बड़े वघानी ने सलेम को चिरंजीव की सकुशल वापसी के लिए 25 करोड़ रुपये की फिरौती माँगने को कहा था। यह गैंगस्टर बबलू श्रीवास्तव का इलाका था, और इसके अलावा, हाई-प्रोफाइल अपहरण सलेम का कभी शौक़ नहीं रहा था। लेकिन बड़े वघानी भाई को सलेम और मुंबई में उसके रसूख पर इतना भरोसा था कि उसने उसे यह काम दे दिया। प्रस्तावित पैसा आकर्षक था। और यह भी कि उसे यह काम करने के लिए कहा जा रहा था, जबकि वह दुबई से भागा था। माँग में होने जैसा कुछ नहीं होता।

17 फ़रवरी 2000 को, सलेम के चार आदमी चिरंजीव के आलीशान मालाबार हिल स्थित घर पहुँचे और उसे उठा ले गए। यह एक आसान काम था। चिरंजीव तीन दिनों तक अपने आदमियों की हिरासत में रहा और उसके परिवार को सूचित किया गया कि उसकी सुरक्षित वापसी की कीमत 25 करोड़ रुपये है। इस बीच, मुंबई पुलिस, जिसे अक्सर (खुद ही) पूर्व का स्कॉटलैंड यार्ड कहा जाता था, बेखबर रही। न तो उन्हें और न ही सीबीआई को प्लास्टिक उद्योग के इस दिग्गज के ठिकाने के बारे में कोई सुराग मिला। और हालाँकि चिरंजीव के पाँच और भाई थे, जो सभी बहुत अमीर थे और जिनका अच्छा-खासा रसूख था, फिर भी कोई यह पता नहीं लगा सका कि उसका अपहरण किसने किया था।

आखिरकार, तीन दिन बाद, फिरौती की रकम चुकाने के बाद चिरंजीव को सुरक्षित घर लौटने दिया गया। उस समय महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री छगन भुजबल ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की और मीडिया के सामने बेबाकी से कहा कि चिरंजीव के अपहरण के लिए छह वघानी भाइयों में से एक ज़िम्मेदार था। कुछ लोगों का मानना था कि वघानी भाइयों के बीच मामला 2 करोड़ रुपये में तय हुआ था—जो शुरू में माँगी गई 25 करोड़ रुपये की रकम से कहीं ज़्यादा था।

इसके बाद, पुलिस और अन्य जाँच एजेंसियों ने अपहरणकर्ता के फ़ोन के स्रोत का पता लगाने के लिए ताबड़तोड़ कोशिशें कीं। कुछ का मानना था कि यह दुबई से आया होगा, तो कुछ का मानना था कि लंदन से। अंततः, फ़ोन रिकॉर्ड की जाँच और नंबरों का पता लगाने के बाद, पुलिस इस नतीजे पर पहुँची कि कॉल हांगकांग के किसी फ़ोन से की गई थी। इस दौरान, सलेम दक्षिण अफ्रीका में आराम से बैठकर इस ऑपरेशन पर नज़र रख रहा था और यह सुनिश्चित कर रहा था कि यह सुचारू रूप से चले।

बाद की जांच से इस घिनौनी घटना में सलेम की चतुर योजना का पता चला।
पुलिस कमांडो राजेश इग्वे को शार्पशूटर के तौर पर इस्तेमाल करने के अपने दिनों से ही, सलेम जानता था कि किसी भी नए आपराधिक धंधे को पुलिस की मदद की ज़रूरत होती है। वघानी अपहरण में मदद के लिए, सलेम ने संजय शिंदे नाम के एक विवादास्पद पुलिस अधिकारी को शामिल किया था। पूरे ऑपरेशन के दौरान, शिंदे सलेम के संपर्क में रहा और अपहरणकर्ताओं को उसके निर्देश देता रहा।

शिंदे को पता ही नहीं था कि सलेम का फ़ोन क्राइम ब्रांच और पुलिस अधिकारी टैप कर रहे थे। इस खुलासे के बाद, पुलिस विभाग ने शिंदे की बर्खास्तगी का प्रस्ताव रखा, लेकिन चेतावनी देकर उसे छोड़ दिया। इस बीच, सलेम को एक नए क्षेत्र में सफलता मिल गई थी और उसने अपने गंदे कामों के लिए पुलिस अधिकारियों का इस्तेमाल करने की कला में महारत हासिल कर ली थी। अब वह एक कांस्टेबल का इस्तेमाल करने से आगे बढ़कर एक उच्च-स्तरीय अधिकारी को अपना साथी बना चुका था। और वह भी बहुत कम पैसे में।

फिर भी, अपहरण की पूरी प्रक्रिया कितनी भी आसान क्यों न रही हो, गैंगस्टर अभी भी बेचैन था। इस काम ने उसे सिखाया था कि व्यापार की ठंडी दुनिया में कोई सच्चा दोस्त या रिश्तेदार नहीं होता और सिर्फ़ पैसा ही सबसे ज़्यादा मायने रखता है। सचमुच,

Machine Translated by Google

सबसे बड़ा रुपैया.

उसने पहले भी ऐसी घटनाएँ घटित होते देखी थीं। 1997 के अंत में जब उसने बिल्डर ओम प्रकाश कुकरेजा पर हमले का आदेश दिया था, तो सलेम ने अपने दो सबसे भरोसेमंद हत्यारों, सलीम हड्डी और राजेश इग्वे को, उसे उसके ही घर पर मारने के लिए भेजा था।

दोनों के कुकरेजा के अपार्टमेंट में लोडेड हथियारों के साथ घुसने के कुछ ही पल बाद, ओम प्रकाश का छोटा भाई अपने बेडरूम में भाग गया और अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया। सलेम की नज़र में, छोटे भाई ने अपने परिजनों को बचाने, पुलिस को बुलाने या हमलावरों से निपटने के बजाय खुद को बचाना बेहतर समझा। ओम प्रकाश कुकरेजा की दिन-दहाड़े हत्या कर दी गई और किसी ने भी उनकी जान बचाने की कोशिश नहीं की। सलेम को लगा कि दुनिया इसी में बदल गई है। कायरता सर्वोपरि है।

Machine Translated by Google

बीस

Machine Translated by Google

समीरा की सौतन

कोई भी औरत अपने वैवाहिक जीवन में किसी दूसरी औरत को बर्दाश्त नहीं कर सकती । इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि समीरा अपने पति के जीवन में दूसरी औरत, यानी उसकी सौतन, को अपने जीवन का अभिशाप मानती थी। उसे लगता था कि शादी को कायम रखने के लिए उसने बहुत त्याग किए हैं। वह हमेशा से जानती थी कि सलेम को खूबसूरत औरतों, खासकर फिल्मी दुनिया की अभिनेत्रियों के साथ सोने का शौक था, लेकिन उसने उसे अपनी मर्ज़ी से जीने दिया। दरअसल, वह मोनिका और सलेम के बारे में, उनकी बढ़ती नज़दीकियों और उसके करियर को आगे बढ़ाने की उसकी ज़बरदस्त कोशिशों के बारे में जानती थी। लेकिन वह शांत रही और सच्चाई को स्वीकार कर लिया। लेकिन अब, मोनिका समीरा के क्षेत्र में आ चुकी थी।

सलेम जॉर्जिया के फेयेटविले स्थित जैस्मिन कोर्ट स्थित उनके आलीशान घर में बिना बताए, मोनिका के साथ आ धमका था और तीनों के साथ रहने का विचार रखा था। समीरा अब तक सबीना आज़मी के रूप में अपनी नई ज़िंदगी की आदी हो चुकी थी। सलेम ने एक सुपरमार्केट जैसी किराने की दुकान में भारी निवेश किया था ताकि समीरा अपना गुज़ारा कर सके। उसने समीरा और उसके बेटे का गुज़ारा सुनिश्चित करने के लिए 1,70,000 डॉलर (जो रुपयों में लगभग एक करोड़ के बराबर थे) भी ट्रांसफर कर दिए थे। अमेरिका में, उसे लगा कि वह एक आरामदायक और सुरक्षित ज़िंदगी जी सकती है। लेकिन जैसे ही उसने मोनिका को उसके पति के साथ देखा, वह भड़क उठी। दूर से अपने पति की बेवफ़ाई को स्वीकार करना एक बात थी, और अपने घर में रोज़ाना उसका सामना करना दूसरी बात।

समस्या यह थी कि सलेम का ज़्यादातर पैसा समीरा के नाम पर था। दुबई छोड़ने से पहले, गैंगस्टर ने शारजाह स्थित अपने बैंक खाते से जॉर्जिया स्थित समीरा के खातों में पैसे ट्रांसफर करने में बड़ी सावधानी बरती थी। सलेम ने समीरा के नाम पर अमेरिका में भी कुछ प्रॉपर्टी में निवेश किया था। वह जानता था कि कारोबार में ज़्यादा तेज़ी नहीं है, लेकिन इन प्रॉपर्टी की क़ीमत ज़रूर बढ़ेगी। दोनों पति-पत्नी को उम्मीद थी कि समय के साथ उन्हें भारी मुनाफ़ा होगा।

इसलिए उसे समीरा को औपचारिक और कानूनी तौर पर अपनी पत्नी बनाए रखने की ज़रूरत थी। समझौते की शर्तें यह थीं कि सलेम और मोनिका समीरा से दूर रहेंगे, लेकिन मोनिका गैंगस्टर की पत्नी बनी रहेगी। इस समझौते को पक्का करने के लिए, सलेम ने 4 मार्च 2000 को लास वेगास, नेवादा में समीरा के साथ अपनी वैवाहिक प्रतिज्ञाएँ दोहराईं। इसके बाद उसने अपनी विशाल जैस्मीन कोर्ट हवेली बेच दी और समीरा और अपने बेटे के लिए जॉर्जिया के डुलुथ में गैडसन वॉक विला नामक एक साधारण घर खरीद लिया। इसके बाद सलेम शहर छोड़कर शिकागो में बसने की कोशिश में लग गया।

सलेम ने एक समुद्री इंजीनियरिंग कंपनी में रखरखाव प्रबंधक के रूप में गैर-आप्रवासी कार्य वीज़ा प्राप्त किया। फिर उसने व्यवसाय स्थापित करने के लिए कई अन्य पहचानों का इस्तेमाल किया। दुबई में, सलेम की मुलाकात एक कार्यक्रम आयोजक फरहत हुसैन से हुई, जो उसका वित्तीय और व्यावसायिक सलाहकार भी बन गया। फरहत ने उसे शिकागो में एक दो-स्क्रीन वाला फिल्म थिएटर खरीदने की सलाह दी, जिसमें केवल भारतीय और पाकिस्तानी फिल्में ही दिखाई जाएँ। चूँकि शिकागो में बहुत सारे एशियाई लोग रहते थे, इसलिए फिल्म थिएटर व्यवसाय बहुत लाभदायक होने की उम्मीद थी।

सलेम ने तुरंत "एरियन इंटरनेशनल" नाम से एक कंपनी शुरू की, जो बॉलीवुड फिल्मों के विदेशी अधिकारों का सौदा करती थी और पूरे अमेरिका में कार्यक्रम आयोजित करती थी। इसी कंपनी के तत्वावधान में, सलेम ने "दा प्लेन" नाम से एक दो स्क्रीन वाला थिएटर खरीदा।

इस बीच, अपनी निजी ज़िंदगी को व्यवस्थित करने के बाद, सलेम ने अपना ध्यान फिर से व्यावसायिक पहलुओं पर केंद्रित करना शुरू कर दिया। उन्हें इस बात से बड़ी राहत मिली कि उस समय उनके स्थानांतरण और दुबई से बेपरवाही से निकलने के बावजूद, उनके प्रभाव पर ज़रा भी असर नहीं पड़ा था। जब भी हिंदी फ़िल्म जगत के लोग अपनी फ़िल्मों की शूटिंग के लिए अमेरिका आते थे, तो वे उनसे नियमित रूप से मिलते थे।

Machine Translated by Google

फ़िल्में या शो में परफ़ॉर्मेंस। उन्होंने उन्हें इकट्ठा करना भी शुरू कर दिया और अपने शो भी आयोजित किए। एरियन इंटरनेशनल ने बिज़नेस का काम संभाला। फ़रहत हुसैन ने सलेम की बहुत मदद की। कुछ ही समय में कैश रजिस्टर फिर से बजने लगे। एक बार फिर, उन्होंने कैप्टन उपनाम का इस्तेमाल शुरू कर दिया।

उद्योग जगत के कई बड़े नाम नियमित रूप से उनके दर्शन करने आते थे और उनके साथ पैसे खर्च करने और अपना मुनाफ़ा बाँटने में बेहद खुश रहते थे। अगले डेढ़ साल तक, जीवन बेहद संतोषजनक और सुखद रहा। सलेम के जीवन में एक चलन सा चल रहा था कि कुछ भी ज़्यादा देर तक नहीं टिकता था। और अमेरिका में बसने के बाद, यह सोचना शायद उनके लिए थोड़ा नासमझी थी कि ऐसा घरेलू सुख हमेशा के लिए रहेगा। लेकिन जीवन के एक छोटे से पल के लिए, उन्हें लगा कि वे सचमुच स्थिर हो गए हैं। इसमें कुछ समय लगा था और कुछ खुरदुरे किनारे थे जिन्हें ठीक करने की ज़रूरत थी, लेकिन लंबे समय में पहली बार वे वास्तव में सहज थे।

इस अवधि के दौरान, उन्होंने अपना बहुत सारा धन दुबई से अमेरिका स्थानांतरित कर दिया।
सीबीआई को अपनी जाँच (एफबीआई के साथ मिलकर) में 9/11 से पहले अमेरिका में सलेम के सौदों और पैसों के लेन-देन की बारीक जानकारी मिली। सीबीआई के एक अति-गोपनीय दस्तावेज़ के अनुसार, 1 अक्टूबर 2001 को, एक रियल एस्टेट मूल्यांकनकर्ता, बकहेड एडवाइजरी ग्रुप लिमिटेड ने सलेम की अचल संपत्ति का मूल्य 1,325,000 डॉलर (लगभग 6.5 करोड़ रुपये) आंका था। जॉर्जिया के जे. माइकल स्मिथ द्वारा किए गए इस मूल्यांकन ने एफबीआई को चौंका दिया।

सलेम के पास अमेरिका में पाँच अपार्टमेंट, एक सिनेमाघर और कुछ पेट्रोल पंप थे। वह मध्य पूर्व में एक ऑटोमोबाइल और टायर कंपनी चलाता था। ये संपत्तियाँ मुख्यतः सलेम की कंपनी, एरियन इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड के नाम पर थीं।

जनवरी 2000 में, कराची के तारिक रोड स्थित कमर्शियल एरिया निवासी, अरसलान मोहसिन अली के रूप में, उन्होंने शारजाह स्थित अपने स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक खाते से संयुक्त राज्य अमेरिका के वाकोविया बैंक में $115,000 जमा किए। तीन महीने के भीतर, अप्रैल 2000 में, वाकोविया बैंक खाते से $200,000, इलिनोइस के शॉम्बर्ग स्थित लासेल बैंक के एक खाते में भेज दिए गए। जून 2000 में, उन्होंने शिकागो स्थित सिटी बैंक के एक खाते में $15,000 और जमा किए।

सीबीआई अधिकारियों को शक था कि सलेम ने पैसे इधर-उधर करने के लिए मोनिका के खाते का भी इस्तेमाल किया था। जुलाई 2000 में, ईस्टवुड कोर्ट, शॉम्बर्ग, इलिनोइस निवासी मोनिका बेदी के सैन एंटोनियो, टेक्सास स्थित सिटीकॉर्प खाते में 575,282 डॉलर (2.6 करोड़ रुपये) जमा थे।

सलेम के दुबई स्थित बैंक खाते से पता चला कि अक्टूबर 2000 में उसके खाते में 176.675 करोड़ रुपये शेष थे।

सलेम के अलावा, सीबीआई ने मोनिका के लेन-देन भी दर्ज किए। ये सलेम के मुक़ाबले काफ़ी छोटे थे, लेकिन फिर भी दिलचस्प थे।

सितंबर 2001 में, मोनिका ने अंधेरी स्थित अपने केनरा बैंक खाते से 49,000 रुपये के कई लेन-देन किए, जो केवल नॉर्वे में उसके माता-पिता ही ले सकते थे। क्रेडिट कासेन बैंक, नॉर्वे के माध्यम से लेन-देन के लिए एक पारिवारिक संपर्क, बृज अरोड़ा का इस्तेमाल किया गया था। उस दौरान, उसने रमेश कुमार और मोनिका बेदी के स्वामित्व वाला एक संयुक्त खाता भी चलाया। मुंबई के जुहू-वर्सोवा लिंक रोड स्थित एचडीएफसी बैंक के खाते में 15 लाख रुपये शेष थे। मोनिका बेदी के साथ संयुक्त खाताधारक - रमेश कुमार - की पहचान सीबीआई अधिकारियों के लिए एक रहस्य बनी हुई है।

एक वरिष्ठ अधिकारी का मानना है कि सलेम ने ही रमेश कुमार का भेष धारण किया था क्योंकि वह अपने वित्तीय मामलों को अपने नियंत्रण में रखना चाहता था और मोनिका को अपने पैसों तक पूरी पहुँच नहीं देना चाहता था। इस बात में कुछ दम है क्योंकि सीबीआई ने अपनी फाइलों में यह भी दर्ज किया है कि बी. रमेश कुमार और उनकी पत्नी मोनिका बेदी के लिए जर्मन वीज़ा के लिए जर्मन वाणिज्य दूतावास में एक आवेदन जमा किया गया था।

संयोगवश, यह सलेम का हिंदू पहचान पाने का पहला प्रयास था।

Machine Translated by Google

शकील, अनीस, दाऊद और उनके तमाम गुंडों से दूर, और अपनी आर्थिक स्थिति मज़बूत होने के बाद, सलेम को लगने लगा था कि वह आखिरकार मोनिका के साथ एक शांतिपूर्ण और स्थिर जीवन बनाने की राह पर है। हालाँकि, एक आदमी चुपचाप उन पर नज़र रख रहा था। वे भले ही विरोधियों और विरोधियों की तीखी नज़रों से बच गए हों, लेकिन सलेम और मोनिका नई दिल्ली में सीबीआई के संयुक्त निदेशक नीरज कुमार की नज़र से बच नहीं सकते थे। उन्हें एक ख़ुफ़िया जानकारी मिली थी कि सलेम अमेरिका में अपना ठिकाना बनाने की कोशिश कर रहा है।

नीरज कुमार ने एफबीआई में अपने समकक्ष से संपर्क किया, लेकिन उन्हें निराशा हुई जब एफबीआई अधिकारी ने सुराग हासिल करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। कुमार को एफबीआई अधिकारी से जो जवाब मिला, वह उन्हें कभी नहीं भूलेगा।

उनसे पूछा गया, 'क्या यह आदमी अल-कायदा का है?'

अमेरिका ने अल-क़ायदा के ख़िलाफ़ आतंकवाद के ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा अभी तक नहीं की थी, लेकिन अगस्त 1998 में दार-ए-सलाम, तंज़ानिया और नैरोबी में अमेरिकी दूतावासों पर हुए हमलों और हाल ही में 12 अक्टूबर 2000 को यूएसएस कोल पर हुए फ़िदायीन हमले जैसी हालिया घटनाओं ने इस आतंकवादी संगठन को पहले ही अपनी हिट लिस्ट में डाल दिया था। अमेरिकी जाँच एजेंसियों को दुनिया भर में सिर्फ़ अल-क़ायदा के गुर्गों की तलाश करने के लिए प्रोग्राम किया गया था।

11 सितंबर 2001 को, दुनिया बदल गई। उस मनहूस मंगलवार की सुबह, सलेम काफी जल्दी उठा और एक उबासी और खिंचाव के साथ टीवी चालू किया। चैनलों के बीच से गुज़रते हुए, उसने देखा कि हर चैनल पर एक ही तस्वीर प्रसारित हो रही थी। दो प्रतिष्ठित मोनोलिथ, एक धूसर-सफ़ेद धब्बा उनकी ओर बढ़ रहा था। एक विस्फोट। सदमा। उसने चैनल बदले यह देखने के लिए कि क्या वह कल्पना कर रहा है, लेकिन सभी समाचार चैनलों पर एक ही क्लिप बार-बार आ रही थी।

आने वाले दिनों में शिकागो की खौफ़ से भरी सड़कों पर चलते हुए, सलेम को यह अहसास हो रहा था कि कोई उसे देख रहा है, या यूँ कहें कि घूर रहा है। मुस्लिम विरोधी भावना पूरी तरह से पागलपन में बदल चुकी थी। आप्रवासियों, खासकर हाल ही में आए आप्रवासियों को निशाना बनाया जा रहा था। मुसलमानों की दुकानों में तोड़फोड़ की जा रही थी, 'रैगहेड' शब्द 'निगर' जितना बड़ा नस्लीय गाली बन गया था और यहाँ तक कि पगड़ीधारी सिखों को भी सड़कों पर पीटा जा रहा था।

सलेम सभी एशियाई या एशियाई दिखने वाले लोगों की दुर्दशा से ज़्यादा अपने ऊपर हमले की आशंका से घबराया हुआ था। उसे यह भी पता था कि अगर उसे किसी अमेरिकी अस्पताल में भर्ती कराया गया, तो उसकी पृष्ठभूमि की जाँच हो सकती है और फिर पता चल सकता है कि वह अरसलान अली नहीं, बल्कि अबू सलेम है—जो 1993 के मुंबई बम धमाकों के आरोपियों में से एक है।

एफबीआई, सीआईए और अन्य जाँच एजेंसियों के सदस्यों द्वारा बार-बार किए जाने वाले दौरे और पूछताछ भी उसे परेशान कर रही थी। पैसा अब ढाल नहीं बन सकता था। नस्लीय भेदभाव, बेतरतीब हिंसा और मानसिक व्यामोह के माहौल में, वह उस देश में अपनी और मोनिका की सुरक्षा को किसी भी तरह से खतरे में डालने को तैयार नहीं था।

कुछ ही सप्ताहों में सलेम ने अपना मन बना लिया।

'सामान पैक करना शुरू

करो।' सलेम के मुँह से ये शब्द निकलते ही मोनिका समझ गई कि वह ऐसा क्यों कह रहा है। हालाँकि वह अमेरिका में ऐशो-आराम की ज़िंदगी जी रही थी और वहाँ बहुत सहज महसूस कर रही थी, फिर भी वह जानती थी कि अब वे वहाँ और नहीं रुक सकते। 9/11 के कुछ ही हफ़्तों बाद, सलेम और उसकी प्रेमिका शिकागो के ओ'हारे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से पहली उड़ान में सवार होकर पूर्व की ओर चल पड़े।

सलेम हमेशा से ही बहुत ही अनुकूलनशील रहा था। वह बदलाव की उपज बनकर ही जीता था। आज़मगढ़ से मुंबई, दुबई से अमेरिका तक। इसलिए, यह नया बदलाव उसके लिए ज़्यादा परेशान करने वाला नहीं था। उसे मोनिका की चिंता थी और बेशक, अपने पूर्व सहकर्मियों, दोस्तों और नियोक्ताओं से ख़तरा भी। लेकिन उसने सोचा कि इन सब पर सोचने का समय नहीं है, क्योंकि वह दुनिया के नक्शे पर एक और नज़र डालने लगा था।

Machine Translated by Google

11 सितंबर के हमलों के बाद, सिर्फ़ अमेरिका ही नहीं, बल्कि यूरोप भी हाई अलर्ट पर था। साथ ही, यह अंदाज़ा लगाते हुए कि सीबीआई उसे पकड़ने के लिए पूरे महाद्वीप में अपने लोगों को तैनात कर देगी, सलेम पहले ओस्लो पहुँचा और अपने सास-ससुर के साथ छह हफ़्ते बिताए। फिर उसने एक और ठिकाना ढूँढ़ने की योजना बनानी शुरू कर दी।

Machine Translated by Google

इक्कीस

Machine Translated by Google

सलेम निगरानी में

अपनी तमाम कल्पनाओं में, सलेम ने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन ऐसा आएगा जब वह बॉलीवुड का निर्विवाद शाह बनकर राज करेगा। उसके आतंक का राज इतना व्यापक था कि इंडस्ट्री का एक भी ऐसा पेशेवर नहीं था जिसे उसने धमकाया या धमकाया न हो या जिसे पैसे या व्यावसायिक हिस्सेदारी देने के लिए मजबूर न किया गया हो।

गैंगस्टर ने लगभग सभी को धमकाया और उनसे वसूली की थी—बड़े फिल्म निर्देशकों, निर्माताओं, अभिनेताओं, वितरकों तक को। यहाँ तक कि मामूली वेतन पाने वाले कैमरामैन या फोटोग्राफी निर्देशक को भी नहीं बख्शा जाता था और उसे शांति पाने के लिए लगभग पाँच लाख रुपये खर्च करने पड़ते थे।

जब दिल्ली पुलिस ने कई फ़ोनों को इलेक्ट्रॉनिक निगरानी में रखा, तो कुछ सनसनीखेज खुलासे हुए। नवंबर 1998 में, दाऊद के कथित सरगना रोमेश शर्मा के फ़ोन कॉल्स सुनने के बाद, दिल्ली पुलिस को उसके अबू सलेम से संबंधों का पता चला।

पुलिस ने अगस्त 1998 से शर्मा के फोन कॉल रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया था और शुरुआत में उन्हें अपनी गर्लफ्रेंड और उन लोगों के साथ बातचीत करते हुए पाया गया, जिनके सामने वह अपने राजनीतिक संपर्कों के बारे में शेखी बघार रहा था।

पुलिस को सबसे अहम कामयाबी तब मिली जब उन्होंने एक ख़ास फ़ोन को टैप करना शुरू किया, जिसका इस्तेमाल गुप्त रूप से किया जाता था और यह नंबर शायद बहुत कम लोगों को ही पता था। शर्मा इसी नंबर से दुबई में अंडरवर्ल्ड के अपने दोस्तों को फ़ोन करता था। पुलिस शर्मा और अनीस इब्राहिम यानी सलेम के बीच हुई पचास से ज़्यादा बातचीत रिकॉर्ड करने में कामयाब रही।

तीन महीने की टैपिंग के दौरान पुलिस ने शर्मा और सलेम को आसन्न चुनावों के लिए नकदी इकट्ठा करने, जेल में गैंगस्टर बबलू श्रीवास्तव की हत्या की योजना बनाने और अभिनेत्री मनीषा कोइराला से पैसे वसूलने के सलेम के प्रयासों के बारे में चर्चा करते सुना।

यह टैपिंग तब तक जारी रही जब तक पुलिस ने शर्मा के खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं जुटा लिए और अंततः 20 अक्टूबर 1998 को उसे गिरफ्तार कर लिया। सलेम और शर्मा के बीच बातचीत के टेप से संकेत मिलता है कि शर्मा की नई नवेली पार्टी, अखिल भारतीय भारतीय कांग्रेस पार्टी, विधानसभा चुनावों के दौरान उड़ान भरने के लिए तैयार थी।

हालाँकि, शर्मा को नकदी की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा था और उन्हें अपने अभियान के लिए धन जुटाने हेतु सलेम की आवश्यकता थी।

निम्नलिखित बातचीत 18 अक्टूबर को हुई, मुश्किल से दो दिन पहले
शर्मा की गिरफ्तारी:

शर्मा: 'तंगी है। मुझे सत्तर उम्मीदवार लगाने हैं। साठ करोड़ चाहिए। '

सलेम: 'नहीं, नहीं, पर तुम बात कर लेना।' (नहीं, नहीं, लेकिन आप इस बारे में [बॉस से] बात करें।)

शायद, सलेम चाहता था कि शर्मा इस मुद्दे पर अनीस से बात करें। दिल्ली पुलिस के लिए, शर्मा के सलेम गिरोह से संबंधों की पुष्टि करने वाली सबसे ठोस खुफिया जानकारी 1 अक्टूबर को हुई बातचीत में सामने आई। सलेम, शर्मा को मनीषा कोइराला से पैसे ऐंठने की अपनी कोशिश के बारे में बताने के लिए फ़ोन कर रहा था।

संयोग से, मुंबई पुलिस को पहले ही धमकी भरे कॉल आने की शिकायत मिल चुकी थी और वे जाँच कर रहे थे। लेकिन उन्हें पहला सुराग दिल्ली स्थित पुलिस से मिला।

Machine Translated by Google

सलेम: 'मैंने फोन किया था मनीषा कोइराला को। वो मिले नहीं. मैने कल चार-पांच लड़के भेजे। उसके ड्राइवर और चौकीदार को पीट दिया।' (मैंने मनीषा कोइराला को फोन किया, लेकिन वह वहां नहीं थी। मैंने चार-पांच लड़कों को उसके घर भेजा। उन्होंने उसके ड्राइवर और गार्ड की पिटाई की।)

सलेम शर्मा को दिल्ली और उसके आसपास होने वाली बड़ी हत्याओं की जानकारी भी देता था। उदाहरण के लिए, सलेम ने शर्मा को बताया कि वे इलाहाबाद की नैनी जेल में श्रीवास्तव की हत्या की योजना बना रहे थे। सलेम ने शर्मा को बताया कि यह नेपाल में मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या का बदला लेने के लिए की गई एक बदले की कार्रवाई थी। मिर्ज़ा की हत्या छोटा राजन और श्रीवास्तव ने 29 जून 1998 को काठमांडू में की थी।

हालाँकि, शर्मा ने सलेम को भरोसा दिलाया कि उसे चिंता करने की ज़रूरत नहीं है और न ही श्रीवास्तव को मारने के लिए अपने आदमी भेजने की। उसकी मौत उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा एक फ़र्ज़ी मुठभेड़ में कर दी जाएगी।

सलेम ने कहा, 'एक दूसरा काम होने वाला है। उसका नाम बताऊंगा.' (एक और काम होने वाला है। नाम बताऊंगा।)'
शर्मा: 'किसका?' (किसका?)

सलेम: 'मिर्जा का बब्लू से मिलके काम कराया था। उसका बदला लेना है.' (मिर्जा
बबलू की मदद से मारा गया। हमें बदला लेना होगा।)
शर्मा: 'उसका काम मैं करा दूंगा यूपी पुलिस से। (मैं उसे यूपी पुलिस से मरवा दूंगा।)

ऐसी बातचीत के कम से कम आधा दर्जन टेप सीलबंद करके सबूत के तौर पर अदालत में पेश किए गए। इसके अलावा, कई टेप ऐसे भी हैं जिनमें हानिरहित और अहानिकर बातचीत की रिकॉर्डिंग के साथ-साथ हस्तलिखित ट्रांसक्रिप्ट का एक पुलिंदा भी है, जो या तो तब तैयार किया गया था जब क्राइम ब्रांच के अधिकारी रिकॉर्डर चालू नहीं कर पाए थे या जब उनके पास टेप खत्म हो गया था।

फिल्म जगत से पैसे ऐंठने वाला सलेम फिल्मों से भी प्रेरणा लेता था। मुंबई क्राइम ब्रांच ने एक बातचीत रिकॉर्ड की जिसमें सलेम अपने पाँच आदमियों को निर्देश दे रहा था कि एडलैब्स मल्टीप्लेक्स श्रृंखला के मालिक मनमोहन शेट्टी पर कैसे हमला किया जाए।

शेट्टी को सलेम बड़ी रकम देने की धमकी दे रहा था। शेट्टी ने दबाव में आने से इनकार कर दिया था, जिससे सलेम भड़क गया और उसने फैसला किया कि एडलैब्स के इस आदमी की ज़िद की सज़ा मिलनी ही चाहिए। अपने आदमियों से बात करते हुए, उसने उन्हें संजय दत्त अभिनीत फिल्म वास्तव देखने और फिल्म में दिखाए गए एक हत्या के तरीके को समझने का निर्देश दिया।

चूँकि आजमगढ़ के इन लड़कों को पहले किसी की हत्या का कोई अनुभव नहीं था, इसलिए सलेम को हत्या के हर पहलू का ब्यौरा देना पड़ा। जैसा कि उसने पाया, लड़कों ने लक्ष्य के बारे में बुनियादी जानकारी भी नहीं ली थी, और सलेम ने शेट्टी के हुलिए के बारे में उन्हें बताना शुरू किया, और फिर हत्या की योजना के बारे में बताया।

सलेम: 'इम्तियाज, तुम लोगों ने पिक्चर नहीं देखी क्या, वास्तव? वास्तव में नहीं देखा क्या संजय दत्त की?' (इम्तियाज़, क्या आपने फिल्म वास्तव नहीं देखी? संजय दत्त अभिनीत फिल्म वास्तव?)

इम्तियाज: 'हां, भाई, देखी है।' (हाँ, भाई, हमने देखा है।)
सलेम: 'हां, तो वैसा ही करने का है, जैसी पिक्चर में किया।' (हाँ, तो करो
(जैसा कि फिल्म में किया गया था।)
इम्तियाज: 'हां, आप बेफिक्र रह रहे हैं, आपको एक भी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। हम लोगों को कुछ भी हो जाए, लेकिन आपको शिकायत का मौका नहीं देंगे।' (आप चिंता न करें, आपको कोई शिकायत नहीं होगी। हमारे साथ कुछ भी हो, हम आपको निराश नहीं करेंगे।)

एक बेहद आक्रामक खेल प्रशिक्षक की शैली में, सलेम ने मनमोहन शेट्टी पर हमले की योजना से एक रात पहले अपने आदमियों को प्रेरित करने के लिए गालियों से भरी तीखी टिप्पणियों का भी इस्तेमाल किया। सलेम ने अपने आदमियों से कहा कि जब तक उनके गोला-बारूद पूरी तरह खत्म न हो जाएँ, तब तक वे हमले वाली जगह से न हटें। इस उत्साहवर्धक बातचीत की रिकॉर्ड की गई बातचीत

Machine Translated by Google

उन्होंने मुंबई पुलिस को सलेम के प्रेरक भाषणों की जानकारी दी।

सलेम: 'ऐसा नहीं कि एक-दो फायरिंग की और भाग गए। मार देने का. पूरा खाली करने का. फिर निकलने का. चोरों की तरह ऐसा काम नहीं करने का, दो गोली फायर किया और भाग गए। बात साफ है, इसके बाद तुम हीरो बनोगे।' (आधे-अधूरे मन से काम मत करो और एक-दो राउंड फायर करके भाग जाओ। मारने के लिए गोली मारो। अपनी सभी गोलियां खत्म करो। कायरों की तरह व्यवहार मत करो जो दो गोलियां चलाते हैं और भाग जाते हैं। यह स्पष्ट है कि इसके बाद आप हीरो बन जाएंगे।)

बातचीत से सलेम की नैतिकता की कमी और किसी पुलिसकर्मी को कभी निशाना न बनाने की माफिया संहिता का उल्लंघन भी उजागर हुआ। आमतौर पर, किसी भी बंदूकधारी को किसी पुलिसकर्मी को गोली मारने का निर्देश नहीं दिया जाता, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विकट क्यों न हों। लेकिन सलेम ने उस बुनियादी संहिता का भी उल्लंघन किया।

सलेम: 'कोई भी पुलिस आ गया, कोई भी सामने आ गया, कोई पूछेगा कि काई के लिए खड़ा है, क्यों खड़ा है, पुलिसवाला, तो निकालो सामान और धन धन उसको। पूछा तो मार दो उसको. ये नहीं कि ऐसे ही खड़े हैं। अगर पूछा कि काहे के लिए घूम रहा है, क्या कर रहा है, तो निकलने का पीछे से। और मारो. • खोपड़ी में सैन से देने का।' (यदि कोई पुलिस वाला आए या कोई आपसे पूछे कि आप वहां क्या कर रहे हैं, तो अपनी बंदूक उठाएं और उसे गोली मार दें। जो कोई भी आपकी उपस्थिति पर सवाल उठाए, उसे गोली मार दें। मूर्ख की तरह खड़े न रहें। जैसे ही कोई आपसे सवाल करे, अपनी बंदूक उठाएं और उसका सिर उड़ा दें।)

. .

ये बातचीत 1 मई 2001 को रिकॉर्ड की गई थी। अगले दिन, 2 मई को, शेट्टी पर हमला हुआ। हालाँकि, इन सभी निर्देशों और प्रेरक भाषणों के बावजूद, सलेम के गुर्गों ने काम में धांधली की और शेट्टी भाग्यशाली रहे कि वे घायल होकर बच निकले, जबकि बंदूकधारियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

Machine Translated by Google

बाईस

Machine Translated by Google

लिस्बन में पकड़ा गया

शहज़ाद हैदर, एक छोटे-मोटे उद्यमी, ने लिस्बन में एक नया दोस्त बनाया था: अरसलान, जो एक पाकिस्तानी था और ओमैक्स घड़ियों का वितरण और निर्यात करता था और वह बहुत अमीर था। दोनों की आपस में खूब बनती थी और शहज़ाद अरसलान की खूबसूरत भारतीय पत्नी सना को अपनी बहन मानता था। शहज़ाद ने अपनी पूरी ज़िंदगी जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में बिताई थी, लेकिन एक पुर्तगाली लड़की से शादी करने के बाद, वह लिस्बन में बस गया था।

इस शादी से उन्हें पुर्तगाली नागरिकता और पासपोर्ट मिल गया। शहज़ाद ने ही अरसलान को बसने के लिए जगह ढूँढ़ते हुए पूरे यूरोप में घूमते देखा और आखिरकार उन्हें लिस्बन में बसने का सुझाव दिया। शहज़ाद ने पुर्तगाली नागरिकता हासिल करने की प्रक्रिया में भी उनकी मदद की।

दोनों अक्सर लिस्बन के धनी उपनगरों में चेलास इलाके के ज़ोना एल में एवेनिडा पाउलो VI स्थित अरसलान के आलीशान अपार्टमेंट में मिलते थे। शहज़ाद अपने नए दोस्त की जीवनशैली से बहुत प्रभावित था: उसका आलीशान घर, महंगी जीप मर्सिडीज़ WI, जिसकी कीमत उसे पता था कि पाकिस्तान में लगभग 2 करोड़ रुपये होगी, अरसलान की दो हीरे जड़ित अंगूठियाँ, जिनकी कीमत शायद कुछ हज़ार डॉलर होगी...

लेकिन अरसलान की दौलत में कुछ ऐसा था जो उस पाकिस्तानी को खटकता था। मिसाल के तौर पर, शहज़ाद अरसलान को खाने के लिए सड़क किनारे की छोटी-छोटी दुकानों पर ले जाने की कोशिश करता, लेकिन अरसलान हमेशा आलीशान रेस्टोरेंट में जाने की ज़िद करता। शहज़ाद को यह पसंद नहीं आता था, और वह अक्सर अरसलान को इतना पैसा बर्बाद करने के लिए प्यार से मुक्का भी मारता था। लेकिन अरसलान अमीर दिखने और व्यवहार करने का पक्का इरादा रखता था। चाहे उसने अपने अमीर दोस्त को कितना भी मनाने की कोशिश की हो, शहज़ाद जानता था कि अरसलान कभी नहीं बदलेगा—दौलत का दिखावा करना हमेशा उसके दोस्त के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग रहेगा।

उसके लिए एक बड़ा झटका तय था। एक दिन, अरसलान, शहज़ाद को अपनी बगल वाली सीट पर बिठाकर, चेलास से निकलकर रोटुंडा डे काबो रुइवो के गोल चक्कर पर गाड़ी चला रहा था। अचानक, उसने इतनी ज़ोर से ब्रेक लगाए कि उसके पीछे कई गाड़ियाँ ज़ोर से चीख़ती हुई रुक गईं। शहज़ाद कुछ समझ पाता, इससे पहले ही उसने देखा कि हथियारबंद पुलिस और कमांडो ने उन्हें घेर लिया है; एक पुलिस जीप ने भी उन्हें पीछे से रोक लिया था।

शहज़ाद को नहीं लगा कि वे पोलिसिया डे सेगुरांका पब्लिका—शहरी इलाकों में काम करने वाली नागरिक पुलिस—थे; उनकी वर्दी हल्के नीले रंग की कमीज़, गहरे नीले रंग की टाई, पतलून और नीली टोपी थी। दूसरी ओर, अरसलान की कार काली कमांडो वर्दी और बालाक्लाव पहने लोगों से घिरी हुई थी, जिससे केवल उनकी आँखें ही दिखाई दे रही थीं।

वे पोलिसिया जुडिसियारा से थे, जो केवल बड़े आपराधिक मामलों से निपटता था।
वे अरसलान के पीछे क्यों पड़े थे?

इंस्पेक्टर परेरा क्रिस्टोवाओ ने अपना बैज और पहचान पत्र दिखाया और ज़ोर से दोहराया, "पुलिस, पुलिस, पुलिस।" अरसलान और शहज़ाद को हाथ ऊपर करके धीरे-धीरे कार से बाहर निकलने का निर्देश दिया गया। बाहर निकलते ही, कमांडो ने उन्हें कार के बोनट पर मुँह के बल झुकने पर मजबूर किया और फिर उनकी पीठ पीछे हथकड़ियाँ लगा दीं। शहज़ाद ने अपने चीफ़ को बातों में उलझाने की कोशिश की और उसे यकीन दिलाया कि कुछ गड़बड़ ज़रूर हुई है। चीफ़ ने शहज़ाद को पुर्तगाली भाषा में बात करते सुना तो वह उसके साथ घुल-मिल गया। लेकिन उसने शहज़ाद को बताया कि उसका दोस्त असल में एक आदमी है जिसके पास इंटरपोल से रेड कॉर्नर अलर्ट नोटिस है। यह आदमी कोई पाकिस्तानी नहीं, अरसलान था। वह अबू सलेम था और मुंबई धमाकों में शामिल होने के आरोप में भारतीय पुलिस को एक आतंकवादी की तलाश थी।

Machine Translated by Google

सलेम ने शहज़ाद की मुखिया से बातचीत से पैदा हुए अनजाने ध्यान का फ़ायदा उठाते हुए गोल चक्कर के पास जाकर चुपके से अपनी दोनों हीरे की अंगूठियाँ उतारकर झाड़ियों में फेंक दीं। उसे पता था कि उन अंगूठियों की कीमत 25,000 डॉलर से ज़्यादा है, जो भारतीय मुद्रा में लाखों डॉलर के बराबर है, और वह नहीं चाहता था कि पुलिस उन्हें ज़ब्त कर ले।

बाद में सलेम ने मोनिका के भाई बॉबी को अंगूठियां वापस लाने के लिए कहा।

दोनों लोगों को पुलिस मुख्यालय ले जाया गया, जिसे पोलिसिया जुडिसियारा नेशनल के नाम से जाना जाता है, जो न्याय मंत्रालय के तत्वावधान में काम करता है। सलेम पर बार-बार चेतावनी के बावजूद अपनी गाड़ी पुलिस वैन से टकराने और गिरफ्तारी का विरोध करने का भी आरोप लगाया गया था। ये दोनों ही आरोप बेहद असंभावित थे—सलेम भारत से बाहर हमेशा सावधानी से पेश आता था और उसने पुलिस की अवज्ञा करने या अपनी गाड़ी से टकराने की कल्पना भी नहीं की होगी।

इसके बाद, अधिकारियों का एक समूह चेलास में एवेनिडा पाउलो VI स्थित सलेम के निवास के लिए रवाना हुआ और सना कामिल मलिक के नाम से रह रही मोनिका बेदी को गिरफ्तार कर लिया।

उन्होंने मोनिका की मौजूदगी में घर की तलाशी ली और एक कमरे में शेख अफ़ज़ल नाम का एक ड्राइवर सोता हुआ मिला। उन्होंने कई भारतीय पासपोर्ट और विभिन्न वीज़ा—स्विस, अमेरिकी, कनाडाई, ब्रिटिश, शेंगेन और पुर्तगाली—के साथ-साथ कई लुफ्थांसा टिकट भी ज़ब्त किए, जिन पर ओस्लो और लिस्बन, और ओस्लो और फ्रैंकफर्ट के बीच यात्राओं के संकेत थे, स्टटगार्ट और फ्रैंकफर्ट के बीच ट्रेन टिकट, नकद लेनदेन के हस्तलिखित विवरण और बैंक स्टेटमेंट। इंस्पेक्टर परेरा क्रिस्टोवाओ और एजेंट रुई मेंडाओ, नूनो सैंटोस और नूनो हेनरिक्स के नेतृत्व में टीम को नकदी भी मिली, जिसमें 100 डॉलर के उनचास नोट और 2035 भारतीय रुपये शामिल थे। उन्हें अरसलान मोहसिन अली और देओलिंडा मारिया के विवाह के दस्तावेज़ और शहज़ाद हैदर और सना कामिल मलिक के विवाह के दस्तावेज़ भी मिले।

पिछले साल अक्टूबर में शिकागो से जाने के बाद से, सलेम यूरोप में एक ऐसी जगह की तलाश में भटक रहा था जिसे वह अपना घर कह सके, हालाँकि उसने हर देश में अपनी पहचान बदली। पिछला साल भले ही अस्थिर रहा हो, लेकिन मोनिका के साथ उसके रिश्ते का यह एक बेहद खुशहाल और रोमांटिक दौर भी था। वे कानून प्रवर्तन एजेंसियों, उसके प्रतिद्वंद्वियों और दुश्मनों से दूर थे। और सबसे अच्छी बात यह थी कि वे समीरा और उसकी आलोचनात्मक निगाहों से दूर थे। इस जोड़े ने 20 नवंबर 2001 को शादी कर ली। उन्होंने नॉर्वे में मोनिका के परिवार के साथ छह हफ़्ते बिताए और फिर एक लंबे हनीमून पर निकल गए। सलेम के लिए, यह उसकी तीसरी शादी थी, हालाँकि उसका दावा है कि मोनिका उसकी दूसरी पत्नी थी।

यह जोड़ा शुरू में नॉर्वे में बस गया। मोनिका की उस जगह से अच्छी तरह वाकिफ़ होने के साथ-साथ स्थानीय लोगों के लिए पूरी तरह से अनजान होने से भी उन्हें मदद मिली।

यह पहली बार था जब सलेम को एहसास हुआ कि मोनिका बिना इजाज़त के उसके पैसे ले रही है। इससे उनके बीच झगड़े होने लगे—सलेम ने अपना असली रूप दिखाया और मोनिका के साथ भी वैसा ही हिंसक व्यवहार करने लगा जैसा वह समीरा के साथ करता था। लेकिन वह हमेशा अपनी खूबसूरत नई पत्नी के साथ सुलह करने की पहल करता, जबकि समीरा को वह कई दिनों तक नज़रअंदाज़ करता। सलेम उसे महंगे तोहफ़े भी देता और नई-नई जगहों पर ले जाता, ये दो चीज़ें आमतौर पर महिलाओं को पसंद आती हैं। लगातार यात्रा करने से उन्हें लोगों की नज़रों से दूर रहने में भी मदद मिली। मोनिका और सलेम महाद्वीप में इधर-उधर गाड़ी चलाते, एक ऐसी जगह की तलाश में जिसे घर कहा जा सके, क्योंकि नॉर्वे हमेशा से ही एक अस्थायी घर था। वे स्विट्ज़रलैंड, स्पेन और जर्मनी गए, लेकिन कुछ भी ठीक नहीं लगा।

इस बीच, सलेम ने बॉलीवुड में अपने संपर्क बनाए रखे और स्विट्जरलैंड में शूटिंग के लिए आने वाले सभी सितारों से मिलते रहे। हमेशा की तरह, फिल्मी दुनिया से घुलने-मिलने के दौरान उन्होंने अरसलान नाम अपनाया। इसी सिलसिले में उनकी मुलाकात शहज़ाद से हुई, जिनका जिनेवा में अभी भी एक आधार और मज़बूत संपर्क था। शहज़ाद ने उन्हें लिस्बन में बसने के लिए राजी किया और वे पुर्तगाली राजधानी में चले गए, जहाँ उन्होंने एक विशाल अपार्टमेंट किराए पर लिया, जहाँ चौबीसों घंटे नौकरों, ड्राइवरों, बटलरों आदि की एक टीम मौजूद रहती थी। और इतने सालों के बाद, सलेम के पास आखिरकार शानदार कारों से भरा एक गैराज था। यह एक

Machine Translated by Google

शांति और आराम का यह एक अल्पकालिक दौर था। सलेम के लिए, खुशी हमेशा एक अस्थायी अवस्था थी।

इस बीच, शहज़ाद कागजी कार्रवाई में उनकी मदद कर रहा था। उसने सलेम से कहा कि उसे और मोनिका को पुर्तगाल के नागरिकों से कुछ समय के लिए शादी करनी होगी, जिससे उन्हें वह बहुप्रतीक्षित निवास कार्ड मिल जाएगा। उसके बाद, वे नागरिकता के लिए आवेदन भी कर सकते हैं। और इस तरह, शहज़ाद ने मोनिका के साथ नागरिक विवाह कर लिया, जबकि सलेम ने देवलिंडा मारिया से शादी कर ली। देवलिंडा को उनकी सेवाओं के लिए 3000 यूरो और शहज़ाद को 4500 यूरो का भुगतान किया गया।

शहज़ाद को तब बहुत डर लगा जब उसे पता चला कि जो आदमी पिछले दस महीनों से उसका जिगरी दोस्त था और इतनी गर्मजोशी से पेश आ रहा था, उसकी खिंचाई और घूँसे सह रहा था, असल में भारत का एक खूँखार डॉन था। वह आदमी गिरगिट को भी शर्मिंदा कर सकता था। सलेम ने दुनिया भर में घूमने वाले धोखेबाज़ होने की कला में महारत हासिल कर ली थी जो पल भर में पहचान बदल सकता था। मिसाल के तौर पर, दानिश बेग होने का पर्दा पूरा करने के लिए, सलेम ने मुंबई विश्वविद्यालय से एक मार्कशीट भी हासिल की, जिससे पता चला कि वह कॉमर्स में स्नातक है और अच्छे अंकों से पास हुआ है। उसकी सबसे बड़ी रचना अरसलान अली थी और उसने इस पहचान को काफ़ी बारीकी से गढ़ा था। अरसलान के पास एक पता और माता-पिता दोनों थे—लगता है कि वह मोहसिन अली और सुल्ताना अली के घर पैदा हुआ था, दोनों कराची के तारिक रोड से थे। अरसलान ने इससे पहले 30 अगस्त 1996 को यास्मीन से भी शादी की थी। लेकिन फिर, उनके रिश्ते टूटने के कारण, उन्हें 15 फरवरी 2000 को तलाक देना पड़ा। अरसलान ने जाहिर तौर पर यास्मीन को तलाक-बाएन (एक प्रकार का अपरिवर्तनीय तलाक जो आमतौर पर कई बैठकों में जारी किया जाता है) दिया था ताकि वह उसकी विरासत के किसी भी हिस्से का दावा न कर सके।

इसके बाद उन्होंने कराची में 50,000 रुपये के मेहर (गुज़ारा भत्ता) पर सना मलिक (उर्फ मोनिका) से शादी कर ली। निकाह मोहम्मद जमील हाफ़िज़ गुलामी ने पढ़ाया।
सना मलिक का प्रतिनिधित्व करने वाले काज़ी मोहम्मद आज़म अता मोहम्मद थे। निकाह 20 अगस्त 2001 को संपन्न हुआ। समारोह के कागजात पाकिस्तान के सिटी कोर्ट के वकील अशरफ अली द्वारा नोटरीकृत किए गए थे और कराची स्थित विदेश मंत्रालय के कैंप कार्यालय के अनुभाग अधिकारी ज़ाहिद मसूद द्वारा अनुमोदित किए गए थे।

कागज़ों में, सना मलिक कराची के कमर्शियल एरिया की निवासी थीं। और चूँकि निकाहनामे में यह बताना ज़रूरी है कि दुल्हन पहले शादीशुदा थी या अविवाहित, इसलिए कॉलम में लिखा है कि वह कुंवारी थी। इस पर उनके हस्ताक्षर थे।

इस बात का कोई सबूत नहीं है कि कराची निकाह कभी हुआ था या नहीं—हमें नहीं पता कि उस दौरान दोनों ने पाकिस्तान की यात्रा की थी या नहीं। बहरहाल, सलेम इस शादी के विवरण को पवित्र मानता है, जबकि मोनिका ऐसा नहीं मानती। मोनिका ने जेल में सलेम को लिखे एक पत्र के अनुसार, यह माना था कि उसकी शादी 20 नवंबर 2001 को ओस्लो में हुई थी। वास्तव में, जब लिस्बन में सलेम पर मुकदमा चलाया गया, तो ये सभी विवरण सलेम और मोनिका के खिलाफ साबित हुए। सीबीआई ने जो दस्तावेज़ खोजकर अदालत में पेश किए, उनमें से एक में सलेम की पहचान रमेश कुमार के रूप में हुई थी। रमेश कुमार ने दुबई स्थित जर्मन वाणिज्य दूतावास में अपनी पत्नी मोनिका बेदी के लिए वीज़ा की मांग करते हुए एक आवेदन किया था। इसलिए, मोनिका बेदी न तो अरसलान की पत्नी सना मलिक हो सकती थीं, न ही वह रमेश कुमार की पत्नी मोनिका या भोपाल निवासी फौज़िया उस्मान हो सकती थीं। इन सभी विसंगतियों ने लिस्बन में सलेम की किस्मत तय कर दी।

18 सितंबर 2002 को, सलेम को जेल में डाल दिया गया और भारतीय अधिकारियों को इसकी सूचना दे दी गई। जेल में पहुँचकर, सलेम इस बात को लेकर परेशान था कि उन्हें कैसे पता चला कि वह अबू सलेम है। क्या वे कुछ समय से उस पर नज़र रख रहे थे? और किसने उसकी मुखबिरी की थी? क्या वह इसलिए पकड़ा गया क्योंकि उसने 11 सितंबर के हमलों के बाद एक मूर्खतापूर्ण गलती की थी? अमेरिका से भागने की योजना बनाते समय, उसने देश में अपने एक भरोसेमंद सहयोगी से कहा था कि वह उसकी सारी धनराशि यूरोप स्थित उसके खातों में जमा कर दे। हालाँकि, वह इस बात का अंदाज़ा लगाने से चूक गया था कि अंकल सैम उसकी गर्दन पर घात लगाए बैठा है। महाद्वीपों के बीच भारी मात्रा में धन-हस्तांतरण जाँच एजेंसियों के रडार पर आना तय था।

Machine Translated by Google

एक बार दुबई में सलेम के एक गुर्गे ने उससे कहा था, "अनीस भाई ने अभी आपका पीछा नहीं छोड़ा है, भाई।" इस फ़ोन कॉल ने उसके खून को बर्फ़ बना दिया और उसे आग में झोंक दिया। क्या अनीस ने ही पुलिस को उसकी लोकेशन बताई थी? लेकिन अनीस को यह पता नहीं चल सकता था कि वह कहाँ छिपा है।

सलेम को मोनिका का अपने दोस्तों से मोबाइल पर बात करना कभी पसंद नहीं था। उसे शक था कि खुफिया एजेंसियां मोबाइल फोन के ज़रिए लोगों पर नज़र रखने में सक्षम हैं। क्या मोनिका ने भगोड़े की ज़िंदगी जीने से तंग आकर अधिकारियों को खबर दी थी? मोनिका अक्सर सलेम से कहती थी कि वह भारत वापस जाकर एक आम इंसान की तरह जीना चाहती है। सलेम अक्सर इस बात को हँसकर टाल देता था। एक आखिरी शक सलेम के मन में बार-बार कौंध रहा था। अगर वह समीरा होती तो? वह उससे आहत और नाराज़ थी। वह जानती थी कि एक बार जब वह सलाखों के पीछे पहुँच जाएगा, तो उसका सारा पैसा उसका हो जाएगा।

जितना ज़्यादा वह इस बारे में सोचता, उतना ही उसे यकीन होता कि समीरा ने ही उसे धोखा दिया है। उसने अपना बदला ले लिया है।

Machine Translated by Google

तेईस

Machine Translated by Google

लिस्बन कैद

लिस्बन की जेल, या ईपीएल, एक किले की तरह थी, वास्तव में एक वास्तुशिल्प चमत्कार। इसका अग्रभाग इतना भव्य है, मानो यह उन कैदियों की हिम्मत तोड़ने के लिए बनाया गया हो जो द्वार के सामने खड़े होकर भयभीत होकर प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहे हों। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि इसके प्रभावशाली लोहे के द्वारों वाला मुख्य मेहराब वास्तव में जेल के अस्पताल में खुलता है, जो प्रवेश द्वार के ठीक बगल में है। नई दिल्ली में तिहाड़ या मुंबई की सेंट्रल जेल जैसी प्रसिद्ध भारतीय जेलें ईपीएल के सामने फीकी पड़ जाती हैं। एकमात्र भारतीय जेल जो इसकी वास्तुकला और भव्यता की तुलना कर सकती है, वह शायद अंडमान द्वीप समूह में सेलुलर जेल, या काला पानी है। काला पानी एक ब्रिटिश काल की संरचना है जिसका निर्माण 1896 में हुआ था और शायद यही कारण है कि यह ईपीएल के साथ कुछ समानताएं साझा करती है, जिसका निर्माण 1884 में हुआ था।

जिन लोगों ने असल ज़िंदगी में जेलें नहीं देखी हैं, उनके लिए ईपीएल कुछ-कुछ हॉलीवुड फ़िल्मों जैसे द शॉशैंक रिडेम्पशन या हाल ही में आई सिल्वेस्टर स्टेलोन-अर्नोल्ड श्वार्ज़नेगर की फ़िल्म द एस्केप प्लान में दिखाई गई जेलों जैसा है। इसे कुल 887 कैदियों के लिए बनाया गया था, लेकिन किसी भी समय इसमें 2000 से ज़्यादा कैदी ठूँसे रहते हैं, बिल्कुल भीड़भाड़ वाली भारतीय जेलों की तरह। जब सलेम जेल में गया, तो वह वहाँ मौजूद गिने-चुने एशियाई लोगों में से एक था।

उसे 'पवेलियन' नामक उच्च-सुरक्षा क्षेत्र में रखा गया था क्योंकि उस पर आतंकवाद के आरोप थे। लेकिन अंदर पहुँचकर, उसे यह जेल उन जेलों से अलग नहीं लगी जिनके बारे में उसने अपने देश में सुना था। ये कोठरियाँ भी बहुत बुरी हालत में थीं—हर जगह प्लास्टर उखड़ रहा था, खिड़कियाँ टूटी थीं, रोशनी की कमी थी, और गद्दे पुराने और बदबूदार थे। ऐसी दयनीय स्थिति देखकर सलेम अपनी किस्मत को कोसता रहा। एक साल के अंदर ही उसकी ज़िंदगी ने 180 डिग्री का मोड़ ले लिया था।

लिस्बन में उनकी नाटकीय गिरफ्तारी की खबर सभी स्थानीय अखबारों की सुर्खियाँ बनीं और मुंबई के ज़्यादातर अखबारों के पहले पन्ने पर भी छाई रही। भारत में इस पर अविश्वास और संशय से लेकर पूरी तरह जश्न तक की प्रतिक्रिया देखी गई। बिल्डर समुदाय और बॉलीवुड जगत ने राहत की साँस ली। कुछ लोगों ने तो जश्न मनाने के लिए पार्टियाँ भी रखीं। किसी भी अन्य अंडरवर्ल्ड के किरदार के पतन पर इतनी खुशी नहीं हुई थी।

लिस्बन में सलेम की गिरफ्तारी से पहले, विदेशों में अन्य माफिया गिरफ्तारियों में 1995 में लंदन में इकबाल मिर्ची की गिरफ्तारी और उसी वर्ष बहरीन में अनीस इब्राहिम की गिरफ्तारी शामिल थी। दोनों को बाद में उनके दस्तावेजों में तकनीकी जटिलताओं के कारण रिहा कर दिया गया था। दरअसल, 1997 में गुलशन कुमार हत्याकांड के तुरंत बाद सलेम खुद दुबई में नजरबंदी से भागने में कामयाब रहा था। 1995 में, दिल्ली में अपहरण रैकेट के सरगना बबलू श्रीवास्तव को सिंगापुर से सफलतापूर्वक प्रत्यर्पित किया गया था, लेकिन इतनी बड़ी मछली पकड़े जाने में काफी समय लग गया था।

गिरफ्तारियों के तुरंत बाद, सीबीआई के अतिरिक्त निदेशक विजय शंकर ने पुर्तगाली अधिकारियों के साथ पुष्टि और समन्वय के लिए लिस्बन की यात्रा की। पहले दो बार अपनी उंगलियां जला चुकी सीबीआई इस बार अपने वांछित व्यक्ति को छोड़ने को तैयार नहीं थी। वे तुरंत हरकत में आए और सलेम के भारत प्रत्यर्पण के लिए आवश्यक सभी दस्तावेज और कागज़ी कार्रवाई तैयार करने लगे। सरकार भी इस बार पूरी तरह तैयार थी। 13 दिसंबर 2002 को, सलेम की गिरफ्तारी के दो महीने के भीतर, विदेश मंत्रालय में कनिष्ठ मंत्री उमर अब्दुल्ला ने पुर्तगाल से सलेम और मोनिका के प्रत्यर्पण के लिए एक अनुरोध पत्र भेजा। सलेम का मामला पोलिसिया जुडिशियरा से डिपार्टमेंटो सेंट्रल डे इन्वेस्टिगाकाओ ई एकाओ पेनल (डीसीआईएपी), या सेंट्रल

Machine Translated by Google

पुर्तगाल में सीबीआई का स्थानीय समकक्ष, जाँच एवं दंड कार्रवाई विभाग। इससे समन्वय आसान हो गया, क्योंकि दोनों ही अपने-अपने देशों के लिए सर्वोच्च निकाय और नोडल एजेंसियाँ थीं।

सलेम अब पुर्तगाल और भारत के बीच लंबी और थकाऊ प्रत्यर्पण कार्यवाही के भंवर में फँस गया था। भारत की पुर्तगाल के साथ कोई प्रत्यर्पण संधि नहीं है।

यूरोपीय देशों में, केवल फ्रांस, जर्मनी और बुल्गारिया ही ऐसे देश हैं जिन्होंने भारत के साथ ऐसी संधि पर हस्ताक्षर किए हैं। दूसरी ओर, पुर्तगाल भारत की मृत्युदंड प्रणाली से असहमत है, क्योंकि उसने 1867 से ही राज्य द्वारा दी जाने वाली फांसी पर प्रतिबंध लगा रखा है। परिणामस्वरूप, पुर्तगाली सरकार प्रत्यर्पण के भारतीय अनुरोधों पर विचार करने के लिए उत्सुक नहीं थी। डीसीआईएपी ने भी सलेम को किसी ऐसे अपराध का दोषी नहीं पाया था जो पुर्तगाल में कोई बड़ा अपराध माना जाता हो या उसके प्रत्यर्पण का कारण बनता हो—उस पर जालसाजी और दस्तावेजों में हेराफेरी का मुकदमा चल रहा था। लेकिन जब भारत सरकार ने ज़ोर देकर कहा कि सलेम 1993 के सिलसिलेवार बम धमाकों का आरोपी है, तो पुर्तगाल सरकार ने अपना रुख नरम किया और सहमति दे दी।

हालाँकि, पुर्तगाल तब तक सलेम को वापस भेजने को तैयार नहीं था जब तक कि भारत सरकार लिखित रूप में यह ठोस आश्वासन न दे दे कि भारतीय अदालतें सलेम को न तो मृत्युदंड देंगी और न ही उसे पच्चीस साल से ज़्यादा की जेल की सज़ा देंगी। तत्कालीन उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, जिनके पास गृह मंत्रालय का भी प्रभार था, ने पुर्तगाल के विदेश मंत्री एंटोनियो मार्टिंस दा क्रूज़ को एक पत्र लिखा, जिसमें वादा किया गया था कि भारत इन शर्तों का पालन करेगा। इस पत्र पर लालकृष्ण आडवाणी के व्यक्तिगत हस्ताक्षर थे, किसी नौकरशाह या कनिष्ठ मंत्री के नहीं।

इससे पुर्तगाली सरकार की चिंता कम हो गई।

शुरुआत में, सलेम को तीन महीने की हिरासत में रखा गया था, लेकिन उसकी हिरासत लगातार बढ़ाई जाती रही। तीसरी बार बढ़ाए जाने के बाद, पुर्तगाली अदालत ने अपना फैसला सुनाया और सलेम और मोनिका को जालसाजी और जाली दस्तावेजों के इस्तेमाल के कई मामलों में दोषी पाया। लिस्बन की छठी दंड अदालत ने सलेम को तीन मामलों में दोषी ठहराया और तीन साल की जेल की सजा सुनाई। गिरफ्तारी का विरोध करने और ड्यूटी पर तैनात एक पुलिस अधिकारी पर हमला करने के लिए उसे दो साल की सजा सुनाई गई। अर्सलान मोहसिन अली नामक एक पाकिस्तानी नागरिक होने के बारे में अदालत में झूठी गवाही देने के बाद, उसे झूठी गवाही देने के लिए एक और साल की सजा दी गई।

सलेम शुरू में खुद को अरसलान बताने पर अड़ा रहा, जब तक कि भारत सरकार ने डीएन नगर पुलिस द्वारा उसे उठाए जाने के बाद लिए गए उसके फिंगरप्रिंट्स दिखाकर उसकी असली पहचान उजागर नहीं कर दी। पुर्तगाली अदालतों में यह झूठी गवाही के बराबर था। इसने सलेम के मामले को भी कमजोर कर दिया और डीसीआईएपी में उसकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाया। तब तक, अधिकारी भारत सरकार के खिलाफ सलेम का मुखर समर्थन कर रहे थे, खासकर तब जब उसने और मोनिका ने कानूनी तरीकों से पुर्तगाली आवासीय परमिट हासिल कर लिया था। पुर्तगाली कानून के तहत, कारावास की ये अवधि कुल मिलाकर छह साल होती है, लेकिन अदालत ने इसे घटाकर साढ़े चार साल कर दिया। मोनिका को भी जालसाजी का दोषी ठहराया गया था, लेकिन अदालत ने उसे दो साल की कम सजा दी क्योंकि सलेम ने उसके लिए जाली दस्तावेज हासिल करने की बात कबूल कर ली थी।

सलेम ने जेल की ज़िंदगी का भरपूर आनंद उठाने की कोशिश की। उसका साथी रॉबर्टो जियोवानी नाम का एक इतालवी ड्रग तस्कर था, जिस पर कोकीन की तस्करी का आरोप था। सलेम की अंग्रेजी में कम पकड़ जियोवानी से बातचीत में एक बड़ी बाधा बन गई, लेकिन दोनों सांकेतिक भाषा, टूटी-फूटी अंग्रेजी और सलेम की थोड़ी-बहुत पुर्तगाली भाषा में बातचीत कर रहे थे। उनकी अच्छी बनती थी। रॉबर्टो ने सलेम को अपने परिवार की तस्वीरें दिखाईं, जिससे डॉन में सुप्त पितृत्व की भावना फिर से जाग उठी। सलेम अपने बेटे आमिर के बारे में सोचने लगा, जो अब पाँच साल से ज़्यादा का हो गया था। उसने उसे बहुत लंबे समय से नहीं देखा था और अपने शिकागो के जानकारों से उस लड़के की तस्वीर मँगवाई। उसने तस्वीर अपनी कोठरी की दीवार पर चिपका दी और लगातार उसे देखता रहता। अकेलेपन के दिनों में वह तस्वीर सलेम का सहारा बन गई।

Machine Translated by Google

सभी उच्च-सुरक्षा जेलों की तरह, ईपीएल ने भी कैदियों के बीच किसी भी तरह के लिखित संवाद पर रोक लगा दी थी। लेकिन मोनिका सलेम को पत्र लिखकर उसे तस्करी से भिजवाने में कामयाब रही। सलेम मोनिका के नियमित पत्रों में सांत्वना ढूँढ़ता था और उन्हें बार-बार पढ़ता था। अगर वह उसे पत्र नहीं लिख पाती या पत्र देर से आता, तो वह बेहद परेशान हो जाता। ये पत्र आगे चलकर दोनों के बीच अद्भुत अंतरंगता और प्रेम को उजागर करते थे।

Machine Translated by Google

चौबीस

Machine Translated by Google

लिस्बन में प्रेम और लालसा

सलेम ने एक अतिसक्रिय यौन जीवन का आनंद लिया था जिसे कुछ लोग अतिसक्रिय यौन जीवन कह सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि उसने कई सितारों और अभिनेत्रियों को बिस्तर पर ले जाया था, जिनमें एक पूर्व ब्यूटी क्वीन और अनगिनत सिल्वर स्क्रीन अभिनेत्रियाँ भी शामिल थीं। लेकिन मोनिका ही थीं जिन्होंने उसके लिए शारीरिक अंतरंगता के पैमाने पूरी तरह बदल दिए। मोनिका ने ही उसे प्यार करना भी सिखाया।

जेल में अकेले, मोनिका के बेहद भावुक और कामुक पत्रों का निरंतर प्रवाह ही उसे आगे बढ़ने में मदद कर रहा था। मोनिका ये कार्ड हाथ से बनाती थी, और उन्हें उनकी सालगिरह, उसके जन्मदिन या ईद जैसे मौकों के लिए बड़ी सावधानी से तैयार करती थी। हर दिन, जेल के पहरेदार कैदियों के लिए चिट्ठियों से भरा एक डफ़ल बैग लेकर कोठरियों के पास से गुज़रते थे। शायद यह छठी इंद्री थी या मोनिका के साथ उसका जुड़ाव, लेकिन सलेम के पेट में हमेशा एक गर्माहट सी रहती थी जो उसे बताती थी कि किसी खास दिन उसके लिए कोई चिट्ठी या कार्ड आया है।

मोनिका अपने प्रेमी को हिंदी में पत्र लिखती थी—हमें नहीं पता कि ऐसा इसलिए था क्योंकि सलेम को अंग्रेज़ी की समझ बहुत कम थी और उसे बीच रास्ते में ही उससे मिलना था, या वह उस भाषा में अपनी बात बेहतर ढंग से कह पाती थी, या फिर हिंदी जेल प्रहरियों की नज़रों से अपनी बात छिपाने का एक अच्छा तरीका था। अपने पत्रों में, मोनिका ने अपने प्रेमी के प्रति अपने प्रेम का इज़हार किया और अपने अतीत की घटनाओं को, स्नेह और प्रेम से भरी, विस्तार से याद किया।

इस जोड़े ने अपनी शादी की तीन सालगिरह जेल में बिताईं। इस दौरान वे हफ़्ते में आधे घंटे से ज़्यादा एक-दूसरे से मिल नहीं पाते थे। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, ये छोटी-छोटी मुलाक़ातें भी कम होने लगीं। मोनिका के ख़त, जो शुरुआती दिनों में प्यार, स्नेह, समर्पण, चाहत और वासना से भरे होते थे, समय के साथ बेहद बेरंग, नीरस और सबसे बुरी बात, बेजान लगने लगे। जुलाई 2005 में, मोनिका ने सलेम को अपना आखिरी ख़त लिखा। वे भटक रहे थे।

मोनिका अपनी कैद में चरमरा गई थी। उसने बॉलीवुड में एक शीर्ष अभिनेत्री बनने का सपना देखा था और अब वह भारत के सबसे वांछित गैंगस्टर की साथी बनकर रह गई थी। बॉलीवुड सितारों के साथ मेलजोल रखने से लेकर अब वह जेल में खूँखार अपराधियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही थी। वह युवती अपमानित, बर्बाद और तबाह महसूस कर रही थी। कैदियों से मिलने आने वाले ईसाई मिशनरियों ने इस नाज़ुक दौर में उसका धर्म परिवर्तन कराया। मोनिका को बाइबल में शांति और वह स्थिरता मिली जो उसने खो दी थी। उसने सलेम को 'सलाम' कहना बंद कर दिया—जो उसे बहुत प्रिय था—और अल्लाह को अपना ईश्वर कहना भी बंद कर दिया। सलेम उसके इस बदलाव से पूरी तरह हैरान था।

जब मोनिका को प्रत्यर्पण कार्यवाही के बारे में पता चला तो वह भारत लौटने के लिए तरस गई, जबकि सलेम भारत सरकार के कदमों का डटकर मुकाबला कर रहा था।
सलेम कभी नहीं समझ पाएगा कि वह महिला जो उसके गुस्से, उसकी हिंसा या उसके बुरे व्यवहार से दूर नहीं हुई, वह कुछ वर्षों के अलगाव और जेल की सजा के बाद उससे इतनी दूर कैसे चली गई।

Machine Translated by Google

पच्चीस

Machine Translated by Google

वापस यात्रा

वर्ष 2005 में एक नवम्बर की दोपहर, चार कड़ी सुरक्षा वाली कारें और जीपें, जिनके दोनों ओर सशस्त्र कमांडो थे, एक विशाल विमान की ओर बढ़ीं, जो एक बहुत ही विशेष माल लेकर जा रहा था: अबू सलेम और उसकी पत्नी या प्रेमिका मोनिका बेदी।

सीबीआई के विशेष कार्य बल के पुलिस उपाधीक्षक देवेंद्र परदेसी ने अनगिनत मुश्किल मामलों और उनसे भी ज़्यादा खूँखार अपराधियों को संभाला था। लेकिन यह मामला थोड़ा अवास्तविक लग रहा था। पुर्तगाली पुलिस जिस व्यक्ति को सौंप रही थी, वह भारत के सबसे खूँखार गैंगस्टरों में से एक के तौर पर बिल्कुल भी फिट नहीं बैठता था, जिसने मुंबई अपराध के इतिहास में कुछ सबसे जघन्य हत्याओं का मास्टरमाइंड था।

दूसरी कार में बैठी महिला जल्द ही अपनी गाड़ी से बाहर निकल आई। टी-शर्ट और जींस पहने मोनिका बेदी किसी फैशन शो में रैंप पर चलने के लिए ज़्यादा उपयुक्त लग रही थीं। एक स्टारलेट जैसी अदाओं के साथ, वह किसी गैंगस्टर की प्रेमिका के किरदार में बिलकुल फिट बैठ रही थीं।

सलेम के उलट, वह मुस्कुरा नहीं रही थी, और उसके चेहरे पर आशंका साफ़ झलक रही थी, और वह अपनी जान बचाने के लिए बाइबल को पकड़े हुए थी। परदेसी को यह आम कहानी जैसी ही लग रही थी। स्टारडम के सपने देखने वाली एक खूबसूरत लड़की, गलत आदमी के प्यार में पड़ जाती है, गलत संगत में समय बिताती है, देश छोड़कर भाग जाती है और आखिर में एक अपराधी की तरह स्वदेश प्रत्यर्पित कर दी जाती है।

परदेसी के बॉस, उप महानिरीक्षक ओम प्रकाश छतवाल ने सरकारी दस्तावेज़ों पर दस्तखत कर दिए। स्याही सूखने से पहले ही परदेसी घबराए हुए मुस्कुराते हुए उस आदमी के पास गए और बोले, "क्यों बे? तू ही अबू सलेम है?"

इस बिंदु पर सलेम थोड़ा सतर्क हो गया और उसकी घबराहट कच्चे, बेलगाम डर में बदल गई: 'क्या आप क्राइम ब्रांच से हैं?' डर स्पष्ट था।

जवाब आया, 'नहीं, हम सीबीआई से हैं।'

किसी भी आम इंसान के लिए सीबीआई की हिरासत क्राइम ब्रांच की हिरासत जितनी ही बुरी होती, लेकिन सलेम बिल्कुल निश्चिंत हो गया और बोला, "फिर चलो साहब। अपना वतन चलना है।" यह कोई औपचारिक बातचीत नहीं थी, लेकिन चूँकि दोनों पक्ष मुलाक़ात का मक़सद जानते थे, इसलिए इंतज़ार करने का कोई मतलब नहीं लगा। अब यह रंग-बिरंगा समूह भारतीय

वायुसेना के विशाल रूस निर्मित मालवाहक विमान की ओर चल पड़ा, जो उनका इंतज़ार कर रहा था।

भारत सरकार आखिरकार तीन साल और दो महीने से ज़्यादा चली लंबी कानूनी लड़ाई के बाद सलेम और मोनिका को प्रत्यर्पित करने में कामयाब रही। उसने सलेम के खिलाफ हत्या, अपहरण, हत्या के प्रयास और जबरन वसूली के बहत्तर से ज़्यादा मामले दर्ज किए थे। लेकिन पुर्तगाल की एक अदालत ने सलेम पर सिर्फ़ नौ मामलों में मुकदमा चलाने की इजाज़त दी: लखनऊ, हैदराबाद और भोपाल में पासपोर्ट जालसाज़ी के तीन मामले; नई दिल्ली में जबरन वसूली के तीन मामले; और मुंबई पुलिस के तीन मामले, जिनमें बिल्डर प्रदीप जैन की हत्या, मनीषा कोइराला के सचिव अजीत दीवानी की हत्या और 1993 के सीरियल बम धमाकों में हथियार पहुँचाने का मामला शामिल है। विडंबना यह है कि मुंबई पुलिस को गुलशन कुमार मामले में या सुभाष घई, राजीव राय और राकेश रोशन जैसी अन्य फिल्मी हस्तियों पर हमलों से जुड़े मामलों में, या आमिर खान, मनीषा कोइराला और आशुतोष गोवारिकर की हत्या की साज़िश में सलेम पर मुकदमा चलाने से रोक दिया गया था।

सलेम भारत वापस जाने को लेकर खुश नहीं था। वह जानता था कि पुर्तगाल की जेल से कुछ सालों में बाहर निकलने की उसकी संभावना, भारत की जेलों में सड़ने से कहीं बेहतर है, भगवान जाने कब तक। हालाँकि, भारत सरकार ने उसे ऐसा करने के लिए मजबूर कर दिया था।

Machine Translated by Google

इस मामले को प्रतिष्ठा का प्रश्न मानते हुए, इस बार वे अंतरराष्ट्रीय अदालत में हारना नहीं चाहते थे। वे किसी भी समझौते पर हस्ताक्षर करने या किसी भी शर्त पर सहमत होने को तैयार थे। इसीलिए उन्होंने पुर्तगाली अदालत के सामने भी अपनी बात रखी, जबकि उसने तिरसठ मामलों को खारिज कर दिया था और केवल नौ मामलों पर विचार किया था। वे बस सलेम को भारत वापस चाहते थे।

सलेम को लिस्बन से मुंबई वापस लाने का मिशन एक गुप्त अभियान था, जिसकी योजना बहुत ही सटीक थी। सीबीआई के एजेंट, राजनीतिक दबाव के कारण अपनी योजना को पटरी से उतारने की आशंका से वाकिफ थे, इसलिए उन्होंने अतिरिक्त सावधानी बरती। नौकरशाही के तमाम दबावों का सामना करते हुए और हर स्तर पर गोपनीयता बनाए रखते हुए, आखिरकार सीबीआई सलेम को मुंबई ले जाने वाले विमान में बिठाने में कामयाब रही। यह वायुसेना का विमान ही होना चाहिए था, क्योंकि नागरिक विमान से तो पूरी बात का पता चल जाता।

विमान किसी भी नागरिक विमान से जितना अलग हो सकता था, उतना अलग था। ट्रे टेबल और उड़ान के दौरान मिलने वाले खाने की तो बात ही छोड़िए, विमान के चौड़े शरीर में अंदर की कोई खास जगह नहीं थी। यह एक विशाल कमरे जैसा था जिसके दोनों ओर धातु की बेंचें लगी थीं। छत से रस्सियाँ लटक रही थीं और कार्गो होल्ड के दूर वाले सिरे पर एक छोटी क्रेन किसी अँगूठे की तरह खड़ी थी। शौचालय की सुविधा के नाम पर बस एक अस्थायी मूत्रालय था। यह सलेम की आदत से बिल्कुल अलग तरह की हवाई यात्रा थी।

विमान में, सलेम को एक धातु की बेंच के किनारे हथकड़ी लगा दी गई थी, और एक मोटा पर्दा उसे उसकी प्रेमिका से अलग कर रहा था। जैसा कि उसे बाद में पता चला, उन हथकड़ियों का उद्देश्य सलेम को भागने से रोकना नहीं था; बल्कि उसे खुद को नुकसान पहुँचाने से रोकने के लिए लगाया गया था। भारत वापस ले जाते समय आत्महत्या करने से सीबीआई और उसकी प्रतिष्ठा दोनों धूमिल हो जाती।

सीबीआई इस पूरे मामले को ठीक से संभालना चाहती थी और किसी भी तरह की गलती की गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहती थी। अगर सलेम को कुछ हो जाता, तो वे इस कांड से कभी उबर नहीं पाते। मानवाधिकार कार्यकर्ता उन्हें ज़िंदा भून देते।

सलेम ने विनती की , 'साब, मुझे एक बार मोनिका से मिलने दो ना।'
परदेसी ने रूखे स्वर में कहा, 'तुम जहां हो, वहां से हिलने की हिम्मत मत करना।'
मालवाहक विमान अब हवा में था और सलेम इतना निराश था कि उस देश को देख भी नहीं पा रहा था जिसे वह पीछे छोड़ रहा था। अगले चार घंटे मानो अनंत काल लग रहे थे; इसी बीच, विमान काहिरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर ईंधन भरने के लिए उतरा। छतवाल और परदेसी ने इसे अपने पैरों को आराम देने का एक बेहतरीन समय समझा। सलेम के साथ ऐसा नहीं हुआ। दो घंटे रुकने के बाद, विमान मुंबई के लिए रवाना हो गया।

पुलिस, अनीस और शायद खुद से भी सालों तक भागते रहने के बाद, सलेम किसी से बात करने के लिए तरस रहा था। इसलिए उसने परदेसी से खुलकर बात करना शुरू कर दिया और उसे अपने परिवार और मोनिका के किस्से सुनाने लगा। दूसरी ओर, मोनिका को बात करने का बिल्कुल मन नहीं था और वह अपनी बाइबल में खोई रहती थी।

सुबह साढ़े सात बजे मुंबई के सहार अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर विशाल मालवाहक विमान के टायरों के टकराने से परदेसी और छतवाल को बड़ी राहत मिली। वे सलेम को बिना किसी परेशानी के घर ले आए थे। हवाई अड्डे पर, आईबी के एजेंटों ने उनका स्वागत किया और सलेम को एक तरफ ले जाकर डेढ़ घंटे से ज़्यादा समय तक उससे पूछताछ की।

अंततः सीबीआई का धैर्य जवाब दे गया और उसने आईबी अधिकारियों को पीछे हटने को कहा।
सलेम और मोनिका को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की जीप में हवाई अड्डे से बाहर ले जाया गया। सीआईएसएफ एक अर्धसैनिक बल है जिसे देश भर के हवाई अड्डों की सुरक्षा का दायित्व सौंपा गया है। हवाई अड्डे से बाहर निकलने के बाद, उन्हें एक अलग वाहन में बिठाया गया और शहर के उस पार नरीमन पॉइंट स्थित एक खाली बंगले में ले जाया गया—जो आमतौर पर किसी मंत्री द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। यह 1993 के मुंबई सीरियल बम धमाकों की जाँच कर रही सीबीआई स्पेशल टास्क फोर्स का अस्थायी कार्यालय था।

अबू सलेम मुंबई लौट आया था। आखिरकार वह उस शहर में वापस आ गया था जिसने उसे सिखाया था।
उसे अपना व्यापार सौंप दिया और उसे खूंखार और डरावना गैंगस्टर बना दिया।

Machine Translated by Google

छब्बीस

Machine Translated by Google

न्यू जर्सी कनेक्शन

अदालत कक्ष छत तक खचाखच भरा हुआ था। तनाव साफ़ महसूस किया जा सकता था।

मुंबई सीरियल बम धमाकों के सौ से ज़्यादा अभियुक्त अदालत में मौजूद थे, साथ ही एक दर्जन से ज़्यादा वकील और कई सीबीआई अधिकारी भी मौजूद थे। विशेष रूप से नियुक्त टाडा अदालत कक्ष में एक अजीब सी गम्भीरता का माहौल था।

ध्यान के केंद्र में दो बिल्कुल अलग-अलग लोग थे, जिन्हें एक तरह से मित्र-शत्रु माना जाता था। फिल्म अभिनेता संजय दत्त मुन्नाभाई एमबीबीएस की हालिया सफलता से गदगद थे—जो उनकी स्टारडम की वापसी का ज़रिया था। दूसरा था सलेम—साफ-सुथरा, सलीके से कपड़े पहने, अच्छे जूते पहने, बालों में जेल लगाए और महंगे इत्र की खुशबू से महकते हुए, उदास और थके हुए संजय के बिल्कुल विपरीत। सलेम, अपने पूर्व मित्र के विपरीत, मुस्कुरा रहा था, अपने विशिष्ट खुशमिजाज़ स्वभाव का प्रदर्शन कर रहा था।

संजय और सलेम एक ज़माने में बेशक अच्छे दोस्त थे—सलेम संजय का बहुत बड़ा प्रशंसक था और स्टार को उनकी लोकप्रियता का पूरा मज़ा आता था। मुंबई अंडरवर्ल्ड में एक मज़ाक चलता था कि दंगों से पहले संजय दत्त को एके-56 देने के बाद सलेम तीन दिन तक नहाया नहीं था। उसके बाद, दोनों फ़ोन पर संपर्क में रहे और संजय के विदेश में शूटिंग या कार्यक्रमों के दौरान दुबई में कई बार मिले। दरअसल, बॉलीवुड माफिया के बीच उनकी दोस्ती काफ़ी चर्चा में रही थी।

लेकिन समय बदलता है। संजय दत्त को जानने वालों का दावा है कि वह सलेम के साथ असहज हो गए थे। सलेम अक्सर संजय दत्त को दोस्त बनाए रखने के लिए उन्हें डराता-धमकाता और ज़बरदस्ती करता था, जिससे संजय दत्त को नफ़रत थी। सलेम के कट्टर दुश्मन और दाऊद इब्राहिम के दाहिने हाथ छोटा शकील के साथ ऐसा नहीं था, जिसके साथ संजय दत्त के सहज और सहज संबंध थे। 14 जुलाई 2002 को रिकॉर्ड की गई एक टेलीफोन बातचीत ने संजय दत्त के शकील के साथ संबंधों का पर्दाफ़ाश किया। बाद में इन टेपों को मकोका (महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम) अदालत में पेश किया गया, जहाँ संजय दत्त को यह कहकर सफाई देनी पड़ी कि वह बहुत नशे में थे और उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह किससे बात कर रहे हैं।

सलेम का अपने पूर्व बॉस अनीस इब्राहिम से झगड़ा हो चुका था और उसे पता था कि अनीस और शकील हर मोड़ पर उसका पीछा कर रहे हैं। उसे यह नहीं पता था कि उन्होंने कथित तौर पर उसके एक समय के दोस्त संजय दत्त को भी न्यू जर्सी में उसे खत्म करने की साजिश में शामिल किया था। हालांकि, अभिनेता ने हमेशा ऐसी किसी साजिश में शामिल होने से इनकार किया है।

अपुष्ट रिपोर्टों के अनुसार, सलेम ने अपने पुराने दोस्त संजय को बताया था कि वह न्यू जर्सी में सितारों से सजे एक लाइव बॉलीवुड शो में शामिल होगा। सलेम वहाँ जाकर संजय और बॉलीवुड के उसके दूसरे 'दोस्तों' से मिलना चाहता था।

आखिरकार, यह 2001 की बात है और वह अमेरिका में गुमनामी में रह रहा था। बॉलीवुड में बहुत कम लोगों को पता था कि सलेम शिकागो में बसने की कोशिश कर रहा था और लॉस एंजिल्स और न्यू जर्सी तक अपना ठिकाना बनाने की कोशिश कर रहा था।

सलेम ने इस कार्यक्रम में शामिल होने की अपनी योजना के बारे में सिर्फ़ संजय को ही बताया था। हो सकता है कि वह अमेरिका की यात्रा के दौरान इसे 'बॉलीवुड नाइट' में एक अनौपचारिक मुलाक़ात जैसा दिखाना चाहता था, और देश में अपने ठिकाने के बारे में कुछ भी नहीं बताना चाहता था। हालाँकि, आखिरी पल में गैंगस्टर को एक ख़तरनाक सूचना मिली और उसने कार्यक्रम में जाना रद्द कर दिया। उसे बताया गया कि छोटा शकील ने न्यू जर्सी में सलेम की हत्या की साज़िश रची थी। शकील के बंदूकधारियों ने स्टेडियम की रेकी कर ली थी और सलेम के इस भव्य कार्यक्रम में आते ही हमला करने की योजना बना रहे थे। सलेम को पता चला था कि संजय ने ही शकील को इस बारे में खबर दी थी।

Machine Translated by Google

कार्यक्रम में उनकी अपेक्षित उपस्थिति के बारे में पूछा गया।

सलेम शकील के हुनर और कुशलता से अच्छी तरह वाकिफ था, और यह भी कि वह हमले की योजना कितनी अच्छी तरह बना सकता है। कुछ ही महीने पहले, 15 सितंबर 2000 को, शकील ने बैंकॉक में छोटा राजन के अड्डे पर एक दुस्साहसिक हमले की योजना बनाई थी। राजन बाल-बाल बच गया था। सलेम ने न्यू जर्सी की अपनी यात्रा रद्द करने का फैसला किया, लेकिन संजय के प्रति उसके मन में गहरी रंजिश थी और उसने उसे उसके विश्वासघात और विश्वासघात के लिए दंडित करने का फैसला किया था।

कुछ महीने बाद, सलेम ने संजय दत्त की 'निगरानी' के लिए चार बंदूकधारियों का इंतज़ाम किया। उस समय संजय दत्त अपने दोस्त और फ़िल्म 'कांटे' के निर्देशक संजय गुप्ता के साथ गोवा में थे, जिन्हें वे गुप्स के नाम से जानते थे। सलेम ने अपने साथियों को साफ़ निर्देश दिए थे: संजय का पीछा करो और गोवा में या उनके लौटने पर मुंबई हवाई अड्डे पर उन्हें मार डालो। लेकिन संजय और गुप्स को इस सुनियोजित हमले के बारे में पता चला और वे मदद के लिए फ़ोन पर लगातार संपर्क में थे। उन्होंने सलेम के कई दोस्तों से मध्यस्थता करने को कहा, लेकिन इन लोगों को लगा कि सलेम संजय दत्त को माफ़ करने के मूड में नहीं है।

संजय और गुप्स होटल के कमरे में तब तक छिपे रहे जब तक उन्हें मुंबई में सलेम के एक करीबी दोस्त अकबर खान का पता नहीं चल गया। इस शख्स ने उन दिनों सलेम की मदद की थी जब सीरियल ब्लास्ट के बाद डॉन मुंबई पुलिस से भाग रहा था। खान ने सलेम को सीमा पार कराने में मदद की थी और उसे अपनी कार से काठमांडू भी ले गया था। उसके लिए यह एक बहुत बड़ा जोखिम था और सलेम खान का इतना शुक्रगुज़ार था कि उसने उसे कभी किसी चीज़ के लिए मना नहीं किया।

जब गुप्स ने खान से हस्तक्षेप करने के लिए कहा, तो खान मान गए। आखिर, एक सफल और धनी फिल्म निर्माता की मदद कौन नहीं करना चाहेगा? खान ने सलेम को फोन किया और उससे अपने शूटरों पर लगाम लगाने को कहा। सलेम गुस्से में था, लेकिन खान को मना भी नहीं कर सका। उसने उससे कहा कि जब तक वे खान की कार में यात्रा करेंगे, उसके हत्यारे दोनों संजयों को हाथ नहीं लगाएँगे। माफी की खबर संकटग्रस्त अभिनेता-निर्देशक जोड़ी को दी गई, जिससे उन्हें बहुत राहत मिली। वे किसी तरह मुंबई हवाई अड्डे पहुँचे और खान ने उन्हें अपनी हुंडई सैंट्रो कार में शहर के उस पार पहुँचाया, जिससे वे सलेम और उसके शूटरों के कहर से बच गए।

खान कोई नेकदिल इंसान नहीं थे। अगले कुछ महीनों तक, वह नियमित रूप से संजय गुप्ता के लोखंडवाला स्थित आलीशान दफ्तर जाते रहे और किसी न किसी काम के लिए लाखों रुपये लेते रहे, जो उनकी मदद की अलिखित कीमत का एक हिस्सा था। गुप्ता को यह बात नागवार गुज़री, लेकिन उन्होंने चुपचाप पैसे दे दिए। वह खान को नाराज़ करके घर में दुर्भाग्य को आमंत्रित नहीं कर सकते थे। खान गुप्ता से पैसे तो वसूलते रहे, लेकिन उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि संजय दत्त, जिनकी उस समय बाज़ार में प्रति फिल्म कुछ करोड़ रुपये की कीमत थी, उनकी फिल्म में मुफ़्त में काम करें।

बाजार विश्लेषकों ने इस फिल्म को संजय के करियर की सबसे असफल फिल्म बताया और आश्चर्य जताया कि आखिर किस बात ने उन्हें ऐसे समय में यह फिल्म करने के लिए प्रेरित किया जब उनका करियर शिखर पर था।

बाद में सलेम ने शेखी बघारी कि उसने संजय को माफ़ करने का फ़ैसला इसलिए किया क्योंकि संजय ने उसे अपने सैटेलाइट फ़ोन (जिसकी क़ीमत 1000 रुपये प्रति मिनट हुआ करती थी) पर कॉल किया था और रोते हुए माफ़ी माँगी थी। सलेम इस घटना का ज़िक्र करते हुए अपने श्रोताओं से कहता था कि उसने अपनी नेकदिली के लिए संजय के विश्वासघात को भूलने का फ़ैसला किया था।

इन घटनाओं से दो बातें साफ़ थीं: पहली, सलेम और संजय अब दोस्त नहीं रहे। दूसरी, सलेम संजय को निशाना बना रहा था। हालाँकि, संजय को माफ़ करने के सलेम के दावे की सच्चाई कभी साबित नहीं हो सकी। इसीलिए अदालत में, अभिनेता ने सलेम से बचने का फैसला किया और कुछ आरोपियों के साथ आखिरी बेंच पर बैठना पसंद किया। एटीएस के अधिकारी, जिन्होंने सलेम को (उसकी अपनी सुरक्षा के लिए) चारों तरफ से घेर रखा था, यह सुनिश्चित करने के लिए भी मौजूद थे कि सलेम संजय के साथ किसी भी तरह का दुर्व्यवहार न करे।

4 नवंबर 1993 को टाडा कोर्ट (कोलाबा के पास मुंबई सेशन कोर्ट) में सीरियल बम धमाकों के मामले में चार्जशीट दाखिल होने के तुरंत बाद, शहर की पुलिस को सुरक्षा की भारी समस्या का सामना करना पड़ा। इस मामले में दो सौ से ज़्यादा लोग शामिल थे।

Machine Translated by Google

इसमें आरोपी, एक हजार से अधिक गवाह, तथा बड़ी संख्या में वकील और पुलिसकर्मी शामिल थे।

इन सभी आरोपियों को आर्थर रोड जेल से कोलाबा तक रोज़ाना ले जाना एक बड़ी चुनौती होने वाली थी। इसके लिए कई दर्जन वाहनों और जटिल सुरक्षा उपकरणों की ज़रूरत होती। सुरक्षा में कोई भी चूक शहर के लिए, जो अभी भी सिलसिलेवार धमाकों से उबर रहा था, बड़ी तबाही का कारण बन सकती थी। पुलिस कोई भी जोखिम उठाने को तैयार नहीं थी।

इसलिए, एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए, राज्य सरकार ने आर्थर रोड जेल का एक बड़ा हिस्सा खाली कराकर उसे विशेष रूप से नामित टाडा अदालत के लिए समर्पित कर दिया, जो केवल सिलसिलेवार बम धमाकों की सुनवाई के लिए थी। इस व्यवस्था के तहत, अभियुक्तों को अदालत परिसर में ही अपने वकीलों से मिलने की सुविधा मिल गई। रिश्तेदार भी अभियुक्तों से मिलने आ सकते थे। जेल का यह हिस्सा कई एकड़ ज़मीन पर फैला हुआ था और कुछ अभियुक्तों ने तो अदालत परिसर के भीतर ही अपनी पत्नियों के साथ कुछ पल बिताने के लिए जगह भी तलाश ली थी।

लेकिन संजय, ज़ाहिर है, इतना प्रभावशाली व्यक्तित्व था कि किसी एकांत कोने में छिपना उसके लिए संभव नहीं था। वह जानता था कि उसे डॉन को श्रद्धांजलि देने की औपचारिकता निभानी ही होगी। अवकाश के दौरान, कई अभियुक्तों ने सलेम को गले लगाया और बेहद गर्मजोशी से उसका स्वागत किया, कुछ तो उस पर फ़िदा भी हुए। संजय एक कोने में खड़ा रहा। दरअसल, सलेम संजय से मिलने या कम से कम उसे अपनी जानी-पहचानी नज़रों से घूरने के लिए बेताब था, जो सामने वाले पर रोंगटे खड़े कर देने वाली थी। आखिरकार, जब वह अपने एटीएस एस्कॉर्ट्स के साथ सीढ़ियों से नीचे उतरा, तो उसने संजय को वहाँ खड़ा देखा। संजय के लिए यह एक अजीब सा पल था, हालाँकि सलेम मुस्कुराता रहा।

असहजता दूर करने के लिए क्या कहें, यह न जानते हुए, संजय ने पहल की और कहा, 'सलाम अलैकुम, भाई।' सलेम ने तुरंत जवाब दिया, 'वालैकुम सलाम।' फिर संजय ने पूछा, 'खैरियत?' सलेम ने अपनी खैरियत के बारे में पूछे गए इस सवाल पर बस सिर हिलाया और आगे बढ़ गया। अभिनेता ने राहत की साँस ली—तूफ़ान टल गया था और सब ठीक हो गया था।

10 नवंबर 2005 को मुंबई पहुँचने के बाद, सलेम को अगले दिन टाडा अदालत में पेश किया गया। उसने अपने परिवार को अपने आगमन की सूचना नहीं देना चाहा। उस समय, उसके पास कोई वकील नहीं था, लेकिन विभिन्न स्तरों के कुशल कई वकील उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। सलेम को हिरासत में भेज दिया गया और न्यायाधीश प्रमोद कोडे ने उसके साथ बहुत ही न्याय किया। जेल में रहने के दौरान सलेम को घर का खाना और अन्य सुविधाएँ दी गईं। विशेष लोक अभियोजक उज्ज्वल निकम ने अदालत को बताया कि अभियोजन पक्ष का नेतृत्व कर रही सीबीआई की विशेष कार्य बल अगले तीस दिनों में सलेम के खिलाफ एक पूरक आरोप पत्र दाखिल करेगी।

न्यायाधीश कोडे ने इस समयावधि के लिए अपनी स्वीकृति दे दी।

सलेम को आर्थर रोड जेल में अंडे के आकार के घेरे में उच्च सुरक्षा वाले अंडा सेल में रखा गया था, ताकि उसे कैदियों के बीच किसी भी शत्रुतापूर्ण गिरोह प्रतिद्वंद्वियों से बचाया जा सके।

उसे इससे नफ़रत थी। तंग जगह, बेढंगे कर्मचारी, बदबूदार शौचालय, मच्छर, चादरें न होना और ऐसी ही दूसरी परेशानियाँ उसकी कैद को असहनीय बना रही थीं। हालाँकि, धीरे-धीरे सलेम वहाँ जमने लगा, खासकर जब उसे एहसास हुआ कि जेल अधिकारी गिरोह के सदस्यों के कद और दौलत को लेकर सकारात्मक रुख़ रखते हैं। सलेम के प्रति सभी के सम्मान के कारण, उसे जेल में अपने समय का आनंद आने लगा। सलेम को बस मोनिका और उसके प्यार की कमी खल रही थी।

Machine Translated by Google

सत्ताईस

Machine Translated by Google

समीरा भड़कीं

समीरा जुमानी ने लिस्बन में सलेम की गिरफ्तारी के ठीक एक महीने बाद, 20 अक्टूबर 2005 को, उससे एकतरफा तलाक के लिए अर्जी दी। तलाक का मुकदमा अमेरिका के जॉर्जिया के ग्विनेट काउंटी की सुपीरियर कोर्ट में दायर किया गया था। इसे तकनीकी रूप से वैवाहिक समझौता कहा जाता था, जहाँ समीरा वादी थीं; उन्होंने इसे सबीना अरसलान अली के नाम से अपने प्रतिवादी पति अबू सलेम के खिलाफ दायर किया था, जिसकी पहचान अरसलान मोहसिन अली, एक पाकिस्तानी के रूप में हुई थी। अदालत ने विवाह को भंग कर दिया और सबीना अली को उसका पहला नाम सबीना आज़मी वापस दे दिया गया। यह वही काल्पनिक पहचान थी जो उसने 1993 में मुंबई से भागने के समय धारण की थी।

सलेम ने जेल में रहते हुए एक हलफनामे के ज़रिए जनरल पावर ऑफ़ अटॉर्नी हासिल की। इस पावर ऑफ़ अटॉर्नी का उद्देश्य सलेम की संपत्ति को अपने नाम कराने की व्यवस्था करना था। सलेम ने स्पष्ट किया कि उसने अपने आठ साल के बेटे आमिर की मदद और फ़ायदे के लिए यह काम स्वेच्छा से और स्वतंत्र रूप से किया था। डिक्री में साफ़ तौर पर लिखा था कि सलेम और समीरा की शादी 5 जनवरी 1991 को मुंबई में हुई थी और उन्होंने 4 मार्च 2000 को लास वेगास, नेवादा में दोबारा शादी की शपथ ली थी। इसमें कहा गया था, 'दोनों पक्ष 5 मार्च, 2001 के आसपास तक पति-पत्नी की तरह साथ रहे, जब प्रतिवादी, बिना वादी के, पुर्तगाल के लिस्बन चले गए, और तब से दोनों पक्ष सद्भावपूर्वक अलग रह रहे हैं।' यह शादी ठीक दस साल और दो महीने चली थी।

स्टार न्यूज़ की इन्वेस्टिगेशन एडिटर रहीं शीला रावल , जब पुर्तगाल सरकार सलेम और मोनिका को वापस भेज रही थी, तब अमेरिका में सलेम पर एक स्टोरी कर रही थीं। उन्होंने सलेम की पहली पत्नी का पता लगाने का फैसला किया और कई खोजबीन के बाद, समीरा के जॉर्जिया स्थित घर पहुँचीं। शीला ने कहा, "समीरा अपने अपमानजनक पति के गुस्से से डरी हुई थी, फिर भी वह अपनी कहानी बताने के लिए उत्सुक थी क्योंकि वह सच्चाई सामने लाना चाहती थी। उसे पूरा विश्वास था कि असली अपराधी को छोड़ दिया गया है।" शीला ने समीरा से विभिन्न मुद्दों पर छह घंटे तक विशेष बातचीत की। यह साक्षात्कार 18 नवंबर 2005 को " मेरा पति अबू सलेम और सलेम की बीवी नंबर 1" शीर्षक से प्रसारित हुआ था। यह एकमात्र ऐसा वाकया है जब समीरा ने किसी पत्रकार के सामने अपने दिल की बात खुलकर कही और सलेम के बारे में खुलकर बात की, जिससे उसके दिमाग और व्यक्तित्व के बारे में जानकारी मिली।

इस विस्तृत साक्षात्कार के दौरान, समीरा ने सलेम से अपनी 'जबरन' शादी, उसके साथ अपने संबंधों, उनके वैवाहिक जीवन में मोनिका बेदी की भूमिका और सलेम के जीवन पर दाऊद इब्राहिम के मंडराते साये के बारे में बात की। उन्होंने सलेम की असुरक्षाओं का वर्णन किया और गैंगस्टर की एक कायर छवि पेश की। उन्होंने उसकी गतिविधियों से खुद को अलग कर लिया, यह संकेत देते हुए कि मोनिका उसकी सहयोगी थी, जबकि उसका उसके काम से कोई लेना-देना नहीं था। उन्होंने यह भी बताया कि सलेम उन्हें अक्सर पीटता था और वह एक हिंसक, 'मनोरोगी' व्यक्ति था। उन्होंने पुष्टि की कि सलेम मोनिका को भी पीटता था। उन्होंने कहा, "मोनिका ने जो दो साल तक झेला, वह मैंने पंद्रह साल तक झेला।" उन्होंने यह भी बताया कि सलेम अपने बेटे की कितनी उपेक्षा करता था।

इसके अलावा, समीरा ने गैंगस्टर समुदाय की सामाजिक दुनिया पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे गिरोह के सदस्यों के बीच प्रतिद्वंद्विता उनकी पत्नियों तक फैल जाती थी, और कैसे अनीस इब्राहिम और छोटा शकील की पत्नियों के बीच, अपने पतियों की तरह, कभी नहीं बनती थी।

उसने सलेम के दाऊद से अलग होने के बाद की घटनाओं का भी ज़िक्र किया और बताया कि कैसे अनीस उसके घर में घुस आया और उसे धमकाया। समीरा ने कहा कि वह सलेम से डरती थी और अगर उसे अपने परिवार की सुरक्षा की चिंता न होती, तो वह उसे छोड़ देती।

Machine Translated by Google

सदस्यों.

संक्षेप में, समीरा ने सलेम को एक कायर व्यक्ति बताया, जो दाऊद से बेहद डरा हुआ था और जिसकी जिंदगी की एकमात्र चाहत 'प्रसिद्धि, प्रसिद्धि, प्रसिद्धि' थी।

इस लम्बे साक्षात्कार का शब्दशः अंश निम्नलिखित है:

शीला: बताओ, क्या ऐसा कोई इंसान है जिसके पास दिल या दिमाग नहीं है?

समीरा: जब कोई खुद से प्यार करता है, तो वह इस दुनिया में किसी और से प्यार नहीं कर सकता।

शीला: तुममें इतनी हिम्मत है कि तुमने एक दिन दाऊद से बात की। तुम कर पाईं...
शकील से बात करो?

समीरा: क्योंकि मेरे पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है।

शीला: तुम्हारे पास ऐसा क्या बचा है जिसे लूटा जा सके?

समीरा: प्रतिष्ठा। मेरा सम्मान अभी भी बचा है।

शीला: किसी से बात करोगी तो अपनी इज्जत कैसे गँवाओगी?

समीरा: तुम्हें पता है, मैं अभी भी अपने बेटे के साथ सोसाइटी में रह रही हूँ। अगर कोई इशारा करे तो
उंगलियाँ दिखाते हुए, यह कहते हुए कि वह उसका पूर्व पति है, यह मेरे लिए मायने रखेगा।

शीला: तो, आपको लगता है कि अमेरिका में इसका कुछ मतलब है?

समीरा: आपके समाज में, जहाँ आप भारतीयों के बीच रहती हैं, ऐसा होता है। उन्हें गपशप करने के लिए कुछ चाहिए होता है।

शीला: मैं शुरू से ही एक बात पूछना चाहती थी, अबू सलेम अपनी जिंदगी में क्या चाहता था, क्या आपको पता चला?

समीरा: नाम, नाम, नाम, यश, प्रसिद्धि, प्रसिद्धि।

शीला: लेकिन यह तो प्रसिद्धि का उल्टा रूप है?

समीरा: देखो, उसे समझ नहीं आया कि प्रसिद्ध का क्या मतलब होता है और कुख्यात का क्या?
मतलब।

शीला: तो, वह चाहते थे कि कोई 'डॉन' अबू सलेम लिखे?

समीरा: हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है। मैंने एक दिन उनसे पूछा था, पता है, इतने सारे स्टेज शो होते हैं और लोग आते हैं, बड़े-बड़े सितारे आते हैं और परफॉर्म करते हैं और लोग ये सब देखकर कितने खुश होते हैं, पता है जब वो किसी का मनोरंजन करते हैं और ताली बजाते हैं, तो वो उन्हें देखना, उनसे मिलना, उनसे प्यार करना, उन्हें गले लगाना, उनकी तस्वीरें लेना चाहते हैं। [सलेम से] क्या आपको लगता है कि कोई ऐसा है जो आपके साथ ऐसा करना चाहता है?

शीला: तो क्या उसे यह बात पसंद थी कि लोग उससे डरते थे?

समीरा: मुझे नहीं पता, पर वो इसके बारे में सुनना ही नहीं चाहता था। उसने मुझसे कहा कि 'लोग मुझे जानते हैं और मेरी इज़्ज़त करते हैं।' मैंने उससे कहा, 'तुम्हें पता है कि वे तुमसे प्यार या इज़्ज़त नहीं करते। कोई भी तुमसे प्यार या इज़्ज़त नहीं करता। वो बस तुमसे डरते हैं क्योंकि वो अपने परिवार या अपनी ज़िंदगी के लोगों से बहुत प्यार करते हैं।'

·· अगर मेरे पास बाहर निकलने का
कोई विकल्प होता, तो मैं बहुत पहले ही निकल जाता। लेकिन मैं उसके चेहरे पर यह बात नहीं बता सकता था।

शीला: जब विस्फोट हुए और आपको दूर भेजे जाने की बात चल रही थी
इस जगह या उस जगह, क्या आपने अबू सलेम को डरा हुआ देखा?

समीरा: वह बहुत डरा हुआ व्यक्ति है। . मेरे बेटे के जन्म तक वो लगातार मेरे संपर्क में रहे। तब तक मैं वहीं रह रही थी और वो हर रात आते थे। मुझे पता था कि अगर वो एक रात नहीं आए, तो सुबह ज़रूर आएंगे और सोएंगे, खाएंगे-पीएंगे।

शीला: क्या वह आपके घर कोई तारा लेकर आया था?

समीरा: एक-दो आए थे, उन्होंने मुझसे पूछा, क्या तुम आओगी, मैं तुम्हें उनसे मिलवा दूँगी।

शीला: कौन **** या **** या ****'? [नाम हटा दिए गए हैं]

समीरा: प्लीज, मैंने आपको नहीं बताया।

शीला: लेकिन मैंने सुना है कि उसने और **** ने अपने बेटे का नाम रखने का फैसला किया है
आम? [नाम हटा दिया गया]

समीरा: उसने तो यह बताने की भी ज़हमत नहीं उठाई।

Machine Translated by Google

(इसके बाद हुई बातचीत से ऐसा लगता है कि सलेम अपने बेटे को 'पापा' कहता है।)

शीला: क्या उसने कभी अपने बेटे को गले लगाया?

समीरा: वो सिर्फ़ दो साल का था जब वो चला गया। पता है, जब वो
कहता है कि वो मोनिका से बच्चे पैदा कर सकता है, वो ये कर सकता है, वो वो कर सकता है। वो तो बस एक बच्चा है। वो अपनी ज़िंदगी . . .
जी सकता है, मुझे जीने दो।

जिस तरह से वह बात करता था उससे मुझे कभी यह महसूस नहीं हुआ कि उसने कभी अपनी बात रखने के बारे में सोचा भी था।
बेटा उस बिंदु पर है जहां आप कहेंगे कि वह किसी से प्यार करता है।

शीला: उसकी ज़िंदगी में कुछ प्राथमिकताएँ थीं। वह कुछ बनना चाहता था?

समीरा: वो कोई पारिवारिक व्यक्ति नहीं थे। मैंने कभी ऐसा जीवन नहीं जिया जिसे मैं कह सकूँ कि वो एक पारिवारिक व्यक्ति थे।
'विवाहित' जीवन, जिसका मतलब है पति-पत्नी साथ बैठते हैं। हमने कभी भी
साथ में खाया जाता था। यह सिर्फ़ उसकी और उसके जीवन की सेवा करने के बारे में था; कभी-कभी तो वह
मेरा चेहरा देखना चाहते हैं। मैं नौकर के हाथ उसका खाना भेज देता था। इसलिए लोग सोचते हैं कि मैं रहता हूँ
मैं उसके साथ पंद्रह साल तक रही, लेकिन मैं उसके साथ एक मिनट भी नहीं रही,
यहां तक कि एक विवाहित मिनट भी.

शीला: क्या उसने कभी तुमसे 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ' या 'अबू तुमसे प्यार करता है' नहीं कहा, उसके बाद भी नहीं?
क्या किसी ने आपसे जबरन शादी की है?

समीरा: नहीं, उसने मुझसे कहा था कि अगर उसे प्यार न होता तो वह शादी न करता, मानो कह रहा हो
कि 'मैंने' 'तुम्हारे' लिए कुछ बड़ा किया। उसने कहा कि मेरी नज़र तुम पर थी और मैंने तुमसे शादी कर ली
और तुम्हें एक अच्छा घर, गाड़ी और कपड़े दिए। सब कुछ हमेशा ऐसा था जैसे 'मेरे पास' है
यह अधिकार 'तुम' पर है। उसने मुझे यह एहसास दिलाया कि हज़ारों लोगों के सामने भी, मैंने
तुम्हें ये दिया, मैंने तुम्हें खाना दिया, मैंने तुम्हें पेय पदार्थ दिए। मैं इन दिनों खूब शेर-शायरी कर रहा हूँ।

शीला: हाँ, बोलो?

समीरा: यह ऐसा है. . दुनिया आपके कदमों में है और आपके पैर ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं।
पता है, मैंने हमेशा खुद को ऐसे ही चित्रित किया है।

शीला: तो आपको चौदह साल का वनवास झेलना पड़ा?

समीरा: मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि मेरे पास खाना है, लेकिन मुझे भूख नहीं लगती थी क्योंकि इससे मेरी जान चली जाती थी।
मुझे। . . मेरे पास कपड़े तो थे, लेकिन मैंने कभी अच्छे कपड़े नहीं पहने और दुबई में हर कोई जानता है
मैं हमेशा से ही साधारण रही हूँ। मैंने कभी भी अपने शरीर पर गहने नहीं पहने।

शीला: जब वह दुबई जाता था, तो अनीस के घर एक-दो बार जाना पड़ता था।
उस समय, उसे उस माहौल में देखकर आपको कैसा लगा? क्या उसके पास
क्या यह सचमुच एक शक्तिशाली पद है?

समीरा: देखो, तुम मुझे जो बातें बता रहे हो... मैं कभी उसमें नहीं गया ...
ऐसा माहौल जहां मैं उसे दूसरों के साथ देख सकूं।

शीला: नहीं, लेकिन कोई चीज़ों को समझने में सक्षम है?

समीरा: लेकिन जब मैं महिलाओं के साथ थी, तो महिलाओं को हमेशा प्राथमिकता दी जाती थी
कि हम सब के बीच, दाऊद की पत्नी, अनीस की पत्नी, 'हम कुछ हैं' [कि वे
कोई थे] और 'तुम औरतों, तुम्हारे पति हमारे अधीन काम करते हैं'; इसलिए जब वे
उनके अधीन काम करो, 'तुम हमारे अधीन काम करो' और यह बात मैं कभी स्वीकार नहीं कर सकता। . . माफ़ करना . . . मैं
मैंने कभी उन पर मक्खन नहीं लगाया था . . जब मेरे बेटे का जन्मदिन था, तो वह मेरे बेटे का पहला जन्मदिन था
जन्मदिन । . . मैं इसे बहुत अच्छी तरह से करना चाहता था. .. उसने अपने घर आने की भी जहमत नहीं उठाई।
बेटे का जन्मदिन। मैं तो चाहती भी नहीं थी कि वह ऐसा करे। मेरे पास सिर्फ़ कुछ ही लोग थे जो मुझे जानते थे।
मेरे बेटे की माँ के रूप में... वहाँ एक भी अंडरवर्ल्ड व्यक्ति नहीं था।

शीला: दाऊद से अलग होने के बाद क्या किसी ने आपको धमकी दी?

समीरा: मेरे पास उनसे बात करने का भी समय नहीं था।

शीला: जब फ़ोन आया या जब आपके घर आदमी भेजे गए, क्या तब भी कोई था?
कोई धमकी?

समीरा: उन्हें पता था कि मैं वहाँ हूँ, लेकिन उन्हें परोक्ष रूप से पता था। जब अनीस
फोन किया और वह मुझसे अप्रत्यक्ष रूप से पूछताछ कर रहा था—'तुम्हारा पति कहां है'—और सब
[ये] बकवास है क्योंकि उसका [सलेम का] ये ऑफिस था और इसलिए उसकी तस्वीर वहाँ लगी थी। उसने
उन्होंने वो तस्वीर मांगी और... गुस्से में उसे फाड़ दिया। उन्होंने ये सब भेजा
लोग मेरे घर आए और कहा कि उन्हें तस्वीर चाहिए। उनके साथ उनके दो दोस्त भी थे।

Machine Translated by Google

भाई भी वहाँ थे, और मैंने उनसे केवल इतना कहा कि आप उनका साथ देने आए हैं
तस्वीर, उसकी तस्वीर लेने के लिए आठ आदमी आए, सिर्फ एक तस्वीर के लिए आठ आदमी आए।
[उन्होंने पूछा,] 'अबू सलेम कहाँ था?' मैं बहुत रूखा था, मैंने कहा 'क्या आप अपने बारे में बताते हैं?'
"बीवी, तुम कहाँ जा रही हो? तुम मुझसे कैसे उम्मीद करती हो कि मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ है?"

शीला: मुस्तकीम?

समीरा: मुस्तकीम, मोइन, रियाज़ और पांच अन्य लोग... वे लोगों से भरी कारों में आए थे। · तीन-चार लोग,

शीला: तो, वे सभी आपके पास आए और फोटो ढूंढने लगे... . आपने ऐसा क्यों कहा?
क्या दाऊद बेहतर था?

समीरा: क्योंकि मैं बहुत गुस्से में थी और मुझे लगता है कि उस समय... (छोटा)
शकील की पत्नी के पास कुछ था। · · मुझे लगता है कि उसकी कोई जन्मदिन पार्टी या कुछ और थी।
कुछ ऐसा जिसके लिए वो मुझे फ़ोन करना चाहती थी। उसने मुझे फ़ोन किया। शकील की पत्नी और अनीस की
पत्नी में कभी नहीं बनती... वे दोनों आपस में लड़ते रहते हैं।

शीला: पत्नियों के बीच सत्ता का खेल?

समीरा: मैं अपने जीवनकाल में सभी पत्नियों पर एक कहानी लिखूंगी, कि वे कैसे
रहती थी... इसलिए वह मुझे फोन करना चाहती थी, वह जानती थी कि मैं कभी ज्यादा जगहों पर नहीं जाती लेकिन
यह नियाज़ (धार्मिक समारोह) या कुछ और था, इसलिए उसने मुझे मजबूर किया, कि मैं
निश्चित रूप से जाना होगा... उसने मुझे फोन किया और ये सब बातें कहीं और मैं गुस्से में था
उस समय. तो उसने कहा, 'ठीक है. . . मैं उससे बात करूँगा। यह कोई तरीका नहीं है।
अच्छा व्यवहार करो।' और तभी मुझे शकील का फ़ोन आया: 'क्या हुआ?' मैंने कहा, 'मैंने कभी नहीं
आपकी किसी भी चीज़ का हिस्सा रहा हूँ, आप मुझे जानते हैं, मैं कैसा हूँ, जिस तरह से मैंने
रहते थे. · क्या मैंने कभी आपके या किसी के जीवन में हस्तक्षेप किया है या वहां कभी गया हूं
मक्खन लगाना या कुछ गलत करना? या किसी को नुकसान पहुँचाना? मेरा इन सब से कोई लेना-देना नहीं है
मैं हमेशा इन सब से दूर रहा, इसलिए. · · मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे पास आए
मेरा घर क्योंकि यह मुझे अंदर से मार रहा है। . . ' तभी दाऊद ने फोन किया।
उन्होंने कहा, 'क्या हुआ?' उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि 'इसके बाद कोई भी आप पर हमला नहीं करेगा...'
और उसने मुझसे पूछा: 'क्या हुआ, उसने क्या कहा?' मैंने कहा, 'वह इस तरह से बोल रहा है।
मुझसे बात की... और मैं इससे सहमत नहीं हूं।'

शीला: क्या तुमने दाऊद से पूछा?

सम्मरा: मैंने उससे सीधे कहा: 'क्या तुम कभी उन्हें (अपनी पत्नियों को) बताते हो, क्या तुमने कभी
उनके साथ ऐसा व्यवहार कैसे करें? उसने मना कर दिया। मैंने कहा, 'तुम्हें उसके बात करने के तरीके को समझना चाहिए।'
मेरे लिए तो ये मुझे मार डालता है। बात करने का कोई अलग तरीका क्यों नहीं, समझ रहे हो? औरतें ऐसा क्यों करती हैं?
तुम्हारी बातचीत के बीच में आओ? जब मर्द मौजूद हैं... तो तुम क्यों चाहती हो?
किसी औरत को अपनी किसी भी चीज़ में घसीटने के लिए?' और उन्होंने इसका सम्मान किया। उन्होंने कहा,
'मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि कोई भी तुम्हें फोन न करे...' और उसके बाद किसी ने कभी फोन नहीं किया।

शीला: वह पहली और आखिरी बार था जब आपने उनसे सीधी बात की थी या
क्या आप पहले भी उससे सीधे बात करते थे?

समीरा: नहीं, यह पहली बार था जब मैंने उससे बात की थी, और उसके बाद, वे (दाऊद)
और सलेम) ने फिर से सुलह कर ली। मुझे नहीं पता कि उन्होंने कैसे सुलह की और फिर दोबारा
उन्होंने इसे बंद कर दिया... उन्होंने सुलह कर ली क्योंकि दाऊद दुबई आ गया था, मुझे लगता है।

शीला: तो, उसने फिर फोन किया?

समीरा: उसने मुझे कभी फोन नहीं किया।

शीला: तुमने उससे सिर्फ़ एक बार बात की?

समीरा: हां, हां, मैंने उनसे फोन पर बस एक बार बात की थी... तब से वो बहुत... . अगर
मैं किसी भी अन्य लोगों के साथ तुलना करता हूं... उनमें वह सम्मान था। कम से कम अच्छी तरह से बात करना
फोन आया और मैंने उससे कहा, 'देखिए, आप जो भी हैं और मैं जानता हूं कि आप भाई हैं, लेकिन मैं
आप जो हैं उसके लिए आपका सम्मान नहीं किया जाता। एक इंसान के तौर पर सिर्फ़ इसलिए कि आप उम्र में बड़े हैं
मैं आपका सम्मान करता हूँ, लेकिन अगर आपका व्यवहार ऐसा है, अगर आपके भाई का व्यवहार ऐसा है
(अनीस) जिस तरह का व्यवहार करता है, क्या तुम्हें लगता है कि मैं उसका कोई सम्मान करूँगी... हर आदमी
वे अपने कर्म के कारण वहां जाते हैं और अपने कर्म के कारण ही उनका सम्मान होता है।' शकील
और अनीस की आपस में कभी नहीं बनी, कभी नहीं। नहीं, मैं हमेशा उनके बीच तनाव देखता हूँ।

Machine Translated by Google

दो महिलाएँ...

शीला: जी हाँ, उनकी पत्नियों के बीच तनाव रहता था क्योंकि पतियों
घुल - मिल नहीं पाए?

समीरा: यही तो उन्होंने मुझे बताया, दोनों ने।

शीला: अच्छा... मतलब शकील की बीवी तुम्हें बताएगी?

समीरा: मैंने उसके लिए इतना कुछ किया है, और वो अपने बारे में क्या सोचती है? वो चाहे जो भी हो, वो ही सब कुछ थी। उसे तो बात करना भी नहीं आता था। मैंने उसे ढंग से बात करना सिखाया।

शीला: लेकिन यह बताओ, तुम पार्टियों में क्या करोगे?

समीरा: कुछ नहीं, मैं एक जगह बैठती थी और आधे घंटे में निकल जाती थी।

शीला: क्या अबू ने तुम्हें कभी बताया कि पार्टियों में कैसे व्यवहार करना है, कैसे बात करनी है?

समीरा: हाँ। 'इतने रूखे और रूखे मत बनो।' 'तुम्हें लोगों से बात करना नहीं आता।' शीला: हाँ?

समीरा: वो तो बस इसमें ही मस्त था। मैंने उसे कभी किसी पार्टी में जाने के लिए नहीं कहा और उसने भी मुझे कभी नहीं। मैं हमेशा बहाने बनाती थी।

शीला: तो, आप कहना चाहती हैं कि आपकी जबरन शादी के बाद, आपका वैवाहिक जीवन
क्या विवाहित जीवन का कोई आनंद नहीं लिया गया था?

समीरा: नहीं.

शीला: उसके बाद भी आप इतने लंबे समय तक क्यों चलते रहे?

समीरा (हँसते हुए): मैं उसकी आत्मा को खींच रही थी।

शीला: क्या उसने तुम्हें मारा?

समीरा: मेरे यहाँ बहुत सारे टांके लगे हैं (अपने माथे की ओर इशारा करती है)।

शीला: तुम्हें मारा?

समीरा: उसने दुबई में मुझे बहुत मारा था। वो मुझे जान से भी मारना चाहता था।

शीला: कैसे? क्या उसने तुम्हें हाथ से मारा?

समीरा: यह उस समय की बात है जब डॉक्टर ने कहा कि 'अगर आप होते तो
अगर आप देर से लाए जाते तो आप मर सकते थे।

शीला: इसका मतलब है कि आप शारीरिक दुर्व्यवहार के कारण चुप रहीं?

समीरा: मैं कह सकती हूँ कि उन्होंने मेरे परिवार को धमकाया। मैं बहुत शारीरिक शोषण से गुज़री हूँ, यहाँ तक कि मोनिका भी बहुत दुर्व्यवहार से गुज़री है... शायद उसने दो साल और दो दिन में जो देखा, उसे पंद्रह साल से गुणा करके देखिए तो मुझे वही मिलेगा·जो मैंने देखा।

देखा।

शीला: क्या उसने शराब पीकर तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया?

समीरा: नहीं, उसने मेरे सामने कभी शराब नहीं पी।

शीला: तो फिर उसने तुम्हें क्यों मारा?

समीरा: क्योंकि मैं उसकी आत्मा को प्रभावित करती थी।

शीला: तुम उससे बहस करते थे?

समीरा: मैं बहस नहीं कर रही थी। मैं हमेशा उसे सच बताती थी।
'तुम्हें क्या मिलेगा? मेरे साथ ऐसा करके तुम्हें क्या मिलेगा?'

शीला: और?

समीरा: मैं हमेशा इस निष्कर्ष पर पहुंचती थी कि वह कहीं न कहीं मानसिक रूप से विक्षिप्त या मनोरोगी था।

शीला: लेकिन आप दुबई चले गए और बाद में अमेरिका आ गए?

समीरा: वह मुझे यहां भी मारता था।

शीला: लेकिन आप यहां पुलिस बुला सकते थे?

समीरा: तुम समझ नहीं रही हो। उसका मुझ पर बहुत ज़ोर था। मेरे घरवाले सही कहते हैं कि जब तक वो पीछे न हो, मैं कोई छोटी-मोटी बात भारत में... बार में... और . . भी नहीं कर सकती।
मुझे पता है कि अगर वो बाहर आया, तो मैं पहली इंसान होऊँगी जिसे वो मारना चाहेगा।

शीला: हे भगवान! तुम ऐसा सोचते हो?

समीरा: यह सोचने का सवाल नहीं है, मैं किसी तरह यह जानती हूं।

Machine Translated by Google

अट्ठाईस

Machine Translated by Google

मोनिका द टर्नकोट

मोनिका ने हैदराबाद कोर्ट में जज सी.वी. सुब्रमण्यम से कहा, "मैं अविवाहित हूँ और अविवाहित हूँ।" उसके इस बयान ने सबको चौंका दिया। ख़ासकर सलेम को।

साफ़ है, मोनिका ने सलेम से नाता तोड़ने का पक्का फ़ैसला कर लिया था। लिस्बन में कैद के दौरान किसी समय उसे यह एहसास हुआ कि उसे हमेशा सलेम की प्रेमिका बनकर नहीं रहना है। वह सिर्फ़ तीस साल की थी और उसके सामने पूरी ज़िंदगी पड़ी थी। पिछले छह साल उसने बदनामी और अपमान में बिताए थे—पहले तीन साल क़ानून से भागते हुए, पुलिसवालों से छिपते हुए, नकली पहचानों की आड़ में और फिर तीन साल सलाखों के पीछे। लिस्बन से लेकर भारत तक अपमान और ताने उसके लगातार साथी रहे। जेल में, उसने पहले तो खुद को धोखा देने की कोशिश की, सलेम से चिपकी रही, रोमांटिक और कामुक खत लिखे। लेकिन जल्द ही उसे इन सबकी निरर्थकता का एहसास हो गया। शोहरत की चाहत में, वह बदनामी के गर्त में गिर गई थी।

सलेम और मोनिका के मुंबई पहुँचने के तुरंत बाद, माफिया डॉन को सीरियल बम धमाकों में उसकी भूमिका के लिए मुंबई की टाडा अदालत में पेश किया गया, जबकि मोनिका को सीबीआई के अधिकारी जाली पासपोर्ट मामले में उसकी संलिप्तता की जाँच के लिए हैदराबाद ले गए। जाँच के दौरान, उसने सना कामिल मलिक के नाम से जाली पासपोर्ट बनवाने से इनकार किया, हालाँकि उसे लिस्बन में इसी पहचान के साथ गिरफ्तार किया गया था। उसके पासपोर्ट से पता चला कि उसने अपने दस्तावेज़ आंध्र प्रदेश के कुरनूल से जमा किए थे और उन पर खुद हस्ताक्षर भी किए थे। इसके बाद मोनिका को हैदराबाद की चंचलगुडा जेल की महिला जेल में रखा गया।

मोनिका को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया, लेकिन उसकी जेल और हैदराबाद की अदालत में सुनवाई के बाद भी उसकी मुश्किलें खत्म नहीं हुईं। भोपाल पुलिस भी उसे पकड़ने के लिए बेताब थी। आखिरकार, उस पर फौज़िया उस्मान के नाम से भोपाल में जारी जाली पासपोर्ट का इस्तेमाल करने का भी आरोप था, जबकि सलेम दानिश बेग के नाम से पहचान रखता था। भोपाल पुलिस हैदराबाद में उसकी न्यायिक हिरासत खत्म होने के अगले ही दिन से उससे पूछताछ शुरू करना चाहती थी।

मोनिका ने 2005 के आखिरी महीने और 2006 की शुरुआत में भोपाल और हैदराबाद के बीच चक्कर काटते हुए बिताई, जब तक कि उन्हें ढाई महीने तक चले एक मुकदमे के बाद दोषी नहीं ठहराया गया। 10 फ़रवरी 2006 को, हैदराबाद की सीबीआई की विशेष अदालत ने पासपोर्ट जालसाजी मामले में मोनिका को पाँच साल कैद की सज़ा सुनाई। फ़ैसला सुनते ही वह टूट गईं और फूट-फूट कर रोने लगीं।

मुकदमे के दौरान, मोनिका को डिज़ाइनर कपड़े पहनकर सुनवाई में शामिल होने और घर का बना खाना खाने की अनुमति थी। लेकिन दोषी ठहराए जाने के तुरंत बाद ये सभी सुविधाएँ वापस ले ली गईं। उसे सलवार कमीज़ या सफ़ेद साड़ी और नीला ब्लाउज़ पहनने का विकल्प दिया गया। उसने साड़ी और ब्लाउज़ का संयोजन चुना और उसे तीन सेट दिए गए, जिन्हें उसे खुद धोना था।

अब वह मोनिका बेदी जैसी स्टारलेट नहीं थीं। अब वह एक कैदी थीं, जैसा कि उन्होंने अपनी बीस फिल्मों में से किसी में भी नहीं दिखाया था।

जेल में 330 कैदी थे और मोनिका कैदी संख्या 103 थी। चूँकि जेल केवल महिला कैदियों के लिए थी, इसलिए विचाराधीन कैदियों और दोषियों को एक ही जगह पर रखा गया था। मोनिका को विचाराधीन कैदियों वाले खंड से दोषियों के लिए बनी बैरक में स्थानांतरित कर दिया गया। बेहद उदास होकर, उसने पहला दिन बैरक के एक कोने में रोते हुए बिताया। एक अपराधी होने के नाते, मोनिका को जेल में कोई एक पेशा चुनना था। उससे अगरबत्ती, मोमबत्ती और टूथपेस्ट बनाने वाली इकाई में काम करने की उम्मीद की गई थी।

Machine Translated by Google

वह पाउडर बनाती थी या कपड़े सिलने का काम करती थी, जिससे वह रोजाना 10-15 रुपये कमा लेती थी और कैंटीन से कुछ खाना खरीद लेती थी।

मोनिका शायद हँसती अगर वह इतनी हताश न होती। आठ घंटे की कड़ी मेहनत के लिए मात्र 15 रुपये? उसे याद आया कि कैसे वह नौकरों या वेटरों को अपनी दिहाड़ी से कई गुना ज़्यादा टिप देती थी। वह अपनी फिल्मों के काम से लाखों रुपये कमाने और यूरोप में शॉपिंग पर हज़ारों डॉलर खर्च करने की आदी थी। लेकिन अब कोई चारा नहीं था, और मोनिका ने कुछ हद तक धैर्य रखते हुए, एक कामकाजी कैदी की भूमिका निभाई।

वह काम करने लगी और दूसरे कैदियों के साथ घुलने-मिलने लगी। इस बीच, उसके वकीलों ने उसे आश्वासन दिया कि वे सज़ा के ख़िलाफ़ अपील करेंगे।

मोनिका बेदी को सज़ा सुनाए हुए लगभग एक महीना ही बीता था कि उनकी ज़िंदगी ने एक नया मोड़ लिया, इस बार बेहतरी के लिए। वह काम पर थीं जब उन्हें बताया गया कि उनसे मिलने कोई आया है। जब उन्हें पता चला कि वह कौन है, तो उनकी आँखों से आँसू बह निकले। डॉ. प्रेम बेदी को अपनी बेटी से मिले चार साल हो चुके थे—आखिरी बार ओस्लो में सलेम के साथ। उन्हें उससे मिलने के लिए अदालत में अर्ज़ी देनी पड़ी थी और विशेष अनुमति लेनी पड़ी थी, लेकिन वे कामयाब रहे थे। मोनिका को वे सभी पल याद आए जब उनके पिता ने उन्हें फिल्म इंडस्ट्री में आने से मना किया था। उन्होंने ज़िद करके उन चेतावनियों को नज़रअंदाज़ कर दिया था। उन्होंने दिल खोलकर माफ़ी माँगी। मानो मानो एक बाँध टूट गया हो और वह खुद को रोक नहीं पा रही थीं। कहने की ज़रूरत नहीं कि डॉ. बेदी ने उन्हें माफ़ कर दिया। यह मुलाक़ात मुश्किल से तीस मिनट तक चली, लेकिन इसने मोनिका में एक नई उम्मीद जगा दी।

जेल से बाहर निकलते ही डॉ. बेदी ने मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा, "मेरी बेटी निर्दोष है। मैं उसे बरी करवाने की पूरी कोशिश करूँगा।"

इंसान को उम्मीद से ज़्यादा कुछ भी प्रेरित नहीं करता और मोनिका भी इसका अपवाद नहीं थी। अपने पिता के आने के बाद उसकी उम्मीदें और बढ़ गईं और वह अपनी सज़ा के बाद की ज़िंदगी के लिए उत्सुक हो गई। हर दिन बोझिल था, लेकिन मोनिका ने हिम्मत नहीं हारी। उसे जल्द ही पता चला कि उसके पिता ने उसका पक्ष लिया है और लंबी अपील प्रक्रिया में उसका साथ दे रहे हैं; इससे उसका मनोबल बढ़ा।

सीबीआई अदालत के फैसले के खिलाफ डॉ. बेदी की अपील के तुरंत बाद, मोनिका के लिए हालात बेहतर होते दिखाई देने लगे। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने उनकी जेल की सजा पाँच साल से घटाकर तीन साल कर दी। मोनिका के पिता ने सीबीआई की विशेष अदालत में ज़मानत के लिए अर्ज़ी दी, जिसने उनका पासपोर्ट माँगा था। जब उन्होंने कहा कि उनका पासपोर्ट लिस्बन में खो गया है, तो ज़मानत खारिज कर दी गई। इसके बाद, उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय का रुख किया, जहाँ उन्हें ज़मानत मिल गई। हालाँकि, मई 2006 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ज़मानत दिए जाने के बावजूद, उनके वकीलों को भोपाल में एक लंबित मामले का सामना करना पड़ा। इसमें दो महीने और लग गए।

सुलझाने के लिए।

दोषी ठहराए जाने के अठारह महीने बाद—लिस्बन में गिरफ्तारी के पूरे पाँच साल बाद—मोनिका को 4 जुलाई 2007 को जेल से रिहा कर दिया गया। वह अपने पिता और वकीलों के साथ जेल से बाहर निकली। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सैकड़ों लोग, पत्रकार और टेलीविज़न के लोग उसकी एक झलक पाने के लिए जेल के बाहर जमा हो गए थे। पुलिस को बढ़ती भीड़ को संभालने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। चंचलगुडा जेल के बाहर भगदड़ जैसी स्थिति थी।

भीड़ और मीडिया की मौजूदगी देखकर मोनिका स्तब्ध रह गईं। उनके चेहरे पर एक दर्जन माइक्रोफ़ोन लगाए गए थे। जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, देखने वालों को एहसास हुआ कि यह एक अद्भुत कामोद्दीपक है। वह ज़िंदगी भर शोहरत चाहती थीं और उन्हें पता था कि वह पूरे दिन राष्ट्रीय टेलीविज़न पर छाई रहेंगी। उन्होंने पूरे आत्मविश्वास से बात की, लेकिन अपने जवाब सरल रखे।

'आज मैं बहुत खुश हूँ। आखिरकार मुझे न्याय मिल गया। मैं ईश्वर का शुक्रगुज़ार हूँ। मैं
मोनिका ने कहा, 'अब मैं अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताऊंगी।'
"मैंने एक बड़ा सबक सीखा है," उसने आगे कहा। "पहले मैं यह सोचकर सब पर भरोसा कर लेती थी कि सब अच्छे हैं। अब मैं सावधान रहूँगी।"

Machine Translated by Google

पत्रकारों और टीवी क्रू ने अंदाज़ा लगाया कि यह टिप्पणी अबू सलेम के लिए थी। इसके बाद उन्होंने जो कहा, वह सबके लिए एक बड़ा खुलासा था। "मुझे हिंदी और तेलुगु फिल्मों के ऑफर मिल रहे हैं। मैं लंबे समय के बाद अभिनय में वापसी को लेकर उत्साहित हूँ।"

मुझे फिल्मों में अभिनय की बहुत याद आ रही थी। मैं हैदराबाद में बसकर तेलुगु फिल्मों में अभिनय करने की योजना बना रही हूँ।' भीड़ में तालियों और सीटियों की

गड़गड़ाहट गूंज उठी। धक्का-मुक्की कर रही भीड़ को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर रहे पुलिसवाले अविश्वास में थे। वर्दीधारियों के लिए, वह भारत के सबसे कुख्यात डॉनों में से एक की साथी थी। मीडिया ने वर्षों से कानून से बचने की उसकी कोशिशों पर विस्तार से रिपोर्ट की थी। अदालतों ने उसे दोषी ठहराया था और वह जेल में भी रही थी। फिर भी, मीडिया उसके पीछे पागल हो रहा था।

"मुझे यकीन है कि इस बार मैं कामयाब हो जाऊँगी। मैं फ़िल्में, निर्माता और निर्देशक चुनते समय सावधानी बरतूँगी। मैं फ़िल्मों में सिर्फ़ मुख्य भूमिकाएँ ही स्वीकार करूँगी," मोनिका ने कहा, शायद उनका इशारा यह था कि वह अंडरवर्ल्ड से जुड़े निर्माता और निर्देशकों से दूर रहेंगी।

आखिरकार, एक पत्रकार ने हिम्मत जुटाई और उससे पूछा कि वह अबू सलेम से कैसे जुड़ी। इससे उसका भाषण बीच में ही रुक गया। उसके चेहरे की मुस्कान गायब हो गई; मोनिका रुकी, खुद को संभाला और बोली, "यह खत्म हो गया। मैं भविष्य की ओर देख रही हूँ।" उसके वकीलों और परिवार के सदस्यों ने जल्दी से अचानक शुरू हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस रद्द कर दी और इंतज़ार कर रही गाड़ियों में बैठ गए।

मोनिका और उनका परिवार पंजाब में अपने गांव चब्बेवाल जाने के लिए दिल्ली से रवाना हुए, जहां उनका एक और भव्य स्वागत किया गया।

Machine Translated by Google

उनतीस

Machine Translated by Google

सलेम का सराय मीर तक प्रवास

पच्चीस हथियारबंद लोग थे। वे जनरल डिब्बे में घुस गए और तुरंत सभी यात्रियों को बाहर निकाल लिया। महानगरी एक्सप्रेस के बोगी नंबर 1093 में अफरा-तफरी मच गई। यात्रियों ने मन ही मन सोचा कि शायद यह ट्रेन जैकिंग है। लेकिन उनकी आशंकाएँ निराधार साबित हुईं। हथियारबंद लोग मुंबई पुलिस के सदस्य थे और संभवतः किसी वीआईपी या किसी स्थानीय राजनेता की सुरक्षा में तैनात थे।

लेकिन वे गलत थे। वर्दीधारी हथियारबंद लोग असल में अबू सलेम के सुरक्षा तंत्र का हिस्सा थे। 11 अक्टूबर 2007 को, सलेम को अपनी 65 वर्षीय माँ, जन्नतुनिस्सा, जिनकी दो दिन पहले विभिन्न बीमारियों से मृत्यु हो गई थी, के अंतिम संस्कार में शामिल होने की विशेष अनुमति दी गई थी। सलेम ने 10 अक्टूबर को अदालत का रुख किया और उसे अगले दिन जाने की अनुमति मिल गई। सलेम 12 अक्टूबर को ही वहाँ पहुँच सका।

आनन-फानन में प्राप्त आदेश में, अदालत ने उन्हें आजमगढ़ स्थित अपने पैतृक गाँव सराय मीर जाने की विशेष अनुमति दे दी। चूँकि महानगरी एक्सप्रेस पहली उपलब्ध ट्रेन थी, इसलिए पुलिस ने लगभग आधे जनरल डिब्बे को अपने कब्ज़े में ले लिया और उसे रस्सी से घेर दिया ताकि कोई भी यात्री उनके 'विशेष माल' के पास न आ सके। ऐसा करने के बाद, पुलिस ने आखिरकार उत्सुक यात्रियों को डिब्बे के दूसरे आधे हिस्से में बैठने दिया।

सलेम को जनरल डिब्बे में ले जाना पुलिस के लिए एक सोचा-समझा जोखिम था और उन्हें मीडिया की कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा। लापरवाही के आरोपों के बावजूद, पुलिस को इसकी ज़रा भी परवाह नहीं थी। एस्कॉर्ट दल पूरी तरह से हथियारों से लैस था, उसके पास कार्बाइन, राइफलें और बंदूकें थीं। इसका नेतृत्व कमांडो और मुंबई पुलिस के लोकल आर्म्स-II के दो वरिष्ठ अधिकारी कर रहे थे। और वे आखिरी समय में यात्रा की व्यवस्था करने और लंबी दूरी की ट्रेनों में उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों को ले जाने के आदी थे। अरुण गवली की सहयोगी तान्या कोली की विदर्भ एक्सप्रेस में एक प्रतिद्वंद्वी गिरोह के बंदूकधारियों द्वारा हत्या के अलावा, बहुत कम अप्रिय घटनाएँ सामने आई थीं।

जैसे ही ट्रेन वाराणसी स्टेशन पर रुकी, पुलिस ने प्लेटफ़ॉर्म पर बने आम निकास मार्ग का इस्तेमाल न करके, सलेम को दूसरी तरफ़, पटरियों पर उतरने को कहा। चूँकि प्लेटफ़ॉर्म पर बहुत भीड़ थी और भीड़ में घूमना जोखिम भरा होता, इसलिए सुनसान रेल की पटरियाँ ज़्यादा सुरक्षित विकल्प लगीं। सलेम बाकी यात्रियों से बीस मिनट बाद ट्रेन से उतरा, और पुलिस उसे इंतज़ार कर रही बख्तरबंद गाड़ी में ले गई।

जैसे ही सलेम बाहर निकला, उसने देखा कि लोगों का एक समूह एक-दूसरे से धक्का-मुक्की कर रहा है, डॉन की एक झलक पाने के लिए। एक साधारण सफ़ेद शर्ट, जींस और टोपी पहने, सलेम को मिल रही तवज्जो से बहुत खुशी हो रही थी। दरअसल, उसे लगभग एक फिल्म स्टार जैसा महसूस हो रहा था। उसने सीधे टीवी कैमरों की तरफ देखा और बिना एक पल भी पीछे हटे, उनके लिए मुस्कुराया। उसकी आँखों में शर्म या पछतावे का ज़रा भी निशान नहीं था। वह सरकारी टाटा बख्तरबंद गाड़ी में चढ़ गया—जिसके दरवाज़े मज़बूत थे—और फिर ग्रिल के पीछे से शर्मिंदगी से बाहर देखने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे मुंबई के सबसे ताकतवर गैंगस्टरों में से एक को पिंजरे में बंद कर दिया गया हो, उसके दाँत और पंजे निकाल दिए गए हों।

यह टीवी पर खूब चला और अगले कुछ दिनों तक समाचार चैनलों पर बार-बार दोहराया गया। थोड़ी देर बाद, वह गाड़ी आठ कारों के काफिले में शामिल होकर चली गई; वैन के दोनों ओर पुलिसवाले बाइक पर सवार थे।

सुरक्षाकर्मियों ने किसी भी राजनेता को परेशान कर दिया होता, खासकर तब जब उन्हें बताया गया होता कि यह कोई वीआईपी नहीं, बल्कि एक गैंगस्टर है, जिसे सराय मीर गांव की ओर जाने वाले छियानवे किलोमीटर लंबे रास्ते पर यह सुविधा दी जा रही है।

Machine Translated by Google

सराय मीर इस्लामी शिक्षा जगत में अपने मदरसों की वजह से जाना जाता है। इस इलाके में सांप्रदायिक मानसिकता का बोलबाला था। इस अविकसित गाँव के निवासी, जिनमें से कई गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते थे, कट्टर मुसलमान थे जो धीरे-धीरे कट्टरपंथी होते जा रहे थे। और सलेम की बदौलत, सराय मीर अब और भी बदनाम हो गया था। लेकिन भीड़ को इस प्रतिष्ठा पर गर्व था और सलेम की हरकतों की वजह से अपनी पहचान बनाने में उन्हें खुशी भी महसूस होती थी।

सराय मीर में गैंगस्टर का इंतज़ार कर रही भीड़ भारी थी। उस दोपहर अनुमानतः दस हज़ार लोग जमा हुए थे। रमज़ान का पवित्र महीना चल रहा था। हिलाल कमेटी (वह संस्था जो चाँद दिखने की सूचना देती है और ईद की घोषणा करती है) ने दो दिन बाद ईद की घोषणा की थी। जिस दिन सलेम अपने गाँव लौटा, उस दिन जुम्मा-उल-विदा (रमज़ान का आखिरी शुक्रवार, जिसका मुसलमानों के लिए विशेष महत्व है) था, लेकिन आध्यात्मिक गतिविधियों में समय बिताने के बजाय, धर्मनिष्ठ मुसलमान पठान टोला इलाके में इकट्ठा होने लगे थे, जहाँ सलेम ने अपने अपेक्षाकृत सादे पैतृक घर के बगल में एक आलीशान घर बनवाया था।

यह किसी गैंगस्टर की माँ के अंतिम संस्कार से ज़्यादा किसी आध्यात्मिक गुरु के अंतिम संस्कार जैसा लग रहा था। सलेम खुद भी भीड़ देखकर हैरान था और इसे अपनी लोकप्रियता का प्रतीक मानता था। पुलिस वैन से बाहर निकलते ही उसने अपना दाहिना हाथ उठाया और धीरे से हाथ हिलाया। भीड़ भड़क उठी। पुलिस उसे हंगामे से बचाते हुए बैतुल उलूम (ज्ञान का निवास) मदरसे ले गई, जहाँ वह अपनी माँ का अंतिम संस्कार करने जा रहा था। उसके पीछे-पीछे वहाँ पहुँचे लगभग सभी लोग नमाज़-ए-जनाज़ा में शामिल हुए— दफ़न से पहले मृतक के लिए पढ़ी जाने वाली आखिरी रस्मी नमाज़।

अंतिम प्रार्थना के बाद, सलीम ने तीन अन्य लोगों के साथ अर्थी को कंधों पर उठाया और धूल भरे कब्रिस्तान की ओर चल पड़े। बड़ौदी कब्रिस्तान उनके घर से तीन किलोमीटर दूर था और उन्हें वहाँ पैदल पहुँचने में एक घंटे से ज़्यादा का समय लगा। इस दौरान, पच्चीस पुलिसकर्मी उनकी सुरक्षा में तैनात थे और बाकी लोग बस उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। अपनी माँ को दफ़नाने के बाद जब वह कब्रिस्तान से बाहर निकले, तो एक टेलीविज़न रिपोर्टर ने उनसे कहा कि अपनी माँ की मौत पर 'दो लफ़्ज़' (दो शब्द) बोलें । कैमरे में देखते हुए सलीम ने माइक्रोफ़ोन में गंभीरता से कहा, 'माँ तो माँ होती है।' थोड़ी देर रुकने के बाद, उन्होंने आगे कहा, 'दो लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता।' (माँ तो माँ होती है और उसका दुःख दो शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता।)

दफ़न के बाद, सलेम अपने घर लौट आया। यह एक विशाल सफ़ेद हवेली थी, आस-पास की सबसे खूबसूरत इमारतों में से एक, जिसके चारों ओर एक बंजर खेल का मैदान, छोटे पेड़, कई कच्ची ईंटों की इमारतें और जर्जर हाउसिंग सोसाइटीज़ थीं। सलेम पुलिस और अपने साथियों से घिरे हुए अपनी छत पर गया। हरे रंग की टी-शर्ट पहने, वह बालकनी में रेलिंग के सहारे झुक गया और नीचे जमा हुए लोगों की भीड़ को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। आस-पास की इमारतों के लोग अपनी बालकनी में खड़े होकर उस आदमी को देख रहे थे जो बिल्कुल गलत वजहों से मशहूर था। सलेम आत्मविश्वास से मुस्कुराया, क्योंकि उसके पूरे दल ने उसे बालकनी में घेर लिया था। उसने खुद को उठाने के लिए रेलिंग पर पैर रखा और फिर किसी फिल्म स्टार की तरह हाथ हिलाया।

'सलाम अलैकुम,' सलाम ने ज़ोर से कहा।

'वालेकुम सलाम,' सामूहिक उत्तर गूंज उठा। सलेम ने अपनी नई-नई मिली प्रसिद्धि का भरपूर उपयोग करना शुरू कर दिया था। जब उसे भारत भर में अपनी विभिन्न अदालती सुनवाई के लिए ले जाया जाता—ट्रेन के जनरल डिब्बे में, जैसे वह आजमगढ़ गया था—लोग उसके पास ऑटोग्राफ के लिए आते। विडंबना यह है कि सलेम के सबसे बड़े प्रशंसक बीस-बीस साल के युवा थे। सलेम उन्हें अपनी बड़ी मुस्कान देता, उनसे हाथ मिलाता और उनके लिए ऑटोग्राफ देता। कुछ मामलों में, जब उसके प्रशंसकों के पास कागज़ का एक टुकड़ा नहीं होता था, तो वे उसे 100, 50, 10 रुपये के नोट—हस्ताक्षर करने के लिए देते थे। सलेम खुशी-खुशी उन पर हस्ताक्षर करता और उदारता से कहता, 'मेरे हस्ताक्षर वाले नोट संभाल कर रखना। जब मैं जेल से रिहा होऊँगा, तो तुम्हें दे दूँगा।

Machine Translated by Google

मेरे हस्ताक्षर वाले नोट की कीमत का सौ गुना वापस करो।' इसके बाद, छत्रपति शिवाजी

टर्मिनस या बांद्रा टर्मिनस, जहाँ से वह अपनी यात्राएँ शुरू करता था, या यहाँ तक कि वाशी अस्पताल में भी, जहाँ वह नियमित चिकित्सा जाँच के लिए जाता था, यह एक आम दृश्य बन गया। हर कोई भारतीय मुद्रा के नोट पर सलेम के नाम के पहले अक्षर देखना चाहता था। ये रेल यात्राएँ और लोगों की प्रशंसा, जेल की सज़ा से बचने के लिए सलेम की पसंदीदा दवा बन गई। मोनिका द्वारा त्याग दिए जाने और अपनी माँ की मृत्यु से हताश, वह अब फिर से जीवंत होने लगा और खुद को एक भारतीय सुपरस्टार के रूप में फिर से कल्पना करने लगा।

Machine Translated by Google

तीस

Machine Translated by Google

सलेम की एक-महिला सेना

वकील शाहिद आज़मी मुंबई के कानूनी हलकों के सबसे विवादास्पद वकीलों में से एक थे। किशोरावस्था में, शाहिद ने सीमा पार करके पाकिस्तान में आतंकी प्रशिक्षण लिया था और बाद में उन पर टाडा के तहत आरोप लगाए गए थे। हालाँकि, बाद में उन्हें सर्वोच्च न्यायालय ने बरी कर दिया था। जेल में रहते हुए, उन्होंने कानून की पढ़ाई की और केवल उन लोगों का बचाव करने का संकल्प लिया जिन पर आतंकवाद के झूठे आरोप लगाए गए थे। सात साल तक चली अपनी संक्षिप्त वकालत में, शाहिद सत्रह लोगों को बरी करवाने में सफल रहे।

सलेम की तरह, शाहिद भी आजमगढ़ का था। डॉन ने वकील की शानदार जीतों के बारे में सुना था और चाहता था कि वह उसका बचाव करे। शाहिद ने इनकार कर दिया। उसी समय, वकील सबा कुरैशी शाहिद की फर्म में साझेदार के रूप में शामिल हो गईं। सबा मुश्किल से अट्ठाईस साल की थीं, लेकिन उनकी चतुराई उनकी उम्र को झुठला रही थी। उन्होंने पाया कि शाहिद आतंकवाद के मामलों के लिए मुश्किल से 5000 रुपये लेता है, जिसे निपटाने में उसे महीनों या सालों की कड़ी मेहनत लग सकती है। सबा ने उसे ज़्यादा रकम लेने के लिए मना लिया, और उसके प्रभाव का नतीजा यह हुआ कि जीवन भर ट्रेन से यात्रा करने वाले इस व्यक्ति ने आखिरकार अपने लिए एक कार खरीद ली। सबा ने उसे यह भी सलाह दी कि वह अपने कानूनी काम को व्यवस्थित करे और आतंकवाद के आरोपियों का बचाव करने के अलावा दूसरे मामले भी संभाले। शाहिद सबा से प्रभावित हुआ और उससे प्रभावित होकर उससे शादी का प्रस्ताव रखा। वह तुरंत मान गई।

उनकी शादी को बस कुछ ही महीने बाकी थे जब किस्मत ने शाहिद और सबा की कहानी कुछ और ही लिख दी। 11 फ़रवरी 2010 को, जब शाहिद मुंबई के पूर्वी उपनगर कुर्ला की टैक्सीमेन कॉलोनी स्थित अपने दफ़्तर में थे, देवेंद्र जगताप के नेतृत्व में चार हमलावरों ने घुसकर उन्हें गोली मार दी। पहले भी आपराधिक मामलों के वकील मारे जा चुके थे, लेकिन उनका अक्सर संदिग्ध रिकॉर्ड और अंडरवर्ल्ड से लेन-देन रहा था। शाहिद एक बेदाग़ वकील था जिसका उनसे कोई लेना-देना नहीं था।

मुंबई पुलिस ने जगताप समेत चार हमलावरों को गिरफ्तार किया और दावा किया कि वे भारत नेपाली गिरोह के सदस्य थे। यह आरोप लगाया गया कि शाहिद की हत्या भारत सरकार द्वारा किसी आलोचक को चुप कराने का एक तरीका हो सकता है क्योंकि वह आतंकवाद के आरोपियों का बचाव करने और उन्हें बरी करवाने में कामयाब रहा, जिससे राज्य को भारी शर्मिंदगी उठानी पड़ी। उसकी हत्या आज भी एक रहस्य है। वर्षों बाद, निर्देशक हंसल मेहता ने उनके जीवन पर " शाहिद" शीर्षक से एक फिल्म बनाई , जिसमें अभिनेता राजकुमार राव ने मारे गए वकील का किरदार निभाया।

शाहिद की मौत ने मीडिया और कानूनी जगत का ध्यान उनकी एकांतप्रिय साथी सबा की ओर खींचा। उनका करियर भी अच्छा रहा। उन्होंने 26/11 के हमलों की साज़िश के आरोपी दो भारतीयों को बरी करवाया और अजमल कसाब व अन्य आतंकवादियों को रसद सहायता प्रदान की। इससे न केवल उन्हें प्रशंसा मिली, बल्कि कानूनी हलकों में भी उनकी चर्चा हुई।

सबा के मुवक्किलों में से एक अमित नाम का एक आदमी था जो एक हत्या और अपहरण के मामले में आरोपी था। अमित ने सबा की कानूनी फीस देने में देरी की, और आखिरकार उसे बताया कि सलेम उसकी तरफ से पैसे देगा। सबा सलेम से पैसे मांगने में हिचकिचा रही थी और इस पेशे को पूरी तरह छोड़ने के बारे में सोचने लगी थी। शाहिद की मौत के बाद उसकी वकालत में रुचि खत्म हो गई थी। सलेम उसे लगातार संदेश भेजता रहा और वह उन्हें नज़रअंदाज़ करती रही। आखिरकार, जब वह संदेशों की बाढ़ को और नज़रअंदाज़ नहीं कर सकी, तो उसने उससे मिलने का फैसला किया।

सबा को एक अक्खड़, उग्र, मुँहफट और अक्सर मुखर वकील के रूप में जाना जाता था। दरअसल, उन्होंने कुछ जजों के साथ उनके चैंबर में बदतमीजी भी की थी, जिससे उन्हें उनका गुस्सा भी झेलना पड़ा था। इस वजह से वे बिरादरी में काफी अलोकप्रिय हो गई थीं, लेकिन उनकी

Machine Translated by Google

उसका काम और पेशेवर रवैया ऐसा था कि कोई उस पर उंगली नहीं उठा सकता था। सलेम को यकीन नहीं हो रहा था कि इस औरत ने उससे इतने रूखे अंदाज़ में बात करने की हिम्मत की।
बातचीत के दौरान, सलेम को पता चला कि सबा शाहिद की पार्टनर और उससे सीनियर रह चुकी है। वह तुरंत उसके साथ घुल-मिल गया और उसे अपना ब्रीफ ऑफर किया। सबा ने पहले तो कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, लेकिन जब सलेम ने पूछा, "क्या तुम औरत होने की वजह से मेरा ब्रीफ लेने से डरती हो?" तो सबा ने चुनौती स्वीकार कर ली। सबा को उसे गलत साबित करना था।

सबा ने जवाब दिया, "मैं भले ही औरत हूँ और बाकियों जितनी अनुभवी नहीं हूँ, लेकिन मैं तुम्हारा केस ऐसे पलट सकती हूँ जैसा तुम्हारे पहले किसी वकील ने नहीं किया।" सलेम ने उससे यह भी शेखी बघारी कि अगर शाहिद उसका बचाव करने को तैयार हो जाता, तो कोई भी गैंगस्टर उसे मारने की हिम्मत नहीं करता।
लेकिन सलेम ग़लत था। शाहिद की हत्या के कुछ साल बाद, उसी शूटर जगताप ने तलोजा की उच्च सुरक्षा वाली जेल में सलेम पर हमला किया।
सलेम के वकील उसकी पैरवी करने के लिए तांता लगाए हुए थे, क्योंकि उन्हें पता था कि इतने बड़े मुवक्किल का केस लड़ने के कारण वे सुर्खियों में आ जाएँगे। हालाँकि, सलेम उन्हें नियुक्त करने के लिए उत्सुक नहीं था; वह नितिन प्रधान जैसे उच्च-स्तरीय वकीलों की तलाश में था, जिन्होंने मुंबई सीरियल बम धमाकों में सौ से ज़्यादा आरोपियों का केस लड़ा था, और मजीद मेमन, जो बाद में राज्यसभा सदस्य बने। शहर के सबसे कुशल आपराधिक वकीलों में से एक माने जाने वाले सुदीप पासबोला भी उसके कानूनी विशेषज्ञों में से एक थे।

सबा सबसे कम उम्र की और सबसे कम अनुभवी थी। वह शायद अकेली थी जो सलेम से प्रभावित नहीं थी। सलेम उस पर लगभग आँख मूंदकर भरोसा करने लगा था और उसे कई महत्वपूर्ण काम सौंप दिए थे, जिसमें पुर्तगाली अदालतों में उसका प्रतिनिधित्व करना भी शामिल था। जल्द ही, सबा को मामले में बड़ी विसंगतियाँ और विसंगतियाँ नज़र आने लगीं। सबा स्थानीय वकीलों के ज़रिए पुर्तगाली अदालत को यह समझाने में कामयाब रही कि भारत सरकार ने सलेम पर केवल नौ मामलों में मुकदमा चलाने का जो आश्वासन दिया था, उसे तोड़ दिया है; उसने माँग की कि भारत सरकार पुर्तगाली अदालत द्वारा तय किए गए आरोपों पर अड़ी रहे।

उदाहरण के लिए, सीरियल बम धमाकों के मामले में सलेम पर लगे प्रमुख आरोपों में से एक संजय दत्त को हथियार पहुँचाने का था। लिस्बन के अधिकारियों ने उस पर केवल आर्म्स एक्ट और अवैध हथियार रखने का आरोप लगाने की मंज़ूरी दी थी। लेकिन सीबीआई ने उस पर बम धमाकों के मामले में साज़िश रचने का भी आरोप लगाया, जिसके लिए उसे मौत की सज़ा हो सकती है। सबा ने सलेम के पक्ष में खेल पलट दिया और बाजी उसके पक्ष में कर दी।

14 सितंबर 2011 को, पुर्तगाल उच्च न्यायालय के ट्रिब्यूनल दा रेलाकाओ डे लिस्बोआ ने घोषणा की, 'उपर्युक्त बातों के मद्देनजर, इस उच्च न्यायालय की तीसरी पीठ के न्यायाधीशों का मानना है कि भारतीय संघ ने आरसी-1/93 सीबीआई एसटीएफ मुंबई मामले के तहत बनाए गए नए आरोप के बिंदु 3 से 8 में वर्णित तथ्यों के लिए अबू सलेम कय्यूम अंसारी पर आरोप लगाते और फैसला सुनाते समय पुर्तगाली कानूनी व्यवस्था में समझे जाने वाले विशिष्टता के सिद्धांत का उल्लंघन किया है, जिसके कारण वह इन कृत्यों को अवैध मानता है और अबू सलेम कय्यूम अंसारी के प्रत्यर्पण के लिए दिए गए प्राधिकरण को समाप्त करने का निर्णय लेता है।' इस फैसले से भारत सरकार और अभियोजन पक्ष में खलबली मच गई। सबा ने 26 सितंबर 2011 को अदालत में एक आवेदन दायर किया जिसमें कहा गया कि चूँकि पुर्तगाल की अदालतों ने प्रत्यर्पण को समाप्त कर दिया है, इसलिए सलेम अब अदालत नहीं जाएगा।

इससे अदालतें और सरकार नाराज़ हो गईं। वे पुर्तगाल उच्च न्यायालय और उसके हुक्म के आगे झुकने को तैयार नहीं थे। तब सलेम ने सबा की सलाह पर माँग की कि जब तक दोनों सरकारों के बीच मामला सुलझ न जाए, उसे पुर्तगाली वाणिज्य दूतावास में स्थानांतरित कर दिया जाए।

भारत सरकार ने उच्च न्यायालय के आदेश को पुर्तगाल के सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी। पुर्तगाली सर्वोच्च न्यायालय में अपनी अपील में, भारत सरकार ने तर्क दिया कि देश की विभिन्न अदालतों में चल रहे मुकदमों की पुर्तगाली उच्च न्यायालय द्वारा की गई व्याख्या सही नहीं थी और पुर्तगाल को आश्वासन दिया कि नए आदेश

Machine Translated by Google

सलेम के खिलाफ लगाए गए आरोपों के लिए उसे जिन अपराधों के लिए प्रत्यर्पित किया गया था, उनकी तुलना में कम जेल की सजा दी गई।

भारत सरकार ने दोहरी अपील की। एक अपील भारत गणराज्य और उसके अभियुक्तों पर मुकदमा चलाने के अधिकार की ओर से की गई थी, जबकि दूसरी सरकारी वकील की ओर से। हालाँकि, जब पुर्तगाल में सुप्रीम कोर्ट की तीन न्यायाधीशों वाली पीठ ने इस मामले की सुनवाई की, तो उन्होंने पहले भारत सरकार की याचिका और एक संप्रभु राष्ट्र के विशेषाधिकारों और अधिकारों के उसके दावों को खारिज कर दिया। सरकार से कहा गया कि वह अपनी दलीलें सरकारी वकील के माध्यम से पेश करे।

अभियोजक की याचिका पर सुनवाई करते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने महसूस किया कि भारत सरकार ने वास्तव में अपने कार्यकारी वादे और प्रत्यर्पण की शर्तों का उल्लंघन किया है। तीन न्यायाधीशों की पीठ ने सर्वसम्मति से इस पर सहमति व्यक्त की और प्रत्यर्पण की समाप्ति को बरकरार रखा। उनमें से दो ने यह भी मांग की कि सलेम को तुरंत वापस भेजा जाए।

हालाँकि, तीसरे जज ने कहा कि कानून में प्रत्यर्पित अभियुक्त को वापस बुलाने का कोई प्रावधान नहीं है। चूँकि उल्लंघन का ऐसा कोई उदाहरण नहीं है और भारत सरकार प्रत्यर्पण की शर्तों का उल्लंघन करने वाली पहली सरकार थी, इसलिए सलेम को वापस बुलाने की प्रक्रिया राजनयिक माध्यमों से आगे बढ़ाई जाएगी।

पुर्तगाल के सर्वोच्च न्यायालय ने 11 जनवरी 2012 को अपना फैसला सुनाया। यह सलेम और उसके बचाव पक्ष के लिए एक बड़ी राहत की तरह था। लेकिन भारत सरकार ने पुर्तगाली आधिपत्य के आगे झुकने से इनकार कर दिया। उन्होंने तुरंत संवैधानिक न्यायालय का रुख किया और इस आधार पर अपील की कि एक संप्रभु संस्था होने के नाते, भारत सरकार को अपने अभियुक्तों पर देश की न्यायिक प्रणाली के मानदंडों और रीति-रिवाजों के अनुसार मुकदमा चलाने का विशेषाधिकार और विशेषाधिकार प्राप्त है। इसलिए प्रत्यर्पण की समाप्ति वास्तव में सरकार के विशेषाधिकार को कमज़ोर करेगी। हालाँकि, 5 जुलाई 2012 को अपने फैसले में, संवैधानिक न्यायालय, जो वास्तव में पुर्तगाल के सर्वोच्च न्यायालय के समकक्ष है, ने सभी पूर्ववर्ती न्यायालयों के आदेशों का पालन किया। इससे भारत सरकार और भी मुश्किल में पड़ गई।

सबा ने भारत सरकार से आगे रहने के लिए अपना अगला कदम पहले ही तय कर लिया है और यूरोपीय संघ से संपर्क करने की तैयारी कर ली है। इससे न सिर्फ़ एजेंसियों के लिए सलेम पर मुकदमा चलाना और भी मुश्किल हो जाएगा, बल्कि सरकार की भी फजीहत होगी। इस बीच, अपनी युवा महिला वकील पर सलेम के बढ़ते भरोसे ने अफवाह फैलाने वालों को और भी ज़्यादा परेशान कर दिया था। शाहिद के लिए अभी भी शोक मना रही सबा बेतुके आरोपों और अफवाहों से परेशान होने लगी। एक दिन खुली अदालत में एक वरिष्ठ वकील से उसने चीखकर कहा, "सलेम सिर्फ़ एक मुवक्किल है, कृपया इससे कोई और रिश्ता न जोड़ें।"

Machine Translated by Google

इकतीस

Machine Translated by Google

प्रतिशोध से बचे

तीखी सायरन की आवाज सुनकर मुंबई सेंट्रल जेल के गार्ड घबरा गए और वे उच्च सुरक्षा वाले बैरक नंबर 10 की ओर भागे। दो व्यक्ति जमीन पर धक्का-मुक्की कर रहे थे और काफी शोरगुल और गालियों के बीच उन्हें अलग किया गया।

सलीम की नाक, ठुड्डी, गर्दन और बाँहों से खून बह रहा था। मुस्तफा दोसा हाथ में खून से सना एल्युमीनियम का चम्मच लिए हुए आत्मसंतुष्ट खड़ा था। कोई नहीं जानता कि हाथापाई कैसे शुरू हुई, लेकिन नुकीले चम्मच से साफ़ ज़ाहिर था कि यह एक सुनियोजित हमला था।

सलेम को अंडा सेल में कुछ समय तक रखने के बाद बैरक संख्या 10 में रखा गया।
पाँच सालों में, सलेम अपनी कोठरी में सहज हो गया था और उसे अपना घर लगने लगा था। उसने कुछ जिम उपकरण, अपने डिज़ाइनर कपड़े, ढेर सारी फाइलें और कुछ ज़रूरी विलासिता की चीज़ें भी अपने साथ रख ली थीं। उसने फर्श पर इटैलियन मार्बल भी लगवा लिया था। उसके पुराने साथी और परिचित उसके आस-पास की बैरकों में रहने लगे थे, जिससे उसका जीवन और भी आरामदायक हो गया था। उसके ड्राइवर मेहंदी हसन और जावेद सिद्दीकी उसके पास ही रहते थे।

नौसेना के दो जवान, मनीष ठाकुर और एमिल जेरोम मैथ्यू, भी बैरक नंबर 10 में बंद थे। ठाकुर पर 2005 में अंधेरी के एक होटल में अपनी प्रेमिका कौशांबी लायेक की हत्या का आरोप था और बाद में उसे 2007 में सलेम की बैरक में रखा गया था। जेरोम ने टेलीविजन कार्यकारी नीरज ग्रोवर की हत्या कर दी थी, जब वह उसे अपनी प्रेमिका, अभिनेत्री मारिया सुसाइराज के घर पर पाया था। जेरोम को मारिया पर बेवफाई का शक था और उसने नीरज के शव के कथित तौर पर 300 टुकड़े कर दिए थे।

उस कहानी के अलावा एक और खौफनाक मोड़ यह था कि जेरोम और मारिया ने उसी कमरे में, ज़मीन पर पड़ी नीरज की लाश के बगल में, दो बार सेक्स किया। फिर इस जोड़े ने नीरज के शरीर के अंगों को मैनर के पास जंगल में जला दिया।

ठाकुर नौसेना इंजीनियर थे, जबकि जेरोम नौसेना अधिकारी, सब-लेफ्टिनेंट थे।
ये दोनों पढ़े-लिखे लोग जेल में सलेम के एक तरह से मददगार बन गए। उन्होंने उसकी कानूनी दलीलें तैयार करने, आवेदन पत्र भरने, बचाव पक्ष के मामलों पर रणनीति बनाने और जटिल कानूनी दस्तावेजों को समझने में उसकी मदद की। दरअसल, ठाकुर और जेरोम सलेम के थिंक टैंक का अभिन्न अंग बन गए। कहने की ज़रूरत नहीं कि जेल में वे उसके साथ खाना-पीना और दूसरी सुख-सुविधाओं में शामिल होते थे। सलेम के रसूख और संपन्नता ने जेल में उनकी ज़िंदगी आसान बना दी थी।

समय के साथ, गैंगस्टर ने धीरे-धीरे उनके हुनर का और इस्तेमाल करने का फैसला किया और उनसे अपनी ज़िंदगी की कहानी लिखने को कहा। इस तरह, स्कूल छोड़ चुके एक लड़के ने दो पढ़े-लिखे नेवी अफसरों को अपने लिए मुंशी का काम सौंपा। आत्मकथा में सलेम को एक नायक के रूप में पेश किया गया था। ठाकुर और जेरोम ने कागज़ के पन्ने पर सुपाठ्य अंग्रेजी में सौ से ज़्यादा पन्ने हाथ से लिखे थे। सलेम अपनी कहानी किसी फिल्म निर्देशक को देना चाहता था और माँग करना चाहता था कि उस पर एक मोशन पिक्चर बने। उसे पूरा यकीन था कि उसकी कहानी बॉक्स ऑफिस पर हिट होने की क्षमता रखती है। कुल मिलाकर, सलेम बैरक नंबर 10 पर हुक्म चलाता था और उसे अपनी जागीर समझता था। वह अपनी बैरक का बेताज बादशाह था।

मुस्तफा दोसा उर्फ मजनूं (जिसे उसकी औरतों से छेड़छाड़ के लिए यह नाम दिया गया था), आर्थर रोड जेल का एक और कुख्यात अपराधी था। मुंबई सीरियल बम धमाकों में शामिल होने के आरोप में 2003 में दुबई से प्रत्यर्पित किए जाने के बाद, दोसा को सलेम के जेल में आने से बहुत पहले से ही जेल का निर्विवाद सरदार माना जाता था। गिरोह के कई सदस्य उसकी पूजा करते थे और अदालती अनुमति या जेल अधिकारियों की दलाली से हासिल की गई सुविधाओं का आनंद लेने के लिए उसके साथ खड़े रहते थे।

Machine Translated by Google

एक बार, ईद के मौके पर, दोसा ने जेल में शीर खुरमा (एक फ़ारसी व्यंजन) खाने की अदालत से इजाज़त ले ली। अदालत ने उसे शीर खुरमा खाने की इजाज़त दे दी, लेकिन जेल अधिकारी यह समझ नहीं पा रहे थे कि यह आदेश सिर्फ़ दोसा के लिए है या बाकी सभी मुस्लिम कैदियों के लिए भी। उन्होंने सुरक्षित दांव खेलने का फ़ैसला किया और दोसा ने पूरी जेल के लिए शीर खुरमा की दावत रखी। इससे वह काफ़ी लोकप्रिय हो गया।

समय के साथ, सलेम और दोसा अपने-अपने निर्धारित इलाकों में राज करने में खुश थे और एक-दूसरे के आड़े नहीं आते थे। लेकिन उनकी आरामदायक और शानदार जेल की ज़िंदगी एक बिल्कुल असंबंधित घटना से बिखर गई। 26 नवंबर 2008 को शहर पर हमला करने वाले दस आतंकवादियों में से एकमात्र जीवित बचे पाकिस्तानी बंदूकधारी अजमल आमिर कसाब को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और कुछ समय पुलिस हिरासत में रहने के बाद, उसे आर्थर रोड जेल भेज दिया गया। उसकी सुरक्षा का जिम्मा भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) को सौंपा गया था। कसाब की कैद ने पूरी जेल को अंदर से भी एक किले में बदल दिया था। सुरक्षा कारणों से कई आरोपियों और बंदियों को उनकी कोठरियों और बैरकों से स्थानांतरित और पुनर्व्यवस्थित किया गया।

डोसा को बैरक 10 में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसे सलेम का गढ़ माना जाता था।
डोसा, सलेम के बारे में ज़्यादा नहीं सोचता था, क्योंकि उसने उसे अनीस इब्राहिम गिरोह में एक छोटे-मोटे नौकर की भूमिका निभाते देखा था। डोसा की दौलत और समर्थकों ने इस क्षेत्रीय लड़ाई में उसे बढ़त दिला दी, जबकि सलेम, जो पैसों की भारी तंगी से जूझ रहा था, डोसा के रवैये से अपमानित महसूस कर रहा था, जबकि वह अपनी जागीर में था। दोनों अहंकारी लोग अपनी-अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहे थे, जिससे माहौल तनावपूर्ण हो गया।

आखिरकार, 24 जून 2010 को, दोसा ने सलेम को सबक सिखाने का फैसला किया। चम्मच तेज़ कर दिए गए और दोसा ने यह जानते हुए कि सलेम बेहद घमंडी है, उसे विकृत करने का फैसला किया। उसने सही सोचा था। आत्ममुग्ध, दोसा के चेहरे पर हमले ने सलेम को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया। इस हमले के कारण सलेम को तुरंत तलोजा जेल भेज दिया गया, जबकि दोसा को ठाणे सेंट्रल जेल भेज दिया गया। सरकार भी इस हमले से हिल गई थी। कोई भी गंभीर नतीजा अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने उन्हें शर्मिंदा कर सकता था। दरअसल, पुर्तगाली न्यायाधिकरण को इस घटना के बारे में समझाने में उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी थी।

बिना समय गँवाए, गृह राज्य मंत्री रमेश बागवे ने जेल जाकर घटनास्थल का निरीक्षण करने का फैसला किया। बागवे जेल की हालत देखकर दंग रह गए। मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जेल किसी पाँच सितारा होटल जैसी है जहाँ अंडरवर्ल्ड के सदस्य किसी भी कीमत पर कोई भी सुविधा पा सकते हैं। सलेम की कोठरी में बिस्तर, बर्तन और यहाँ तक कि मॉडलों की अर्ध-नग्न तस्वीरें भी थीं, जबकि दोसा की कोठरी में बड़े-बड़े टिफिन बॉक्स और फलों का विशाल भंडार था जो कई लोगों के लिए दो हफ़्ते तक चल सकता था। अंडरवर्ल्ड के ये दोनों कैदी वाकई बहुत अच्छी ज़िंदगी जी रहे थे।

एक नियम के तौर पर, राज्य सरकार दाऊद गिरोह के प्रतिद्वंद्वियों को आर्थर रोड जेल में अपने कट्टर दुश्मनों से टकराव से बचने के लिए तलोजा जेल भेजती है। लेकिन सजा के इन तबादलों को जल्द ही गैंगस्टरों ने अपने फायदे में बदल लिया, जो वस्तुतः सलाखों के पीछे से अपनी गतिविधियाँ चलाते थे। उदाहरण के लिए, आर्थर रोड जेल, दक्षिण मुंबई के मुस्लिम इलाके में दाऊद के गढ़ के करीब है; इसलिए, गैंगस्टर के संदेशवाहकों के लिए कैदियों तक उसके संदेश पहुँचाना आसान है। तलोजा जेल दाऊद के प्रतिद्वंद्वी छोटा राजन के गढ़, नवी मुंबई के करीब है। राजन के भरोसेमंद सहयोगी डीके राव को गिरफ्तारी के बाद आर्थर रोड जेल की बजाय तलोजा जेल भेजा गया था।

दाऊद का कट्टर दुश्मन अरुण गवली भी शिवसेना पार्षद कमलाकर जामसांडेकर की हत्या के मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद से तलोजा में बंद है।
मुंबई के बाहरी इलाके में तलोजा जेल के निर्माण का उद्देश्य आर्थर रोड जेल में भीड़भाड़ कम करना था, जहाँ 2100 से ज़्यादा कैदी हैं, जो इसकी निर्धारित 800 कैदियों की क्षमता से तीन गुना ज़्यादा है। तलोजा जेल अभी निर्माणाधीन है और पूरी तरह से चालू होने पर इसमें 2500 कैदियों को रखने की उम्मीद है। वर्तमान में, इसमें 867 कैदी हैं, जिनमें सोमाली समुद्री डाकू, बांग्लादेशी प्रवासी, इंडियन मुजाहिदीन के सदस्य और छात्र संगठन शामिल हैं।

Machine Translated by Google

इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) के साथ-साथ सितंबर 2007 के मालेगांव विस्फोट मामले के आठ आरोपी, जिनमें लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद श्रीकांत पुरोहित भी शामिल हैं, जेल में बंद हैं। इसमें भारत नेपाली, अश्विन नाइक और सलेम गिरोह के सदस्य भी शामिल हैं। सलेम और गवली दो डॉन हैं जो जेल में बंद हैं।

तलोजा जेल में भी उच्च सुरक्षा वाला अंडा के आकार का कोशिकीय ढाँचा है, जो दो मंज़िला है। हर मंज़िल में 10 फ़ीट x 5 फ़ीट की पचास कोठरियाँ हैं। सलेम इन्हीं में से एक में रहता है और उसे एकांत कारावास में रखा गया है। उसके बगल वाली तेरह कोठरियाँ खाली हैं, इसलिए उसका लगभग कोई पड़ोसी नहीं है। इसके अलावा, आर्थर रोड जेल में एक हिंसक झड़प झेलने के बाद, सलेम ने तलोजा में सावधानी बरतने का फैसला किया। वह जानता था कि जेल में एकमात्र शक्तिशाली व्यक्ति दाऊद का विरोधी अरुण गवली है, जो एक साल पहले 2009 में वहाँ शिफ्ट हुआ था। इसलिए, सलेम ने उससे दोस्ती करने का फैसला किया। अफवाह है कि दोनों कभी-कभी तलोजा की 20 फ़ीट ऊँची दीवारों के भीतर खुली जगहों पर बातें करते हैं। सलेम ने जल्द ही अपनी खोई हुई धौंस वापस पा ली और जेल अधिकारियों को धमकाना शुरू कर दिया। कथित तौर पर उसने एक बार एक जेल कर्मचारी को धमकाया था: 'गोली यहाँ खाएगा या बाहर खाएगा?' (क्या आप जेल के अंदर या बाहर गोली खाना चाहते हैं?) यह अहंकार और सलेम की बढ़ती अलोकप्रियता थी जिसने उस पर लगभग घातक हमले का मार्ग प्रशस्त किया।

23 जून 2013 को, छोटा राजन गिरोह के भारत नेपाली गुट का एक शार्पशूटर देवेंद्र जगताप उर्फ जेडी, मुंबई में अपनी अदालती पेशी के बाद देर से लौटा था। रात के करीब 8.30 बजे थे; जब उसकी एस्कॉर्ट टीम उसके केबिन का ताला खोलने के लिए निकली, जेडी राजन के एक अन्य सहयोगी विश्वनाथ शेट्टी (अन्ना) की ओर बढ़ा, जिसका सेल सलेम के पास ही था। जेडी ने अन्ना से कुछ देर बातचीत की। फिर वह चुपके से सलेम की सेल की ओर बढ़ा और देखा कि डॉन अखबार पढ़ रहा था। जेडी ने अपने कपड़ों में एक देसी रिवॉल्वर छिपा रखी थी। उसने बंदूक निकाली और सलेम पर गोली चला दी। सलेम, जिसकी पीठ दरवाजे की ओर थी, आवाज सुनकर चौंक गया और गोली उसके चेहरे के पास से सरसराती हुई निकल गई। उसने तुरंत मुड़कर जेडी को देखा, जिसने एक और गोली चला दी। गोली सलेम के हाथ में लगी। वह उस कोने की ओर भागा जहाँ बाथरूम है तब तक सलेम ने भी शोर मचा दिया था।

जेल प्रहरी, जिन्हें जेडी के केबिन का ताला खोलने में अब तक पूरे बीस मिनट लग गए थे, दौड़कर उसे उसकी कोठरी में ले गए। सलेम बुरी तरह हिल गया था। अगर जेडी का निशाना बेहतर होता, तो एक ही गोली उसके लिए जानलेवा साबित हो सकती थी। इस घटना में कई सवाल अनुत्तरित रह गए। जेडी को बंदूक किसने दी? प्रवेश द्वार पर उसकी तलाशी क्यों नहीं ली गई? उसे सलेम के केबिन की ओर बिना रोक-टोक कैसे और क्यों जाने दिया गया? उसकी सुरक्षा टीम ने उसे क्यों नहीं रोका? सुरक्षा दल को उसकी कोठरी का ताला खोलने में बीस मिनट क्यों लगे? इस हमले से पूरी साजिश की बू आ रही थी। सरकार ने चार जेल अधिकारियों को उनके ढुलमुल रवैये के लिए निलंबित कर दिया।

संयोगवश, जेडी वही व्यक्ति है जिसने 2010 में अधिवक्ता शाहिद आज़मी की हत्या की थी।

खारघर पुलिस ने मामले की जाँच शुरू की और जेडी से पूछताछ की। शार्पशूटर ने कबूल किया कि उसे दाऊद के दाहिने हाथ छोटा शकील ने सुपारी दी थी। जेडी ने बताया कि उसने तलोजा जेल के अंदर से दो मोबाइल फोन से शकील से बात की थी। शकील ने जेडी से वादा किया था कि अगर वह सलेम को मार देता है, तो उसे जेल में गैंग का सरगना बना दिया जाएगा। बंदूक उसी जेल में बंद जेडी के एक साथी के ज़रिए खरीदी गई थी।

इस तरह सलेम अपने कट्टर प्रतिद्वंद्वी द्वारा किए गए दूसरे जानलेवा हमले से बच गया। पहला हमला न्यू जर्सी में हुआ था। आर्थर रोड जेल में हुआ हमला उसकी जान से ज़्यादा उसके अहंकार और अहंकार पर एक प्रहार था। लेकिन तलोजा में हुआ हमला गंभीर था। शकील 2001 से ही सलेम के पीछे पड़ा था, जब वह न्यू जर्सी में था, लेकिन सलेम भागने में कामयाब रहा था। सलेम सोच रहा था कि उसकी अच्छी किस्मत कब तक टिकेगी।

एक बार फिर, वकील सबा कुरैशी बचाव में आईं। उन्हें एहसास हुआ कि सलेम पर हुए दोनों हमले छिपे हुए आशीर्वाद थे, और उन्होंने एक पुरानी याचिका को उठाने का फैसला किया।

Machine Translated by Google

उसके पूर्व वकीलों ने यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय (ईसीएचआर) में सलेम के भारत प्रत्यर्पण को रोकने की अपील दायर की थी। यह पुर्तगाली सरकार और अदालतों द्वारा उसके प्रत्यर्पण को हरी झंडी दिए जाने के बाद हुआ था। ईसीएचआर ने हस्तक्षेप किया और प्रत्यर्पण को रोक दिया, जिससे इसमें लगभग एक महीने की देरी हो गई। ईसीएचआर यूरोपीय मानवाधिकार सम्मेलन द्वारा स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय न्यायालय है। यह उन राज्यों के विरुद्ध आवेदन स्वीकार करता है जो नागरिक या राजनीतिक अधिकारों से संबंधित एक या एक से अधिक मानवाधिकार कानूनों का उल्लंघन करते हैं। अपील किसी व्यक्ति, समूह या राज्य द्वारा की जा सकती है और ईसीएचआर को निर्णय देने या सलाहकार राय देने का अधिकार है।

सबा, अपने पुर्तगाली समकक्ष, अधिवक्ता मैनुअल लुइस फरेरा के साथ मिलकर, पुर्तगाली अदालत और ईसीएचआर से संपर्क करने की योजना का मसौदा तैयार कर रही हैं, ताकि जेल में सलेम के साथ दुर्व्यवहार, उस पर हुए दो जानलेवा हमलों और पुर्तगाली सुप्रीम कोर्ट द्वारा प्रत्यर्पण की शर्तों का पालन करने में भारत सरकार की विफलता के खिलाफ अपील की जा सके।

अगर ईसीएचआर इस अपील पर ध्यान देता है और सबा व फरेरा द्वारा प्रस्तुत मामले से सहमत होता है, तो यह भारत सरकार के लिए भारी मुसीबत खड़ी कर सकता है। चूँकि भारत सरकार यूरोपीय संघ का हिस्सा नहीं है, इसलिए ईसीएचआर का आदेश उस पर बाध्यकारी नहीं होगा; लेकिन पुर्तगाल के लिए ईसीएचआर के आदेशों का पालन करना अनिवार्य होगा।

भारत के साथ अरबों डॉलर का व्यापार करने वाली पुर्तगाली सरकार एक अपराधी के लिए नई दिल्ली को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। इसलिए वह सलेम को वापस बुलाने की इतनी ज़ोरदार कोशिश नहीं कर रही थी। हालाँकि, अगर यूरोपीय आयोग (ECHR) स्पष्ट आदेश जारी करता है, तो पुर्तगाल सरकार को सलेम को वापस भेजने के लिए भारत पर दबाव बनाना होगा। ऐसी स्थिति में भारत सरकार की कोई भूमिका नहीं हो सकती और उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी सलेम को वापस भेजने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।

क्या डॉन इस राउंड में जीतेगा? यह तो समय ही बताएगा।

Machine Translated by Google

उपसंहार

Machine Translated by Google

एक डॉन-इन-वेटिंग

दोपहर 2 बजे, 26 मई 2014, मुंबई सत्र न्यायालय

अबू सलेम से कोर्ट में आखिरी बार मिले और उसे अपनी कहानी सुनाने के लिए मनाने की कोशिश करते हुए लगभग छह महीने हो गए हैं । सलेम आज पीली कमीज़, भूरी पतलून और काले डिज़ाइनर जूते पहने हुए है। एक बार फिर, मैं उसे भूख से अपने खाने पर टूटता हुआ पाता हूँ।

जब से मैं उनसे मिली हूँ, वो दुबले-पतले हो गए हैं, लेकिन मुझे उनके बदले हुए हेयरस्टाइल ने वाकई हैरान कर दिया है। अब वो अपने पहले वाले स्टाइलिश हेयरकट की तुलना में ज़्यादा क्लोज़-अप हेयरकट रखते हैं।

एक मोटा, लेकिन खतरनाक दिखने वाला अधिकारी पहले तो मेरा रास्ता रोकने की कोशिश करता है, लेकिन आखिरकार मुझे अंदर जाने देता है। थोड़ी-सी बातचीत के बाद, मैं सीधे मुद्दे पर आता हूँ। 'तो हम आपकी कहानी पर कब चर्चा शुरू कर सकते हैं?'

'नहीं, मैं किताब पर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूँ कि तुम फ़िल्म की पटकथा लिखो। यह एक अद्भुत कहानी है और लोग इसे किताब पढ़ने के बजाय पर्दे पर देखना ज़्यादा पसंद करेंगे,' उसने मुझे फिर से रोकने की कोशिश की।

'मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस पुस्तक को एक फिल्म की पटकथा में बदला जा सकता है और शायद यह एक बड़ी फिल्म भी बन सकती है,' मैं इस बात पर अड़ा रहा, क्योंकि मुझे पता था कि इतने जिद्दी व्यक्ति को समझाने की कोशिश करना व्यर्थ है।

उन्होंने जवाब दिया, 'आप सलमान खान को हेमंत बिरजे में बदलने की कोशिश कर रहे हैं।'

मैं इस तुलना से हैरान हूँ। सलमान खान लगातार हिट फिल्मों के लिए ज़िम्मेदार रहे हैं।
जबकि बिरजे एक फिल्म में कमाल करने वाले और कम उल्लेखनीय अभिनेता थे।

'मैं आपकी तुलना से सहमत नहीं हूं, लेकिन यह सब कहानी की क्षमता पर निर्भर करता है,' मैंने उसे समझाने की कोशिश की।

"मुझे पता है कि मेरी ज़िंदगी की कहानी अच्छी है। दर्शक ज़रूर इससे जुड़ेंगे," सलेम अपना खाना चट करते हुए कहता है।

'ठीक है,' मैं मान गया, 'चलो किताब और फिल्म की पटकथा, दोनों पर काम करते हैं।' 'हाँ, मुझे इस बारे में सोचने दीजिए और
अपनी पत्नी से इस पर चर्चा करने दीजिए,' उन्होंने तथ्यात्मक लहजे में कहा।

'पत्नी? कौन सी? तुमने समीरा को तलाक दे दिया है, मोनिका अब नहीं रही।'
"तुम्हारी ज़िंदगी। क्या तुम उस औरत की बात कर रहे हो जिससे तुमने ट्रेन में शादी की थी?"

मुंबई मिरर ने हाल ही में खबर दी है कि सलेम ने लखनऊ जाते समय ट्रेन में मुंब्रा की एक युवती से शादी कर ली। यह लड़की सलेम से कम से कम बीस साल छोटी है और ऐसा लगता है कि उसे उसकी मुश्किलें सुलझाने के लिए बुलाया गया है। सलेम गंभीर आर्थिक संकट से गुज़र रहा है और उसके पास अपने पैसों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है, जो मुंबई, मीरा रोड और उसके गाँव सरायमीर में संपत्तियों में फँसा हुआ है। यह लड़की, जो अपने फेसबुक प्रोफाइल पर सलेम की तस्वीर खुशी-खुशी पोस्ट कर रही थी, अब लगता है कि उसकी ज़िंदगी के कुछ अहम फ़ैसलों को भी नियंत्रित कर रही है। वह लड़खड़ाने लगता है। लाल होते गालों के साथ वह कहता है, "जो भी हो, मैं अपनी जीवनसाथी से पूछना चाहता हूँ और उससे पूछे बिना फ़ैसला नहीं लेना चाहता।"

मैं पूछता हूं, 'आप मुझे कब बताएंगे?'
सलीम आखिरी टुकड़े चट करते हुए कहता है, "मुझे एक-डेढ़ महीना दीजिए। तब तक मेरे कुछ अदालती मामले भी निपट जाएँगे और मैं निश्चिंत हो जाऊँगा।"

'जेल से रिहा होने के बाद आप क्या करेंगे?' 'मैं राजनीति में प्रवेश करूंगा और चुनाव लड़ूंगा,' वह
आत्मविश्वास से कहते हैं।

Machine Translated by Google

'तुम्हें राजनीति में सफल होने का इतना यकीन कैसे है?' 'मुझे पता है कि
मैं अपने गाँव से आराम से जीत जाऊँगा। अगर मैं चाहूँ तो यह सीट मेरी है,' उसके अंदर का डॉन उभर रहा है।

मैं पूछता हूं, 'कौन सी पार्टी होगी? समाजवादी पार्टी?'
'नहीं!' वह अविश्वास से कहता है। 'समाजवादी पार्टी क्यों? मैं तो शिव सेना से भी चुनाव लड़ सकता हूँ।'
शिवसेना का टिकट लीजिए और जीतिए।'

मोटे पुलिस अधिकारी ने इशारा किया कि मैंने काफ़ी समय ले लिया है और शायद मुझे चले जाना चाहिए। मैं सलेम से वादा करता हूँ कि कुछ हफ़्तों बाद जब वह अपनी 'पत्नी' से सलाह लेगा, तो मैं फिर मिलूँगा। मैं जल्दी से वहाँ से चला जाता हूँ।

मैंने मोनिका बेदी से भी बात करने का फैसला किया है। आखिरकार, लगता है उन्होंने भी नया रास्ता अपनाया है और फिल्म पत्रिकाओं को इंटरव्यू देने लगी हैं। शुरुआत में तो वह टालमटोल करती हैं और मुझे न जानने का नाटक करती हैं। फिर उनका रुख बदल जाता है और वे मेरे संदेशों का जवाब देना बंद कर देती हैं। मुझे उनसे अपनी आखिरी मुलाकात लगभग पाँच साल पहले एक उपनगरीय कॉफ़ी शॉप में याद है। मैं अपनी इस किताब के साथ-साथ एक सहकर्मी के साथ "माफिया क्वींस ऑफ़ मुंबई" के लिए भी शोध कर रही थी।

यह 2009 की शुरुआत थी। मोनिका चालीस मिनट से अधिक देर से आई थी, लेकिन
क्षमाप्रार्थी। किसी सेलिब्रिटी से बिल्कुल अलग।
"देरी के लिए मुझे बहुत अफ़सोस है," उसने हमारे सामने बैठते हुए कहा, उसकी प्रचारक भी उसके साथ सोफ़े पर बैठी थी। "यह शो बहुत प्रतिस्पर्धी है।" . . मैं पूरे दिन अपने
कोरियोग्राफर के साथ अभ्यास करती रही, इसलिए मैं बस व्यस्त हो गई। फिर से माफ़ी चाहती हूँ,' उन्होंने आगे कहा।

मोनिका बेदी ज़िंदगी में अच्छा कर रही थीं और अपने करियर को नए सिरे से शुरू करने में कामयाब रही थीं। जिस शो की वह बात कर रही थीं, वह झलक दिखला जा का तीसरा सीज़न था, जो अप्रैल 2009 के दूसरे हफ़्ते में रिलीज़ होने वाला था। मोनिका इस डांस शो को लेकर काफ़ी घबराई हुई लग रही थीं। उन्होंने संक्षेप में कहा, "गला-काट प्रतिस्पर्धा।"

मोनिका ने हरे रंग की टी-शर्ट और नीली जींस पहनी हुई थी जिससे उसका पतला शरीर साफ़ दिखाई दे रहा था। सुनहरे भूरे रंग की धारियों वाले उसके लहराते बाल खुले हुए थे और उसके चेहरे पर ज़रा सा मेकअप था, होंठों पर थोड़े से ग्लॉस के अलावा। कुछ लोगों ने उसे घूरकर देखा, लेकिन मोनिका बेपरवाह लग रही थी और छोटे से बेंत के सोफे पर आराम से बैठी थी।

यह बैठक बहुत सारे अनुत्तरित कॉलों और अनदेखे संदेशों के बाद तय की गई थी।
वह मुझसे मिलना नहीं चाहती थी क्योंकि उसे पता था कि मैं अबू सलेम और उसकी प्रेम कहानी पर एक किताब पर काम कर रहा हूँ। अपनी पब्लिसिस्ट श्रद्धा के बार-बार अनुरोध करने पर, वह आखिरकार मुंबई के उपनगरीय इलाके स्थित जेडब्ल्यू मैरियट होटल में कॉफ़ी पर मिलने के लिए राज़ी हुई। इस मुलाक़ात का एकमात्र उद्देश्य उसे किताब के लिए हमसे बात करने के लिए राज़ी करना था। उसने कहा, "मुझे इस बारे में ज़्यादा यकीन नहीं है। पिछले कुछ महीने बहुत अच्छे रहे हैं और मैं इतनी खुशकिस्मत रही हूँ कि मैं अपने अतीत को और नहीं छेड़ना चाहती।"

'लेकिन क्या आप अपनी बात साफ़ नहीं करना चाहते?'
'मुझे इसकी ज़रूरत नहीं लगती। मेरे अतीत के बावजूद लोगों ने मुझे स्वीकार करना शुरू कर दिया है।
"आपने इसे बिग बॉस में देखा है," उसने ब्लैक कॉफ़ी की चुस्की लेते हुए कहा, उस सफल रियलिटी टेलीविज़न शो का ज़िक्र करते हुए जो उसकी वापसी का ज़रिया था। हमने देखा कि वह जानबूझकर हमारी बातचीत में सलेम का ज़िक्र करने से बच रही थी। उसकी अनिच्छा के बावजूद, हमने उसे अपनी किताब का मूलमंत्र समझाया। मोनिका ने ध्यान से सुना और एक पल के लिए वह उत्सुक लग रही थी। "अगर हम यह प्रोजेक्ट करते भी हैं, तो मुझे इसमें क्या योगदान देना होगा?" उसने पूछा।

'बस हमारे साथ कुछ बैठकें, जहाँ आप हमें अपनी असली कहानी बता सकते हैं।' क्या आप जानते हैं कि
'हम्म . . कितने लोगों ने मेरे जीवन पर फिल्म बनाने की पेशकश की है?
मैंने हमेशा मना किया है।' 'क्यों?'
'मैं अपना
अतीत भूलना चाहती हूँ। वह बहुत दर्दनाक था,' उसने कहा।

Machine Translated by Google

'लेकिन आपकी कहानी बहुत दिलचस्प है...' 'हाँ, मुझे
पता है। दूसरों के लिए दिलचस्प है, मेरे लिए नहीं, इसीलिए मुझे अपनी कहानी का कॉपीराइट मिला है,' उसने कहा।

'आपकी कहानी का कॉपीराइट कैसे हो सकता है जब वह मीडिया में आ चुकी है और
पुलिस के दस्तावेज़ों में इतना ज़्यादा दर्ज है?' उसने
कुछ सेकंड तक कोई जवाब नहीं दिया। फिर बोली, 'उह... इस बारे में आपसे बात करने से
पहले मुझे अपने माता-पिता से बात करनी होगी। मेरे सारे फैसले वे ही लेते हैं।'
हम सहमत हो गए, और फिर उनसे अन्य मुद्दों पर भी बात की, जिनमें रियलिटी टीवी शोज़ में उनकी वापसी, राहुल महाजन के साथ उनके कथित रिश्ते और हाल ही में एक धार्मिक संगीत एल्बम लॉन्च करने का उनका फैसला शामिल था। हालाँकि वह असहज थीं, फिर भी उन्होंने हमारे सभी सवालों का सावधानी से जवाब दिया। अपनी कॉफ़ी की आखिरी चुस्की लेने के बाद, वह जाने के लिए उठीं। हमने हाथ मिलाया, और उन्होंने दो दिन में हमसे संपर्क करने का वादा किया। लेकिन उनका फ़ोन कभी नहीं आया। न ही हमारी किसी भी कॉल का जवाब मिला। सालों इंतज़ार करने और उनसे लगातार संपर्क करने के बाद, मैंने हार मान ली। उन्होंने फिर से वही किया है—अबू सलेम की कहानी और उसके जीवन में अपनी स्थिति पर कोई स्पष्टीकरण देने से कतरा रही हैं।

इस बीच उनका करियर धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उन्होंने स्टार प्लस पर संजय लीला भंसाली द्वारा निर्मित धारावाहिक "सरस्वती चंद्र" में एक खलनायिका की भूमिका निभाई।
धारावाहिक में उन्होंने मुख्य पात्र की युवा सौतेली माँ की भूमिका निभाई, लेकिन उनकी कहानी ज़्यादा लंबी नहीं चली और उन्हें ज़्यादा समय तक पर्दे पर नहीं दिखाया गया। हिंदी फ़िल्मों में पैर जमाने में नाकाम रहने पर, उन्होंने दूसरी भाषाओं की फ़िल्मों में अपनी किस्मत आज़माई। उन्हें तमिल फ़िल्म देवदासी और पंजाबी फ़िल्म सिरफिरे में प्रियांशु चटर्जी के साथ मुख्य नायिका की भूमिका मिली। यह फ़िल्म अगस्त 2012 में रिलीज़ हुई और उन्हें सर्वश्रेष्ठ नवोदित अभिनेत्री का पुरस्कार भी मिला। अचानक, उनकी किस्मत चमक उठी और उन्हें पंजाबी फ़िल्म रैम्बो रांझा में महिला पुलिस अधिकारी की भूमिका मिल गई ।

बहुचर्चित धारावाहिक सरस्वती चंद्र दो साल से सफलतापूर्वक चल रहा था, और निर्माताओं ने 2014 में उसे वापस लाया। वह अब मुख्य प्रतिपक्षी है।

उन्होंने फ़िल्म पत्रिकाओं को दिए जाने वाले विस्तृत साक्षात्कारों में कहा कि अबू सलेम के लिए उनका प्यार सच्चा था और वह परिस्थितियों की शिकार थीं और जब उन्हें उनसे प्यार हुआ तो उन्हें पता ही नहीं था कि वह कौन हैं। उन्होंने उनसे कभी शादी करने से इनकार किया और लगातार यही कहा कि वह ज़िंदगी में आगे बढ़ना चाहती हैं।

सलेम-मोनिका का किस्सा पुलिस, सीबीआई, बॉलीवुड और पत्रकारों के लिए सबसे दिलचस्प माफिया कहानियों में से एक है। यह हमेशा अपने पीछे कई अनुत्तरित प्रश्न छोड़ जाएगा। ऐसा लगता है कि सलेम ने समीरा को तलाक दे दिया था या शायद समीरा ने ही उसे एकतरफा तलाक दिया था। मोनिका अब दावा करती है कि उसने कभी उससे शादी नहीं की और यह सिर्फ़ एक छोटा-सा रिश्ता था। लेकिन सलेम के पास सबूत के तौर पर एक निकाहनामा है।

सलेम और मोनिका के बीच अभी भी वित्तीय संबंध हैं। सीबीआई को संदेह है कि सलेम ने अमेरिका, ब्रिटेन और मध्य पूर्व में निवेश के ज़रिए हवाला से होने वाली अपनी कमाई को वैध बनाया। उनका दावा है कि सलेम की कुल संपत्ति 1 अरब डॉलर से ज़्यादा यानी लगभग 4000 करोड़ रुपये है, और उसकी वैध संपत्ति अकेले 1000 करोड़ रुपये आंकी गई है; सलेम ने अपने लिए 200 करोड़ रुपये रखे हैं और उसकी दो पूर्व पत्नियों (अगर हम मोनिका को भी तलाकशुदा मान लें, जिसे सलेम स्वीकार नहीं करता) के पास संयुक्त रूप से 800 करोड़ रुपये नकद और संपत्ति है।

बाकी 3000 करोड़ रुपये उसकी बेहिसाब संपत्ति या काला धन है। सीबीआई ने यह आंकड़ा 2000-01 की एक साल की अवधि में उसके लेन-देन की गणना के बाद निकाला है।
हालांकि वे अब भी यही मानते हैं कि यह एक रूढ़िवादी अनुमान है और सटीक आंकड़ा नहीं है, लेकिन उन्होंने विभिन्न अनुमानों को ध्यान में रखा और पाया कि उनके खाते में 176,675 करोड़ रुपये का शेष दिखाया गया है।

इस बात की प्रबल आशंका है कि मध्य पूर्व में सलेम के बेनामी लेकिन वैध कारोबार का प्रबंधन अभी भी दुबई में बैठे उसके करीबी विश्वासपात्रों द्वारा किया जा रहा है। इस शातिर अपराधी और कट्टर उत्तरजीवी की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है।

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

स्रोतों पर एक नोट

मेरी ज़्यादातर दूसरी किताबों की तरह, इस किताब की भी जड़ें मेरे पत्रकारीय करियर में हैं। उन्नीस सालों तक, इंडियन एक्सप्रेस, मिड-डे, मुंबई मिरर, एशियन एज जैसे विभिन्न प्रकाशनों में क्राइम रिपोर्टर के रूप में और टाइम पत्रिका व रेडिफ़ के लिए स्ट्रिंगर के रूप में मेरे कार्यकाल के दौरान, माफिया हर जगह मौजूद था। उस दौरान, मैंने माफिया के सदस्यों के करियर ग्राफ़ को एक साथ जोड़ा, जिसमें ख़ुद बदमाशों, उनके कमज़ोर रिश्तेदारों, बेहद सतर्क गिरोह समर्थकों और अति उत्साही अंडरवर्ल्ड मुखबिरों के साथ सीधे टेलीफ़ोन पर बातचीत, और साथ ही जाँच अधिकारियों, अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष के वकीलों के साथ व्यक्तिगत बातचीत शामिल थी। जब बात माफिया की आती थी, तो मैं सभी प्रेस कॉन्फ्रेंस और पुलिस ब्रीफिंग में ज़रूर जाता था।

आजमगढ़ के सराय मीर का अबू सलेम अब्दुल कय्यूम अंसारी मेरे माफिया संपर्कों के नेटवर्क का हिस्सा था। मुंबई से भागकर दुबई में शरण लेने के बाद भी, जहाँ मुंबई के सभी माफियाओं ने डेरा जमा लिया था, वह टेलीफोन पर साक्षात्कार के लिए तैयार रहता था। जब छोटा शकील से उसका झगड़ा हुआ और उसे दुबई छोड़ना पड़ा, तब भी वह साक्षात्कार के लिए उपलब्ध था।

मैंने पहले ही सलेम के पीड़ितों जैसे प्रदीप जैन, गुलशन कुमार और अजीत दीवानी के बारे में लिखा था, साथ ही फिल्म निर्माताओं सुभाष घई, राजीव राय, राकेश रोशन, आमिर खान, जेपी दत्ता और अन्य पर उसके असफल हमलों के बारे में भी लिखा था।

मेरे पास अखबारों की कतरनों, अदालती दस्तावेज़ों, आरोप-पत्रों, सरकारी गवाहों के बयानों, इकबालिया बयानों, दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के तहत न्यायिक मजिस्ट्रेटों को दिए गए बयानों और गवाहों के रिकॉर्ड किए गए साक्षात्कारों के ढेर हैं। जब सलेम भारतीय एजेंसियों की नज़रों से ओझल हो गया, तो उसका पता लगाना मुश्किल हो गया था। सीबीआई में मेरे अच्छे दोस्त, जिन्होंने ब्लैक फ्राइडे पर मेरे शोध के दौरान इतनी उदारता से मेरी मदद की थी, एक बार फिर मेरे साथ खड़े रहे।

उन्हीं के ज़रिए मुझे सलेम के कई पासपोर्ट मिले, जिनमें अलग-अलग पहचानें थीं, और उसकी पहली पत्नी समीरा और मोनिका बेदी के पासपोर्ट भी, जिनके बारे में माना जाता है कि वे उसकी दूसरी पत्नी हैं। मेरे पास उसका उर्दू में लिखा निकाहनामा और कराची की अदालतों और पादरियों से उसका नोटरीकृत अंग्रेज़ी अनुवाद है, जो मुस्लिम निकाह की औपचारिकता का संकेत देता है, जिसमें मेहर (गुज़ारा भत्ता), क़ाज़ियों के नाम, गवाहों आदि का पूरा विवरण है। मैं यह मानना चाहूँगा कि वे विवाहित थे।

इस तथ्य की पुष्टि मोनिका के उन प्रेम पत्रों से होती है जो लिस्बन जेल में कैद के दौरान उसके हाथ से लिखे गए थे। ये पत्र बहुत ही स्पष्ट प्रकृति के हैं और इन्हें उद्धृत नहीं किया जा सकता। हालाँकि, मैं यह बताना चाहूँगा कि दोनों के बीच बहुत अच्छी केमिस्ट्री थी, और पत्रों में मोनिका इस बात का अफ़सोस जताती है कि वह अपनी दूसरी शादी की सालगिरह पर अपने बाबू (सलेम के लिए उसका उपनाम) के साथ नहीं रह सकी।

मेरे पास अटलांटा के ग्वेनेथ काउंटी के अमेरिकी न्यायालय के कई अन्य दस्तावेज हैं, जिनमें सलेम की समीरा के साथ शादी, उसके इकलौते बेटे आमिर के लिए उसकी वसीयत, तथा अमेरिका और अन्य देशों में उसकी संपत्तियों का ब्यौरा है।

मैंने लिस्बन की अदालतों, उसके उच्च न्यायालय और पुर्तगाली सर्वोच्च न्यायालय से दस्तावेज भी प्राप्त किए, जिनमें सलेम पर कई अपराधों का स्पष्ट आरोप लगाया गया है, जिनमें झूठी गवाही देने का अपराध भी शामिल है।

इन दस्तावेजों को कानूनी कागजातों और भारतीय अदालतों के दस्तावेजों के विशाल खण्डों के साथ जोड़ दिया गया, जिनमें विशेष रूप से नामित टाडा अदालत, बॉम्बे उच्च न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय और भोपाल तथा लखनऊ की निचली अदालतों के दस्तावेज शामिल हैं, जहां उन पर फर्जी पासपोर्ट मामलों और धोखाधड़ी के लिए मुकदमा चलाया जा रहा है।

ज़्यादातर विवरण मुंबई क्राइम ब्रांच के दो बुनियादी संदर्भ दस्तावेज़ों से सटीक रूप से लिए गए हैं। पहला दस्तावेज़ 'गैंगस्टरवाद का विकास' नाम से था, जिसे मुंबई पुलिस के शीर्ष अधिकारियों ने गहन अध्ययन के लिए संकलित किया था।

Machine Translated by Google

मुंबई अंडरवर्ल्ड के बारे में कोई नज़रिया न रखने वाले अपने अफसरों के गहन उन्मुखीकरण पर। दूसरी एक विस्तृत फ़ाइल थी, जो मुझे डिप्टी कमिश्नर प्रदीप सावंत ने दी थी, जिसमें हर गैंगस्टर के नाम और अपराध के ग्राफ़, उनके गिरोह से जुड़ाव और ऐसी ही अन्य जानकारियाँ शामिल हैं। इन दोनों फ़ाइलों और दस्तावेज़ों का भी हवाला दिया गया था और उनके सार मेरी पिछली किताबों, " डोंगरी टू दुबई, बायकुला टू बैंकॉक" और "माफिया क्वींस ऑफ़ मुंबई" में इस्तेमाल किए गए थे। इस तरह, सलेम और मोनिका बेदी के जीवन के कुछ अंश भी मेरी इन पिछली किताबों से लिए गए थे।

सलेम के कई दोस्तों ने नाम न छापने की शर्त पर मुझसे बात की। लेकिन मैंने अपने विषयों की अनुमति से, बैकअप के तौर पर उन बातचीत को रिकॉर्ड और ट्रांसक्रिप्ट किया है। मैंने कई फ़िल्मी हस्तियों का साक्षात्कार लिया है, जिनमें से कुछ ने सलेम के बारे में मुझसे विस्तार से बात की। ये साक्षात्कार भी रिकॉर्ड किए गए हैं। सलेम के कई रिश्तेदारों ने भी मुझसे बात की है और परिवार की पृष्ठभूमि के बारे में काफ़ी जानकारी दी है। हालाँकि, मैंने अपने विवेक का इस्तेमाल किया है और उनके द्वारा दी गई जानकारी पर ही पिछले शोध की पुष्टि के लिए भरोसा किया है।

सेवानिवृत्त सहायक आयुक्त इकबाल शेख जैसे मुंबई पुलिस अधिकारियों ने डीएन नगर में आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) द्वारा सलेम की गिरफ्तारी की कहानी सुनाई और बताया कि कैसे पुलिस स्टेशन में सलेम के साथ एक आम अपराधी जैसा व्यवहार किया गया। शेख की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने सलेम के फिंगरप्रिंट लिए और उसे नियमित पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज किया, जिससे 2002 में पुलिस की जान बच गई। 2002 में लिस्बन में पकड़े जाने के बाद, गैंगस्टर ने सलेम होने से इनकार किया और ज़ोरदार तरीके से दावा किया कि वह अरसलान अली है; हालाँकि, उसके फिंगरप्रिंट कुछ और ही कहानी बयां करते थे। अन्य लोगों के अलावा, प्रदीप शर्मा, जिन्होंने मुंबई में सलेम के गिरोह का खात्मा किया था, और सचिन वाझे ने भी मुझे काफी जानकारी दी।

क्राइम ब्रांच के जाने-माने अधिकारी और अन्वेषक सचिन वाज़े, जो दस्तावेज़ों और प्रामाणिक कागज़ों के मामले में सोने की खान हैं, ने इतनी उदारता दिखाई कि सलेम की हस्तलिखित आत्मकथा मेरे साथ साझा की। सलेम ने अपने साथियों से यह आत्मकथा अंग्रेजी में लिखवाई थी क्योंकि वह इस पर एक फिल्म की पटकथा लिखना चाहता था। हालाँकि, क्राइम ब्रांच को यह मिल ही गई और वाज़े ने इसे मेरे साथ साझा किया।

कई कानूनी दिग्गजों ने मुझसे बात की है और बहुत सारी जानकारी और अंतर्दृष्टि साझा की है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सलेम के जीवन की विभिन्न घटनाओं का विवरण प्रामाणिक बना रहे।

अंत में, लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, मैंने अख़बारों और इस पेशे में अपने बेहद सम्मानित सहयोगियों द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों का गहन अध्ययन किया। इंडियन एक्सप्रेस और मिड-डे में मेरे साथी अपराध पत्रकार चंद्रमोहन पुप्पाला ने सलेम के बारे में कई खबरें छापी थीं। मुझे उनकी कहानियों से बहुत फ़ायदा हुआ है। मैंने मुंबई के अन्य पत्रकारों द्वारा अबू सलेम के बारे में लिखी गई कहानियों का भी सहारा लिया है।

संक्षेप में, इस पुस्तक में छपी किसी भी बात को काल्पनिक या मनगढ़ंत नहीं कहा जा सकता। मेरे पास इस जानकारी को पुष्ट करने के लिए ठोस दस्तावेज़ी सबूत हैं, चाहे सीबीआई, मुंबई पुलिस और अदालतों के दस्तावेज़ों के ज़रिए, या विधिवत रिकॉर्ड किए गए व्यक्तिगत साक्षात्कारों के ज़रिए, या कम से कम प्रकाशित समाचारों के ज़रिए।

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

शुरुआत

आइये बातचीत शुरू करें...

पेंगुइन को फ़ॉलो करें Twitter.com@PenguinIndia

हमारी सभी कहानियों से अपडेट रहें Youtube.com/PenguinIndia

Facebook.com/PenguinIndia पर 'पेंगुइन बुक्स' को लाइक करें

लेखक के बारे में और अधिक जानें

Penguinbooksindia.com पर इस तरह की और कहानियाँ खोजें

Machine Translated by Google

पेंगुइन बुक्स

पेंगुइन समूह द्वारा प्रकाशित

पेंगुइन बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 7वीं मंजिल, इन्फिनिटी टॉवर सी, डीएलएफ साइबर सिटी, गुड़गांव - 122 002, हरियाणा, भारत

पेंगुइन ग्रुप (यूएसए) इंक., 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क 10014, यूएसए

पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एग्लिंटन एवेन्यू ईस्ट, सुइट 700, टोरंटो, ओंटारियो M4P 2Y3, कनाडा

पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड

पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफंस ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (पेंगुइन बुक्स लिमिटेड का एक प्रभाग)

पेंगुइन ग्रुप (ऑस्ट्रेलिया), 707 कॉलिन्स स्ट्रीट, मेलबर्न, विक्टोरिया 3008, ऑस्ट्रेलिया

पेंगुइन ग्रुप (NZ), 67 अपोलो ड्राइव, रोज़डेल, ऑकलैंड 0632, न्यूज़ीलैंड

पेंगुइन बुक्स (दक्षिण अफ्रीका) (प्राइवेट) लिमिटेड, ब्लॉक डी, रोज़बैंक ऑफिस पार्क, 181 जान स्मट्स एवेन्यू, पार्कटाउन
उत्तर, जोहान्सबर्ग 2193, दक्षिण अफ्रीका

पेंगुइन बुक्स लिमिटेड, पंजीकृत कार्यालय: 80 स्ट्रैंड, लंदन WC2R 0RL, इंग्लैंड

पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा पहली बार 2014 में प्रकाशित

www.penguinbooksindia.com

कॉपीराइट © एस. हुसैन जैदी 2014

कवर डिज़ाइन: आशिम राज

सर्वाधिकार सुरक्षित

आईएसबीएन: 978-0-143-42359-1

यह डिजिटल संस्करण 2014 में प्रकाशित हुआ।

ई-आईएसबीएन: 978-9-351-18866-7

इस पुस्तक में व्यक्त विचार और राय लेखक के अपने हैं और तथ्य उनके द्वारा बताए गए हैं जिन्हें यथासंभव सत्यापित किया गया है, और प्रकाशक किसी भी तरह से इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे व्यापार या अन्य किसी माध्यम से प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, प्रकाशित पुस्तक के अलावा किसी अन्य प्रकार के बंधन या आवरण में उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराये पर नहीं दिया जाएगा, या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जाएगा और अनुवर्ती क्रेता पर भी इसी प्रकार की कोई शर्त नहीं लगाई जाएगी तथा ऊपर आरक्षित कॉपीराइट के अंतर्गत अधिकारों को सीमित किए बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को कॉपीराइट स्वामी और इस पुस्तक के उपर्युक्त प्रकाशक दोनों की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य) पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है, या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में नहीं डाला जा सकता है, या प्रेषित नहीं किया जा सकता है।

केवल भारतीय उपमहाद्वीप और सिंगापुर में बिक्री के लिए